

दिसम्बर १९७७ ई० में आयोजित पार्टी के राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में
ग्यारहवें पार्टी कांग्रेस द्वारा लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए
रोमानियन कम्यूनिस्ट पार्टी के जेनरल-सेक्रेटरी निकोलाई चाउसेस्कू

निकोलाई चाउसेस्कू

रोमानिया समाजवादी गणराज्य

का

राष्ट्रपति

निकोलाई चाउसेस्कू

रोमानियन जनता की सेवा
एवं
अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सहयोग
के प्रति समर्पित
एक अप्रतिम गतिशील जीवन

लेखक
प्रोफेसर रामनरेश त्रिवेदी
एम.ए. (पटना), एम.एस. सी. (लंदन), डी.लिट. (मगध)
आचार्य एवं अध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रथम संस्करण : जनवरी १९७८

मूल्य : ६०.००

डॉ. रामनरेश त्रिवेदी, आचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची-८३४००८, भारत, द्वारा प्रकाशित तथा
श्री एस. सागर द्वारा बंगाल प्रेस, दिल्ली-११०००६ में मुद्रित।

प्रस्तावना

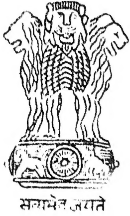
समाजवादी गणराज्य रोमानिया के महामहिम राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू से सम्बन्धित इस पुस्तक के परिचयार्थ इन कतिपय शब्दों को लिखने में मुझे प्रसन्नता हो रही है। भारत के राष्ट्रपति होने के नाते १९७३ ई० में रोमानिया की राजकीय यात्रा के अवसर पर इनसे मिलने का मुझे सुखद सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अपने आतिथेय के शालीन व्यक्तित्व एवं इनकी सदाशयता, माधुर्य मिश्रित स्पष्टवादिता और सबसे अधिक, अपने देश एवं विश्व में इन्हें प्राप्त अद्भुत लोकप्रियता के साथ जुड़ी विशिष्ट ख्याति से मैं वस्तुतः बहुत ही प्रभावित हुआ था। जनता की भलाई, शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के प्रति अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित करने वाले इस महान-पुरुष की प्रस्तुत संक्षिप्त-वृत्ति सहज चित्ताकर्षक अभिरुचि की है।

प्रस्तुत संरचना में समाविष्ट इस गत्यात्मक व्यक्तित्व की जीवनी एवं रोमानिया का वर्णन-महान देशभक्त राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू के नेतृत्व में वहाँ की जनता की महत्व-पूर्ण उपलब्धियों और आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में हुई प्रगतियों का ऐसा सांगोपांग विवेचन है, जो पाठकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं इस प्रकाशन की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

ह० वी० वी० गिरि
मलाथी
४, गिरि रोड, टी. नगर
मद्रास-६०००१७

रक्षा मंत्री, भारत
MINISTER OF DEFENCE, INDIA



नयी दिल्ली

दिनांक: 16 जनवरी, 1978

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि रोमानिया समाजवादी गणराज्य के राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू के साठवें वर्षगांठ के अवसर पर हिन्दी भाषा में उनकी जीवनी एवम् उनके नेतृत्व में रोमानियन जनता द्वारा प्राप्त राजनैतिक, आर्थिक एवम् सामाजिक उपलब्धियों के सम्बन्ध में एक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

एक साधारण कृषक परिवार में जन्म लेकर श्री चाउसेस्कू ने जिस दिलेरी और कर्मठता के साथ रोमानियन जनता का नेतृत्व प्राप्त किया तथा जिस दूरदर्शिता और निष्ठा के साथ उन्होंने देश की आन्तरिक एवम् वैदेशिक नीतियों का निर्धारण एवम् कार्यान्वियन किया, वह अपने ढंग की एक अनूठी एवम् दिलचस्प कहानी है।

आशा है कि इस पुस्तक के अध्ययन के द्वारा भारत के लोगों में रोमानियन जन-जीवन के विभिन्न पक्षों एवम् उसके आधुनिक भाग्य निर्माता राष्ट्रपति चाउसेस्कू के सम्बन्ध में और अधिक जानकारी बढ़ेगी जिससे भारत और रोमानिया के पारस्परिक सम्बन्ध और भी दृढ़ होंगे तथा इन दोनों देशों के बीच सहयोग एवम् मैत्री का उत्तरोत्तर विकास होगा।

मैं इस प्रकाशन की पूर्ण सफलता की शुभकामना करता हूं।

(जगजीवन राम)

फोन : कार्यालय : 381682, 310851, 310634
310580, 310699.

तार : "जनतापार्टी"
नई दिल्ली-110001



जनता पार्टी

सरदार पटेल भवन
7-जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली-110001

16 जनवरी, 1978

:: सन्देश ::
=====

भारत-रोमानिया का सम्बन्ध अत्यन्त मैत्रीपूर्ण और सहयोग का रहा है। जिन देशों से भारत ने पिछले दिनों में अधिकाधिक सहयोग और मैत्री का सम्बन्ध बढ़ाया है, उसमें रोमानिया का विशिष्ठ स्थान है। द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम चरण-काल से रोमानिया की राजनीति और विकास की प्रगति का श्रेय वहां के साम्यवादी दल के नेता, निकोलाई चाउसेस्कूको को ही है।

जनता के जननायक के विचारों और कार्यक्रमों के सम्बंन्ध में एक भारतीय लेखक द्वारा हिन्दी भाषा में पुस्तक प्रकाशित कर भारतीय जनता को उनकी उपलब्धियों के बारे में अवगत कराने का प्रयास सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि यह रचना भारतीय जनता को रोमानिया की राजनीति और वहां की गतिविधियों के बारे में ज्ञान पर्याप्त करने का एक साधन बनेगी। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

--चन्द्रशेखर

विषय-सूची

आमुख

एक लेखक के लिए किसी अन्य व्यक्ति की जीवनी लिखने की प्रेरणा के साधारणत दो ही स्रोत होते हैं —पहला, सम्बन्धित व्यक्ति से निकट का सम्पक और दूसरा, उसके कृतित्व का प्रभाव। इसी प्रकार ऐसी सरचनायें किसी सुनिश्चित योजना या सयोग की उपज हुआ करती हैं। रोमानिया समाजवादी गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू की प्रस्तुत जीवनी का मेरे द्वारा लेखन 'कृतित्व के प्रभाव' एव 'संयोग' के सयुक्त सम्मिश्रण का प्रतिफल है।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् कालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के पठन पाठन के सदभ में मेरा ध्यान श्री चाउसेस्कू के प्रति अनायास ही आकृष्ट हुआ, क्योकि उनके विचारों एव कार्यों में मैंने एक मौलिक वैचारिकता का आभास पाया। साम्यवादी देशो के कर्णधारों में श्री चाउसेस्कू की अपनी एक अलग और अकेली आवाज थी जो 'शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व' के समर्थन में गूंजायमान हो रही थी। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के निदान हेतु 'बल प्रयोग' और 'धमकी' की नीतियो के निन्दक होने के साथ, श्री चाउसेस्कू ने इस बात पर भी बल दिया था कि ऐसी समस्याओं के समाधान के क्रम मे यह आवश्यक नहीं था कि बडी शक्तियो द्वारा दिये गये सुझाव ही सही हों। 'राष्ट्रीय प्रभुसत्ता' के प्रबल पक्षधर, श्री चाउसेस्कू, ने छोटे देशो की महत्ता की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित कराया तथा किसी भी सम्प्रभु राज्य के आन्तरिक मामलों मे बडी शक्तियो द्वारा बल प्रयोग की खुलेआम निन्दा की।

श्री चाउसेस्कू सम्भवत प्रथम कम्यूनिस्ट नेता थे जिन्होंने एक समाजवादी राज्य के विकास के लिए पूजीवादी देशों में हुए वैज्ञानिक आविष्कारों तथा तकनीकी अनुसधानों के उपयोग में किसी प्रकार की खराबी नहीं देखी। इन्होंने अपने देश में सचालित 'सयुक्त व्यवसाय' प्रणाली के प्रश्रय हेतु पूजीवादी सहयोग को स्वीकार करने में कोई हिचक नही दिखायी। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सदभ मे इन्होंने 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन' के सिद्धांत की अपेक्षा प्रत्येक देश के लिए 'निजी आर्थिक आत्मनिर्भरता' की नीति को श्रेयष्कर बतलाया।

जहाँ तक साम्यवाद या समाजवाद के स्वरूप का प्रश्न था वहाँ भी श्री चाउसेस्कू की विलक्षणता स्पष्टत उजागर हो रही थी। समाजवाद के किसी भी अनमनीय अन्तर्राष्ट्रीय निवर्चन को यथावत् स्वीकार किये जाने के पक्ष में वे नहीं थे। इनका कहना था कि समाजवाद को इतना प्रगतिशील और जीवत होना चाहिए कि प्रत्येक देश की अपनी पृष्ठभूमि और परिस्थितियों के अनुरूप उसे ढाला जा सके। समाजवाद के हित में भी मानवीय स्वतन्त्रता का अपहरण उनकी दृष्टि में एक प्रतिगामी प्रक्रिया थी।

श्री चाउसेस्कू के उपर्युक्त वैचारिक मौलिकताओं से प्रभावित रहने की दशा में ही मुझे १९७२ ई० में रोमानिया में हुई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान सघ की कायकारिणी समिति की बैठक में भाग लेने हेतु बुखारेस्ट जाने का अवसर मिला। इस यात्रा के दौरान रोमानिया के राजनीति वैज्ञानिकों एव अन्य विशिष्ठ व्यक्तियों से भी हुई बातचीत के फलस्वरूप श्री चाउसेस्कू के प्रति मेरी पूर्व की धारणाओ की और भी सम्पुष्टि हुई। इस अवसर पर राष्ट्रपति चाउसेस्कू से मिलने का भी सुखद सौभाग्य प्राप्त हुआ जिससे उनके प्रति मेरी आस्था और भी अधिक बढ़ी थी।

फिर भी मेरी कल्पना में भी यह बात कभी नही आयी थी कि मैं उनकी जीवनी लिखू। इस रचना की प्रस्तुति का सुझाव तो आया सयोगवश और वह भी मेरे बचपन के एक अतरग मित्र और सहपाठी श्री मदन मोहन शर्मा के द्वारा। अपने विदेश भ्रमण के क्रम में श्री शर्मा भी कई बार रोमानिया की यात्रा कर चुके थे। बात ही बात मे हम दोनो मित्रो के बीच रोमानिया के महान जननेता चाउसेस्कू के राजनीतिक वैशिष्ठ्य की चर्चा निकल आयी। श्री शर्मा ने उनके व्यक्तित्व का एक नया पक्ष मेरे सामने प्रस्तुत किया, जिससे वे स्वय प्रभावित हो चुके थे। उनके विचार में श्री चाउसेस्कू की सबसे बडी विशेषता थी उनका एक सवेदनशील मानवीय विचारक होना। श्री शर्मा की दृष्टि में एक साम्यवादी नेता के द्वारा मानवीय दृष्टिकोण अपनाना और अपने देश एव समाज के सभी प्रस्तावित विकासों के के द्रबिन्दु में मनुष्य को स्थापित करना, श्री चाउसेस्कू की अद्वितीय एव प्रशसनीय विलक्षणता थी। इसी सदर्भ में श्री शर्मा ने मुझ प्ररित किया और मुझ से स्वीकृति ली कि मैं हिन्दी भाषा में श्री चाउसेस्कू की एक जीवनी लिखू। यह भी तय पाया कि प्रस्तावित प्रकाशन श्री चाउसेस्कू के जीवनकाल की घटनाओ का ही क्रमागत विवरण न हो वरन् रोमानिया की आर्थिक, सामाजिक एव राजनैतिक पृष्टभूमि में घटनाओ के अथ को स्पष्ट करने में श्री चाउसेस्कू के योगदान का विश्लेषण हो। अत प्रस्तुत रचना, जो आपके हाथों में है, उसके प्रकाशन, और वह भी बड़े ही सु दर ढंग से, का सारा श्रेय श्री मदन मोहन शर्मा को है। इस पुस्तक के हेतु सभी आवश्यक एव अधारभूत स्रोत सामग्रियां दिल्ली स्थित रोमानिया दुतावास के सौजन्य से प्राप्त हुई। इस सहायता के लिए हमारे धन्यवाद के पात्र हैं उस दूतावास के काउन्सेलर श्री आयन आकलिसन।

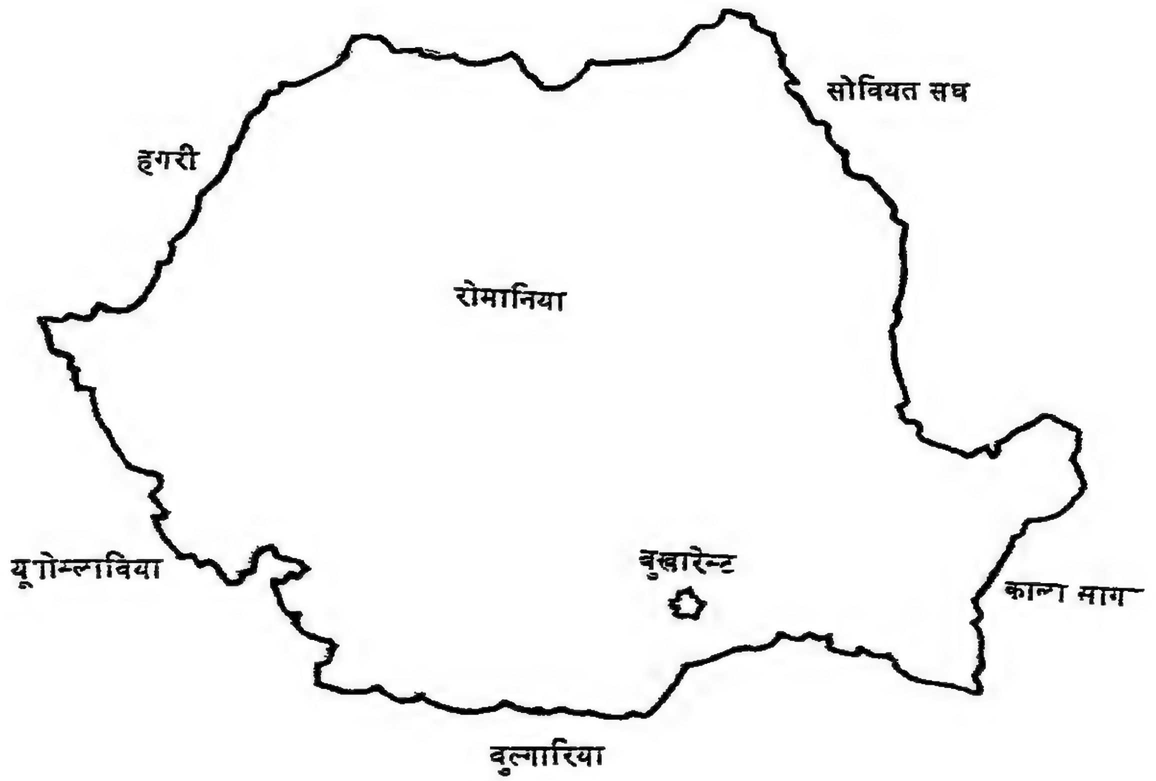
उपर्युक्त स्रोत सामग्रियों से चयन एव उनके हिंदी अनुवादों के सम्पादन में राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एव आचाय डॉ० वचनदेव कुमार तथा सस्कत विभाग के अध्यक्ष डॉ छविनाथ मिश्र द्वारा प्राप्त सहयोग का उल्लेख भी अपेक्षित है। इन दोनों सहयोगियों की सहष सहायता का ही यह फल हैं कि अपनी विविध व्यस्तताओं के बीच भी इस पुस्तक की रचना मेरे द्वारा इतनी अल्पावधि मे हो पायी। पाण्डुलिपि की प्रस्तुति में सन्त जेवियर कॉलेज राँची में हिन्दी के व्याख्याता श्री कपाल सिंह ने भी प्रयाप्त श्रम कर हमें ऋणी बनाया है। इस पुस्तक की सुन्दर और सुरुचिपूर्ण छपाई के लिए हम दिल्ली स्थित बगाल प्रेस के सचालक श्री एस० सागर के भी आभारी हैं।

इस प्रकाशन की प्रस्तावना तथा इसकी सफलता के हेतु शुभकामनाओ के लिए हम अपने देश के उन महान नेताओं के चिर ऋणी होंगे जिन्होंने अपने उदगारों से हमें कृतार्थ किया है।

रोमानिया समाजवादी गणराज्य के शताब्दी वष (१९७७ ई०) एव आधुनिक रोमानिया के भाग्य निर्माता राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू के साठवें जन्मदिवस (२६ जनवरी १९७८ ई०) के उल्लासपूर्ण एव हर्षोत्पादक अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो मेरी यही कामना हैं।

त्रिवेदी निवास
मोराबादी, राँची
२६ जनवरी १९७८

रामनरेश त्रिवेदी



सोवियत सघ
हगरी
रोमानिया
यूगोस्लाविया
बुखारेस्ट
काला सागर
बुल्गारिया

भूमिका

सृष्टि मे मनुष्य ही बुद्धि सम्प न तथा शक्तिशाली प्राणी है जो प्राकृतिक सम्पदाओं का समुचित उपभोग कर सकता है। प्राकतिक सम्पदाओ का उपभोग मानव विकास के लिए होता रहा है। यह एक लम्बी कहानी है, एक लम्बी प्रक्रिया है, लाखों वर्षों के क्रमिक विकास तथा सघष की कहानी है।

आज तक जितने भी विचारक आये उनकी विचारधारा का मूल के द्र मनुष्य ही रहा। आर्थिक, राजनैतिक या अन्य किसी भी प्रकार के चिंतन का आधार मनुष्य ही रहा। चिंतन का सम्ब ध मानवीय सवेदनाओं से है। जब कोई विचारक चिंतन की गहराई मे उतरता है तो वह वास्तविकता का साक्षात्कार करता है और तदनुरूप मूल्यो की रचना करता है। जिस प्रकार जगत् के सृजन में प्रकृति मूल तत्व है, उसी प्रकार मानवीय मूल्यो की सरचना मे विचारक का अनुभव मूल तत्व है। एक लम्बे अनुभव के पश्चात् ही रचनाकार कुछ सृजन करने की स्थिति मे होता है। वास्तविकता तो यह होती है कि चिंतन के स्तर पर वह उन सवेदनाओ को भोगता है, अपने आप को आत्मसात् करता है और उपलब्धि मे उन विचारों को व्यक्त करता है। साधारण स्तर पर चिंतन करने वाली बात की गहराई का स्पश लोग नही करते, लेकिन इससे विचारो की गहराई मे कोई अ तर नही आता।

मानवीय चिंतन भी उस युग विशेष की समस्याओ से सम्बद्ध होती हैं। जब समस्यायें अपने विकराल रूप में उठ खडी होती हैं तो विचारक विवश हो जाता है, उसके सम्ब ध में सोचने के लिए तथा उसका निदान प्रस्तुत करने के लिए। एक सवेदनशील प्राणी के लिए किसी समस्या का आघात भी उतना ही अधिक होता है। फलत वह जिस तीव्रता से उसका अनुभव करता है दूसरा नही कर सकता। जो व्यापक रूप से प्रभावित होता है वही व्यक्ति युग प्रवतक होता है। युग की सम्पूण व्यथा को अपने मे समेट कर वह युग पुरुष मूल्यो का सृजन करता है। उसका एकमात्र उद्देश्य कुठाओं से ग्रसित मानवता को एक नई दिशा देना रहता है जो अधिक वास्तविक, अधिक प्रगतिशील तथा मानवीय अभिरुचि के अधिक करीब हो।

यह प्रत्येक युग की कहानी है। जब-जब समस्यायें उठ खडी हुई, चाहे वह किसी एक देश के स्तर पर हो या सम्पूण विश्व के स्तर पर, सवेदनशील विचारक उससे प्रभावित हुए बगैर नही रह सकता। एक मानसिक तनाव की स्थिति उत्प न हो जाती है और विचार स्वत उमडने लगते हैं। प्रत्येक स्तर के विचारक अपनी समझ के अनुरूप समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। समस्या उठ खडी होती है, पर क्या सभी विचारक समस्याओ को भली प्रकार समझ भी सकते हैं ? अगर समझते है तो फिर उनके द्वारा प्रस्तुत समाधान वास्तविक क्यो नहीं होते ? व्यवहार के ठोस धरातल पर वे महत्वहीन-से क्यो हो जाते हैं ? उत्तर मे कहना पडेगा, सतही विचारको को समस्याओ की वास्तविक स्थिति का ज्ञान ही नही होता। चिंतन से उनका कोई सम्बन्ध नही होता, उनके विचार वास्तव मे विचार नही,

प्रतिक्रिया होते हैं। एक तटस्थ और सही विचारक समस्या को वास्तविकता की रोशनी में देखता है। उसके सही रूप को पहचानने की कोशिश करता है, अपने जीवन मे उसे भोगता है और उस क्षण विशेष की अनुभूतियो को सम्बद्ध कर एक विचार प्रस्तुत करता है जो युग विशेष की समस्याओं का उचित समाधान होता है। विचारक या युगपुरुष उस डाक्टर की तरह है, जो रोग को पहले पहचानता है और फिर उचित इलाज करता है।

श्री चाउसेस्कू भी कुछ इसी तरह के विचारक हैं। एक साधारण परिवार मे पैदा होने वाला यह क्रांतिकारी विचारक आज एक सफल शासक तथा रोमानिया के जनमानस का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता है। आज रोमानिया जो कुछ है उनके विचारों का विकास मात्र है। इन्होने बचपन से ही देश को शोषण से मुक्त कराना चाहा था। इन्हें पता था कि शोषण किस प्रकार तथा कितना भयानक होता है। इन्होने और इनके परिवार के सदस्यो ने शोषण के दानवी रूप को देखा था और यह भी देखा था कि किस प्रकार देश के लाखों परिवार शोषण की बलिवेदी को समर्पित हो गये। दूध के लिए बिलखते बच्चे, माताओ की अश्रुपूर्ण आखें, असहाय तथा विवश पिता, पेट मे अन्न नहीं, तन पर कपडे नही। उनका बालक हृदय विद्रोह कर उठा ऐसी व्यवस्था से जहाँ मानवीय अस्तित्व का कोई मूल्य नही हो। मानवता का वह पुजारी मानवीय मूल्यो की स्थापना की दृढ इच्छा लेकर कार्यक्षेत्र मे कूदा था।

मार्क्स और लेनिन के विचारों ने इनके मन को आन्दोलित किया था। मार्क्स ने पूंजीवादी व्यवस्था के विनाश पर समाजवादी व्यवस्था के उदय की बात कही थी। इनके विचारो को एक नयी किरण मिली। एक नयी चेतना, एक नयी स्फूर्ति का अनुभव हुआ। लाखो वर्षों के शोषित मानव के लिए एक औषधि की तरह साम्यवाद का आविष्कार हुआ था। चाउसेस्कू के दग्ध मस्तिष्क को शांति मिली। वह जी जान से सगठन कार्य में लग गया। वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हो गया। एक तरफ वे शोषण से मुक्त होना चाहते थे, दूसरी ओर शोषक शक्तियाँ अपने शिकजे कस रही थी। बुर्जुआ जमींदारो का शोषण तो था ही, रोमानिया पर हिटलर के अधिकार ने स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया था। हिटलर को युद्ध के खर्चे को पूरा करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता थी। शोषण अपनी चरम सीमा पर पहुच चुका था। रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी को दो बिन्दुओं पर लडना पडा, बुर्जुआ जमींदारों की सगठित शक्ति तथा हिटलर की फौजी ताकतों से। उस समय चाउसेस्कू रोमानिया की युवा शक्ति को सगठित कर रहे थे। युवकों में ये अत्यन्त प्रिय नेता थे तथा युवा पीढी के एकमात्र प्रतिनिधि। इनके बढ़ते प्रभाव ने तत्कालीन रोमानिया सरकार का ध्यान आकर्षित किया। हिटलर के हाथों का खिलौना रोमानिया की सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य नेताओ के साथ इन्हें भी जेल की कालकोठरी मे बंद कर दिया। अमानुषिक यातनायें दी गयीं, लेकिन ये अपने विचार से अलग नहीं हुए।

चाउसेस्कू इसका अनुभव करते थे कि सिर्फ विचार के स्तर पर जीने से किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। उसे कार्य रूप मे परिणत करना ही पडेगा। विचारों को कार्यान्वित करने के लिए शासन की मशीनरी पर अधिकार करना ही पडेगा। शासन की शक्ति ही विचारों को कार्यान्वित करने में सहायता

कर सकती है। वैधानिक शक्ति के अभाव मे कोई भी कायक्रम लागू नहीं किया जा सकता। अत शासन सत्ता पर अधिकार कम्युनिस्ट पार्टी का एक आवश्यक कदम था। हिटलर सत्ता के प्रति रोमानिया में बढ़ते हुए विद्रोह की भावना तथा हिटलर की युद्ध की नीति के खिलाफ रोमानिया का जनसाधारण और बुद्धिजीवी वग उठ खडा हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी ने इस आ दोलन का नेतृत्व किया। सरकार का दमन चक्र तेजी से चला। हजारो लोग जेल मे डाल दिए गए, कितने लोगो को गोली मार दी गयी। लेकिन क्रान्ति का चक्र चलता रहा। एक शहीद के खून ने लाखों शहीदो को ज म दिया, क्रान्ति के बढ़ते चरण को एक गति मिली। दानवीय दमन चक्रो को देखते हुए सशस्त्र क्रान्ति के अलावा कम्युनिस्ट पार्टी के पास और कोई विकल्प नही था। कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओ ने अपने सगठन को यह आदेश दिया कि वे सशस्त्र क्राति के लिए तैयार हो जाये। फिर जब हिटलर और ए टोनेस्कू ने रोमानिया को रूस के साथ युद्ध मे ढकेलना चाहा तो कम्युनिस्ट पार्टी ने क्रान्ति का बिगुल फूक दिया। ए टोनेस्कू गिरफ्तार कर लिए गए, उनके मन्त्रियो को नजरब द कर दिया गया। इसके बाद डा० पेट्रू ग्रोजा के नेतृत्व में रोमानिया में प्रथम समाजवादी सरकार का गठन हुआ। अक्टूबर १९४५ मे कम्युनिस्ट पार्टी का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ जिसमे कम्युनिस्ट आ दोलन के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता घीयोरघे धीयोर घेमदेज को पार्टी का महामन्त्री निर्वाचित किया गया। रोमानिया में परिवतन का क्रम तेजी से चलता रहा। १९४७ मे अ तिम बुर्जुआ प्रतिनिधि सरकार ने त्यागपत्र दे दिया और रोमानिया में पूण समाजवादी सरकार का गठन हुआ। उस समय चाउसेस्कू कम्युनिस्ट युवा सगठन के मत्री थे। इसके बाद दो दशक तक रोमानिया के महत्वपूर्ण राजनैतिक पदो पर काय करते रहे। १९६५ मे घीयोरघे घीयोर घेमदेज के निधन के पश्चात ये कम्युनिस्ट पार्टी के महामत्री तथा रोमानिया गणराज्य के अध्यक्ष नियुक्त किए गये। तब से अब तक ये सर्वोच्च राष्ट्रीय व्यक्ति के रूप में रोमानिया का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

इनका व्यक्तित्व ससार के राजनैतिक विचारको के लिए विवाद का विषय बना हुआ है। आज सम्पूण विश्व विचार के दो खेमो मे विभक्त हो गया है—समाजवादी तथा पूजीवादी। एक का प्रतिनिधित्व सोवियत रूस करता है तथा दूसरे का अमेरिका। आज के "दलगत चि तन" के जमाने में तटस्थ राष्ट्र की कल्पना नही की जा सकती और वह भी समाजवादी खेमों में। प्राय राजनतिक विचारको की यह धारणा है कि सभी समाजवादी देश रूस के इशारे पर चलते हैं। रूस के द्वारा निर्धारित नियम इन लोगों के लिए आचार-सहिता के रूप मे पूज्य हैं। जिसने भी रूस के विचारो के प्रतिकूल जाने की कोशिश की वह भयकर आलोचना का शिकार हुआ। उन्हें प्रतिक्रियावादी तत्व की सज्ञा दी गयी। ऐसी स्थिति में चाउसेस्कू के विचारों को समझना आवश्यक हो जाता है। एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने कम्युनिज्म की स्थापना के लिए अपना जीवन उत्सग कर दिया हो रूस से वैचारिक स्तर पर अलग अस्तित्व बनाये रखे, इस बात की कल्पना नही की जा सकती थी। लेकिन यह एक कटु सत्य है। इ होंने समाजवाद की रोमानियन व्याख्या प्रस्तुत की लेकिन ये इस बात को मानने के लिए कतई तैयार नही हैं कि मार्क्स और लेनिन के सिद्धातों से अलग इनका कोई अपना समाजवाद है। इ होने समाजवाद की आत्मा का साक्षात्कार किया है। ये इस

तथ्य को मानते हैं कि यह आवश्यक नही है कि प्रत्येक देश मे सभी समयों में समाजवाद का स्वरूप एक जसा ही हो। मानव प्रगतिशील है परिस्थितिया बदलती रहती हैं और बदले हुए वातावरण में समाजवाद का स्वरूप भी बदल जाएगा। समाजवाद का क्षेत्र इतना व्यापक है कि किसी भी परिस्थित के अनुरूप इसे ढाला जा सकता है और किसी परिस्थिति को आत्मसात् करने की क्षमता भी इसमें है। रूस के नेता जहा परम्परागत समाजवाद मे विश्वास करते हैं वहा ये समाजवाद के प्रगतिशील स्वरूप मे विश्वास करते है। निश्चित रूप से इन्हें रूस के हाथ की कठपुतली नही कहा जा सकता। घटनाओ ने यह प्रमाणित कर दिया है कि ये दृढ व्यक्तित्व के मालिक हैं तथा वचारिक दासता नही स्वीकार कर सकते। इस दृष्टि से ये टीटो के करीब है। दोनो राष्ट्रो के बीच मित्रता का कारण वचारिक समानता ही है।

मार्क्स और लेनिन के द्वद्वात्मक एव ऐतिहासिक भौतिकवादी व्याख्या पर आधारित रोमानियन कम्युनिस्म के विश्व एव मानवजीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण, वस्तुत एक ऐसे दाशनिक और ऐतिहासिक क्षितिज की सृष्टि करता है, जिसमे मानव जीवन की सारी समस्याओं का समावेश हो सकता। जरूरत इस बात की है कि उसे सही सन्दभ में परखा जाय और उसके अनुरूप आचरण किया जाय। रोमानिया की नीति का सर्वोच्च लक्ष्य मनुष्य है। यह मनुष्य ही है जिसके लिए भौतिक आधार की सजना की जाती है, उत्पादन शक्तियो का विकास किया जाता है और उत्पादन सम्बन्धो मे सुधार किया जाता है। सामाजिक सम्बन्धों को मार्क्स लेनिन के सिद्धान्तो पर आधारित किया जाता है, क्योंकि ये सिद्धान्त मानव विकास के माग की समस्त बाधाओं को दूर करते हैं एव समानता और स्वतन्त्रता के अधिकार के सरक्षक हैं। अर्थात्, मार्क्स लेनिन के सिद्धान्तो के मूल मे मानव विकास ही वह तत्व है जो साम्यवाद को एक जीवन्त सिद्धान्त के रूप मे प्रतिष्ठित करता है। चाउसेस्कू का कहना है कि वे वैसे समाज का निर्माण कर रहे हैं, जिसका केन्द्र बिन्दु मनुष्य ही होगा तथा जहा सभी काय मनुष्य के लिए ही किए जायेंगे। आधिभौतिक सिद्धान्तो के निर्माताओं से भी उन्होने अपील की है कि पार्टी के मानवीय दृष्टिकोण को ही ध्यान मे रखकर वे वसे आधिभौतिक मूल्यों की सृष्टि करें जो वास्तव मे मानव को एक मानव के रूप में प्रतिष्ठित करे तथा सर्वोच्च आनन्द का द्वार उनके लिए खोल दे।

मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों को श्री चाउसेस्कू ने मात्र सिद्धान्त की तरह नहीं वरन् एक जीवन पद्धति के रूप में समझा है। ये सिद्धान्त सिर्फ इस लिए नही है कि प्रतिद्वद्वियों की बातों का जवाब दिया जा सके और प्रत्येक शका का समाधान इसमे ढूढा जा सके, इसकी उपयोगिता तो इसलिए है कि यही एकमात्र वैज्ञानिक व्याख्या है जिसके माध्यम से मानव अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यह एक प्रतिगामी सिद्धान्त नहीं वरन् एक प्रगतिशील सिद्धान्त है। जरूरत इस बात की है कि प्रत्येक देश की परिस्थितियो के अनुरूप इसका प्रयोग किया जाय। किसी सिद्धान्त की सार्थकता इसी में है कि वह देश और काल के अनुरूप प्रगतिशील व्याख्या प्रस्तुत कर सके। चाउसेस्कू का विचार है कि मार्क्सवाद लेनिनवाद न तो कोई धर्म है, न सिद्धान्त वरन् यह एक अध्ययनपद्धति। मानव समाज की ऐसी खोज और व्याख्या है, जिससे जीवन की घटनाओ के द्वन्द्व को समझा जा सकता है। यह एक क्रान्तिकारी विचारधारा है जो समाज के परिवतन में मदद करती है

तथा मानव के सघर्ष और विकास के इतिहास की सजना करती है। किसी भी देश के तत्कालीन विकास की समस्याओं को सुलझाने के लिए उसके नेता को इस वैज्ञानिक विचार और तरीके का सहारा लेना चाहिए। इसके आधार पर घटनाओ का विश्लेषण कर व्यावहारिक निष्कष पर पहुँचना चाहिए तथा क्रान्तिकारी कायक्रमो का निर्धारण करना चाहिए। यही एक तरीका है जिससे साम्यवादी एक सगठनकर्त्ता की भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं तथा एक सामाजिक शक्ति के रूप में विकसित हो सकते हैं। माक्सवादी-लेनिनवादी वे ही लोग हो सकते है जो समय तथा क्रान्तिकारी सामाजिक परिवत्तनो के साथ कदम से कदम मिलाचर चल सकते हैं। ऐसे ही लोग माक्सवाद लेनिनवाद के साधारण सत्य के आधार पर क्रा तिकारी सामाजिक परिवतन को नेतृत्व प्रदान करते हैं।

लेनिन माक्सवाद को एक " पूण एव ठोस ' विचारधारा के रूप मे नहीं मानते थे। वे इसे एक ऐसे सिद्धान्त के रूप में मानते थे कि "अगर समाजवादी जीवन मे पीछे नही रहना चाहते तो समाजवादियों को चाहिए कि इसका विकास प्रत्येक दिशा मे करें।" यह माक्सवादी सिद्धान्त के सदभ मे एक रचनात्मक प्रस्ताव था। क्रान्तिकारी सघष तथा समाज के समाजवादी परिवतन के लिए यह एक अमूल्य अनुभव था। लेकिन दुर्भाग्य से सवहारा क्रा ति के आधुनिक नेता माक्सवाद की शाब्दिक व्याख्या की ओर अधिक ध्यान देते हैं। माक्सवाद लेनिनवाद के सत्य से कोसो दूर, उसके सैद्धान्तिक स्वरूप का विवेचन कर, वे सर्वहारा की मूल शक्ति पर ही कुठाराघात करने पर तुले हैं। माक्सवाद के प्रति उनकी ऐसी भक्ति विनाशकारी है। घटनाओं के अथ को स्पष्ट करना तथा श्रमिक वग की समस्याओ का समाधान प्रस्तुत करना ही सवहारा क्रान्तिकारी सिद्धा त की आत्मा है। लेनिन ने कहा था "हम लोगों को इस सत्य को समझना चाहिए कि एक मार्क्सवादी को वास्तविक जीवन को ध्यान मे रखना चाहिए तथा वास्तविकता पर आधारित तथ्यो को ही दृष्टिकोण में लेना चाहिए। कल के सिद्धान्त के साथ चिपका नहीं रहना चाहिए क्योकि किसी भी सिद्धा त की तरह यह मौलिक, सामा य तथा करीब करीब जीवन की जटिलताओ को दर्शाने में सक्षम होते हैं।" मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तो की गहरी विवेचना करने के पश्चात् चाउसेस्कू इस नतीजे पर पहुचे कि प्रगतिशीलता से अलग माक्सवाद मूल्यहीन है। जीवन के अनुभवो ने भी इनके विचारों की पुष्टि की। चाउसेस्कू के दिमाग में वे यादें ताजी थीं जबकि "कामिनटन" के निर्देश के कारण रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी विघटन के कगार पर खडी हो गयी थी।

यद्यपि चाउसेस्कू ने इस बात से इ कार किया है कि समाजवाद का कोई रोमानिया रास्ता है, लेकिन वे बार-बार इस बात पर जोर देते रहे हैं कि विभि न देशों में विभि न प्रकार की स्थिति होती है। च्कि विभिन्न देशो की समस्यायें विभिन होती हैं, इसलिए प्रत्येक देश के श्रमिक वग की पार्टी को अपनी सघष योजना और रणनीति का निर्धारण स्वयम् करना चाहिए। किसी भी अ तर्राष्ट्रीय सगठन या केन्द्र के निर्देश से इसे मुक्त रखना चाहिए। अपने इस विचारधारा के कारण इन्होंने अपने आप को साम्यवादी देशों के भीतर "एकल केन्द्रवाद" का अधिवक्ता बना लिया। इ होने नये केन्द्रित "कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय सगठन" के निर्माण का कडा विरोध किया। इन्होने स्पष्ट शब्दो में घोषणा की कि १९२० मे

"कामिनटन" के निर्माण ने विश्व स्तर पर साम्यवादी आन्दोलन को जो क्षति पहुचाई, वह गलती फिर से दुहरायी नही जाय। ये राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी को पूण स्वत त्रता और स्वायत्तता में विश्वास रखते है। इसक लिए चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने इनकी आलोचना की। इन्होंने चीन की आलोचनाओं का करारा जबाब दिया और युगोस्लाविया के टीटो से मैत्रीपूण सम्बन्धो की स्थापना की जिनको चीनी एक "प्रधान सुधारवादी" कहकर पुकारते थे। चाउसेस्कू की प्रौढ़ धारणा की लोकप्रियता का आधार है—लोक सवेदना और रचनात्मक निष्ठा। वे वैसे कम्युनिस्ट देश के, जो अन्य देशों की कम्युनिस्ट पार्टियो की नि दा करते हैं और दूसरे पर दोषारोपण करते हैं, पक्के विरोधी हैं। इसलिए जब दूसरो के प्रभाव में आकर रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने विपक्ष में दोषारोपण किया, चाउसेस्कू ने इसे गलत बताया और टीटो से मित्रतापूण सम्ब ध स्थापित किया।

राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के पक्षधर होने के नाते इन्होने राष्ट्रीय स्वत त्रता मे हस्तक्षेप करने वाली किसी भी नीति की कटु आलोचना की है। उनका विचार हैं कि किसी देश की पार्टी जब सवसम्मति से कोई निर्णय लेती है, तो किसी अन्य देश की पार्टी या उनके अन्त र्राष्ट्रीय सगठन को सबंधित देश की बहुमत की अवहेलना करने का अधिकार नही है। उनके द्वारा किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप मानवीय स्वतन्त्रता की मूल भावना पर कुठारा घात है। कोई प्रभुसत्ता सम्पन्न देश तथा उसमें कायरत पार्टी इसे बर्दाश्त नही कर सकती। इसमें इस बात से कोई फक नहीं पडता कि वे एक ही विचारधारा के या एक ही राजनैतिक व्यवस्था के समथक लोग हैं। स्वतन्त्रता मानव का मूल अधिकार है। समाजवाद के नाम पर अगर इस अधिकार की हत्या कर दी गयी तो समाजवाद एक प्रतिगामी व्यवस्था हो जायगी। समाजवाद की सर्वोच्चता तो इस बात में निहित है कि इसमे पूर्ण मानवीय स्वत त्रता से व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकता है। इसीलिए वार्सा सधि के पाँच देशों द्वारा जब १९६८ में चेकोस्लोवाकिया में हस्तक्षेप की नीति का सहारा लिया गया तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इसका कडा विरोध किया। वे अगस्त मे अलेक्जेन्डर डूबचेक से मिले और उन्हें अपना समथन दिया। उन्होंने चेक कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियो में आस्था प्रकट की और हस्तक्षेप करने वाले देशों की भर्त्सना की। उन्होने स्पष्ट शब्दो में कहा कि चेक कम्यूनिस्ट पार्टी को अपने कायक्रम तथा नीति निर्धारण की पूण स्वत त्रता है तथा किसी भी देश द्वारा हस्तक्षेप, चाहे वह कम्युनिष्ट देश ही क्यो न हो, अमानवीय है। अत इन्होने कम्युनिष्ट देशो द्वारा हस्तक्षेप की नीति को एक "गलती" तथा विश्वशान्ति के लिए एक भयकर खतरा बताया। उन्होंने खुलेआम ससार के सामने डूबचेक का समथन किया।

उस समय में चेकोस्लोवाकिया के समथन में सगठित एक प्रदशन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि आज जो घटना चेकोस्लोवाकिया में हुई वही घटना रोमानिया में भी हो सकती है। किसी भी समय यह कहा जा सकता है कि रोमानिया में प्रतिक्रिया वादी तत्व सिर उठा रहे हैं और प्रतिगामी क्रान्ति की सम्भावना पैदा हो गयी हैं। अत प्रतिक्रियावादी शक्तियों को कुचलने के लिए और प्रतिगामी क्रान्ति का अन्त करने के लिए हस्तक्षेप करना आवश्यक हो गया है। चाउसेस्कू ने दहाड कर कहा था, किसी भी स्थिति में रोमानिया की जनता बाह्य हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं कर सकती। उन्होने रोमानिया के

लोगों को सम्बोधित कर कहा था कि ऐसी स्थिति में वे सशस्त्र क्रान्ति के लिए तैयार रहें क्योकि वह स्थिति आक्रमण की स्थिति होगी। देश की स्वतन्त्रता एव स्वायत्तता पर खतरा होगा अत ऐसी स्थिति में प्रत्येक देशवासी का यह पवित्र कर्त्तव्य होगा कि वे आक्रमण कारियो को देश की पावन भूमि से खदेड दे। इसीलिए उन्होंने "ब्रेझनेभ सिद्धान्त" की अव हेलना की। श्री ब्रेझनेभ ने "समाजवादी राष्ट्रमडल" के निर्माण का सिद्धान्त दिया था जिसके अनुसार समाजवादी देशो को अपने पडोसी देश के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने का अधिकार होगा अगर वे समझते हो कि समाजवाद पर खतरा है। चाउसेस्कू इसे किसी भी तरह मानने के लिए तैयार नही हुए। उन्होने इसे हस्तक्षेप की खुली छूट की सज्ञा दी। उनका विचार था कि कोई देश अपनी परिस्थितियो को अन्य देशो की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझ सकता है। यह एक मानवीय समस्या है। अपनी समस्याओ को मनुष्य किस तीव्रता और किस गहराई के साथ भोगता है, इसका अनुभव सिफ वही कर सकता है। दूसरे को मात्र सतही अनुभूति हो सकती है। यही बात एक राष्ट्र के साथ भी है। एक राष्ट्र या एक पार्टी जिस तीव्रता और गहराई से अपनी समस्याओ को सोच सकता है, उसे दूसरा समझ ही नही सकता। फिर क्यो कोई किसी के आन्तरिक मामलो में हस्तक्षेप करे। किसी देश विशेष की जनता किस राजनैतिक व्यवस्था मे रहना पसन्द करेगी, इसके निणय का अधिकार उसी को है। किसी अन्य देश या सगठन के द्वारा किसी देश के भविष्य का निणय किसी भी तरह से उचित नही कहा जा सकता। यह विचारो को दूसरे पर थोपना है। चाउसेस्कू ऐसी दासता को अस्वीकार करते हैं।

चाउसेस्कू का यह विचार सिफ रोमानिया की सुरक्षा के सदभ नही है। वे इस बात को सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करते हैं। चाहे वह देश पूजीवादी हो या समाजवादी, किसी भी देश के आन्तरिक मामलों मे हस्तक्षेप के वे खिलाफ है, खासकर उस स्थिति में जब कि हस्तक्षेप बडी शक्तियों के इशारों पर किया जाने वाला हो। वियतनाम में अमेरिका के हस्तक्षेप को साम्राज्यवादी हमले की सज्ञा देते हुए उन्होने वियतनामवासियो के मुक्ति आन्दोलन का खुलकर समथन किया। उन्होने कहा कि यह सिफ वियतनाम के निजी मामले मे अमेरिका द्वारा हस्तक्षेप का प्रश्न नही है, वरन् बडी शक्तियो द्वारा छोटे देश की स्वतन्त्रता के अपहरण का प्रश्न है। वे चाहते हैं कि बडे और शक्तिशाली राष्ट्र छोटे राष्ट्रों की महत्ता को स्वीकार करें। जिस प्रकार किसी बडे राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या पर विचार करने का आधिकार है उसी प्रकार छोटे राष्ट्रो को भी है। फिर यह कोई आवश्यक नही हैं कि बडे देश द्वारा प्रस्तुत समाधान ही उचित और सही हो। वे अपने विचारों में इतने उदार हैं कि पूजीवादी देशो के साथ भी मित्रतापूण सम्बन्ध कायम करने के पक्ष में हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति श्री निक्सन के रोमानियन दौरे के अवसर पर उनके सम्मान में आयोजित भोज मे उन्होने कहा था कि अमेरिका में हो रहे वैज्ञानिक अनुसन्धान ने सम्पूर्ण विश्व के निवासियो के लिए उन्नति का माग प्रशस्त किया है। तात्पय यह कि पूजीवादी देशो में हो रहे तकनीकी और वैज्ञानिक आविष्कारों को नजर अन्दाज नही किया जा सकता है। उनका विचार है कि अगर सम्पूर्ण मानव जाति के विकास को ध्यान में रखना है तो फिर आधुनिक विकास को, चाहे वह समाजवादी देश का हो या पूजीवादी

देश का मानव के विकास के लिए प्रयोग मे लाना ही होगा, अन्यथा विकास काय अधूरा रह जाएगा। एक सवेदनशील मानवीय विचारक और नेता होने के कारण, व्यवस्था के आधार पर, मानवों में विभेद उन्हें पसन्द नही है। खुद रोमानिया मे विभिन्न राष्ट्रीयता के लोग रहते हैं लेकिन उनमे व्यवहार के स्तर पर उन्होने कभी विभेद उत्पन्न नही होने दिया। वे मानवता के महान् पुजारी हैं। इसी कारण विदेशो के बसे बहुत से राष्ट्रो के साथ, जिनसे इनकी नीतियो में कोई साम्य नही है, वे मत्रीपूण सम्बन्धो के निर्माण मे समथ हो सके। इन्होने बहुत से देशो का दौरा किया, शिष्टमडल भेजे, तथा स्वयम् उनके विभिन्न प्रमुख नेताओ से सम्बन्ध स्थापित किया जिनमे फ्रास के जनरल दीगाल और राष्ट्रपति पोम्पीदू ही नही वरन् पर्शिया के शाह, टर्की के राष्ट्रपति तथा अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन भी हैं। इनके विचार मे शान्तिपूण सह अस्तित्व का अथ ऐसे सम्बन्धो के निर्माण से है, जिनमे सहिष्णुता, समानता और भाईचारे की भावना की प्रधानता हो। उनका विश्वास है कि सहिष्णुता, समानता और भाईचारे के अभाव में शातिपूण सह अस्तित्व की भावना अर्थहीन हो जाएगी और इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी देशो से सम्बन्ध स्थापित किया जाय। उनकी समस्याओ को शान्तिपूर्ण ढग से समझा जाय तथा आपसी सहयोग और सद्भावनाओं के द्वारा उनका समाधान किया जाय। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में 'बल प्रयोग और धमकी की राजनीति' को तिलाजलि दे दी जाय।

चाउसेस्कू के प्रत्येक काय में रोमानिया के लोगो की आकाक्षाओ का दशन हो सकता है। रोमानिया के लोगों की स्वतन्त्रता प्रियता तथा अखड प्रभुसत्ता के प्रति आदर चाउसेस्कू के प्रत्येक चरण मे परिलक्षित है। इसीलिए सोवियत खेमो मे भी चाउसेस्कू की अलग और अकेली आवाज गुजायमान होती है। जिस समय रूस-चीन विवाद हुआ था, रोमानिया ने दोनों देशो के साथ अपने सम्बन्ध का निर्वाह किया। अपने देश के अस्तित्व को दबावमुक्त रखकर उन्होंने दोनो देशों के सम्बन्ध में सुधार का प्रयत्न किया। वे किसी के पक्षधर नही हुये। यहा तक कि सयुक्त राष्ट्र सघ में भी अपनी नीति पर वे अडिग रहे। इसका अथ कतई नही है कि चाउसेस्कू अन्य कम्युनिस्ट देशो तथा उनका नीतियो के विरोधी हैं। जब अमेरिका द्वारा वियतनाम पर आक्रमण हुआ था, इन्होने अन्य कम्युनिस्ट देशो की तरह अमेरिका के साम्राज्यवादी आक्रमणकारी नीतियो की निन्दा की थी। जब अरब पर इजराइली सैनिको का कब्जा हो गया था, तो इन्होंने इजराइली सैनिको के वापसी की माग की थी। फिर लाल चीन के सयुक्त राष्ट्र सघ मे सम्मिलत होने का इन्होने समथन किया। अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्यओ पर भी इनके बिचार तथा इनके द्वारा उठाए गए कदम, दूसरे कम्युनिष्ट देशों से मेल खाते हैं। इन्हें किसी भी तरह से कम्युनिस्ट बिरोधी कहना एक बडी गलती होगी। इनके व्यक्तित्व को परिस्थितियों के सन्दर्भ में ही परखा जा सकता है। प्रगतिशीलता इनके व्यक्तित्व का मूल आकर्षण है। सवेदनशीलता एव मानवीय सुरक्षा तथा समृद्धि के निरन्तर प्रयत्न इनके व्यक्तित्व की सबसे बडी बिशेषता है।

चाउसेस्कू ने यूरोपीय देशो में शान्ति स्थापना एव सुरक्षा के लिए सराहनीय प्रयत्न किये हैं। जुलाई १९६६ से वार्सा सधि के सदस्यों की एक यैठक बुखारेष्ट मे हुई। इस बैठक का प्रबन्ध चाउसेस्कू ने ही किया था। इस बठक में यूरोपीय देशो की सुरक्षा एवं शांति स्थापना के उपायों पर विचार किया गया था। उस बैठक में चाउसेस्कू ने दोनों जमन

राज्यो के राजनैतिक स्वीकृति की माँग की थी तथा "यूरोपीय सुरक्षा व्यवस्था" क निर्माण की बात कही थी। उन्होने "नाटो' तथा "वार्सा सधि" क अ त की माग की थी और विदेशी सैनिको को अपने देश वापस भेजने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनका कहना था कि "वार्सा सधि" का निर्माण "नाटो" के निर्माण के बाद हुआ था। इसका निर्माण सुरक्षा को ध्यान में रखकर किया गया था। नाटो पूजीवादी देशो का सगठन है और वार्सा सधि साम्य-वादी देशों का। वार्सा सधि क निर्माण के मूल में बात सिर्फ इतनी सी थी कि अगर कोई पूजी-वादी देश किसी साम्यवादी देश पर आक्रमण करे तो वैसी स्थिति में इस सधि के क्षेत्र में आने वाले सदस्य राष्ट्र एक दूसरे की सहायता करेंगे। एकजुट होकर पूजीवादी देश के आक्रमण को विफल करेंगे। उनका कहना है कि ऐसी स्थिति में सधि की कोई आवश्यकता है ही नही। स्वभावत एक साम्यवादी देश दूसरे की सहायता करेगा। फिर किसी भी सनिक सधि का अस्तित्व ही तनावपूर्ण स्थिति के सृजन के लिए पर्याप्त है। अत उनका विचार था कि दोनो सैनिक सधियो को सदा के लिए अन्त कर देना चाहिए जिससे भविष्य मे तनाव की स्थिति पैदा हो ही नही। सुरक्षा के सम्ब ध में चाउसेस्कू के ये विचार इतने महत्वपण हैं कि एक न एक दिन सम्पूण विश्व इसकी उपयोगिता को स्वीकार करेगा।

नि शस्त्रीकरण की समस्या पर भी इनके विचार बहुत महत्वपृण हैं। अस्त्रो, खासकर आणविक अस्त्रो, के उत्पादन के ये कटटर विरोधी हैं। इनका विचार है कि बडे राष्ट्रो के बीच शस्त्र उत्पादन न करने की सधि होनी चाहिए। इसके प्रयोग को अवध घोपित कर देना चाहिए। इसके उत्पादन को सदा के लिए ब द कर देना चाहिए तथा अभी जो उत्पादित अस्त्र बडे राष्ट्रो के पास बच रहे हैं उसे भी खत्म कर देना चाहिए। उनका विचार है कि मानव आज विकास के उस स्तर पर पहुच गया है जहा मतभेदों का निपटारा अस्त्रों से नहीं होना चाहिए। फिर अस्त्रों के निर्माण से सम्पूर्ण विश्व मे तनाव की स्थिति पैदा होती है जो विश्व शान्ति की सम्भावनाओ को कम कर देती है। अस्त्र शस्त्र के निर्माण पर जितनी सम्पत्ति और श्रम का उपयोग किया जाता है उसे विकास योजनाओं पर खच करने से ससार से गरीबी, बेरोजगारी ऐसी समस्याओ का अन्त हो जाएगा। युद्ध, द्वेष और मतभेदो का परिणाम है। आज के विकसित मानव को इन सामाजिक बुराइयो का अन्त करना चाहिए न कि इसे बढावा देना चाहिए। द्वितीय विश्व युद्ध मे जैसी विनाशलीला हुई उसे दुनिया जानती है। हम लोगो को उससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और अस्त्र दौड को सदा के लिए अन्त कर देना चाहिए। उ होने ऐसे क्षेत्र की स्थापना की बात कही जो आणविक प्रयोग से मुक्त हो। इ होने अपने पडोसी बालकन के देशो तथा रोमानिया को "अणु प्रयोग मुक्त" क्षेत्र करने की घोषणा की माग की।

गरसाम्यवादी सामाजिक प्रणाली वाले देशों के साथ सम्बन्धो का निर्माण उन्होने सिर्फ विश्वजनीन समस्याओ के समाधान के स्तर पर ही नही किया, वरन् उन देशो के साथ सीधा व्यापारिक सम्ब ध की स्थापना भी की। उन्होने इन देशों के साथ व्यापारिक सम्ब धों में लाभ का अनुभव किया। अपने देश में उत्पादित वस्तुओ के विश्व स्तर पर खपत के लिए सभी देशो से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करना उनकी नीति का मूल आधार बना। साथ ही अन्य विकासशील देशो में हो रहे वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान का भरपूर लाभ भी

उठाना था। इससे बडा लाभ यह होता कि रोमानिया का आर्थिक आधार मजबूत होता। इसलिए उन्होंने अपनी व्यापारिक नीति को लोचदार बनाया। केन्द्रीय राजकीय व्यापार मशीनरी के कानूनो में सशोधन किया। वे पहले कम्युनिष्ट राजनीतिज्ञ हैं, जिन्होंने पूजीवादी सहयोग से सयुक्त व्यवसाय की स्थापना पर बल दिया है। इसीलिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की नीतियो के सम्बन्ध में वे बराबर चिंतित रहे। "यूरोपीय साझे बाजार" के निर्माण को उन्होने "बन्द आर्थिक प्रणाली" की सज्ञा दी और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए इसे बाधा के रूप में देखा। उनका विचार है कि ऐसे सगठन के निर्माण से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को खतरा है। "कोमेकोन" की नीति के सम्बन्ध में भी इन्होंने अपने स्वतन्त्र विचार का परिचय दिया है। जहाँ ये देश के आर्थिक विकास के लिए दूसरे समाजवादी देशो का सहयोग आवश्यक मानते हैं, वहीं सदस्य राष्ट्रो के बीच अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन के ये खिलाफ है। इनका विचार है कि अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन का उस सीमा तक विकास, जहा दूसरे देश का स्वतन्त्र विकास प्रभावित होता है, गलत है। अगर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन की नीति के कारण किसी क्षेत्र में रोमानिया का विकास अवरुद्ध होता है और उसे दूसरे देश पर निर्भर रहना पडता है, तो चाउसेस्कू के लिए यह मान्य नहीं है।

रोमानिया के विकास की और अधिक सम्भावनाए हैं, चाउसेस्कू इस बात को जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि विकास के मार्ग में क्या क्या बाधाए हैं, तथा अन्य विकसित देशो की तुलना में इसका क्या स्थान है। इसके उत्पादन प्रणाली मे क्या कमी है। वे यह भी जानते हैं कि रोमानिया के उद्योगों की उत्पादन-शक्ति अन्य विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है। उन्होंने उत्पादन में ढीलापन और त्रुटियों की तरफ इशारा करते हुए रोमानिया वासियों से यह अपील की है कि वे देश के उत्पादन को अन्य विकसित देशों के स्तर पर पहुचाए। वे अपने देश को आर्थिक दृष्टि से समुन्नत बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। इसीलिए उद्योगो पर विनियोग को बढ़ावा दिया गया है। खासकर स्टील उद्योग और मशीन निर्माण को अधिक से अधिक बढावा दिया जा रहा है। अत इस सम्बन्ध में कोई भी वैसा प्रस्ताव (जसा कि "कोमेकोन" ने किया था)रोमानिया को मान्य नहीं है। उनका उद्देश्य आर्थिक आत्मनिर्भरता का है। उनका विचार है कि किसी भी देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना चाहिए। किसी के भरोसे रहना ठीक नही है। फिर वसी स्थिति मे जहां उस उद्योग के विकास की पूर्ण सम्भावना हो, उस पर विनियोग न करना अपनी अर्थ व्यवस्था को कमजोर करना है। इसीलिए चाउसेस्कू ने "कोमेकोन" के बहुत से सुझावों को अस्वीकार कर दिया था।

चाउसेस्कू देश में उद्योगों का जिस प्रकार विकास चाहते हैं उसी प्रकार कृषि क्षेत्र में भी आत्मनिर्भता की बात करते हैं। वे चाहते हैं कि कृषि को उस सीमा तक उन्नत किया जाय जिससे देश के उद्योगों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता की पूर्ति हो सके तथा जनसख्या की खाद्य समस्या का समाधान हो सके। लेकिन वह कभी नही चाहते कि रोमानिया सिर्फ कृषि प्रधान देश हो जो कच्चे माल, प्राथमिक आवश्यकताओं और खाद्य पदार्थ का निर्यात करे। बल्कि वे रोमानिया को एक उद्योग प्रधान देश के रूप में देखना चाहते हैं जिसकी ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय हो तथा उसमें उत्पादित वस्तुओं का स्तर अत्यन्त उन्नत हो। देश को उद्योग प्रधान बनाने मे चाउसेस्कू की धारणा यह है कि एक आत्मनिर्भर राष्ट्र होने

तथा अ तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए देश मे उद्योगो का विकास आवश्यक है।

चाउसेस्कू के ऐसे विचार का आधार उनकी महान देशभक्ति की भावना है। देश भक्ति की भावना की झलक उनके उन विचारो में स्पष्ट देखी जा सकती है जो "समाजवाद में राष्ट्र के कर्त्तव्य" के स दभ में उन्होंने लिखा है। जगह जगह अपने भाषण के दौरान उ होने अपने इन विचारो की पुष्टि की है। उनका विचार है कि समाजवाद के निर्माण की प्रक्रिया राष्ट्रीय समाज की चेतना के स्तर पर एकता के साथ साथ चलती है। यही वह समुदाय है जिसमें सामाजिक स्वामित्व निहित है। उत्पादन के साधनो और राष्ट्रीय सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण समाजवादी क्रान्ति की सबसे बडी उपलब्धि है। वे इस विचार से सहमत नही है कि एक बार समाजवाद की स्थापना हो जाने से ही कार्य पूरा हो गया। उनका विचार है कि यह एक लम्बी प्रक्रिया है। समाजवाद को सतही स्तर पर समझने या कुछ लुभावने नारे के स्तर पर समझने से उसके सही रूप का भान नही हो सकता। समाजवाद की स्थापना मानव का आदश है। समाजवाद का क्षत्र इतना व्यापक है कि इसमे सम्रूण विश्व को एक कुटुम्ब मे परिणत कर दिया जा सकता है। सम्पूण विश्व को एक सूत्र मे अगर कोई बांध सकता है तो वह समाजवाद ही। यही समाजवाद की सबसे बडी उपलब्धि है और पूजीवादी व्यवस्था की तुलना मे इसकी श्र ष्ठता है। उनका विचार है कि समाजवादी क्रांति के द्वारा श्रमिक वग एक राष्ट्र के प्रतीक के रूप में उभरता है और उसी से समाजवादी राष्ट्र की विचारधारा की उत्पत्ति होती है। इस विचारधारा से अनुप्राणित राष्ट्र अपनी नई समाजवादी सस्कृति और आचारशास्त्र को विकसित करता है, जिसमें वग विभेद नही होता। जिसका आधार ही भावात्मक एकता हैं। नि स देह पूजीवादी व्यवस्था की तुलना में मानवीय विकास की सम्भावना इस तन्त्र में अधिक होती है तथा यह वास्तविकता के अधिक निकट और विकसित मानव की अभिरुचियो के अधिक अनुकूल होना है।

चाउसेस्कू पूण स्वत त्रता के पक्षपाती हैं। रोमानिया की धरती पर जितने लोग निवास करते हैं, चाहे वे किसी राष्ट्रीयता के लोग हो, चाहे वे अल्पसख्यक हो या बहुसख्यक, रोमानिया सविधान की दृष्टि में सभी लोग समान हैं। रोमानिया में रोमानियन जनसंख्या के अलावे मागभार, जमन तथा सब जाति के लोग रहते हैं। उनकी राष्ट्रीयता भिन्न है। फिर भी चाउसेस्कू सबों के समान अधिकार की भावना को महत्त्व देते हैं। समाजवादी समाज की स्थापना के पूव इन अल्पसख्यको का बहुत अधिक शोषण हुआ था, चाउसेस्कू इस तथ्य से परिचित हैं। उ होंने देश के उन सारे नियम कानूनों का अन्त कर दिया जिनसे अल्पसख्यको के हितो पर कुठाराघात होता था। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् जमन जनसख्या पर होने वाले अत्याचारों का इ होने अन्त कर दिया। वे तो सभी राष्ट्रीयता के लोगों के बीच एकता के समथक हैं। उनका विचार है कि अगर अल्पसख्यकों पर अत्याचार को नही रोका जा सका, उनके शोषण का अन्त नहीं किया जा सका तो समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य कभी पूरा नहीं किया जा सकेगा। समाजबादी मूल्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर आधारित है, शोषण के वातावरण में इस लक्ष्य की पूर्ति असम्भव है। इसीलिए वे वैसे सभी कार्यक्रमो के विरोधी हैं, जो राष्ट्रीय एकता की स्थापना में बाधा उत्प न करते हैं। उनका

मत है कि जब वे रोमानिया के प्रति अपने कर्त्तव्यो का पालन करते है तो उनके अधिकारो को कम करने का कोई औचित्य नही है। इसलिए उन लोगों के लिए स्कूल, समाचारपत्र, किताबें तथा अन्य पत्र पत्रिकाओ का प्रकाशन तक उनकी स्थानीय भाषाओ मे किया जाता है जिससे उनकी संस्कृति सुरक्षित रहे तथा उनका विकास हो।

आज के समाजवादी युग मे भी चाउसेस्कू रोमानिया के प्राचीन इतिहास को नहीं भूले। उनका विश्वास है कि आधुनिक राष्ट्रीय चेतना के निर्माण मे प्राचीन चेतना का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वे वैसे सामन्ती शासक, जिनमे माइकेल दी ग्रेट, बासाट, बोगदा, मिरसिया तथा स्टीफन दी ग्रेट आदि है,के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हैं क्योंकि रोमानिया समाज के निर्माण मे उनका रचनात्मक योगदान है। वर्ग चरित्र की भिन्नता के बावजूद उनके रचनात्मक कार्यों को नकारा नही जा सकता और यही चाउसेस्कू की महानता हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति अगर कृषको, श्रमिको और बुद्धिजीवियो द्वारा फासिस्ट सत्ता के विरुद्ध संग्राम की प्रशंसा करें, अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें तो इसमे आश्चर्य की क्या बात है। उन्होंने वैसे सभी देशभक्तों की प्रशंसा की जिन्होंने देश की सुरक्षा और समृद्धि मे अपने प्राणो की आहुति दी। लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि वे मार्क्सवादी लेनिनवादी अन्तर्राष्ट्रीय आस्था के प्रतिकूल हैं। उनका विश्वास है कि कोई भी व्यक्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय नही हो सकता है अगर वह अपने देश के प्रति वफादार न हो और जो इसकी मुक्ति के लिए संघर्ष करने को तैयार न हो। आज के सन्दर्भ में सही देशभक्त और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी वह है जो साम्यवाद की रक्षा के लिए कार्यरत है क्योंकि नए सामाजिक व्यवस्था की विजय ही सभी राष्ट्रो को एकता के सूत्र में बाधने में सफल हो सकेगा। सभी देश तभी इस बात का अनुभव कर सकेंगे कि उनका राष्ट्रीय हित समाजवादी व्यवस्था के विकास मे ही है। समाजवादी देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद उनकी दृष्टि में सिर्फ अनुकूल ही नही है वरन् सम्मान सूचक भी हैं। इसीलिए वे वर्त्तमान पीढ़ी के लेखकों, कलाकारो, वैज्ञानिको, गायकों, शिक्षको, श्रमिकों और किसानो से यह अपील करते हैं कि अपने देश तथा समाजवाद के निर्माण के लिए वे अपने आपको न्योछावर कर दें। कुछ पश्चिमी राजनैतिक लेखक चाउसेस्कू के इस विचार से सहमत नहीं हो सकते हैं और उन्हें जदानोभ और स्टालिन की परम्परा में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न कर सकते हैं, लेकिन स्थिति भिन्न है। अपने देश तथा समाजवादी आदर्शो के प्रति दृढ़ आस्था, सम्पूर्ण मानवता की समृद्धि के लिए इनके प्रयत्नों को अस्वीकार नही किया जा सकता है। इनकी भावनाओं की पवित्रता में शंका प्रकट नहीं की जा सकती।

चाउसेस्कू ने वैसे लोगो के उत्पीड़न तथा झूठे दोषारोपण के विचार को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया है जो नेताओं के कृपापात्र नहीं रह जाते हैं या जिनसे किसी स्थिति मे किसी कारणवश नेताओं से अनबन हो जाती है। असल में वैसी स्थिति उस समय आयी थी जब अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिष्ट आन्दोलन के नेताओं ने कुछ लोगों को दोषी ठहराने की कोशिश की थी। चाउसेस्कू ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे वैसी गलती दुहराने के लिए तैयार नहीं हैं, जो टीटो पर दोषारोपण के समय १९४८ में हुई थी। रोमानिया में भी कुछ कम्युनिष्ट नेताओं के साथ ऐसा हुआ था। १९४५ के ग्रोजा शासन के समय कुछ नेताओं पर

दोषारोपण किया गया, उन्हें उत्पीड़ित किया गया था। उन लोगों को षडयन्त्रकारी तथा प्रतिक्रियावादी तत्त्व करार दिया गया था तथा उनकी नि दा की गई थी और उ हें मौत के घाट उतार दिया गया था, लूक्रेटीयू पट्रासकेनू का मामला भी कुछ वैसा ही था। ये १९४५ के ग्रोजा शासनकाल में यायमत्री थे तथा बहुत वर्षों तक प्रमुख कम्युनिष्ट थे। वे फासिस्ट विरोधी आन्दोलन में सक्रिय रहे, तथा क्रा ति के समय भी कम्युनिष्टो से कध से कधा मिला कर काय करते रहे। १९४८ मे उन्हे अचानक जेल में डाल दिया गया। फिर छह वर्षों के बाद अचानक उनकी सुनवाई की गई और उ हें मौत के घाट उतार दिया गया। उ हे अमेरिकन और ब्रिटिश एजे ट के रूप में चित्रित किया गया जो रोमानिया मे सत्ता पलटने के लिए सक्रिय थे। चाउसेस्कू ने ऐसे मामलो की जाच के लिए समिति का निर्माण किया। समिति ने अपनी रिपोट दी, जिसमें कहा गया कि इन लोगो के ऊपर गलत दोपारोपण किया गया था, सुनवाई मे कानून का पालन नही किया गया था और चालाकी से दोपो को प्रमाणित करने की कोशिश की गई थी। इसके परिणामस्वरूप बहुत से निर्दोष व्यक्तियों को फाँसी की सजा दे दी गई तथा जेल की कालकोठरी मे डाल दिया गया। चाउसेस्कू ने उन सारे लोगो को जेल से मुक्त किया, उनके कलक को धोया और उ हें पुन प्रतिष्ठित किया। इस अमान वीय घटना के लिए जिम्मेदार व्यक्तियो की उन्होने कटु आलोचना की। यहाँ तक कि उ होने घेओयघे घेओरघीयू देज की भी निन्दा की। हालाँकि श्री देज भी अपने क्रान्तिकारी कार्यों के लिए रोमानिया मे प्रसिद्ध हैं। श्री चाउसेस्कू का कथन है कि उनके शासनकाल मे इस प्रकार की अशोभनीय घटनाओं की जिम्मेदारी पूणरूपेण उन पर आ जती है। पुन प्रतिष्ठित लोगो मे स्टीफेन फोरिस थे, जो १९४० मे रोमानिया कम्युनिष्ट पार्टी के महाम त्री थे तथा जिन पर दोषारोपण किया गया था और मौत के घाट उतार दिया गया था। इसके साथ उनीस रोमानियन कम्युनिष्टो को जि हें रूस मे अ यायपूवक मौत के घाट उतार दिया गया था, श्री चाउसेस्कू ने पुन प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार की अ यायपूण घटनाओं ने चाउसेस्कू को गहरे आन्दोलित किया। वैसी कानूनी व्यवस्था को, जिसमें अन्याय को बेशत स्वीकृति प्रदान की गई हो, चाउसेस्कु मानने के लिए तैयार नहीं है। उ होने घोषित किया है कि रोमानिया के चेहरे से उन काले कानूनो को मिटा देना होगा तथा ऐसी व्यवस्था का सृजन करना पडेगा जिसमें अ याय की कोई सम्भावना नहीं हो। उन्होंने कहा—देशभक्ति का एक मापदण्ड होना चाहिए, इसकी एक कसौटी होनी चाहिए। उस कसौटी के आधार पर नागरिको के चरित्र का निर्माण होना चाहिए और उ हें उन्नत करने की कोशिश की जानी चाहिए। आज के रोमानिया की स्थिति यह है कि प्रत्येक व्यक्ति देशभक्ति की कसौटी पर खरा उतरता है। अत ऐसी स्थिति में ऐसे कानूनो की आवश्यकता का अ त हो जाता है। भूत काल की घटनायें दुहरायी नही जानी चाहिए। रोमानिया प्रजाता त्रिक देश है और प्रजात त्र का आधार "जो कानूनी है उसकी पूण स्वीकृति है। किसी के द्वारा हस्तक्षेप, चाहे तह व्यक्ति कितना भी महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, कानूनन नायजाज है, अत चाउसेस्कू इसे मानने के लिए तयार नही हैं।"

रोमानिया में उद्योगों के प्रजात त्रीकरण का दिशा में गम्भीर प्रयत्न हुए हैं। प्रब ध के के द्रीयकरण तथा एक व्यक्ति के एकाधिकार के सिद्धान्त को तिलाजलि दे दी गयी है।

प्रत्येक स्तर पर प्रबन्ध सबधी महत्त्वपूण निणय प्रजातान्त्रिक आधार पर होते हैं। चाउसेस्कू उद्योगों में प्रजात त्रीकरण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। जैसे-जसे रोमानिया मे प्रजा तन्त्रीकरण पूण होता जा रहा है, वसे-वसे उसे और अधिक प्रजातान्त्रिक और व्यावहारिक बनाने का प्रयत्न जारी हैं। चाउसेस्कू एक अनुभवी और सचेत नेता हैं, अत किसी कायक्रम को वे अनायास ही लागू नही कर देते हैं। पहले बहुत सोच समझ कर योजना तैयार करते हैं, उसके लिए पृष्ठभूमि तैयार करते हैं और फिर कायक्रम को लागू करते हैं। उनकी सफलता का यही राज है। इसी कारण वे सिफ रोमानिया के एकछत्र नेता ही नही है वरन् सम्पूण कम्युनिस्ट जगत् मे अपना स्वतन्त्र सम्मान बनाए रखने में समथ हैं।

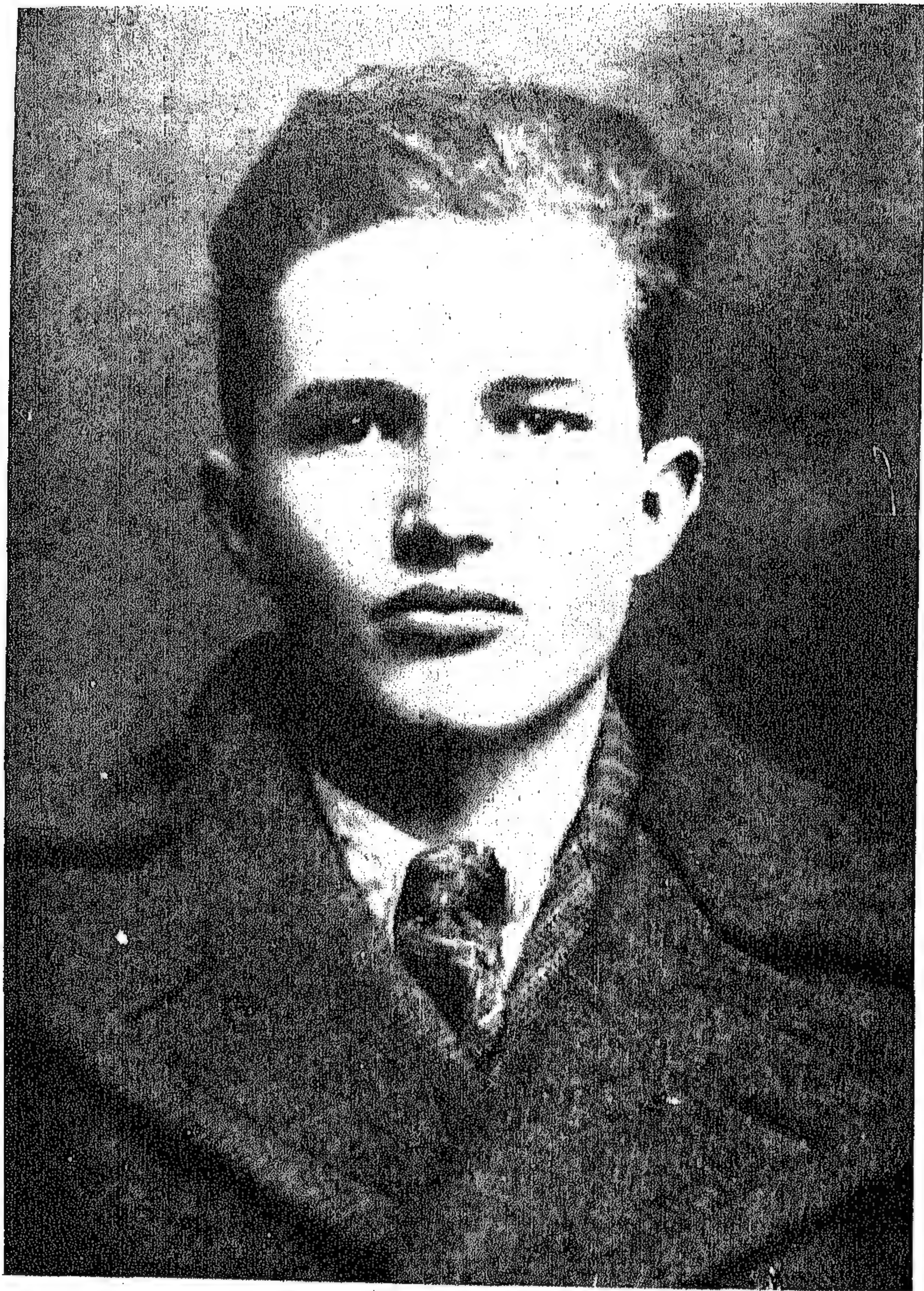
वे एक ऐसे कम्युनिष्ट हैं जिनका यह दृढ़ विश्वास है कि एक न एक दिन सम्पूण विश्व में साम्यवाद का विस्तार हो जाएगा। क्योकि यही एक वज्ञानिक व्यवस्था है तथा मानवीय रुचि के अनुकूल है। सम्पूण विश्व में इसकी आवश्यकता है। लेकिन इस आवश्यकता का अनुभव एक बार ही विश्व में हो जाय इसकी सम्भावना नही है। पूजीवादी व्यवस्था का विनाश अवश्यम्भावी है। आन्तरिक अन्तर्विरोध के कारण इसका विनाश होना निश्चित है। लेकिन विभिन्न दशो मे पूजीवादी व्यवस्था विभिन्न स्तर पर विकसित हो रही है। जब वह अपने विकास के उच्चतम शिखर पर पहुच जाता है तो विघटन आरम्भ हो जाता है। सामाजिक व्यवस्था मे परिवत्तन की आवश्यकता का अनुभव होता है और पूजीवादी व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हो जाती है। चाकि यह एक लम्बी प्रक्रिया हैं, समय इसका महत्त्वपूण तत्व है। अत चाउसेस्कू उस समय विशेष के इतजार मे हैं, जब स्वाभाविक रूप से विश्व में समाजवाद की स्थापना हो जाएगी। लेकिन चाउसेस्कू मूलत रूप से रोमानिया के नेता हैं और अपना ध्यान रोमानिया के विकास पर केन्द्रित करते हैं, क्योकि एक देश के विकास से दूसरे देश के विकास की सम्भावनाए बढ जाती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे, साम्यवादी देशों की भूमिका के सन्दभ मे, चाउसेस्कू ने नए विचारों का प्रतिपादन किया हैं। उनके विचारों की परिणति यह है कि मास्को के सिद्धान्त कुछ महत्त्वपूण एव विशेष मामलो में अव्यावहारिक हैं। उनका विचार है कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन एक नए सन्दभ में ही विजयी हो सकता है। वे चाहते हैं कि विभिन्न देशो की कम्युनिष्ट पार्टियों को अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल नीति निर्धारण की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। प्रत्येक की राष्ट्रीय पार्टी की प्रभुसत्ता, स्वतन्त्रता तथा स्वायत्तता को स्वीकृत किया जाना चाहिए। "अखण्डित कम्युनिष्ट खेमों" के निर्माण की बात अतीत की घटना है। उससे चिपके रहने से साम्यवाद के विकास में बाधा पहुचेगी। अत, वास्तविकता के आधार पर नीतियों का निर्माण होना चाहिए। रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी के पतालिसव वार्षिकोत्सव के अवसर पर भाषण देते हुए उन्होंने अपने उक्त विचारो की पुष्टि की। उन्होंने उदाहरण स्वरूप उन घटनाओं की ओर सकेत किया जब "कामिनटन" के द्वारा रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी के दो महामन्त्रियों की नियुक्ति की गई थी, जो बाहर के लोग थे और जिन्हें न तो रोमानिया की स्थिति का पता था और न रोमानिया जनसख्या की आकाँक्षाओं का ज्ञान। उनकी गलत नीति के परिणामस्वरूप रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी विघटन के कगार पर

पहुच गई थी। उ होने स्पष्ट शब्दो मे कहा कि वसी नीतियों को कार्यान्वित करने से कम्यु-निज्म की स्थापना असम्भव होगी।

चाउसेस्कू के नेतृत्व में रोमानिया एक आदश कम्युनिष्ट देश के रूप मे विकसित हो रहा है। यह एक प्रजातान्त्रिक और पूण स्वतत्र देश है। चाउसेस्कू ने यह प्रमाणित कर दिया है कि कम्युनिष्ट खेमो से अलग अपने स्वतत्र अन्तर्राष्टीय नीतियो को लेकर कोई देश आगे बढ़ सकता है तथा जीवित रह सकता है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि छोटे देशो के पास भी कहने के लिए बहुत कुछ हैं। अगर वे अपने स्वतत्र नीतियो को लेकर चलते रहे तो वह दिन दूर नही जब अन्तर्राष्ट्रीय नीति को एक नयी दिशा देने मे समथ हो सकेगें। ससार चाउसेस्कू द्वारा निर्धारित नीतियों की प्रशसा करेगा।

रोमानिया मे हुये हाल का भूकम्प ससार मे चर्चा का विषय बना है। भूकम्प की सहार लीला ने रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट को अपना केन्द्र बिन्दु बनाया। पयवेक्षको का कहना है कि हाल के वर्षों में भूकम्प का इतना भारी झटका रेकड नही किया गया है। बुखारेस्ट मे प्रकृति की विनाश लीला लोमहषक है। इस भूकम्प के परिणाम स्वरूप १३८७ लोगो की जानें गयीं, १३००० घायल अस्पताल मे दाखिल किए गये, २०,००० मकान धूल में मिल गये, १८,००० परिवार बेघर हो गये। पूण विनाश का स्वरूप उभर कर सामने आ गया। लगभग २०० कारखानों को भयकर क्षति का सामना करना पडा। खनिज तेल के लिए प्रसिद्ध प्लोइस्टी के 'पेट्रोकेमिकल कम्पलेक्स' में आग लग जाने तथा "आयलरीग" पर भूकम्प के धक्के के परिणाम स्वरूप देश की अर्थ व्यवस्था को अत्यधिक क्षति का सामना करना पडा। भूकम्प ने लगभग १०,००० कृषि पशुओ का अन्त कर दिया। रोमानिया की सरकार ने ५०० मिलियन डालर की क्षति का आकडा प्रस्तुत किया है जो विदेशी पयवेक्षको की दृष्टि से अत्यन्त कम है। रोमानिया जैसे विकासशील देश की अथ-व्यवस्था के लिए निश्चत रूप से यह एक बहुत बडा धक्का है। रोमानिया गणराज के अध्यक्ष श्री चाउसेस्कू ने जिस दृढता से इस प्राकृतिक प्रकोप का सामना किया, वह सराहनीय है। उन्होने घोषणा की कि "राष्ट्रीय पचवर्षीय योजना के कार्यक्रमो में किसी प्रकार का व्याघात नही आने दिया जायेगा, देश की गरीबी को र दूकरने का प्रयत्न किया जायगा। उन्होंने एक "प्रेस कान्फ्रेंस" में अमेरिका के राष्ट्रपति श्री काटर को "सहानभूति स देश" के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया, लेकिन ४०,००० डालर की अमेरिकी सहायता को बहुत मुश्किल से स्वीकार किया। सोवियत यूनियन तथा अन्य दजनों देशो द्वारा प्राप्त सहायता के लिए उन्होने न तो कोई धन्यवाद ज्ञापन ही किया और न अमेरिकी राजदूत की सूचना पर कि "उन्ही स्थानो में फिर से भूकम्प के झटके की सभावना है" कोई प्रतिक्रिया ही व्यक्त की। विपरीत परिस्थितियो में भी देश को जिस दृढ़ता तथा सकल्प के साथ वे आगे ले जा रहे हैं वह उनके महान व्यक्तित्व का सूचक है। ऐसी स्थिति में भी दूसरे से सहायता की बात वे गवारा नही कर सकते। अपने तथा अपने लोगो पर उनको अटूट विश्वास है। देश के नागरिको के मनोबल का उन्हें पता है। चाहे कसे भी परिस्थिति हो, उन्हें अपने लक्ष्य से विचलित नही किया जा सकता है। उनकी सवेदनशीलता की तो,



क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के फलस्वरूप
(१९३५ ई.) में कैद किये जाने के बाद का
निकोलाई चाउसेस्कू

रोमानिया का भाग्य निर्माता

व्यक्ति की महत्ता, ज्ञान, क्रिया और इच्छाशक्ति पर आधारित होती है। क्रिया के बिना ज्ञान अर्थहीन है तो इच्छा के अभाव में क्रिया पशु। इसी प्रकार ज्ञान एव क्रिया के बिना इच्छा दिवास्वप्न मात्र है। जिस व्यक्ति में इन तीनों निकायो का समुचित विकास होता है वही व्यापक जीवन की रचना के माध्यम से राष्ट्र का नेतृत्व करता है और उच्च विचारो के द्वारा एक नई परम्परा का सूत्रपात करता है। ससार ऐसे ही महान् व्यक्तियो को पाकर आर्थिक असगतियों और विकास की बाधाओ को चुनौती देता है और समृद्धि के नये कीर्तिमान की स्थापना करता है। इससे मानवीय जीवन की सम्भावनाओ का द्वार खुल जाता है और राष्ट्रीय जीवन की आशाए बढने लगती हैं। महानता दोनों छोरों से दोनो उपान्तों से जुडी होती है। दोनों अन्तों की आत्मीय पहचान के बिना अदम्य निर्माण का संवेग उत्पन्न नही होता, और यदि होता है तो वह उत्कर्ष को नही छू पाता। इस सत्य के जीवित प्रतीक रोमानिया के लोकप्रिय भाग्य विधाता निकोलाई-चाउसेस्कू हैं, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को रोमानिया को अर्पित तो किया ही, साथ ही सह-अस्तित्व की समृद्ध पृष्ठभूमि के व्यापक प्रस्तुतीकरण के लिए अपने विचार-जगत् को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया। अच्छा मनुष्य उसे कहा जाता है जो ससार से जितना लेता है उससे अधिक उसे देता है। लेकिन महान् उसे कहा जाता है जो "देने के लिए" ही जन्म लेता है। ऐसा व्यक्ति तभी होता है जब वह स्वय में अटूट निष्ठा से अनवरत "देने" की साधना का सस्कार उत्पन्न करता है। इसकी उपलब्धि के लिए, निश्चय ही उसे बाधाओं के हिमालय को ही उठाना नही पडता, बल्कि पूरे जीवन का उत्सर्ग करना पडता है। श्री चाउसस्कू ने आस्था और साहस के साथ, ऐसा किया। यह रोमानिया के लिए गौरव की बात है। सचमुच श्री चाउसेस्कू रोमानिया के प्राण हैं, महान् हैं।

कहा गया है कि "उसी का जन्म सार्थक है जिससे देश और वश की समुन्नति होती है। अन्यथा इस परिवर्तनशील ससार मे कौन नहीं मरता और कौन नही जन्म लेता।" वस्तुत चाउसेस्कू ने इस लोक धारणा को शतश सत्य में परिणत किया है। यह एक ऐसा तथ्य है जिसको नकारा नही जा सकता। कोई भी व्यक्ति जो आगे चलकर महान् बना है, बचपन से ही अपने विलक्षण प्रतिभा का प्रमाण प्रस्तुत करने लगता है। हमारे सामने एक ऐसा व्यक्तित्व प्रस्तुत है, जिसके विषय में हम अनायास ही असाधारण कह बैठते हैं। जहाँ वह सरल और उदार शिशु था वहीं वह गम्भीर और ओजस्वी व्यक्ति था। भीरुता उससे कोसो दूर थी। चाहे वह जिस वातावरण या परिस्थिति में हो, कभी भी पीछे हटने की बात ही नहीं उठती। इनके व्यक्तित्व की यह सबसे बडी विशेषता थी कि वह चचलता की पृष्ठभूमि में भी गम्भीरता को नहीं छोडते। आखें निरन्तर सतर्क रहतीं। मानो वे दुनिया

को समझने की चेष्टा कर रही हों। शैशव से यौवन तक की घटनाओं पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह व्यक्ति उस उचित वातावरण के सृजन के लिए अन्तमन से आकुल और विकल था, जिसके द्वारा वह अपने उद्देश्यो को, विचारों को ससार तक पहुचा पाता। वह व्यक्ति कभी हिंसात्मक हड़ताल करवाता, तो कभी सावजनिक सभा में भगदड मचवा देता, तो कभी युद्ध के समय देश के शत्रुओं से ही मिलकर देश के सैनिक ठिकानों, युद्ध पोतों इत्यादि को नष्ट करवाने में जुट जाता। इतना होने के बावजूद वह व्यक्ति आज उसी देश का राष्ट्रपति भी है। दुनिया उसे शान्ति का दूत मानती है। शान्ति स्थापना हेतु उसे नोबल पुरस्कार मिलने की सम्भावना है। राष्ट्र सघ में उसके भाषण एव लेख प्रमाण के रूप में सुरक्षित हैं। वह एक ऐसा व्यक्तित्व है, जो अपने सिद्धान्तो की सुरक्षा की पूरी क्षमता रखता है। आवश्यकता की स्थिति मे वह 'स्फिक्स' की शान्ति धारण कर लेता है।

निकोलाई चाउसेस्कू का जन्म १९१८ ई० में स्कोर्नेसेस्टी में हुआ था। पारिवारिक दरिद्रता के कारण किशोरावस्था में ही इसे एक मोची के यहाँ, उसके अधीन, काम करना पड़ा। वह बचपन से ही उजस्वी और निर्णायक क्षमता से युक्त था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके हृदय में वतमान जीवन की गर्हा को दूर करने के लिए विचारों और क्रियाओ का तूफान चल रहा था। वस्तुत यही कारण था कि प्रतिवेशी वातावरण और परिस्थिति के प्रति उसके हृदय में भीषण प्रतिक्रिया उठ रही थी। १४ १५ वष की आयु मे जब बच्चे विद्यालय छोड़कर महाविद्यालयो की ओर आँखें उठाते हैं या किसी नौकरी की तलाश की बात सोचते हैं, चाउसेस्कू स्वाभिमान और आत्मनिभरता की भावनाओं से इतना अभिभूत था कि उसने उसी अवस्था में विद्यालय की ओर उन्मुख नही होकर जीविकोपाजन की चिन्ता की। इतनी कम उम्र मे ही एक विशिष्ट संस्कार चेतना के कारण वह परिस्थितियों के विभिन्न पहलुओं को परखने और किसी ठोस निर्णय तक पहुचने मे समथ प्रतीत होता था। स्वभावत उसकी रुचि राजनीति के परिवेश में बढ़ रही थी। एक ऐसी व्यवस्था, जो सामूहिक जीवन को जीने योग्य ही नहीं बल्कि सार्थक कर सके, के अनुसन्धान के लिए वह व्यग्र हो रहा था। निश्चय ही वह साहस और धैर्य का सागर मालूम होता था।

संसार के जितने कम्युनिष्ट नेता अभी जीवित हैं, उनमें चाउसेस्कू का चरित्र सबसे अधिक मोहक है। अगर मान भी लें कि उसमें माओ जैसी गूढ़ाथ समझने की तथा केस्ट्रो के समान भव्य काय-सम्पादन की क्षमता नहीं है, तब भी यह सत्य है कि अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और योरुप के साम्यवादी देशों के नेताओ के बीच वह प्रकाश स्तम्भ के समान विराज मान है। योरुप के देशों में बहुत कम ऐसे साम्यवादी नेता हैं जो समाचारपत्र प्रति निधियों को उतना आकर्षित करते, जितना चाउसेस्कू। आज भी अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में चाउसेस्कू के काय कलापों को आशाभरी निगाहों से देखा जाता है। इस व्यक्ति की ओर सभी बड़े ध्यान से देखते हैं। पहले से ही लोगों में यह धारणा घर कर गई है। चाउसेस्कू की यह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति, निर्भयता, शूरता, निर्भीकता इत्यादि उसके राजनैतिक जीवन की ऐसी उपलब्धियाँ हैं जो मित्र और शत्रु दोनों को उसका प्रशसक बना देती है। दिनानुदिन चाउसेस्कू

के प्रति लोगो की अच्छी धारणाए बढती जा रही हैं। इसकी नीतियाँ के धनात्मक पहलू धीरे धीरे प्रकाश में आ रहे हैं। अब वह रूस-विरोधी भाषण भी नही देता है। नि शस्त्रीकरण, यूरोपीय एकता एव एक देश और दूसरे देश के बीच की राजनैतिक दीवार को समाप्त करने सम्बन्धी उसके उदगारों की ओर लोगो का ध्यान बहुत ही आकृष्ट हो रहा है।

इस व्यक्ति में राष्ट्रीयता कूट कूट कर भरी है। देश की सुरक्षा के लिए वह हमेशा सिर हथेली पर लेकर दौडता है। प्रसग उस समय का है जब रूस ने चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण किया था। यह घटना अगस्त १९६८ की है। राष्ट्रपति चाउसेस्कू ने अपने भाषण मे कहा था—"साथियो, आओ, हम लोग स्वदेश की रक्षा के हेतु प्रस्तुत हो जाँए। आज से हम लोग मजदूरो, किसानों, बुद्धिजीवियों इत्यादि को लेकर छोटी छोटी सेना की टुकडियाँ प्रस्तुत करें। आज से यह निर्देश दिया जाता है कि कोई भी देशवासी अपनी मातृ-भूमि के पावन-स्थल पर किसी विदेशी आधिपत्य को सहन नहीं करेगा" चाउसेस्कू के इस वक्तव्य से बहुतों मे आतक छा गया। ऐसी अफवाह उड चली कि रूसी-सेना का सीमा पर काफी बड़ा जमाव हो रहा है। किसी भी क्षण आक्रमण हो सकता है। परिणामस्वरूप विश्व के लेखकों, समाचारपत्रों, राजनीतिज्ञो, या यों कहें कि सम्पूण विश्व, का ही ध्यान रोमानिया में होने वाले परिवतनो की ओर चला गया। लेकिन, बात ऐसी हुई कि हुआ कुछ भी नहीं। रूस ने अपनी व्यवहार कुशलता और बुद्धिमत्ता का सशक्त परिचय दिया। उसने एक अन्य कम्युनिष्ट देश को व्यथ आक्रमण द्वारा उत्तेजित करने मे अपनी भलाई नही देखी। लेकिन इससे दो बातें अवश्य हुइ—रोमानिया का रूप और निखर गया तथा इसके नेता चाउसेस्कू का व्यक्तित्व स्पर्धा का विषय बन गया। बहुत करीब से लोगों ने इस व्यक्ति का निरीक्षण करना प्रारम्भ कर दिया। सवसाधारण की आँखों में रोमानिया और इसके नेता का स्पष्ट चित्र उभर आया। सचमुच चाउसेस्कू ने जिस साहस का परिचय दिया तथा जिस दिलेरी से उसने अपनी तटस्था की नीति का प्रतिपादन किया वह प्रशसनीय एव अनुकरणीय है। देश का सौभाग्य है कि उसके भाग्यनिर्माता का जितना प्रभाव रोमानिया की जनता पर है, उतना प्रभाव कामयाब करने वाले नेता नही के बराबर हैं। चाउसेस्कू के रोम-रोम में रोमानिया व्याप्त है। रोमानिया वस्तुत एक ऐसे रचनाशील व्यक्तित्व की खोज में था जो उसके राष्ट्रीय चरित्र को उत्कर्ष प्रदान करे और उसे न केवल समृद्धि के सिखर पर ले जाय, बल्कि विश्वमानव के सहअस्तित्व की शृखला से भी जोडे। यह सही है कि रोमानिया ने चिर प्रतीक्षित लक्ष्य को चाउसेस्कू मे पा लिया है। चाउसेस्कू अपने को राष्ट्र-भक्त घोषित करता है लेकिन विदेशी उसे राष्ट्रवादी मानते हैं। इस व्यक्ति ने अपनी योग्यता के बल पर आम जनता की अभिलाषाओं का आदर करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय नुकताचीनी से अपने को सदैव अलग रखा है। रोमानिया को आज विश्व के रगमच पर जो स्थान प्राप्त हुआ है उसका एकमात्र श्रेय इस अनोखे नेता को है। यह रोमानिया ही ऐसा राष्ट्र था जिसने सर्वप्रथम साम्यवादी होते हुए भी अमेरिका के राष्ट्रपति श्री रिचर्ड निक्सन का आतिथ्य प्राप्त किया था। यह रोमानिया ही था जिसने सवप्रथम विली बेंड की सरकार को अपनी मान्यता प्रदान की थी। यह दूसरा कोई नहीं रोमानिया ही है जिसने चीन के साथ भी मित्रता का हाथ बढा रखा है। इन सारे

तथ्यों पर ध्यान देकर हम यह कभी नहीं कह सकते कि रोमानिया एक आत्म केन्द्रित एव उग्रराष्ट्रवादी देश है।

कुछ मध्यमवर्गीय लोग अभी भी चाउसेस्कू के कार्यों का अनुमोदन नही करते हैं तथा कुछ नवयुवक भी यह नही चाहते कि एक ओर रोमानिया अधिकाश देशो को मित्रता का पैगाम भेजे और दूसरी ओर अपने नागरिको के विदेश जाने पर पाबन्दी लगा दे। इतना होते हुए भी वे अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। क्योकि चाउसेस्कू के नेतृत्व में रोमानिया ने जो ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्राप्त कर ली है वह कोई सामान्य उपलब्धि नही है।

चाउसेस्कू के आचरण की सबसे बडी खूबी यह है कि वह विलासी प्रकृति का व्यक्ति नहीं है। उसका व्यक्तिगत जीवन बिल्कुल निजी है। वह अपने को एक नेता नही अपितु एक स्वय सेवक समझता है। राष्ट्रपति भवन के आगे उद्यान में बैठकर वह प्रेस की चर्चा का विषय नही बनना चाहता है।

विश्व के मानचित्र में रोमानिया आज जिस रूप मे प्रतिष्ठित है और जिस प्रकार वह अबाध रूप मे प्रगति कर रहा है—यह सब कुछ लोक प्रियनेता चाउसेस्कू की देन है। इस दृष्टि से राष्ट्रपति चाउसेस्कू का रोमानिया के रगमच पर अवतरित होना उसकी एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना है। इस देश को पूर्वी योरोपीय देशों का "भयानक शिशु" (Infant terrible) कहा गया है। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति होते-होते रोमानिया की अथव्यवस्था बिल्कुल चकनाचूर हो गयी थी। जिन विघ्न बाधाओं को झेलते हुए इस देश ने अपनी आर्थिक दशा मे सुधार लाया है, वैसा उदाहरण जापान के अलावा अन्यत्र मिलना असम्भव है। सारे के सारे स्रोत एक एक कर तहस नहस हो गए थे, कषि उत्पादन प्राय विरामावस्था को प्राप्त कर चुका था, देश के अधिकाश भागो को भयकर अकाल ने आ घेरा था। विनाश की ऐसी बेला में चाउसेस्कू का व्यक्तित्व तडित सदृश कौंध कौंध कर मार्ग प्रदर्शित करने लगा। दुर्दिन की बदली छटी। उसने आशातीत सफलता प्राप्त की। जब हम १९३८ के रोमानिया की तुलना वर्त्तमान रोमानिया से करते हैं, तो अनायास हमारे हृदय मे इस देश के नेता के प्रति श्रद्धा का भाव भर जाता है। उद्योग के क्षेत्र में उसने इक्कीस गुणा प्रगति की है, कषि का उत्पादन दुगुना हो गया है, राष्ट्रीय आय आठ गुना अधिक हो गई है। इस देश के विकास की स्थायी दर १० प्रतिशत है, जो इसे विश्व के महान् चार देशों की पंक्ति में खड़ा कर देती है। मशीन, रासायनिक पदाथ, तेल, स्टील इत्यादि उद्योगों में इसने जो प्रगति की है उसका अनुमान यह देश युद्ध-पूर्व की स्थिति में नहीं करता था। रोमानिया अभी भी तीव्र गति से बढ़नेवाला एक विकासोन्मुख देश है। आशा ही नहीं वरन् विश्वास है कि अपनी कठोर संकल्प-चेतना वाले नेता और वहां की जनता की क्रियाशीलता से यह देश शेष पथ को भी शीघ्र ही पार कर लेगा।

देश में स्थायी विकास दर को अपेक्षित रूप मे गतिशील बनाये रखने तथा शान्ति सुव्यवस्था और अनुशासन को जीवन का सहज अग बना देने का श्रेय चाउसेस्कू को ही है।

देश के पास प्राकतिक सम्पदा का अभाव नही है, और यह देश की आवश्यकता के अनुपात में पर्याप्त है।

विश्व युद्ध के समाप्त होते ही वह साम्यवादी कार्यकर्त्री एलेनापेट्रेस्कू के प्रणय सूत्र में बधा। उन्हें दो पुत्र एव एक पुत्री हैं। ज्येष्ठ पुत्र बेले तीन, एक भौतिकशास्त्र वेत्ता है, पुत्री बुखारेस्ट विश्वविद्यालय की छात्रा है। कनिष्ठ पुत्र निकोलाई माध्यमिक शिक्षा समाप्त कर चुका है। चाउसेस्कू अवकाश के क्षणों में भौतिक विज्ञान का अध्ययन करता है, मछली का शिकार करता है एव अपने परिवार में रुचि रखता है।

मनुष्य के आदश एव उसके विचार ही प्रधान हैं। विचारहीन मनुष्य पशु से भी अधम है। रोमानिया में चाउसेस्कू को जो श्रेय प्रा त हुआ है वह उसके आदर्शो के ही कारण। अपने आदश के सामने वह अपने को गौण रखता है।

साम्यवादी देशों की यह परिपाटी रही है कि वे इतिहास को मध्यम श्रेणी का अवरोध मानने हैं, क्रान्ति में विश्वास करते तथा उनके कायक्रम में भूतपूव नाम की कोई चीज नहीं है। रोमानिया उसका अपवाद है। वह एक ऐसा राष्ट्र है जिसका प्रत्येक कदम अपने इतिहास के स्मरण के साथ उठता है। चाउसेस्कू का प्रत्येक काय कलाप अपने इतिहास के प्रति उसकी असीम आस्था का प्रतीक है। इस प्रकार अगर हम रोमानिया के भूतपूर्व इतिहास का अवलोकन करें, और यह पता लगावें कि रोमानिया का इतिहास किन भयकर विप्लवों एव विपदाओं से गुजरा है तो हमें चाउसेस्कू का मूल्यांकन करने में काफी सहायता मिलेगी।

ऐतिहासिक-उत्पीड़न

रोमानिया का अतीत घुटन, उत्पीडन, लाचारी, अत्याचार एव विप्लव का रोमाचक चित्र प्रस्तुत करता है। इसके अतीत में ऐसा कोई माधुर्य नहीं है जिसका स्मरण सुखद एव सात्वना प्रदान करने वाला हो। फिर भी, वहा के निवासियों मे अपने अतीत के प्रति अत्यन्त दुराग्रह है। वे अपने अतीत को हमेशा ताजा बनाये रखना चाहते हैं। रोमानिया एक विकासशील देश है, उसे अभी कोसों दूर चलना है। वहा की जनता के सामने अभी भी कई समस्याएं विकराल दानव की भाति मुह बाये खडी हैं। लेकिन, रोमानिया के अतीत की तुलना में उनकी वतमान अवस्था पुष्प शय्या से भी अधिक मोहक एव आरामदायक है।

रोम के बादशाह "ट्रोजा" के आगमन (१०० ए० डी०) के बाद से रोमानिया का श्रीगणेश होता है। रोमानिया के नामकरण के पीछे यही तथ्य है।

डैनोवी नदी के तट के आसपास ट्रोजा की सेना पहुची। वहा डेसियन लोग निवास करते थे। इन लोगों ने रोमानिया के अधिकाश भागों में अपना पैर पसार दिया था। ईसा के जन्म काल तक इन्होंने काफी प्रगति कर ली थी—राजनीतिक क्षेत्र में, सैनिक संगठन मे तथा सभ्यता एव संस्कृति में। ट्रोजा ने इन पर आधिपत्य कर १०६ ई० के अन्त तक डेसिया को अपना उपनिवेश बना लिया। राज्य के शासन प्रबन्ध मे डेसियनो को भी कुछ महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किये गये। दोनों ने पूरी रुचि के साथ कार्य किया। फलत डेसिया काफी समृद्ध हो गया। स्वण, रजत, ताम्र, लोहे, लवण और संगमरमर इत्यादि खानों से निकाले गए। सडकों का जाल-सा बिछ गया। डैनोवी एव काला समुद्र के कछार पर बन्दरगाह बने।

इतना होते हुए भी जैसा कि स्वाभाविक है—डेसिया निवासी प्रसन्न नहीं थे—"पराधीन सपनेहु सुख नाही।" इसलिए उन लोगों ने बड़े ही सयत ढग से अपने विरोध का प्रारम्भ कर दिया। लगभग पौने दो सौ वर्षों तक डेसिया, जो भविष्य मे रोमानिया के नाम से जाना गया, रोमनों के निरकुश शासन के अधीन रहा। लेकिन, इस अवधि में रचनात्मक कार्य भी हुए। रोमनों ने स्वय इसे "सुखद डेसिया" (Dacia Folik) कहा है। रोमनों ने इन्हें संस्कृति का पाठ पढ़ाया, भाषा सिखायी, अपने रीति रिवाजों से अवगत कराया, और कहाँ तक कहा जाय, अपने धार्मिक पहलुओं को भी उनके लिए प्रस्तुत कर दिया। इसका मूल्य उन्हें भी चुकाना पडा। विरासत में मिली ये चीजें रोमानिया वालों के लिए गौरव की वस्तुए हैं।

गौथ एव अन्य आक्रमणकारियों ने रोमनों की नींव को बिलकुल झकझोर दिया। फलत २७१ ई० के आते-आते सभी रोमनो का बोरिया बिस्तर बंध गया। रोमनों के चले

जाने के बाद डसिया की क्या स्थिति रही, इस बात पर इतिहास—वेत्ताओं में काफी मतभेद है। ट्रान्सिलवानिया के दावे सम्ब धी कुछ ऐसी बातें हैं जो बहुत ही उलझी हुई प्रतीत होती हैं। फिर भी, रोमानिमा की सस्कृति मे उसके अपने दाबे के बहुत से तथ्य प्रकाश में आते हैं। ट्रान्सिलवानिया को हस्तगत करने मे डेसियावालो ने जिन मुसीबतों को झेला वे वर्णनातीत हैं। ट्रान्सिलवानिया पर हगरी वालो ने अपना आधिपत्य कायम कर लिया तथा वहाँ अपनी स्थिति को और मजबूत बनाने के लिए उन लोगों ने जर्मनी का सहारा लिया। तुर्कों के आक्रमण से हगेरीयनो की पकड ढीली पडने लगी और तब रोमानिया वालो ने अपने दो महत्वपूण भूखण्डो वालेसिया और मोडालविया में बसना शुरु कर दिया।

तुर्कों के हाथ मे शासन के जाते ही पूरा भूखण्ड भ्रष्टाचार, कदाचार एव अनाचार में डूब गया। वालेसिया और मालडेविया के राजकुमारो ने सुल्तान को प्रभूत उपहार देने के लिए गरीब किसानो पर तरह तरह के करों का आरोपण करके उनके जले पर नमक छिड-कने जैसा काय शुरु कर दिया। किसानों की हालत सोचनीय हो गई। वे अपने निम्नतम स्थान पर पहुच गये थे। इस अत्याचार ने उनके दिल, दिमाग एव देह सब को चूर-चूर कर दिया था। निराशा ही उनकी एक मात्र सगिनी बन गई थी। आशा की किरण कहीं फूटती दृष्टिगोचर नही हो रही थी—

"दुबल पडा जहां जन का मन
तन बल क्या कर सकता है।"

उनका मन ही हार चुका था। वे भाग्यवादी बन गये थे। उनके प्रत्येक कम में उदासीनता झलक रही थी। उनके विषय में ये कहावतें प्रचलित हो गई थीं—

"शासक की इच्छा ही न्याय है।"
"जिस हाथ को आप काट नहीं सकते उसका चुम्बन कीजिए।"
"शासन में हेर - फेर की बात मूर्ख सोचते हैं।"

—इत्यादि।

किसान वग एव मजदूर वर्ग— ये ही सर्वाधिक पीडित थे। लेकिन, इन दोनों में एक दूसरे के प्रति विश्वास का अभाव था। वे एक दूसरे को सदेह की दृष्टि से देखते थे। अत, उन्होंने कभी भी एक साथ जुटकर मुक्ति के लिए प्रयास नहीं किया। यहा तक कि हर आदमी हर दूसरे आदमी को शंका की दृष्टि से निहारता था। लेकिन सभी किसानों में एक सामान्य बात थी कि वे तुर्कों से घृणा करते थे। उनका कहना था—"पराधीन सपनेहु सुख नाही।" अत माइकेल महान् ने तुर्कों से लोहा लिया। तुर्कों को मुह की खानी पडी। पहली बार वालेसिया, मालडाविया एव ट्रान्सिलवानिया तीनो प्रदेश एक सूत्र में बध गये। तबसे ये तीनों रोमानिया के अभिन्न अग माने जाते हैं। माईकेल महान् की हत्या कर दी गई। तुर्कों ने पुन अपनी पकड़ मजबूत कर ली। किसानों की अवस्था और

दयनीय हो गई। उनके हृदय में विद्रोह की ज्वालामुखी पलने लगी जो अचानक १७८४ में फूट पड़ी। किसानो को कुछ सुविधाए दी गइ। इस सफलता ने उनके हौसले को बहुत बढावा दिया। उनके आगे के कायक्रमो के लिए इसने प्रभूत पथेय प्रदान कर दिया। १८वी शताब्दी के अन्त मे फ्रास की राज्य क्रान्ति हुई। उसने रुमानिया वासियों को युद्ध सम्बन्धी पर्याप्त मसाला प्रदान किया। रूसी लोगो की सहायता से तुर्कों को शक्तिहीन बना डाला गया।

पश्चिम के जागरण के प्रभाव से रोमानिया भी नहीं बच सका। यहा भी विद्रोह हुआ। जब समन्तों ने अपना अस्तित्व खतरे में पडा देखा तो उन लोगों ने तुर्कों को आमन्त्रण भेज दिया। रूसी सैनिको ने भी विदेशियो का ही साथ दिया और विद्रोह दबा डाला गया। इस घटना से लोगों में बडा क्षोभ पदा हुआ। उन लोगो ने समझ लिया कि अपनी सहायता आप करनी है। इस ख्याल से ब्लाज (Blaj) नामक स्थान में एक सभा का आयोजन किया गया। ४०,००० लोगो ने इनमें भाग लिया। इस सभा मे उन लोगों ने रोमानिया के विधि विधान, भाषा सस्कृति एव राजनैतिक अधिकारों की रक्षा की शपथ ली थी। इसी समय वालेसिया एव मालडाविया को सयुक्त किया गया और उसे रोमानिया की सज्ञा दी गई। इनके एकीकरण के लिए प्रयास शुरु हुए। अनेको सघर्ष हुए। सफलता नही मिली। इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रपति श्री चाउसेस्कू ने कहा है—"किसानों को राजनैतिक एव भू-सम्बन्धी अधिकार प्राप्त नही थे। वे जमीन्दारो एवं पूजीपतियों के दोहरे बोझ के नीचे पिस रहे थे। अत विशेषकर उनकी अभिरुचि जमीन्दरों से मुक्ति पाने की ओर थी। वे आर्थिक और सामाजिक सुधार कर जीवन में सुख की कामना कर रहे थे। कृषक वर्ग देश का एक शक्तिशाली विद्रोही दल था लेकिन संचालन के अभाव में इनका तीर निशान पर नहीं लग रहा था। तब मजदूर वर्ग ने बीडा उठाया और उन्हें ही इसका श्रेय भी मिला।"

शुरु से ही रोमानिया सोशलिस्ट विचार रखता था। १८९३ में रोमानिया में "शोसल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ वर्कर्स" की स्थापना हुई। लेकिन, कुछ ही दिनो में यह छिन्न-भिन्न हो गई। तब दस वर्षों के वाद फिर यह पार्टी पुनर्जीवित हुई।

१९०७ ई० में किसानों ने अविस्मणीय विद्रोह की लहर फैलायी। वृद्ध राजा कैरोल की सरकार ने विद्रोह की लहर को बडी निर्दयता से दबा डाला। १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध ने विश्व को आ घेरा। रुमानिया ने रूस का साथ दिया। १९१५ में बेसारबिया और ट्रान्सिलवानिया रोमानिया के हाथ लगे। १९१९ के पेरिस कान्फरेन्स में ट्रान्सिलवानिया रोमानिया का अग बना दिया गया।

इस तरह बहुत दिनों की अभिलाषा पूरी हुई। माईकेल महान इत्यादि देशभक्तों का स्वप्न साकार हुआ। रोमानिया अब एक स्थायी राज्य बन चुका था। इसी समय चाउसेस्कू का जन्म हुआ। युद्ध का प्रभाव था। सारे योरप में उद्योगीकरण जोर-शोर से हो रहा था। देश के नेतृत्व के प्रश्न को मजदूर वर्ग पर छोड दिया गया। रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना हुई और यह लेनिन के अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिष्ट सगठन से

सम्बद्ध कर दी गई। लेकिन, शुरू से ही रूमानियन पार्टी ने देखा कि दोनों के हितों मे काफी भिन्नता है। फलत उन दोनो का मेल चिरस्थायी न हो सका। अल्पव्यस्क होते हुए भी चाउसेस्कू राजनीति में निष्णात हो चुका था। इस घटना का जिक्र करते हुए उसने लिखा है "१९२१ की मई की महासभा में अधिकांश प्रतिनिधियों ने कम्युनिष्ट पार्टी की रचना एव इसके अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिष्ट पार्टी से खुलेआम सम्बद्ध किये जाने के पक्ष में अपना मतदान किया। दूसरी ओर कुछ प्रतिनिधि अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिष्ट पार्टी से सम्बद्ध होना तो चाहते थे, लेकिन कुछ विशेष मामलो मे स्वतन्त्र भी रहना चाहते थे। इस समय रोमानिया के अन्तर्गत इतनी राजनैतिक, सामाजिक, और आर्थिक बुराइया घर कर गइ थीं कि यह देश समाजिक विद्रोह के लिए पूर्ण परिपक्व हो गया था। समाज में बडी गहरी खाई उत्पन्न हो गई थी और एक बार फिर रोमानिया को राष्ट्रीय गौरव एव वाह्य शक्ति के बीच पिसना पडा।" इस तरह १९१८ से १९३० ई० के बीच रोमानिया में साम्यवाद का जन्म हुआ, फिर भूमिगत खण्डित हुआ और अन्त में पुन सगठित होकर भविष्य की ओर आँख लगाये खडा हो गया।

प्राय ऐसा देखने और सुनने को मिलता है कि जहा सम्पन्नता है वहाँ सन्तति की बडी लालसा होती है और जहाँ विपन्नता है वहाँ सन्तति की बाढ सी आ जाती है। ऐसे ही एक विपन्न परिवार में चाउस्सेकू का जन्म हुआ था। दस दस बच्चों का लालन-पालन इनके दीन माता पिता के लिए कठिन था। ग्यारह वष की आयु में ही चाउसेस्कू को गृह त्याग कर रोटी की तलाश मे बुखारेस्ट जाना पडा जहाँ वह एक मोची के अधीन कार्य करने लगा।

चाउसेस्कू के पिता एक सामान्य कृषक थे। सदियों की मुसीबतो ने उन्हें भाग्यवादी बना दिया था। राजनीति के प्रति उनमें कोई रुचि नहीं थी। इन कारणों से चाउसेस्कू को उच्च शिक्षा न मिल सकी। लेकिन, एक चीज ने उसके चिन्तन एव कल्पना को सशक्त पख प्रदान किया। उसे बराबर विद्रोह तथा शहीदो की कहानियाँ सुनने को मिलती थी। इन रोमांचकारी गाथाओं का चाउसेस्कू पर गहरा प्रभाव पडा। उसने इतिहास की प्रत्येक घटना को विशेष प्रकार से टटोलना शुरू किया। सामान्य जनता की धारणा से बिलकुल अलग चाउसेस्कू ने अपनी विचारधारा कायम की। जब वह पाठशाला में था तभी से उसका झुकाव राजनीति की ओर था। उसके पुराने प्रधानाध्यापक श्रा इवानबरास्कू का कहना है कि उसी समय से चाउसेस्कू के कदम राजनीति की ओर उठ पड़े थे। उसके एक दूसरे शिक्षक का कहना है कि उसकी यावदाश्त विलक्षण थी। वह अतीव जिज्ञासु अनुशासित एव परिश्रमी था। उसकी लगन, उसकी रुचि एव उसके परिश्रम को देखकर एक स्थानीय जमींदार ने एक बार कहा था—'अगर मौका मिला तो यह बालक एक बहुत बड़ा सगठन कर्त्ता होगा।" यद्यपि यह असभव सा लगता है, फिर भी यह निर्विवाद सत्य है।

चाउसेस्कू की समस्त वाल्यवस्था कठिनाइयों, मुसीबतों, आत्मत्याग एव सुकर्मों से पूण है। उस काल में रोमानिया की राजनीति मे भूचाल-सा आ गया था। शासन में स्थायित्व

का बिल्कुल अभाव था। राजनीति में अनाचार और दुराचार दोनों का समावेश हो चुका था। कैशेल एव मगदा लुपेस्कू की घटना ने समस्त रोमानियों में तहलका मचा दिया था। चाउसेस्कू के छोटे से ग्राम में सिफ इसकी प्रतिध्वनि ही सुनाई पड़ती थी। लोग मात्र इस विचार से ही प्रसन्न थे कि उन पर कोई विदेशी शासन नही कर रहा था। ११ वष की अवस्था में चाउसेस्कू ने जब घर छोड़ा, रोमानिया का अथतन्त्र बिल्कुल चकनाचूर हो गया था। कृषि तथा उद्योग दोनों इससे प्रभावित थे। कारखानो में काम करने वाले का वेतन कम हो गया था, बेरोजगारी बढ़ गई थी, तथा जो लोग पेशेवर थे उनके कार्य करने की शत इतनी घिनौनी हो गई थी जितनी कभी नही। इन आकस्मिक परिवतनो के कारण नये उद्योगपति एव व्यापारी हतप्रभ हो गये थे। मात्र एक दशक की घटना थी। उनका सोचना था कि कुछ ही दिनों में देश की अथ व्यवस्था पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेंगे। लेकिन समय ऐसा बदला कि वे अब खड़े होने के योग्य भी नहीं थे। उनके पैर टूट चुके थे। रोमानिया में केवल १९२९ में ३०० हड़तालें हुई तथा बाद के तीन बर्षों में पुन १०० हड़तालें हुई।

इसी समय फासिस्ट आन्दोलन का जन्म हुआ। यह आन्दोलन उग्र राष्ट्रीयता, धर्मान्धता और यहूदी विरोधी नीति पर आधारित था। फासिस्टो के नेता कार्नेली कौडरेनू ने भोले-भाले किसानों को जी भर के ठगा।

इन सारी घटनाओं की जानकारी बालक चाउसेस्कू को थी। १९२९ में जब वह बुखारेस्ट पहुचा, उस समय वहा की हालत अजीब थी। हड़ताल एव प्रदर्शनों के कारण पूरे शहर की स्थिति डावांडोल थी। चाउसेस्कू ने अलेक्जेन्ड्र सैण्डुलेस्कू नामक मोची के यहाँ काम शुरू कर दिया।

यदि चाउसेस्कू के जीवन को रोमानिया के इतिहास की सज्ञा दी जाय तो कोई अतियुक्ति न होगी। कारण यह है कि चाउसेस्कू ने अपने भूत की चर्चा में सदा सयम से काम लिया। उसका प्रत्येक भाषण रोमानिया के इतिहास की पुनरावृत्ति करता है। जब वह शहर से बाहर एक काम में लगा तो उसकी मुलाकात एक ऐसे भद्र पुरुष से हुई जिसने उसके जीवन में ताजगी भर दी। उसने इस किशोर को अध्ययन की ओर प्रवृत्त किया। फलस्वरूप मार्क्स, एजेल इत्यादि की रचनाओ से उसने प्रेरणा ली। तेरह वर्ष की अवस्था में समाजवादियों की नीतियों को पचाकर उसने एक ऐसी नीति कायम की जिसमें माक्स, लेनिन के आदेश भी प्रतिबिंबित होते थे। इसके अतिरिक्त उसमें कुछ ऐसी मौलिकता थी जो रोमानिया की राष्ट्रीय भावना को पूर्ण रूपेण समाविष्ट करती थी।

१३ १४ वर्ष की अवस्था में ही चाउसेस्कू राजनीति का कुशल खिलाड़ी बन चुका था। सचमुच यह अत्यन्त आश्चयजनक मिसाल है। उसके विचार इतने सुलझे हुए होते थे जिन्हें सुनकर लोग दग रह जाते थे। उसकी इस उपलब्धि के पीछे दो प्रधान तथ्य हैं— (१) उसकी बाल्यवस्था की विकटता और (२) प्रकृति-प्रदत्त असामयिक प्रौढ़ता। जिन घटनाओं की चर्चा से लोगों की वाणी में भाग्यवादिता, विवशता एव निराशा टपकती थी

उन्हीं की सुनकर चाउसेस्कू के मानस में बिल्कुल विरोधी विचार कौंध जाते थे। इतिहास से ही उसने सीखा था कि रोमानिया की हार के पीछे उसकी अपनी कमजोरी थी। उनमें एकता, सगठन एव धैय का अभाव था। अगर उन्हें सबल नेतृत्व मिला रहता तो सफलता अवश्य उनके साथ होती। स्वभावत चाउसेस्कू में चाणक्य जैसी विद्रोह की भावना थी।

उस उम्र में भी उसके उद्देश्य स्पष्ट एव दृष्टिकोण सुलझे हुए थे। इसकी हर गति विधियों के पीछे तत्कालीन सामाजिक एव आर्थिक परिस्थितिया थीं। चाउसेस्कू स्वय एक किसान का पुत्र था। किसानों की दीनता से वह अच्छी तरह परिचित था। गावों में उद्योगों की स्थापना ने भी उनकी विपदा बढाने में कोई कसर उठा नही रखी थी। उसने सुना था कि शहर के कारखानों में काम करने वाले मजदूर बहुत अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं तथा एक बडे परिवार का भी लालन पालन बडी सुगमता से कर लेते हैं। चाउसेस्कू जब बुखारेस्ट पहुचा तो उसने यहां का नजारा कुछ और ही देखा—

"ख्वाब देखा था हर राह में
रौशन है चिराग।
आखें खुली तो शहर मे भी
उजाला न रहा ।।

१९३३ में बुखारेस्ट में भयकर हड़ताल हुई। मजदूरों एव सैनिकों में जमकर सघर्ष हुआ। यद्यपि इस सघष में कम्युनिष्टों का प्रत्यक्ष हाथ नही था फिर भी वे किसी न किसी रूप में वत्तमान थे। इस समय पार्टी के अन्तगत मात्र १००० सदस्य थे। इतनी क्षीण सदस्यता के होते हुए भी उन्हें अपने सगठन पर भरोसा था। उन्होने देश में घूम घूमकर विभिन्न मजदूर वग के प्रतिनिधियों से मुलाकात कर अपनी भावी योजनाओं का ब्यौरा प्रस्तुत करना शुरू किया। मजदूरो को जमीदारों के विरुद्ध उत्तेजित किया। इसी समय चाउसेस्कू को पार्टी की निम्नस्तरीय सदस्यता प्रदान की गई। बस क्या था ? तत्क्षण मोची के काय को तिलांजलि देकर वह देश के औद्योगिक क्षेत्रो में युवको के सगठन के काय में जुट गया।

जब वह पद्रह वर्ष का था, कम्युनिष्ट पार्टी ने एन्टी फासिस्ट सभा का आयोजन किया था जिसमें उसे फासिस्ट-विरोधी कमिटी का सदस्य चुन लिया गया। उसे अपने विवेकपूण एव स्पष्ट विचारो से लोगों को अवगत कराने का भी अवसर प्रदान किया गया। अत्युक्तिपूण होते हुए भी उसका भाषण जोशीला होता था। जिस तरह ऊचे पवतों से नदी की वेगवती धारा फूट पडती है तथा वह कब, किधर मुडेगी पता नही रहता, ठीक उसी तरह चाउसेस्कू के आरम्भिक भाषणों की दशा थी। विषयान्तर बराबर होता था। लेकिन, बाद में उसने अपने भाषणों को इतना संयत किया कि यदा-कदा ही उसके भाषणों में उत्तेजना परिलक्षित होती है। उसकी वक्तृत्व कला का इतना प्रभाव पडा कि पार्टी की प्रत्येक सभा, जुलूस एवं हड़ताल कमेटी की किसी भी सभा में उसका भाषण होना ही था। २३ नवम्बर १९३३ में हडताल कराने के अभियोग में उसे जेल जाना पडा। लेकिन, शीघ्र ही उसे छोड दिया गया। तब से उस पर पुलिस की निगरानी रहने लगी। बिना किसी

हिचक के पुन उसने अपना काय शुरू किया और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति उसने अपनी आस्था व्यक्त कर दी।

भयानक कम्युनिस्ट आन्दोलन कर्त्ता

पन्द्रह वर्ष की अवस्था में चाउसेस्कू एक क्रान्तिकारी के नाम से विख्यात हो चुका था। राज्य का अस्तित्व ही उसके कारण खतरे में पड गया था। शासको की आखो मे वह कांटों की तरह चुभ रहा था। इस विप्लवी को सजा देना एक विकट समस्या वन गई थी। इसकी उम्र प द्रह वष की थी परन्तु अपराध करने मे यह तीस वष के व्यक्ति से भी आगे था। इसे राजनैतिक कैदी बना कर चहारदीवारी में ब द करना भी खतरे से खाली नही था क्योंकि ऐसा करने पर जन आन्दोलन हो सकता था। उससे तर्क करना, उसे धमकाना तथा उसे सताना भी असम्भव सा लगता था। चाउसेस्कू ने प्राय अपने अ तर्ज्ञान से अपने ही समाज में एक विदेशी की भूमिका अदा करने का निणय किया था।

अनेकों बार उसे जेल जाना पड़ा, उसे अपने गाव भेज दिया गया। लेकिन इससे उसमें किसी प्रकार का परिवतन न हो सका। यह सत्य सिद्ध हो गया कि जो बालक अपनी रोटी के लिए ११ वष की ही अवस्था में घर छोड कर बाहर की धूल फांकने को मजबूर हो गया, १५ वष की ही ऊम्र में माता पिता के प्रभाव में आकर अपने विचारो को नहीं बदल पाएगा। अपने कायक्रमों के विषय में उसने अपने पिता से भी चर्चा की लेकिन उसके पिता ने इस विषय में कोई दिलचस्पी नही दिखाई। जीवन के प्रति उनका विचार ऋणात्मक था जिससे चाउसेस्कू कभी सहमत नही हो सका। निराशा, भाग्यवादिता, अधीरता आदि शब्द उसके शब्दकोष में थे ही नहीं। १९३४ में उसे तीन बार जेल जाना पडा। जेल से छूटते ही पार्टी के आदेशानुसार उसे बुखारेस्ट से ६० मील दूर ऐसे स्थान में जाना पड़ा जहा के मजदूरों ने हडताल की थी। उनके विरुद्ध अदालती कारवाई चल रही थी। वहां जाकर इस नवयुवक को अभियुक्तों के पक्ष में जनमत एकत्र करना था। अभियुक्तो में एक रेलवे कर्मचारी घेयोरघिउ डेज थे जो बाद में कम्युनिष्ट पार्टी की सेन्ट्रल कमिटी के प्रथम सचिव बने तथा दूसरे कमचारी थे शिवस्टोइकर जो कम्युनिष्ट पार्टी के मूद्धन्य नेता थे। इसके अलावा कुछ अन्य नेता भी थे, जैसे जाज वैसीलीची, डिमिस्ट्री, पिट्रेस्कू, इत्यादि।

अदालती कार्रवाई कई दिनों तक चलती रही। जनता भी अभियुक्तों के पक्ष में थी। वातावरण बहुत गम्भीर था। जिस समय अदालत ने अपना फसला सुनाया, कचहरी के बाहर एक विशाल जुलूस निकाला जिसका नेतृत्व चार नेता कर रहे थे जिसमें चाउसेस्कू भी था। पुलिस ने इन चारों नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इन पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी गई। चाउसेस्कू ने उत्तर दिया कि वह राजधानी के मजदूरो की ओर से प्रति निधित्व करने के लिए भेजा गया है तथा अभियुक्तों के प्रति उसकी हमदर्दी है। उसने आर्थिक शोषण एव स्वत त्रता के अपहरण के लिए शासक वर्ग को दोषी ठहराया। इन चारो नेताओं को एक मैजिस्ट्रेट के पास लाया गया। उसने धमकी देकर इन्हें रिहा कर दिया

लेकिन बुखारेस्ट के प्रधान पुलिस अधिकारी को इनके विरुद्ध सख्त - कारवाई के हेतु आन्तरिक मन्त्रालय से आदेश भी भेज दिया गया। फलत, चाउसेस्कू को भूमिगत होकर ही काम करना पडा तथा हमेशा पुलिस से बचने का उपाय सोचना पडता था। फिर भी २७ अगस्त १९३४ को वह पुलिस के घरे मे आ ही गया। लेकिन तत्काल उसे छोड दिया गया। १७ सितम्बर १९३४ को पुन कदी बना लिया गया, इस बार फासिस्ट-विरोधी सभा का आयोजन करने के अपराध में। इस समय फासिस्ट नेता आयरन गाड की स्थिति बहुत सुदृढ़ थी। यद्यपि रोमानिया राष्ट्रीय उदार दल के शासन मे था फिर भी कशेल का समथन प्राप्त होने के कारण फासिस्टों को पुलिस और सेना दोनो की मदद मिलती थी। चाउसेस्कू के परिचय पत्र पर लिख दिया गया— "भयानक एव खतरनाक कम्युनिष्ट आदोलनकर्ता।" पुलिस की देखरेख में बुखारेस्ट से १० मील दूर उसके गाँव मे, हाथ पर बधा हुआ उसे लाया गया। स्थानीय कोतवाली मे प्रतिदिन चाउसेस्कू को अपनी उपस्थिति देनी पडती। उसे गाव छोडने की सक्त मनाही थी। लेकिन, शेर कही पिजडे में वन्द रहना पसन्द करता है? वह एक दिन पुन बुखारेस्ट के लिए रवाना हो गया। उसके माता पिता पर फिर पुलिस की कडी नजर पड गई। बार बार उनसे पूछ ताछ होने लगी। निकोलिना, चाउसेस्कू की बडी बहन थी जो बहुत पहले से ही कम्युनिष्ट कार्यकर्ता बन चुकी थी। ऐसे अवसर पर वही एक मात्र चाउसेस्कू और उसके माता पिता के बीच की कडी थी। इस अवधि में वह कुछ अधिक सक्रिय नही रहा बल्कि उसने अपना अधिकाश समय आवश्यक साहित्य के अध्ययन में लगाया। इस प्रकार १८ वष की अवस्था तक चाउसेस्कू असने दल के सिद्धातो, विधानों एवं आदर्शों से पूण परिचित हो चुका था। उसकी स्मरण शक्ति इतनी तीक्ष्ण थी कि वह बहुत कठिन एव उलझी हुई, प्राचीन रोमन कविताओं का सस्वर पाठ बडी आसानी से कर लेता था। लेकिन इतना राष्ट्रवादी था कि जानते हुए भी कभी मार्क्स इत्यादि के उतने ही उलझे हुए गद्यांशों को उद्धृत नहीं करता था।

निकोलाई टिलेस्कू रोमानिया का विवेक पुरुष माना जाता था। वह किंग कैरोल के अधीन १९३२-१९३६ तक विदेश मन्त्री पद को सुशोभित कर चुका था। विदेशों में उसने रोमानिया की आवश्यकताओं एवं उसके आदर्शों का बडा अच्छा प्रतिनिधित्व किया था। लेकिन, अब उसे अप्रत्यक्ष रूप से राजा की अलोचना करने के रूप मे पदच्युत कर दिया गया था। राजा की शक्ति क्षीण हो रही थी, तिस पर भी उसने अपने राज्य को कायम रखने के लिए अपने ही पैरों पर कुल्हाडी मार ली। वह अपने मन्त्रियों एव अन्य विदेशी शक्तियो को प्रसन्न करने में ही जुट गया जो एक हास्यास्पद कर्म था। सबो को खुश करना मनुष्य की शक्ति से परे है। फल स्वरूप, रोमानिया की स्वतन्त्रता एव राजा का ताज दोनो ही खतरे में पड गए।

कम्युनिष्टो के साथ और सख्ती बरती जाने लगी। इस समय तक चाउसेस्कू को बुखारेस्ट के उत्तर, प्रहोवा जिला के कम्युनिष्ट नवयुवक दल का सचिव चुन लिया गया था। कैरोल पर उसका आतक हावी हो गया था।

चाउसेस्कू ने अपनी गतिविधि में बहुत प्रगति ला दी थी। वह पुन हिरासत में ले लिया गया। उसे ब्रासव के जेल में रखा गया जहा अन्य फासिस्ट बिरोधी अ दोलनकर्त्ताओ को रखा जाता था। उस पर फासिस्ट बिरोधी होने, कम्युनिष्ट होने तथा उग्र प्रतिक्रिया-वादी होने के अपराध में मुकदमा चलाया गया। अदालत की कायवाही चली रही थी। उसी समय तर्नोवस्की नामक एक कायकर्त्ता ने कैदियो के प्रति दुव्यवहार के विरुद्ध गैलरी मे ही अपना विरोध प्रकट किया बस, क्या था? चाउसेस्कू तत्क्षण खडा हो गया। कोलोवेल शेओरघे ने उस पर सैनिक न्याय सम्बन्धी धारा १४ का उल्लघंन करने का आरोप लगा दिया। उसे छ महीनो की कद की सजा हुई। प्रारम्भ में उसे किसी से मिलने की मनाही थी लेकिन, बाद में फ्री वल्ड के एक सवाददाता को उससे भेंट करने की अनुमति दी गई। चाउसेस्कू और तोर्नोवस्की दोनो को एक पहरेदार ने बाहर लाया। चाउसेस्कू प्रश्नो का उत्तर इतन तेजी से दे रहा था जसे उसे बहुत कुछ कहना हो। तोर्नोवस्की मितभाषी था, लेकिन वह अपने हाव भाव से ही अपना अर्थ समझा देता था।

७ जून १९३६ को ब्रासव के कोट ने अपना फसला सुनाया। चाउसेस्कू दोषी माना गया। अर्थदंड के साथ-साथ उसे दो साल कैद की सजा हुई। उसे दफ्ताना के जेल मे भेज दिया गया जो उस समय सबसे खू खार लोगो के लिए बनवाया गया था। उस जेल के विषय में फ्रांसीसी लेखक हेनरी बारबुसी ने लिखा है— "रोमोनिया के राजनैतिक कैदियों के लिए एक विशेष प्रकार का जेल है जिसे "दफ्ताना का कैदखाना" कहा जाता है। उसमें "एच" नामक एक विशेष विभाग है जहा भयकर अपराधियों को रखा जाता है। कैदियो के हाथ पैर बाध दिये जाते हैं। ९ फीट ३ फीट के सेल में उ हें रखा जाता है, जिसमें न हवा प्रवेश पा सकती है, न रोशनी ही। शौच इत्यादि की तो कोई व्यवस्था है ही नहीं। कैदियों को सप्ताह में तीन दिन भोजन के नाम पर ऐसी चीजें दी जाती हैं जो खाने लायक होती ही नहीं। कैदियों को तालवों पर इतनी मार पडती है कि बे अपने सेल में आते-आते बेहोश हो जाते हैं और अन्त में काल कलवित हो जाते हैं।

सचमुच, दफ्ताना के उस कसाईखाने के विषय में रोमानिया वालों को बहुत पहले से ही जानकारी थी। फरवरी १९३६ में जेल के अधिकारियों ने समान विचार एव गति-विधि वाले कैदियों को एक साथ रखने का निर्णय ले लिया जो उनकी भयकर भूल थी। जब जुलाई १९३६ में चाउसेस्कू वहा पहुंचा तो उसे उसी के जैसे विचार रखने वाले कैदियों के साथ रहने का अवसर मिला। "बिलाई के भागे शिकहर टूटी"। शीघ्र ही कैदियों ने कम्युनिष्ट पार्टी की एक छोटी इकाई की स्थापना जेल में ही कर ली। फलत जब किसी कैदी को पीटा जाता तो ये "नहीं मारो नही मारो" का नारा बुलन्द करने लगते थे। जेल के अन्दर ही प्रदशन, मौन जलूस इत्यादि होने लगते थे। बाहर भी जनता तोड फोड कर बैठती थी। जेल के सन्तरी इन घटनाचक्रों के बिलकुल अनभ्यस्त थे। उनके लिए ये नयी चीज थी। वे हतप्रभ हो गये थे। सचमुच, अपराध की भावना ही अपराधी बनाती है। ऐसा होने पर ही अधिकारियों की दाल गलती है। अन्यथा वे व्यर्थ सिद्ध होते हैं। इन कैदियों में अपराध की भावना थी ही नहीं। ये शेर की भाति गरजते तथा सतरियो की काबू के बाहर थे। इस कारण बार बार कैदियों के समर्थकों एव अधिकारियों के समर्थकों में जेल के बाहर ही

हिंसात्मक कारवाइया हो जाया करती थी। हार कर अधिकारियो को कैदियो की मांगों के आगे झुकना पडा। कैदियो के साथ सख्ती में ढीलापन आया, मिलने वालों के लिए दरवाजा खोल दिया गया तथा कैदियो को भाषण की स्वतन्त्रता प्रदान की गई।

शिक्षक, लेखक तथा अ य बुद्धिजीवी जो दफ्ताना जेल में कैद थे, सबों ने मिलकर एक पुस्तकालय खोला तथा रोमानिया की प्रादेशिक भाषा, फ्रासीसी भाषा, जर्मन और रूसी भाषा में लोगों को तरह-तरह की शिक्षा देना आरम्भ किया। पूरा जेल एक विश्वविद्यालय जैसा बन गया। यही कारण है कि उसे "क्रान्ति का विश्वविद्यालय" की सज्ञा दी गई। कुछ दूसरे लोगों ने इसे "द्ररो" की सज्ञा दी। रोमानिया के वर्त्तमान पर इस कैदखाने की अमिट छाप पडी। जो इस जेल की चहारदीवारी में ब द रहे १९४४ के बाद कम्युनिष्ट पार्टी मे अपनी योग्यता के अनुसार पद पा ही गए।

चाउसेस्कू के जीवन में इस जेल का बहुत बडा योगदान ररा है। वहा वह एक विद्यार्थी की जिज्ञासा से पढ़ता तथा एक बुजुग प्राध्यापक की योग्यता से दूसरों को भी पार्टी के सिद्धान्तों से अवगत कराता था। दफ्ताना के अगणित वाद-विवादो में उसने भाग लिया तथा अपने सुलझे हुए विचारों और पार्टी के आदर्शपूर्ण तथ्यो को प्रस्तुत कर लोगों के मन को मुग्ध कर लिया।

जेल के सतरियों से उसकी पटरी नही बैठती थी। वे उससे तग रहते थे। सभी उसे "अडियल घोडा" कहते थे। सतरियो ने तग आकर जेलपाल के यहा निम्नलिखित आवेदन भेजा "हम सभी सतरी, श्रीमान् कारापाल से यह आवेदन करते हैं कि कैदी निकोलाई चाउसेस्कू ने २० फरवरी १९३७ की प्रात को आपके लिए अतीव अपमान के लहजे का प्रयोग किया तथा हम सबके प्रति उपेक्षा का भाव प्रदर्शित किया तथा साथ ही हमें अपने कर्मों के लिए भला बुरा कहा।"

८ दिसम्बर १९३८ को चाउसेस्कू को रिहा कर दिया गया। बुखारेस्ट पहुँचते ही उसने पुन अपनी गतिविधि पूववत् तीव्र कर दी।

१९३८ का जाडा पडा। सारा यूरोप सास रोके हिटलर की गतिविधि का अध्ययन कर रहा था। ब्रिटेन में चेम्बरलेन और रूस में स्टालिन, हिटलर के आतक से अपने को बरी समझ रहे थे। कोमिनटन, रोमानिया की आन्तरिक दशा से अनभिज्ञ था तथापि, वे रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी पर इस बात के लिए दबाव डाल रहे थे कि बेसारबिया को रूस को सौप दिया जाय तथा ऐसी कोई गतिविधि नही दिखाई जाय जिससे हिटलर अप्रस न हो जाय। रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी के लिए ये दोनो शर्तें स्वीकार करना अत्य त गर्हित कर्म था। दूसरी ओर रूस को आशका थी कि रोमानिया फ्रास और ब्रिटेन के बीच सेतु का काय कर जमनी और रूस के विरुद्ध क्रियाशील हो जायगा।

कोमिनटन की नीति देश के लिए घातक सिद्ध हुई। इसका जिक्र अपने बाद के भाषणों में चाउसेस्कू ने इस प्रकार किया है "हिटलर के युद्ध का विरोध न कर कोमिनटन ने कम्युनिष्टों को ही भला बुरा कहा जो स्वदेश की स्वतन्त्रता की रक्षा मे लगे थे। इसका

फल यह हुआ कि पार्टी में दरार पड गई। इसका कार्य क्रम ठप्प पड गया। सदस्यो में शत्रुता पनपने लगी।

चाउसेस्कू के लिए यह परीक्षा का समय था। जहा वह इसे सवसाधारण की पार्टी बनाना चाहता था इसका अस्तित्व ही सकट मे पड गया था। अत पार्टी ने कोमिनटन को सतुष्ट करते हुए अपने विवेक से काम लेना शुरू किया। लेकिन, इसका फल यह हुआ कि आगे चलकर पार्टी में दो दल हो गए—१ स्वदेशी दल और २-रूस समथक दल।

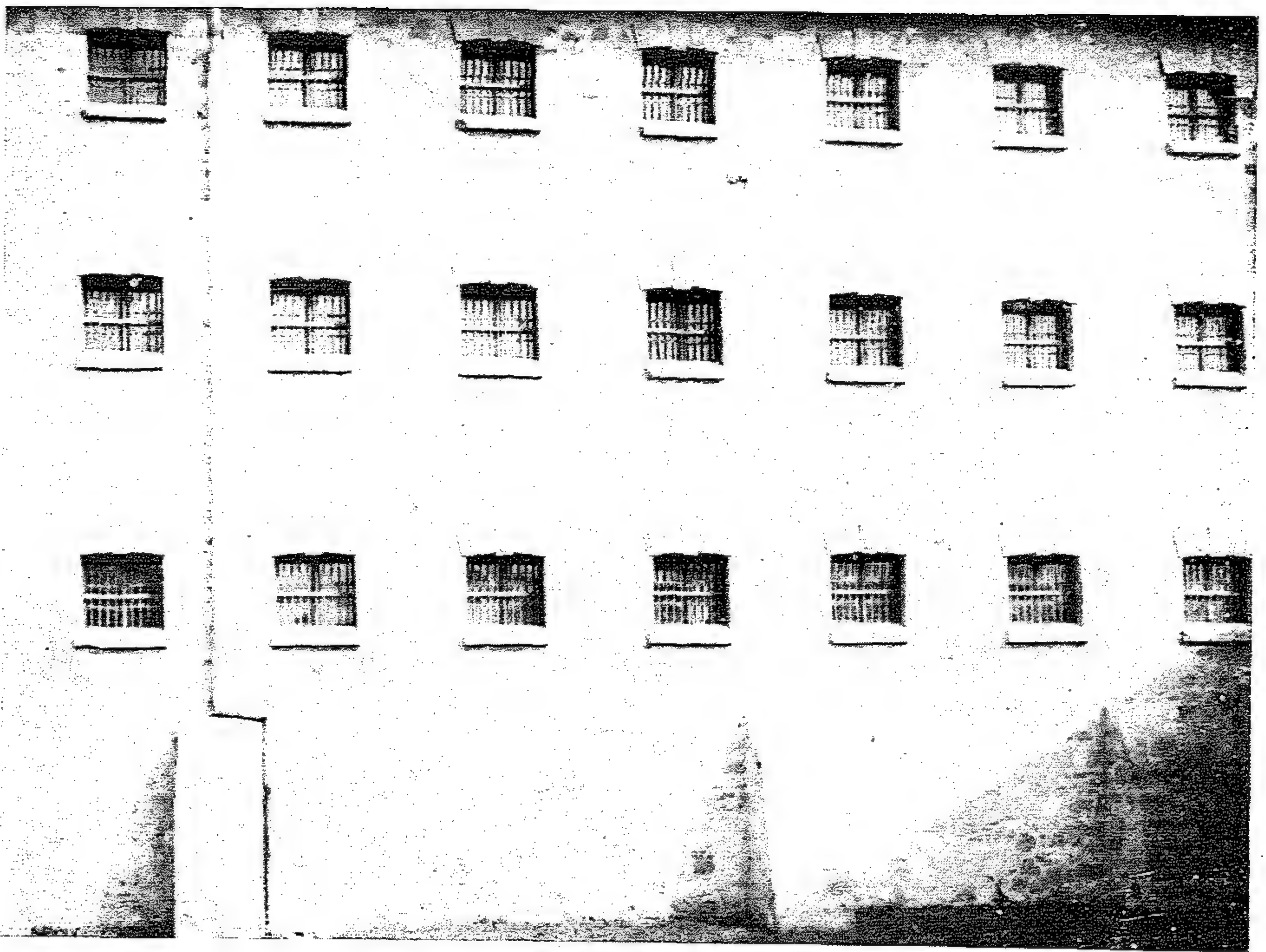
१९३९ में चाउसेस्कू ने अपनी गतिविधि बढ़ा दी थी। लेकिन, तत्कालीन राजा करोल ने सभी राजनीतिक पार्टियों को नपुसक बना दिया था और घोर निराशा का क्षण था। इसी बीच कैरोल ने जर्मनी से गलत सधि कर ली। फलस्वरूप रोमानिया को अपनी भूमि के एक तिहाई भाग से हाथ धोना पडा। जेनरल इबन इन्तोनेस्कू ने उसे पदच्युत कर शासनतन्त्र अपने हाथ में ले लिया। यह व्यक्ति बिल्कुल दक्षिणपथी तथा फासिस्ट के नेता आयरन गाड का प्रबल समथक था।

ऐसे वातावरण में स्वभावत कम्युनिष्टों को भूमिगत होना पडा। सभी सभाओ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया तथा प्रत्येक कम्युनिष्ट सदस्य पर सरकार ने निगरानी शुरू कर दी। इसके अतिरिक्त कम्युनिष्टों को और नीचा दिखाने के उद्देश्य से सरकार ने मजदूर सघ की स्थापना की जिसपर सरकार का पूण नियंत्रण था। कम्युनिष्टो को किसी भी सघ की सदस्यता से वचित कर दिया गया। यहाँ तक कि चाउसेस्कू को जो बहुत काल से "चमडा और जूता उद्योग कमचारी सघ" का सदस्य था, १९३९ मे निष्कासित कर दिया गया।

१ मई को जो कम्युनिष्टों का एक पवित्र दिन माना जाता है, सरकार ने "राष्ट्रीय मजदूर दिवस" करार किया। इसके प्रतिशोध में कम्युनिष्टों ने इस दिवस को फासिस्ट विरोधी आन्दोलन में बदल दिया। इस दिन जो जलूस निकला उसे राजा कैरोल अपनी बालकोनी में खडा होकर देख रहा था। जुलूस में करीब २०,००० प्रतिनिधि थे। इसने यह प्रमाणित कर दिया कि जनमत राजा के विरुद्ध है। फलत कम्युनिष्टो की शक्ति कुछ बढ़ी फिर भी कम्युनिष्टों के साथ एक भारी समस्या थी। अभी आयरन गाड का किसानों एव मजदूरों पर काफी प्रभाव था। इस लिए जनमत एकत्र कर कम्युनिष्टो की विजय का सयोग कम दिखाई पड़ता था।

अत इन लोगों ने जनता को अपने पक्ष में लाने के लिए अनेकानेक प्रयत्न किये। हडताल, देशविरोधी काय क्रम, वनभोज नाटक आदि हुए। घटना स्थलों पर भी इन लोगों ने जनता को अपने विचारों एव कार्य-क्रमों से अवगत कराकर उन्हें अपने पक्ष में लाना शुरू किया। इसी सिलसिले मे एलेना पेट्रेस्कू से चाउचेस्कू की मुलाकात हुई जो बाद में उनकी पत्नी बनीं।

चाउसेस्कू को रोमांटिक जीवन में फलने-फूलने का अवकाश नहीं मिला क्योंकि, वह राजनैतिक काय क्रमों में पूरी तरह उलझा हुआ था। पार्टी की बढ़ती हुई शक्ति सरकार



डोफ्ताना जेल, जिसमें निकोलाई चाउसेस्कू १९३६-३८ की अवधि में कैद रहे

का सरदद बन रही थी। अधिकारी पागल हो रहे थे। सितम्बर १९३९ मे चाउसेस्कू ने अपने भाषण के क्रम मे आन्दोलन को और अधिक गतिशीलता प्रदान करने एव संगठन को दृढ़ करने के लिए लोगो से आग्रह किया। उसी सभा में उसे पार्टी का जेनरल सेक्रेट्री बना दिया गया। यह उसके लिए प्रथम उत्तरदायित्वपूण पद था। लेकिन, इसके पहले कि वह अपनी जिम्मेवारी निभाता उसे तीन साल की कैद तथा ४०० डालर जुर्माने की सजा हो गई। जुर्माना नही देने पर २०० दिनो तक कद की अवधि और बढ़ा दी गई। उसके भूमिगत होने के कारण कोर्ट का यह निणय था। अब उसके सामने दो ही काय थे—१—पुलिस की हिरासत से बचना तथा २—अपनी पार्टी के कार्यों के लिए योजना तैयार करना।

लगभग ९ महीनो तक वह देश के विभिन्न भागो का छदम वेष में दौरा करता रहा और सगठन का काय करता रहा। इस प्रकार उसने इयासी, सरनौजी, किचनी, गलबाजी तथा क्राइवा में क्षेत्रीय कमिटी की स्थापना की। लेकिन, जुलाई के अन्त मे एक जुलूस की योजना बनाते समय वह पुलिस की हिरासत मे आ गया। इस बार उसे बुखारेस्ट से दक्षिण जिलावा के कारागार मे बन्द कर दिया गया। यह कारागार भूमि खोदकर निर्मित किया गया था। बहुत ठंड रहती तथा धरती हमेशा सद रहती थी। इसके अतिरिक्त यहा कैदियों की अच्छी-खासी भीड एकत्र हो गई थी। यहा अधिकाश कदी वे थे जो आयरन गाड के विरोधी थे। यहा भी चाउसेस्कू तथा अन्य कम्युनिस्टो ने दफ्ताना जैसा अपना कायक्रम शुरू कर दिया। कारागार का अनुशासन भग हो गया। सतरियों से उसने इस मेल मिलाप से बातें करनी शुरू की कि अन्ततोगत्वा कुछ सतरी भी उसका समथन करने लगे। इसका व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था जो स्टील को भी झुका देता था। जिलावा के भाषणों की तुलना मे बाद में उसके कम ही भाषण हुए।

अन्तोनेस्कू के नेतृत्व में आयरन गाड का नियन्त्रण बहुत प्रभावशाली हो चुका था। फिर भी, घटना चक्र जिस गति से चल रहा था उससे वह बहुत ही परेशान हो रहा था। इसके अतिरिक्त अन्तोनेस्कू के नेतृत्त्व में जर्मनी से हुयी मुठभेड में ट्रान्सिलवानिया के हाथ से निकल जाने के कारण वह बहुत क्षुब्ध था। अत गार्डों में वे सदस्य जो अपने शत्रुओं को समूल नष्ट कर देना चाहते थे, अत्यन्त सक्रिय हो गए। सबसे पहले उन्होने अपना ध्यान यहूदियों की ओर मोडा। उनसे निपटने के बाद वे राजनैतिक शत्रुओ की ओर मुखातिब हुए।

उग्रपथी सैनिकों ने सारे देश को रौंद डाला। एक के बाद एक कई नृशस हत्याए की गईं। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता एव राजनीतिज्ञ निकोलाई आयोग्रा एव अथशास्त्री वर्गिलम जरु मौत के घाट उतार दिये गए। इन पागलों ने विरोधियो के घरो को सपरिवार जला डाला, किसानों से धन ऐंठा। इस प्रकार इन लोगों ने २७ नवम्बर की रात्रि मे जिलावा कारागार पर सशस्त्र धावा बोल दिया। ये राजनतिक बन्दियो के सेलो की ओर टूट पडे। उन सेलो में से २० सेलों मे वैसे कैदी थे जो आयरन गार्डों के विरोधी थे। दुष्टो ने बिना चेतावनी दिये ही उनमें से ६४ को मौत के घाट उतार दिया। तदुपरान्त वे वहा पहुचे जहां कम्युनिस्ट नेता एव फासिस्ट विरोधी नेता कैद थे। यहा चाउसेस्कू एव उसके

मित्रों के द्वारा सतरियों मे अपने सिद्धान्तो के प्रचार ने जादू का काम किया। जो सैनिक जेल की रक्षा कर रहे थे वे तुरत गतिशील हो गये और सेल के चारो ओर उन्होने जबदस्त मोर्चा बन्दी कर ली। फलस्वरूप उग्रपथी सनिको को पीछे हटने के अतिरिक्त कोई चारा न रहा।

जिलावा की नृशस हत्या की घटना ने आयरन गार्डों के पतन का माग प्रशस्त कर दिया। इस अप्रत्याशित घटना से अन्तोनेस्कू बहुत क्षुब्ध हुआ। उसने आयरन गार्डों के विरुद्ध जेहाद छेड दी। उसके समथक सैनिको ने आयरन गार्डों को भूमि पर सुला दिया। इस प्रकार उनका आतक समाप्त हुआ। लेकिन, इन सारी घटनाओ ने अन्तोनेस्कू को बिल्कुल झकझोर दिया था। अत वह अपने को हिटलर के पक्ष मे कर देश के सभी शत्रुओ का मुह बन्द करने के लिए निकल पडा। अब क्या था। एक स्थायी सैनिक न्यायालय की स्थापना हो गई। जिलावा का कारागृह मृत्यु सजा पाने वालो का एक कूड़ा-गृह बन गया।

इन सारी घटनाओं मे चाउसेस्कू कभी पर्दे पर नही आया। क्योंकि, जब रोमानिया और जर्मनी दोनो ने मिलकर रूस पर आक्रमण किया था, इसके पूथ ही चाउसेस्कू जनता को भडकाने के आरोप मे हिरासत में ले लिया गया था। यह उसके लिए वरदान सिद्ध हुआ। इस जेल में भी उसने अपना कायक्रम जारी रखा। अधिकारियो को इस बात का भान हो गया कि यहा भी कम्युनिस्ट जेल की चहार दीवारी के पीछे अपना कायक्रम चला रहे हैं। अत चाउसेस्कू एवं अन्य कैदियों को कारान सेबिस के कारागार में भेज दिया गया। इस कारा में नियति ने उनकी पर्याप्त सहायता की। यहा का कारापाल डोरवियन था। उसने चाउसेस्कू और जाज हाइट्रेज को अपने कार्यालय में बुलाकर रेडियो, समाचार आदि सुनने की आज्ञा दे दी। इसके अतिरिक्त वह स्वय भीतर-बाहर का समाचार उन्हें सुनाने लगा। युद्ध की समाप्ति के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने डोरवियन को जेनरल का रक प्रदान कर दिया। १९४३ में चाउसेस्कू को मुक्त करने के लिए बुखारेस्ट के बकारेस्टी कारा में लाया गया। वहा से उसे टीगु जीउ के रिफ्यूजी कैम्प में ले जाया गया। इस समय विश्व विख्यात द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका जमनी को तबाह कर रही थी। रोमानिया ने भी जमनों का साथ देकर अपने को तबाह कर डाला था। बिना किसी लाभ के रोमानिया के ३५०,००० व्यक्ति मारे गये थे। चार लाख से अधिक की कृषि एव अन्य औद्योगिक वस्तुए नष्ट हो गई थी।

टिर्गुजिउ कैम्प भ्रमणकारियों का एक अडडा था। इसमें कई झोपड़ियां थी। प्रत्येक में लगभग २५०-३०० व्यक्ति रहते थे। चाउसेस्कू ने शीघ्र ही एक झोपडी में स्थान पा लिया, जहा कम्युनिस्ट के हाई कमाण्डर रह रहे थे। अत जार्जिऊ-डेज, शिवस्टोविका, आयन जौर्जी तथा अन्य लोगो के साथ वह अन्दरूनी मामलो का सदस्य बन गया। इस कैम्प में कम्युनिस्टों की सख्या बहुत कम थी। लेकिन, जब अन्तोनेस्कू पदच्युत कर दिया गया तब यह कैम्प किसानों, समाजवादियों, बुद्धिजीवियों, कलाकारों, उदारवादियों तथा अन्य लोगों से पूरा भर गया। इस कैम्प के सतरियों में पहले जैसा उत्साह नहीं रहा। वे भी अब कडे अनुशासन के प्रति उदासीन हो चुके थे। सरकार की ओर से भी कुछ ढिलाई

हो रही थी। ऐसा निर्णय लिया गया कि कैम्प के लोगो की टुकडियाँ बना बनाकर आस-पास के इलाको मे लेजाकर उनसे काम कराया जाए। चाउसेस्कू इसी प्रकार की एक टुकडी का नेता बन गया। इस प्रकार बाह्य जगत् से उसका सम्पर्क बढ़ गया।

धीरे धीरे कैम्प के चारों ओर काय शुरू हो गया। कैदी बीमार पडने लगे। उनके इलाज के लिए उन्हें कैम्प से भेजा जाने लगा। इस प्रकार कैदी आस पास के इलाको से काफी वाकिफ हो गए। कई बैरको मे अब रेडियो सेट आ गये थे, जिससे युद्ध-सम्बन्धी जानकारी प्रतिदिन मिलती रहती थी। अन्तोनेस्कू की सरकार उलट चुकी थी। १९४४ के वसत तक ऐसा लगा कि रूस पूरे रोमानिया को अधिकत कर लेगा। ३१ अगस्त तक रूसी सेना बुखारेस्ट मे पहुंच चुकी थी। अन्तोनेस्कू के पदच्युत होते ही नयी शासन-व्यवस्था स्थापित हो गई। किस तरह यह व्यवस्था कायम हुई, यह आज तक एक पहेली बनी हुई है।

अतीव रहस्यमय ढग से चाउसेस्कू जी, जार्जिउ-डेज आयन जाज तथा मौरर टीगु जिउ कैम्प से भाग निकले। यह घटना अन्तोनेस्कू के पदच्युत होने के कुछ ही दिनों पूव की है, अत कम्युनिस्ट इसे बहुत ही बढा चढाकर नाटकीय ढग से प्रस्तुत करते हैं। लेकिन, विदेशी इतिहासकारो का मत इससे भिन्न है। तथ्य यह है कि टीर्गुजिउ कैम्प मे ही कम्युनिस्ट नेता अपने भविष्य के कायक्रमो की योजना बना रहे थे तथा उस पर अमल करने का तरीका ढूढ रहे थे। जमनी परास्त हो रहा था तथा रूस उस पर हावी होता जा रहा था। नेताओं को चिन्ता लगी थी कि अगर यही अवस्था बनी रही तो रोमानिया पर भी रूस का आधिपत्य हो जायगा और देश की जो दुरवस्था होती है उसे भुगतना पडेगा। अत रूस के आगे मित्रता का हाथ बढाने में ही कल्याण नजर आ रहा था। लेकिन, इस माग मे एक जबरदस्त बाधक था—अन्तोनेस्कू। अत उसे अपदस्थ करने के बाद ही कोई उम्मीद की जा सकती थी। इस उद्देश्य से १९४३ मे "एन्टी हिटलर पैट्रिओटिक फ्रट" की स्थापना, कम्युनिस्ट पार्टी, द प्लाउमैन्स फ्रट, द यूनियन आफ पैट्रीयट्स, मडोज, सोसलिस्ट पेजैन्ट पार्टी तथा सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी के मेल से हुई। इस समुक्त फ्रट ने अपने उद्देश्य तक पहुचने मे जी जान लगा दिया। १९४४ के अप्रैल में कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी को मिलाकर "यूनाइटेड वर्कस फ्रट" की स्थापना हुई। उसके बाद जून महीने मे "नेशनल डेमोक्रेटिक ब्लौक" की स्थापना हुई जिसमें कम्युनिस्ट पार्टी, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी, नेशनल पेजैन्ट पार्टी तथा लिबरल पार्टी वालो को समाविष्ट किया गया। पार्टी ने सेना के अधिकारियो से मेल-जोल बढ़ाया तथा देश-भक्त जनरलो से विद्रोह के लिए "मिलिटिरी कमेटी" बनाने के लिए आग्रह किया। अन्त में, १९४४ के अगस्त में रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने अन्य फासिस्ट विरोधी दलो के सहयोग से सशस्त्र विद्रोह छेड दिया। २३ अगस्त १९४४ को अन्तोनेस्कू कैद कर लिया गया। सनातेस्कू के अधीन एक नई सरकार ने शपथ ग्रहण किया। इस विद्रोह में राजा माईकेल ने भी अपना पूरा सहयोग दिया था। यह सत्य है कि इन सभी घटनाओ के पीछे कम्युनिष्टो का प्रधान हाथ था। २३ अगस्त की सध्या में राजा माइकेल ने देश की जनता

क नाम अपना सदेश रेडियो से प्रसारित किया जिसमे उसने अन्तोनेस्कू को पदच्युत करने तथा नेशनल डेमोक्रेटिक ब्लौक के चारो दलो क एक एक नेता को लेकर नयी सरकार बनाने के अपने सारे निणयो का उल्लेख किया ।

इस घटना के पीछे रूस के द्वारा रोमानिया के अधिकत होने का भय था जिससे राजा माइकेल तथा कम्युनिष्ट दोनो भयभीत हो चुके थे। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कम्युनिष्ट पार्टी के दो दल बन गये थे—१ स्वदेशी दल, तथा २ मास्कोवाइट दल। स्वदेशी दल मे चाउसेस्कू, जार्जोउ डेज, शिवस्टोसिया, आयनजार्ज, मौरर तथा अन्य व्यक्ति थे। मास्को वाइट दल में रुसी समथकों का बोलबाला था। इस दल का नेतृत्व एन पौकर करती थी। इसे रोमानिया के कम्युनिस्ट पार्टी की ज्वाला उगलने वाली नेत्री कहा जाता था। इसे प्रत्येक आदेश रूस से प्राप्त होता था तथा रूसी शली का शासन रोमानिया मे स्थापित करने के लिए इसने जी तोड परिश्रम किया। १९५२ में इसे अपदस्थ कर दिया गया।

स्वदेशी दल इस मत से पूण सहमत था कि अगर रोमानिया मे कम्युनिज्म कायम करना है तो यह एक उचित ढग से जनप्रिय आन्दोलन के रूप में होना चाहिए तथा इसके लिए देश के अन्दर ही प्रयास होना चाहिए। अत किंग कैरोल के साथ उन्होंने जो सहयोग किया उसमें उनका यह उद्देश्य छिपा हुआ था कि वे दिखाना चाहते थे कि हम भी माग के पथिक रहे हैं, पहले से ही।

चाउसेस्कू की पार्टी के सदस्यों के लिए १९४४ के अगस्त और सितम्बर के महीने अत्यन्त उत्तेजनापूण एव तनावपूण रहे। १९४५ के फरवरी में याल्टा-समझौता हुआ जिसमें पश्चिम के मित्रराष्ट्रों ने रूस को रोमानिया के मामले में पूरी स्वतन्त्रता दे दी। फलत रूस ने राडेस्कू को अपदस्थ कर डा० पेट्रू गोजा की सरकार बनवाने के लिए रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी पर दबाव डालना शुरु किया। अत पेट्रू गोजा के अधीन नयी सरकार बनी। इस प्रकार रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी पर रूस का प्रभाव बढ़ने लगा। चाउसेस्कू ने अपना प्रधान काम यह किया कि जमनी के विरुद्ध रूस की ओर से लडने के लिए सेना की एक टुकडी का सगठन किया तथा उसे रणक्षेत्र मे भेज दिया। अगस्त की घटना के बाद चाउसेस्कू "यूनियन औफ कम्युनिस्ट यूथ" का जेनरल सेक्रेटरी बना दिया गया। इसके बाद उसने अपने भाषणों का क्रम जारी किया। २९ सितम्बर १९४४ को उसने बुखारेस्ट विश्व विद्यालय के प्रागण में छात्रों के समक्ष भाषण दिया और उन्हें समस्त छात्र सन्य दल कायम करने की सलाह दी ताकि एक फासिस्ट को देश से मार भगाया जाय जो जनतन्त्र के विरोधी थे।

अक्टूबर में वह युवक मजदूरों की सभा में भाषण दे रहा था। करीब १०,००० नव युवक एकत्र थे। भूतपूर्व सरकार की निन्दा करते हुए तथा उन्हें प्रजातन्त्र का विरोधी करार करते हुए उसने भविष्य में रोमानिया में कम्युनिस्ट शासन के लिए जनता का समथन प्राप्त कर लिया।

वह कभी रूस के भरोसे बैठा नही रहा। देश की आजादी के लिए स्वय प्रयत्न करता रहा। इस प्रकार पार्टी के अन्तगत चाउसेस्कू का व्यक्तित्व निखरता गया। उसे एक से एक जिम्मेवारी का पद सौंपा जाने लगा। १९४८ के आते-आते वह पार्टी की केंद्रीय समिति का सदस्य बन गया था। अब उसका पर उन्नति के सोपान के मध्य मे दृढ़ हो चुका था और अब धीरे धीरे उसे चोटी तक पहुचना था।

इसी बीच उसने एलेन पेट्रेस्कू को पुन ढूढ निकाला। बिना किसी उत्सव के दोनों दाम्पत्य सूत्र म बध गये। राजनैतिक चहल पहल मे ही दोनो का हनीमून बीता। पाकुर ने अ धाधु ध पार्टी मे सदस्यो की भर्ती कर ली थी। सदस्यो की सख्या ३००,००० तक पहुच गई थी। इसमे बहुत से सदस्य आयरन गाड के समथक थे। यह स्थिति पार्टी के हित के विरुद्ध थी। अत चियासेस्कू, जौजिऊ डेज तथा मौरर और स्टोशिया को मास्को समथक एन पोकर से लोहा लेना पडा।

क्रान्ति करने का श्रेय रूस को दिया जा सकता है लेकिन, इसके पीछे हमेशा वह युद्ध की क्षति-पूर्ति के बहाने रोमानिया के शोषण में ही लग गया था। उसने रोमानिया के नेवी का पूरा उपयोग किया। ७०० उत्तम कोटि के व्यापारिक जहाजों का उपयोग किया। रोमानिया के तेल उदयोग तथा रेलवे के अधिकाश उपकरणो को वे ढो ले गये। इस प्रकार अनुमान है कि सितम्बर १९४४ से जून १९४५ तक जो सम्पत्ति रूस ने हथियायी वह जमनी के द्वारा नष्ट किये गये ४०० मिलियन डालर के तिगुने से भी अधिक थी।

१९४५ मे पहली बार रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी की नेशनल कान्फ्रेस हुई। डेज ने आर्थिक और सामाजिक कायक्रमो की योजना तैयार की। मई १९४५ में रूस ने ट्रान्सिलवानिया को रोमानिया को सुपुद कर दिया तथा अगस्त में औद्योगिक रूप से क्रोजा की सरकार को मान्यता दे दी। क्रोजा की सरकार में प्रधान पदों पर कम्युनिस्ट ही आसीन थे जिसके कारण पश्चिमी देशों ने बडा ही कोलाहल किया तथा स्वय चर्चिल ने स्टालिन से पूछा—"रोमानिया में ९० प्रतिशत स्वदेशी कम्युनिस्टों के शासन से आप क्या उम्मीद करते हैं ?"

१९४६ में नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट प्रबल बहुमत से विजयी हुआ। सोवियत रूस का प्रभाव रोमानिया में व्यापक हो गया था। १९४७ के प्रथम छ महीने बडे आतक में गुजरे। पिजेन्ट अवैध घोषित कर दिया गया तथा नेताओ पर मुकदमा चलाकर उन्हें जेल में डाल दिया गया। नवम्बर के महीने गे एनपोकर विदेश मन्त्री बनी, टैसिल लुका वित्त मन्त्री बने तथा एमिल बोरनरस प्रतिरक्षा मन्त्री बना। ये सभी मास्को समथक तत्व थे। इस प्रकार क्रोजा की सरकार स्टालिन क इशारे पर नाचने लगी।

१९४७ के अन्त-अन्त तक रोमानिया मे कम्युनिज्म छाने लगा। ३० दिसम्बर १९४७ को किंग माइकेल ने पदत्याग के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिया। उसी दिन पिपुल्स रिपब्लिक आव रोमानिया का उदय हुआ। इसी दिन से मास्को समथक ऐन पोकर के दल तथा चाउसेस्कू के दल के बीच सघर्ष छिड गया। १९५१ तक पोकर दल के सामने चाउसेस्कू का

दल हतप्रभ सा रहा लेकिन १९५२ के आते ही पोकर दल निष्प्रभ हो गया तथा पार्टी के नेतृत्व से मास्को समथकों को निकाल बाहर किया गया।

चाउसेस्कू पार्टी से बाहर जाकर किसानो के कार्यों में बढ़ावा दिया करता था। १९४५ में वह पहली बार कषि विभाग का उपमत्री बना। इस नयी सरकार ने चकाब दी शुरु कर दी थी। उससे किसानों मे गलतफहमी बढ गई थी। चाउसेस्कू व्यक्तिगत रूप से किसानो को इससे होने वाले लाभो को समझाता तथा उन्हें आश्वस्त करता कि इससे उनकी भूमि उन्ही के पास रह जाती है दूसरो के हाथ नही जाती। १९५० मे वह सैन्य विभाग का उप-मत्री बना तथा सेना के राजनैतिक विभाग का उसे प्रधान बना दिया गया। उसी के बाद उसने मास्को समथको की जड काटने में सफलता प्राप्त की। पोकर इत्यादि को पदच्युत कर डेज ने अपने प्रति वफादार तकनिशियनो एव उद्योगपतियो को मत्रीमडल मे शामिल किया। इस प्रकार वस्तुत आधुनिक रोमानिया का वास्तविक इतिहास १९५२ मे पोकर का प्रभाव समाप्त होने के बाद से शुरु होता है जो स्टालिन की मृत्यु से आसान बन गया था।

चाउसेस्कू ने ऐन पोकर को दल से निष्कासित करने मे डेज की बडी सहायता की थी। इन दोनो का बचपन कठिनाइयों से ही गुजरा था। दोनो का व्यक्तित्व एक ही साचे मे ढला था। दोनों के विचारो में समानता थी तथा दोनो के उद्देश्य समान थे। चाउसेस्कू ने कहा है—"यद्यपि कुछ मामलो में हमारे विचार मेल नही खाते थे फिर भी हम दोनों इस मामे मे एक थे कि रोमानिया को किसी भी विदेशी शक्ति से मुक्त रखा जाय तथा देश की प्रगति हो।" इस सिलसिले में उसने डेज के सिद्धान्तो का अनुगमन एवं पालन पूर्ण भक्ति के साथ किया। यह धारणा शुरु से ही लोगों में बन गई थी कि डेज के बाद राजसत्ता चाउसेस्कू के हाथ में जाएगी। १९६५ तक डेज रोमानिया की सरकार का नेतृत्व करता रहा। उसकी मृत्यु के बाद राज्य सत्ता चाउसेस्कू के हाथो में आ गई। लेकिन, अब भी राजनीति के क्षेत्र में उसके दो प्रतिद्वंदी रह गये थे—जोज ए मोस्टल और शिव स्टोशिया। लेकिन, १९६९ में उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। इस समय चाउसेस्कू ने डेज की कुछ नीतियो की कडी आलोचना की। इस मामले में उसने लकेटू पट्रास्केनु की फासी की सजा का उल्लेख किया जिसे डेज ने स्वय अपराध में शामिल किया था। डेज के साथ सभी बातें ठीक थी लेकिन, वह कूटनीतिज्ञ नहीं था। विदेशी मामलो मे वह बिल्कुल अनाडी था। अत सत्ता मिलते ही चाउसेस्कू ने रोमानिया को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान करवा दी। इस काम के लिए उसने रोमानिया के वर्त्तमान प्रधान मत्री को चुना और उन्हें विदेश विभाग का मत्री बना दिया। १९५५ से १९६५ तक का जीवन चाउसेस्कू के लिए मात्र डेज की नीतियों का पालन करना था ताकि सोवियत रूस का प्रभाव रोमानिया से बिल्कुल समाप्त हो जाय।

स्टालिन के समय में रोमानिया की आर्थिक दशा सुधारने के हेतु सोवियत रोमानिया का सयुक्त प्रयास हुआ। यह तय हुआ कि दोनों पार्टी आधे का हिस्सेदार होगी तथा दोनों समान पूजी लगायेंगे एव लाभ के समान भागी होंगे लेकिन, रूस का सहयोग नाम मात्र का रहा। उसका एकमात्र उद्देश्य था अपनी क्षति-पूर्ति करना तथा रोमानिया की अर्थ व्यवस्था को परावलम्बी बना देना। फलत रूस ने रोमानिया के प्राय सभी कारखानों को

खरीद लिया। इसके बाद ई० ई० सी० के भाति सोवियत रूस ने "कौंसिल फार मुचअल इकानामिक एसिस्टेन्स (कोमेकन) की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। डेज ने इसका विरोध किया ख्रुश्चेव ने निकोलाई पदनोमी के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मडल भेजा। लेनिन का उद्धरण देते हुए उसने दो टूक जवाब दे दिया। उसका कहना था कि सभी कम्युनिस्ट देशों को समान तल पर आकर बातचीत करनी चाहिए। अत चाउसेस्कू ने स्पष्ट कर दिया कि किसी प्रकार के किसी समझौते मे वह भाग नही लेगा जिससे रोमानिया की प्रतिष्ठा पर कोई आच लगे।

१७ अप्रैल १९६४ में पार्टी की केन्द्रीय समिति की बैठक हुई। यह मिटिंग एक सप्ताह तक चलती रही। देश के सभी मूर्धन्य अधिकारी उपस्थित थे। इस सभा मे यह निणय हुआ जिसके अनुसार प्रस्ताव में सावभौम सत्ता, दूसरो के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना इत्यादि अपने मौलिक नीति निर्देश को स्पष्ट किया गया।

अपने व्याख्यानो द्वारा चाउसेस्कू ने रूस को कई बार ललकारा। इस कारण अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे उसे काफी सतर्कता बरतने को कहा गया। इन सारी बातो ने चाउ-सेस्कू के लिए एक बोध एव पुष्पहार का रूप धारण कर लिया।

माच १९६५ मे जोज डेज के निधन के पश्चात् जिस स्वाभाविक गति से चाउसेस्कू रोमानिया की सरकार का प्रधान बना वह एक रहस्यमय तथ्य है जो इस बालक के आकषक व्तक्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है कि रोमानिया की जनता अपने लोकप्रिय नायक के पीछे आख मूद कर भागी जा रही है। इस महान व्यक्ति का एक एक शब्द नपा तुला होता है तथा उससे सदा रोमानिया की जनता का उद्‌गार प्रकट होता है।

सत्ता पाते ही जिस कुशलता से इसने देश को प्रगति के पथ पर दौडा दिया वह प्रशसनीय ही नहीं वणनातीत भी है। देश की खनिज सम्पदा का उपयोग कर विभिन्न उद्योगो एव भारी मशीन कारखानो मे बहुत वृद्धि हुई है। गत पाच वर्षों में ५०० से भी अधिक औद्योगिक केन्द्रो की स्थापना हुई है। इस अवधि मे औसत वार्षिक आय-वृद्धि १४ ४ प्रतिशत हुई है। उत्पादन १५ ७ प्रतिशत की दर से बढा है। विद्युत् उर्जा, लोहा, स्टील, मशीन निर्माण इत्यादि क्षेत्रों में भी सतोषप्रद सफलता मिली है। कृषि के क्षेत्र मे भी उसने आन्दोलन-सा ला दिया है। चकब दी एव कषि के नवीन उपकरणों का प्रयोग कर उत्पादन को बहुत बढा दिया गया है।

चाउसेस्कू का दावा है कि पंचवर्षीय योजना के अन्तगत आगामी पाच वर्षों मे देश और तरक्की करेगा। इस अवधि में उद्योग में १० ५ प्रतिशत की वृद्धि की आशा की जाती है। यूरोप के देशों मे रोमानिया एक अत्यन्त सचेष्ट राष्ट्र है जिसे निस्सदेह आगे ही बढ़ना है। एक नूतन राष्ट्र होते हुए भी इसमे इतनी प्रौढता आ गई है जो बहुतो के लिए स्वप्न है। रोमानिया ने यह प्रमाणित कर दिया है कि किसी राष्ट्र या व्यक्ति की योग्यता में वृद्धि मात्र वय वृद्धि से ही नहीं हो जाती। अनुभव और ज्ञान के माग में उम्र कोई रोडा नही बना सकती। जो बूढे हैं वही अधिक अनुभवी हो सकते हैं, उन्ही की बात प्रामाणिक हो ऐसी कोई बात

नही। चाउसेस्कू की उम्र, उसके ज्ञान और अनुभव में कोई सामजस्य नहीं है। जिस कुशलता के साथ कुर्सी पर आते ही उसने देश की बागडोर को सभाला वह बहुतेरे कुशल प्रशासकों मे भी नही पायी जाती। उसकी ख्याति, उपलब्धिया सभी दूसरो के लिए अनुकरणीय हैं, आदश हैं। उसमें निझर की गति है। विघ्न, बाधा, कठिनाई, मुसीबत आदि उसे गुमराह नही कर सकते, उसे आधीर नही कर सकते। उसमे फौलादी शक्ति है। उसका प्रत्येक काय उद्देश्यपूण होता है। सदव अपने भाषणों से वह जनता में राष्ट्रीयता का भाव फूकता रहता है। उसका प्रत्येक भाषण रोमानिया की जनता के लिए "बाइबिल" है। उसकी तुलना हम क्यूबा के कस्ट्रो तथा कुछ गणमान्य अफ्रीकी शासको से कर सकते हैं।

उसने अपने प्रारभ के भाषणों में ही यह स्पष्ट कर दिया था कि वह किसी तरह का दखल किसी भी बाहरी शक्ति द्वारा सहन नही करेगा। इसके बावजूद अगर कोई देश उस पर हावी होने का दुस्साहस करेगा तो उसे वह सहन नही कर सकेगा। चाह वह कम्युनिस्ट देश हो या कोई गैर कम्युनिस्ट देश। उसके अपने ही शब्दो में—"किसी भी विदेशी सेना के दूसरे देश की भूमि पर पडे रहने से अन्तर्राष्ट्रीय सम्ब धो मे तनाव उत्पन्न हो जाता है तथा इस विदेशी सेना का ऋणात्मक प्रभाव सम्बन्धित देश पर होता है।" इस उदगार का सम्बन्ध रोमानिया में रूस की सेना तथा वियतनाम में अमरीकी सेना की उपस्थिति से है। बाद में चलकर उसने नाटो तथा वार्सा सन्धि की भी खूब खिल्ली उडाई तथा इनके विघटन के लिए अपनी आवाज बुलन्द की।

१९६५ में जब चाउसेस्कू रोमानिया का शासक बना, देश मे खुशी की लहर दौड गई। चारो ओर लोगो ने दीवाली मनाई। उसने आर्थिक, सामाजिक एव सैनिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी। इसी प्रसन्नता के वातावरण में कम्युनिस्ट पार्टी ने भी चाउसेस्कू को पूरी छूट दे दी। उसे पार्टी का नेता स्वीकार कर लिया गया।

१९६६ की मई तक पार्टी के अन्तगत चाउसेस्कू की स्थिति इतनी सुदृढ हो चुकी थी कि वह बिना किसी आक्षेप या पक्षपात के पार्टी के प्राचीन और अवचीन गुण दोषो का पूण विवेचन कर सकता था। उसने पार्टी में व्याप्त विभिन्न दुगुणों की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। उसने बताया कि पार्टी के इतिहास में हमेशा एक मत रहा हो, ऐसी कोई बात नही, अनेको बार इसके सदस्यों के बीच दरारें पडी और पुन पाट दी गयी। उसने पार्टी सम्बन्धी बुराई की जड कमिनटनो को ही बताया। उनके हस्तक्षेप और उनकी नीतियों ने पार्टी की बहुत क्षति की। अत इस सदभ में चाउसेस्कू के भाषणों ने रोमानिया की जनता में नवीन उत्साह, धैय, आशा तथा चेतना का सचार किया।

१९६६ के अपने एक भाषण में उसने कहा—"हमारी पार्टी ने एक ऐसी सुदृढ़ स्थिति कायम कर ली है जिसमें रोमानिया की जनता खुली सास ले सकती है।" इसने रोमानिया का एक अलग अपना अस्तित्व कायम कर दिया है। अब हमारा गगन मुक्त है, पवन मुक्त है। हम हर दिशा में अब अपना विकास कर सकते हैं तथा अपना समाजवादी राष्ट्र को फूलते फलते देख सकते हैं। इतना होते हुए भी हम दुनिया से अलग नही हैं, दुनिया में ही हैं।

अत अपनी रुचि, सुविधा, विचार, सस्कति इत्यादि को ध्यान में रखते हुए किसी भी देश से अपनी विशेष शैली मे मित्रता कायम कर सकते हैं।

तब से चाउसेस्कू पश्चिमीय देशो के लिए एक आदर्श बन गया है। रूस की ओर इशारा करते हुए सभी कहते हैं—देखो रोमानिया की ओर। कहने का अथ है कि रोमानिया की प्रगति तथा इसका नेतृत्व सबों के लिए एक स्पर्धा का विषय बन गया है। सच है रोमानिया रूस के लिए एक चेतावनी है।

यह छोटा सा देश मात्र झगडा-झझटो से दूर रहने के लिए रूस से दोस्ती का हाथ बढाये हुए है। लेकिन, फिर भी चाउसेस्कू हमेशा अपने भाषणो से जनता में राष्ट्रीयता जगाये रखने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। चाउसेस्कू के भाषण उसकी अह की तृप्ति के लिए नही बल्कि पूरे देश के हित से प्रेरित होते हैं। वह किसी अन्य देश के प्रति कोई बुरा विचार रखकर कुछ नही कहता बल्कि, कम्युनिस्ट जगत् की स्थिति से काफी परिचित रहने के कारण वह ठीक हथौडा उसी समय मारता है, जब लोहा गम हो जाता है। इस सदभ में चेकोस्लोवाकिया पर १६६८ के अगस्त में हुए आक्रमण के समय के उसके भाषण उल्लेखनीय है। 'चेकोस्लोवाकिया की भूमि पर एक साथ पाच समाजवादी देशो की सेनाओं का माच समाजवाद के नाम पर कलक है। इससे योरप की शाति को खतरा हो गया है तथा विश्व में समाजवाद का भाग्य खटाई में पड गया है। यह घटना आज के विश्व मे अशोभनीय, अव्यावहारिक एव बुद्धि से परे है।" एक लाख लोगो की भीड मे बोलते हुए उसने कहा—"जब लोग राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, अधिकार की समानता की माग कर रहे हैं, उसके जबाव में एक समाजवादी देश पर समाजवादी देशो के ही द्वारा आक्रमण करके किसी की स्वतत्रता का अपहरण करना अत्यन्त ही अशोभनीय घटना है। अत किसी तक की गुजाइश ही नही है यह सदा सत्य से कोसों दूर है। किसी भी देश की सेना की उपस्थिति किसी दूसरे देश मे रहकर उनके कार्यों में दखल दे, यह समाजवादी देशों के भाईचारे के बिल्कुल विरुद्ध है।"

समाजवाद के माग पर चलने के अपने-अपने माग हैं। प्रत्येक देश, राष्ट्र, वहा की जनता, सबकी अपनी-अपनी आवश्यकता, अपनी-अपनी सूझ तथा अपना-अपना ढग है। इसमें किसी को सलाहकार बनने की कोई आवश्यकता नही। हमारा विचार है कि सभी समाजवादी देशो तथा कम्युनिस्ट पार्टियों के लिए यह जरूरी है कि माक्स एव लेनिन के सिद्धातो का अनुसरण करते हुए अपना काय करे। लेकिन, इसमें किसी भी बाहरी देश या दूसरे देश की पार्टी के सदस्यो को अन्य देशों के मामले मे बिल्कुल दखल नही देना है। यह मूलभूत सिद्धात के आचरण के बिल्कुल विरुद्ध है।

आज से ही हमारे देश मे, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये हर वग के लोगो का अपना अलग अलग सैनिक सगठन होगा। हम चाहते हैं कि हमारे लोगो के बीच सशस्त्र सेना की इकाई कायम हो जाय जो समय पडने पर शान्ति, सुव्यवस्था कायम करने में सक्षम हो सके तथा देश पर सकट छाने के समय भी दुर्भाग्य की बदली को हटा दे।

हमारी जनता के प्रति हमारी जो जिम्मेदारी है उसे ध्यान में रखते हुए हम अपने कार्यक्रमों की ओर पूर्ण विश्वास एवं उत्साह से उन्मुख हो रहे हैं। रोमानिया के निवासी रोमानिया के अपने हैं। उनमें जाति-पाति या काला-गोरा का कोई प्रश्न नहीं है। सभी समान हैं। हम सबों का एक ही उद्देश्य है और वह है देश में एक सुव्यवस्थित समाजवाद की स्थापना।

ऐसा कहा गया था कि चेकोस्लोवाकिया में द्वैध तनाव की संभावना थी। कुछ लोग हमारे देश के लिए भी यह बात कह सकते हैं कि इस समाज में भी द्वैध तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। लेकिन, यह स्पष्ट है कि रोमानिया की जनता किसी भी बहाने से किसी दूसरे देश को इस देश की भूमि का अतिक्रमण नहीं करने देगी।

मेरे साथियो, देखो हम सभी यहां एकत्र हैं। सम्पूर्ण केन्द्रीय समिति, राज्य परिषद। हम सभी जनता का आदर करने तथा कृतज्ञतापूर्वक समाजवादी देश के निर्णय के लिए कृत-संकल्प हैं। यहां हम में से बहुतेरे हैं जिन्होंने कम्युनिस्ट होने के नाते तथा फासिस्ट विरोधी होने के नाते जेल और मृत्यु का भी वरण किया है। फिर भी, हमने कभी भी मजदूर वर्ग का अहित नहीं किया है। मेरे साथियो एवं देशवासियो, यह ध्यान से सुन लो हम कभी अपनी मातृभूमि तथा अपनी जनता को धोखा नहीं दे सकते। यह विश्वास है कि कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ता ऐसा उपाय ढूंढ़ निकालेंगे ताकि शीघ्र वे ही हमारे इतिहास की पुरानी घटनाएं फिर न दुहराई जाय। इस लिए हम कह सकते हैं कि कोई भी कम्युनिस्ट देश ऐसा कभी नहीं सोचेगा जैसा आज चेकोस्लोवाकिया में हो रहा है।

हम पूरे मन से कृत संकल्प हैं दुनिया के समाजवादी देशों, कम्युनिष्ट पार्टियों की एकता के लिए। हम चाहते हैं कि हमारे बीच की खाई मिटे, दीवार टूटे तथा मतभेद दूर हों, एकता कायम हो। इसके लिए अन्य देशों को भी कम्युनिस्ट पार्टियों को हमारी सहायता करनी पड़ेगी। इस प्रकार हमारा विश्वास है कि पूरे विश्व के समाजवादी लोगों की हम सहायता कर सकेंगे।

हम अपने देश की जनता से आग्रह करते हैं कि वह पार्टी और नेतृत्व में पूर्णरूपेण आस्था कायम कर देश में एकता और शांति बनाये रखें।

चाउसेस्कू में समय को पहचानने की अपूर्व शक्ति है "किं कार्यं कानि मित्राणि" को जसी परख उसमें है वैसी अत्यन्त दुर्लभ है। उसने भाषण के क्रम में रूस की चेकोस्लो-वाकिया पर आक्रमण करने के कारण घोर निन्दा की थी। उसे इसमें जरा भी झिझक नहीं हुई। उसके रूस विरोधी विचारों से स्वयं उसके देशवासी भी आतंकित हो उठे थे। उन्हें उसके भाषणों ने बिल्कुल भयभीत कर दिया था। वे लोग घबरा उठे थे। लेकिन, चाउ सेस्कू का दिमाग जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने समय की नब्ज पकड़ी थी। दवा का असर भी ठीक हुआ। दुनिया की आशा के विपरीत रूस ने बिल्कुल मौन धारण कर लिया। बस क्या था, चाउसेस्कू दुनिया के महान नेताओं में गिना जाने लगा। रोमानिया का सिर गौरव से ऊंचा उठ गया। चाउसेस्कू का भाषण प्रमाणक बन गया। सच, उसकी दूरदर्शिता

की हम दाद देते हैं। कितना नपा, तुला, सधा उसका तीर किस तरह ठीक निशाने पर लगा ? आज का रोमानिया जिस रूप में हमें दृष्टिगत हो रहा है वह उसी की देन है। वह अग्नि मे तपा स्वर्ण है जो हमेशा चमकता ही रहेगा।

जो मानवतावादी शक्ति चाउसेस्कू के भाषणो में है वह किसी अन्य पश्चिमी नेता के भाषणो मे नही, जब वह बोलता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि जनता की ही इच्छा शब्द के रूप में उसके मुख से प्रकट हो रही है। सचमुच, यह व्यक्ति एक में अनेक है। इसकी पृष्टभूमि मे जो घटनाए हैं इन सबों ने मिलकर इसे सच्चे अथ मे मानक बना दिया है।

जिस समाजवादी ढर्रे पर आज रोमानिया जा रहा है, वह माग चाउसेस्कू के द्वारा दिखाया गया है। रोमानिया अपना इतिहास स्टीफेन दि ग्रेट एव माईकेल दि ब्रेव के जमाने से शुरु होता है। अत कम्युनिस्ट देश होने के कारण चियासेस्कू इनके स्वप्नो को धूमिल करना नही चाहता। वह इनके स्वप्नो को साकार करना चाहता है। अत उसने अपनी पार्टी की अनेकानेक रूढ़ियो को समाप्त कर दिया है तथा जनता को एक नया माग दिया। ऐसा साहसिक काय अन्य किसी नेता ने नही किया।

इसने वे ही कदम उठाये हैं जो हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी उस परिस्थिति में उठाये। जनता की जरूरतों, मनोदशाओ एवं आकांक्षाओं का जितना अच्छा विश्लेषण वह जानता है उतना अन्य कहां मिलने को ?

लेकिन, इसका यह मतलब नहीं कि चाउसेस्कू ने ही रोमानिया को स्वतन्त्रता दिलाई तथा जो कुछ भी रोमानिया आज है, मात्र उसी के बल पर। हम ऐसा कह सकते हैं कि कम्युनिस्ट ने रोमानिया को एक नया जीवन प्रदान किया है तथा इसमें चाउसेस्कू ने एक जबदस्त भूमिका निभाई है।

अपने देश तथा विदेशो मे भी चाउसेस्कू की लोकप्रियता का कारण चेकोस्लोवाकिया पर रूसी आक्रमण के विरुद्ध उसके द्वारा अपनाये गये रुख हैं जिन्होंने सारे ससार को आश्चय चकित कर दिया। आज वहां की जनता ऐसे नेता को पाकर गदगद है।

इसके भाषणो ने विश्व के रगमच पर इसे एक उच्च कोटि के शांतिदूत एव कूटनीतिज्ञ के रूप में आसीन कर दिया। लोगो में यह धारणा बन गई कि यह व्यक्ति हमेशा अत्याचार के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करता रहेगा। शांति के लिए अथक प्रयास करेगा।

अभी हाल में उसके अनेकों भाषणों का अध्ययन किया गया है। पाया गया है कि चाउसेस्कू ने जो कहा है ठीक वही वह कर भी रहा है।

श्रमिक आन्दोलन, कम्युनिष्ट पार्टी और रोमानिया

रोमानिया मे क्रांतिकारी परिवर्त्तनों का इतिहास उन्नीसवी शताब्दी से प्रारम्भ होता है। १८४८ में टयूडर ब्लादीमीरेस्कू के नेतृत्व मे वलासिया, मोलडामिया और ट्रॉसिलवानिया की बुर्जुआ-प्रजातांत्रिक क्रान्ति, १८५६ मे मोलडामिया और बलासिया राज्यो का मिलन, १८६४ की कृषि सुधार तथा १८७७ मे राष्ट्रीय आजादी की प्राप्ति उन्नीसवी शताब्दी की कुछ प्रमुख घटनायें हैं जिसने देश के विकास की दिशा निर्धारित की तथा उत्पादन शक्तियो को गतिशील बनाया। पूजीवादी प्रभाव में उद्योगो के विकास के लिये कदम बढाये गये। लेकिन पूजीवादी सबंधो पर आधारित उत्पादन का सामंती स्वरूप सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था के विकास मे बाधक बन बैठा। ऐसी स्थिति मे जमीदारो से जमीन लेकर किसानो में उसका वितरण एक गम्भीर समस्या के रूप में सामने आया। इसी समय रोमानिया के उद्योगो में विदेशी पूजी का प्रवेश शुरु हुआ। विदेशी पूजी पतियो को अपने देशों मे औद्योगिक विकास के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी। परिणाम स्वरूप उन्होने रोमानिया के विकास पर ध्यान न दे कर सिर्फ सस्ते कच्चे माल के उत्पादन पर ही ध्यान दिया। साथ ही देश के आन्तरिक, राजनैतिक मामलो मे उनके निरंतर हस्तक्षेप ने देश की स्वायत्तता और स्वतंत्रता में गभीर बाधा उत्पन्न कर दी। सर्वत्र अनिश्चितता का वातावरण पैदा हो गया। इस अंधकारपूर्ण स्थिति में पूजीवादी व्यवस्था के गर्भ में एक नये सामाजिक वर्ग का जन्म हो रहा था और वह वर्ग था सर्वहारा वर्ग जिसने आने वाले समय मे देश के उद्धार और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। एक शोषण विहीन समाज की सरचना का सकल्प लेकर निरन्तर संघर्ष की दिशा में अग्रसर यह सर्वहारा वर्ग एक दिन रोमानिया के भविष्य का निर्णायक बन बैठा।

उत्पादन सम्बन्धो के बदलते हुये आयामो ने समाज के स्वरूप मे भारी परिवर्तन कर दिया। १८६४ के कृषि सुधारों के बावजूद भी जमीन की बड़ी मात्रा जमींदारो के हाथों में थी। जमींदार कृषि क्षेत्र में सुधारों से संबंधित किसी भी परिवर्त्तन का विरोध करते थे। रोमानिया उस समय मूल रूप से एक कृषि प्रधान देश था। देश के कृषक गरीब थे। उनके पास न तो जमीन थी और न राजनैतिक अधिकार ही। वे जमीन्दारो और पूजीपतियों के दोहरे चक्के में पीसते रहे। शोषण का नगा नाच होता रहा। निःसंदेह इन कृषको ने अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद करने की कोशिश की। लेकिन वे साधन विहीन और असगठित थे। परिणाम स्वरूप इनकी आवाज को शक्तिशाली हाथो ने दबा दिया। शोषण और अन्याय का सिलसिला चलता रहा।

पूंजीवादी सम्बन्धो के विस्तार एवं उद्योगो के विकास मे राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन में बुर्जुवा वर्ग के प्रभाव में वृद्धि की। पूजीवादी वर्ग उद्योगो के विकास यातायात तथा व्यापार के विकास में उस सीमा तक ही वृद्धि चाहता था जिस सीमा तक उनके स्वार्थों की

सिद्धि हो सके । उसे सम्पूण देश की समृद्धि से कोई जरुरत नहीं थी। देश का भाग्य च द पूजीपति इजारेदारो के साथ था और वे जैसा चाहते थ वैसा करते थे । जनता मे विद्रोह की अग्नि धीरे धीरे सुलग रही थी । इसी समय देश के रगमच पर बहुत सारे क्रान्तिकारी बिचारकों का आगमन हुआ जिन्होने देश में औद्योगीकरण की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा देश की स्वतत्रता और बहुमुखी विकास का माग दशन कराते हुये प्रजातात्रिक आन्दोलन की नीव डाली । जिस समय रोमानिया में बुजुआ प्रजातात्रिक आन्दोलन का सूत्रपात हुआ, उस समय बुजुआ वग का एक हिस्सा जमी दारो से मिल बैठा । शोषण की मशीनरी तीव्र कर दी गयी तथा जनता के अधिकारों को सीमित कर दिया । इस समय की सबसे प्रमुख घटना, रोमानिया के इतिहास मे श्रमिक वग का आविर्भाव था । श्रमिक वग रोमानिया में एक प्रगतिशील शक्ति के रूप मे उभर रहा था जिसने रोमानिया के मुक्ति आ दोलन में अपना योगदान किया। सवहारा वग का उदय रोमानिया के राष्ट्रीय जीवन की सबसे महत्वपूण घटना थी जिसने इतिहास की धारा को मोड दिया। रोमानिया में इस समय मध्यमवग की सृष्टि हो चुकी थी । एक बडी सख्या में छोटे व्यापारी तथा कारीगर इस श्रेणी मे आते थे जिनका लाभ देश के प्रजातात्रिक विकास में था । वज्ञानिक आर्थिक और सास्कतिक उ नति के कारण देश में बुद्धि-जीवी वग का प्रादुर्भाव हो चुका था , राजनतिक समस्याओ पर मतभि नता के वावजूद भी थे बुद्धिजीवी देश के चिंतन को नई दिशा देने में सक्षम हो सके । रोमानिया उस समय पूजीवादी विकास के प्रथम चरण से गुजर रहा था।

रोमानिया में श्रमिक वग के सघष का विकास मूल रूप से माक्स के वैज्ञानिक समाज वादी विचारो के आधार पर हुआ । रोमानिया के चिंतन की प्रजातात्रिक विधा को कायम रखने में वहा के क्रान्तिकारी विचारको का प्रमुख स्थान रहा। निकोलाई वालसेस्कू सीजर वीलियाक, मिटाईल कोगालनीसेयानू ऐसे टी तथा अन्य विचारकों ने समाजवादी विचारों के प्रचार एव प्रसार मे महत्वपूण भूमिका अदा की थी । १९ वी शताब्दी के प्रारम्भ में टियोडर डाईयामान्ट के साथ रोमानिया में "यूटोपियन समाजवाद" की बिचारधारा का भी प्रवेश हुआ। टियोडर डाईयामा ट "फाडरियर के समाजबाद" का प्रतिनिधि तथा १८३५ के "स्काइनी प्रोहोमा" का उत्प्रेरक था। रोमानिया के समाजवादी विचारक भरशिया रोसेटी, धीतोरधी पानू, मासिलकोटा तथा जमीर अरवोरे आदि ने डाईयामा ट के विचारो का समथन किया तथा तीभीओआरा में अन्तर्राष्ट्रीय सगठन की स्थापना की । इस अ तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना धीओरधे अगगुरीआन तथा कारौल फारकास के नेतृत्व में हुई । समाजवादी विचार धारा रोमानिया की प्रमुख बिचारधारा बन गई।

रोमानिया में समाजवादी तथा माक्सवादी विचारो के प्रचार प्रसार में समाजवादी प्रकाशनों का भी महत्व पूर्ण हाथ रहा । समाजवादी प्रकाशन "कोनटेमपोशनल" "रेमिस्य सोसीचाला" क्रिटिका सोसियाला" तथा स्वत त्र समाजवादी विचारक द्वारा प्रकाशित कुछ ग्रन्थों जैसे व्हाट डू दि रोमानियन सोशिलिष्ट वा ट" कालमाक्स एण्ड आवर इकोनोमिस्ट्स" "दि मेटिरियलिष्ट कोनसेप्ट आफ हिस्टरी" "दि एनार्की आफ थिंकिग" आदि ने रोमानिया की विचार धारा को एक नई दिशा मे मोड दिया । रोमानिया के साथ ही समाजवादी

आन्दोलन के प्रतिनिधियो के विचारो ने भी समाजवाद की तरफ बढते रोमानिया के मार्ग को प्रशस्त करने में सहायता पहुचाई। लोसिफनादजेदी स्टीफान स्टीका, पानाइट भुसोइयू, राइकु लेनेस्कू रीपोन तथा कोनस्टेन्टाइन जेड वजडुगान ने वैज्ञानिक समाजवाद के सदर्भ में रोमानिया के सामाजिक और राजनैतिक विकास की व्याख्या प्रस्तुत की। इन विचारो ने रोमानिया के जन-जीवन में एक खलवली पैदा कर दी। रोमानिया के लोग पू जीवादी तथा साम तवादी प्रथा के खिलाफ तथा समाजवादी मूल्यो की स्थापना के लिए एकजुट होने लगे। इस सदर्भ मे सबसे महत्वपूण भूमिका तत्कालीन समाजवादी विचारक को स्टेनाइन डोब्रोगीयानू घेरिया ने अदा की। उसने सामाजिक समस्याओं की सैद्धान्तिक और वज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। उनके विचारों में कुछ खामियों के बावजूद भी रोमानिया मे मार्क्सवादी विचारों के प्रसार में उनका योगदान स्वण अक्षरों में लिखा जायेगा। घेरिया ने ही सवप्रथम सर्वहारा क्रान्तिकारी विचारों की नीव डाली।

उस समय घनघोर शोषण का वातावरण रोमानिया मे मौजूद था। श्रमिकों एव जनता की दशा दयनीय थी। पूजीपतियों और विदेशी साम्राज्यवादियो ने मिलकर जनता को लूटना शुरू कर दिया था। किसी को कोई अधिकार नहीं रह गया था। दमन का काय तेजी से हो रहा था। ऐसी स्थिति में ही उपयु क्त राजनैतिक चेतना ने जनता के मानसिक स्तर को बहुत गहरे प्रभावित किया। जनता में कुछ करने की तमन्ना जग पडी। बुजुवा और सवहारा के बीच की दूरी बढ़ रही थी। सवहारा वग आपस में सगठित होने लगे थे। १६वी शताब्दी के अन्त में सवहारा आपस में संगठित होने में सफल हो सके और उनका प्रथम समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। सवहारा वर्ग के संगठन में वहाँ के तत्कालीन पूजीपतियों और विदेशी साम्राज्यवादियों ने बहुत बाधाए उत्पन्न कीं, आपसी फूट का वातावरण पैदा किया गया, लोगों को डराया गया। लेकिन ये लोग संगठित हो चुके थे। एकता का वातावरण बन चुका था। सगठन के महत्व को लोग समझने लगे थे। अलेक्जेन्डर लोनेस्कू तथा कैन्सो टाइन ओलसेस्कू के प्रगतिशील नेतृत्व में सवहारा वर्ग ने पहली बार काम के घंटो तथा आर्थिक माँगों की पूर्ति के लिए हडताल का सहारा लिया और विजयी हुए। उनकी इस विजय का रोमानिया की जनता पर गहरा असर हुआ। वे लोग जो सर्वहारा वग थे, झन्डे के नीचे सग-ठित होने लगे। रोमानिया में सवहारा जन जागरण का प्रथम चरण वस्तुत यहाँ पूण हुआ।

१८१५ में रोमानिया के श्रमिकों द्वारा सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी का गठन इतिहास का सबसे गौरवमय क्षण था। इस पार्टी ने सम्पूण देश के स्तर पर श्रमिको को सगठित करने का बीड़ा उठाया। समाजवादी संघर्ष की दिशा में सगठित रूप से श्रमिकों के कदम बढ़ चले। सर्वहारा क्रान्ति के प्रतिपादन में मार्क्स और एंजिल्स के विचारो का सतर्कता पूवक पालन किया जाने लगा। उन्हें आधार बना कर आन्दोलन का काय-क्रम बनाया गया। इस पार्टी के निर्देशन में सवप्रथम श्रमिकों के बौद्धिक और आर्थिक स्तर को ऊ चा उठाने की माँग की गई। आपस में सगठित होने तथा आम चुनाव में मतदान के अधिकारों की माँग की गयी तथा प्रत्येक दिन आठ घटे काम की माँग की गई। श्रमिको द्वारा आर्थिक माँगों की पूर्ति के लिए हडताल के अधिकार की माँग की गयी। आपस में सगठित होने तथा आम

चुनाव में मतदान के अधिकारों की माँग की गयी तथा प्रत्येक दिन आठ घंटे काम की माग की गयी। श्रमिकों के सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी ने ही रोमानिया के इतिहास मे पहली बार उत्पादन के साधनो पर व्यक्तिगत स्वामित्व के अधिकारों का अन्त कर उसे सामाजिक सम्पत्ति घोषित करने की माँग की थी। साथ ही बुजुआ समाज का अन्त कर समाजवादी समाज की स्थापना की माग की थी। राजतन्त्र के खिलाफ गणतान्त्रिक गणराज्य की स्थापना के लिए किए गये इस आन्दोलन ने रोमानिया में जन जागरण की नीव डाली। नागरिकों के समानता के अधिकार का प्रतिपादन किया गया। सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी का काय क्रम रोमानियन जन-जीवन का आधार बन गया।

सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी के बढ़ते प्रभाव ने समाज में बुजुआ वग की नींव हिला दी। १८९० में पहली बार ट्रांसिलवानिया में सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी की स्थानीय शाखा की स्थापना की गई थी। यह काय-क्रम सम्पूण देश के स्तर पर लागू किया गया, सभी स्तर पर स्थानीय सगठनों का निर्माण किया गया। तथा सम्पूण रोमानिया को एकता के सूत्र मे बाँधने का प्रयास किया गया। रोमानिया एक छोटा सा देश है लेकिन वहाँ विभिन्न राष्ट्रीयता के लोग साथ साथ रहते हैं। इन स्थानीय सगठनो के निर्माण में राष्ट्रीयता को ध्यान में नही रक्खा गया था। सिफ सवहारा वग का नारा दिया गया था। सभी लोग राष्ट्रीयता की भावना को भूल कर सवहारा के महान भावना के अन्तगत बढ़ने लगे थे। ट्रांसिलवानिया और रोमानिया समाजवादी श्रमिक आन्दोलन की दिशा में अग्रसर हो रहे थे। यही आन्दोलन अन्त मे रोमानिया को एकता के सूत्र में बाँधने में सफल हो सका।

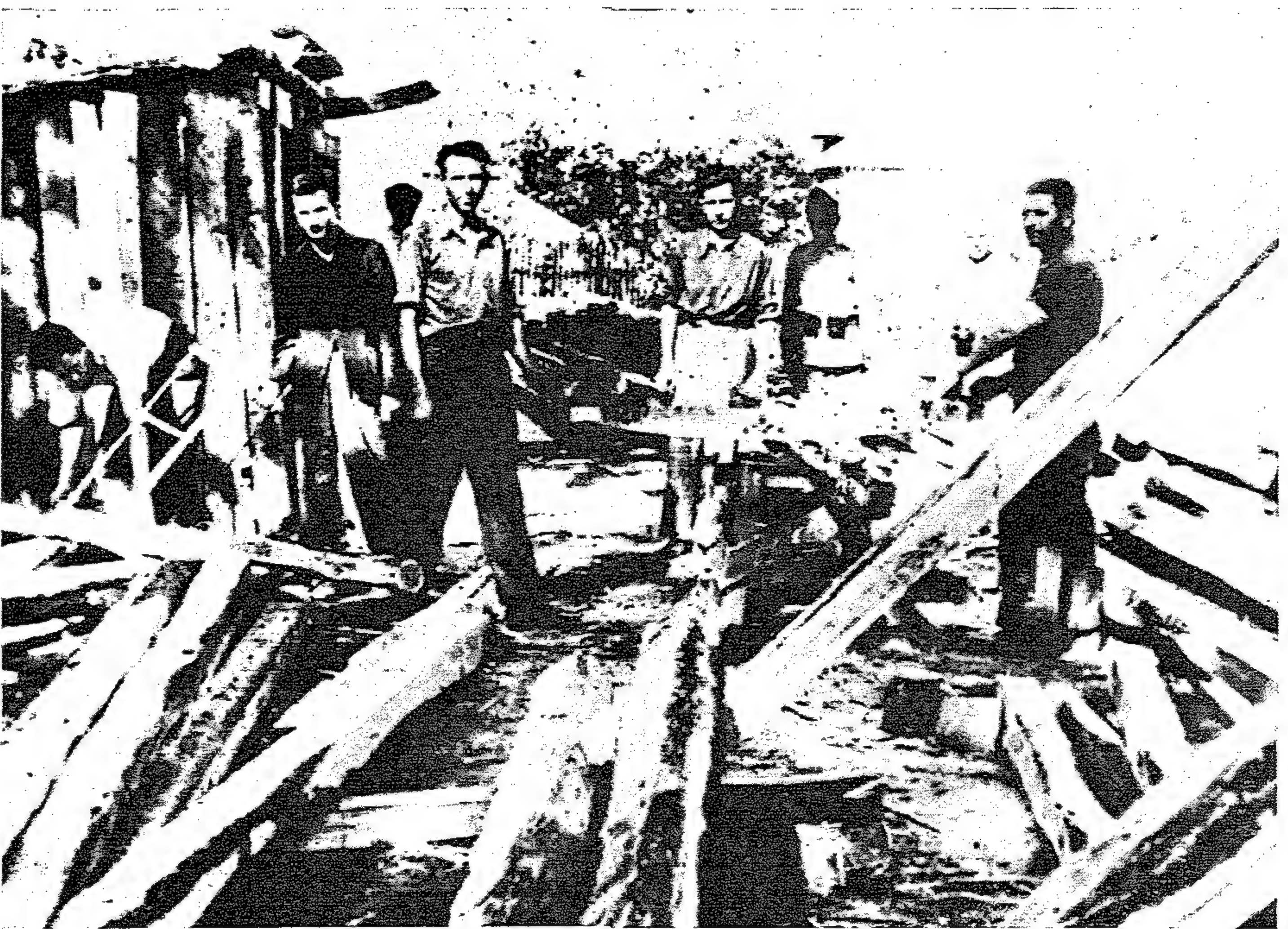
श्रमिक आन्दोलन के कणधारों ने शुरु से ही रोमानिया में उद्योग के विकास का नारा लगाया। उन्होंने कस्टम की नीति मे सुधार की मांग तथा श्रमिक शक्ति की उचित शिक्षा के लिए आवाज बुलन्द की। समाजवादी अखबार "लुभेआ नोउआ" में लिखा था" उद्योगों की संरचना इस देश की तीव्र आवश्यकता है। इसकी उपेक्षा देश के लिए दुर्भाग्यपूण साबित हो सकती है। रोमानिया कृषि प्रधान देश नही रह सकता—वृहत उद्योग की स्थापना करनी ही होगी। कोन्सटैन्टाइन डोब्रोगीयान घेरिया ने "लुनेआ नोउआ" के इस विचार को स्वीकार किया। इसकी आवश्यकता का स्पष्ट अनुभव किया। देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए गभीर विवेचन के बाद उन्होंने देखा कि वास्तव मे बृहत उद्योग की स्थापना की उपेक्षा ही रोमानिया के पीछड़े रहने के मूल में है। अत रोमानिया में उद्योगों की स्थापना हो सकी तो विकास के अन्य रास्ते आप ही आप खुल जायेंगे। उन्होंने देखा था "जहाँ भोंपू की तीक्ष्ण आवाज श्रमिकों के बाहुल्य को काय करने के लिए आमन्त्रित करती है, जहाँ श्रमिको की बहुसख्या खानों में धरती के उदर को विदीण करती है जहाँ वृहत हथोड़े लौहखण्डो में टकराते हैं, जहाँ धुआँकशों के जगल आकाश में ऊँची उडान भरते हुए प्रकृति पर मानवीय श्रम के विजय की घोषणा करते हैं—जहा श्रम और पूजी के मध्य प्रबल सघष आन्दोलित और शानदार होकर एक नये ससार को जन्म देता है—वही "भविष्य पैदा होता है।" कोन्सटैन्टाइन डोब्रोगीयान घेरिया के इन क्रान्तिकारी विचारों ने रोमानिया में तहलका मचा दिया। लाखों की सख्या में वैज्ञानिक कलाकार और विद्वान इससे प्रभावित हुए और भौतिकवादी विचारों के अनुसार अन्याय के विरुद्ध सघर्ष करने के

लिए उठ खड हुए। उन्होंने श्रमिक वग और समस्याओ के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की उन्होने अनुभव किया कि देश मे समाजवादी श्रमिक आदोलन मे उनका भी भाग्य निहित है। श्रमिक आदोलन की प्रगति उनकी अपनी प्रगति है। पहली बार उन्होने यह अनुभव किया कि श्रमिको से अलग उनका कोई अस्तित्व नही है। चेतना के इस स्तर पर वे श्रमिको के साथ हुए तथा प्रजातान्त्रिक आदोलन को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग दिया।

रोमानिया मे बढ़ते हुए प्रजातान्त्रिक आदोलन ने विश्व जनमत को आकर्षित किया। अतर्राष्ट्रीय श्रमिक आदोलन के महान नेता फ्रेडरिक एजिल्स ने रोमानिया के श्रमिक आदोलन को सतुष्टि की नजरों से देखा। माक्स के सिद्धान्तो पर आधारित इस आदोलन को श्री एजिल्स का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। रोमानिया श्रमिक आदोलन के नेता जिस परिपक्वता तथा बहादुरी के साथ आन्दोलन को आगे बढा रहे थे अतराष्ट्रीय श्रमिक आदोलन के नेताओं ने इसकी भूरि भूरि प्रशसा की।

इतना होने के बावजूद भी समाजवादी आदोलन के माग में अनेक बाधाए थी। सगठन का काय अभी पूरा नहीं हुआ था। माक्सवादी सिद्धान्तों के प्रति लोगों मे पूण आस्था का अभाव था। कायकर्त्ताओं मे परिपक्वता का अभाव था। खुद समाजवादी नेता कई मामलो मे माक्सवादी सिद्धान्तों के विरुद्ध थ। लोगों में सद्धान्तिक स्तर पर एकता नही थी। सुधारवादी सिद्धान्तों तथा अवसरवादियो की वजह से सर्वत्र भ्रान्ति फली हुई थी। कौन-कौनसा माग अपनाया जाय—इस पर लोग एकमत नही हो पा रहे थे। उस समय स्थिति कुछ ऐसी हो गई थी जो साधारणत किसी सगठन के शुरूआत में हुआ करती है। एक लम्बे समय तक परीक्षण के पश्चात ही सगठन और उसका उद्देश्य सही रूप में उभर कर आता है। रोमानिया में भी लोग भ्रान्त थे और सैद्धान्तिक खीचातानी मे करीब करीब सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी का अन्त ही हो गया था। लेकिन सामाजिक प्रजातान्त्रिक पार्टी के कुछ परिपक्व और प्रगतिशील नेताओ ने, जिसमें लोआन सी० फ्राईभू स्टीफन धेयोरधीउ मीहाईल जी० बुजीर, अलेकू कौसटैनटाइनेस्कू, मासिल अनागनोस्टी आदि का नाम प्रमुख है। १९१० में रोमानिया समाजवादी पार्टी का गठन कर डाला तथा श्रमिक वग के मृत प्राय आदोलन में पुन जीवन का सचार कर दिया। इन लोगों ने रोमानिया के लोगों को फिर से जागृत किया तथा माक्सवादी सिद्धातो के अनुरूप आचरण करते हुए जन आन्दोलन को आगे बढ़ाया। उन लोगो ने प्राचीन समाजवाद के मूल पर ही इस नये समाजवाद की स्थापना की, अन्तर सिफ इतना था कि यह पूणतया माक्सवादी विचारो पर आधारित था। अवसरवादियों और सुधारवादियों के प्रभाव से इसे मुक्त रक्खा गया। फलत सगठन का शुद्ध रूप उभर कर सामने आ रहा था।

इस दशक की सबसे प्रमुख घटना १९०७ के बसन्त में कषक आदोलन था। सामन्ती प्रथा के खिलाफ किसानों का यह बहुत ही महत्वपूण आन्दोलन था। पहली बार सगठित होकर किसानों ने अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज बुलन्द की थी। इस आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य रोमानिया में कृषकों की आर्थिक अवस्था को उन्नत करना था। सामन्ती प्रथा में यह सभव नहीं था। अत कृषकों की अवस्था में सुधार करने के लिए सामन्ती समाज का



टिरगु जिउ जेल के वर्कशाप में अन्य राजनैतिक कैदियों के साथ
निकोलाई चाउसेस्कू (१९४३ ई.)

अन्त आवश्यक था। कृषको ने यथाशीघ्र सामन्ती सबंधों के अन्त की मांग की। साथ ही कृषि-सबधी समस्याओ को कृषको के हक में सुधारने की भी माग की। रोमानिया के कृषक आन्दोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि कृषको के पास अपूव क्रान्तिकारी शक्ति है और आगे चल कर इन कृषको ने रोमानिया की क्रान्ति के गौरवपूण अध्याय का आरम्भ किया।

जब रोमानिया में कृषको का आन्दोलन हुआ तो उस समय श्रमिक आन्दोलन से उसे बडी सहायता मिली। श्रमिको ने कृषक आन्दोलन का पूण समथन किया और उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की शपथ खाई। आन्दोलन के अवसर पर शासक वग द्वारा कृषकों पर कई भयानक अत्याचार किए गए। उन्हें डराया गया, उनके ऊपर दबाब डाला गया कि वे आन्दोलन से मुख मोड लें लेकिन वे मैदाने जग मे डटे रहे। श्रमिक आन्दोलन के नेताओं ने सरकार के इस रवैये की कडी आलोचना की उन्होने सरकार का विरोध किया और कृषकों की इस माग का समथन किया कि जमीन किसानों को दे दी जाय। उनका कहना था कि मेहनत से पैदावार होती है और उन्ही को भूखा रहना पड यह स्थिति असहनीय है। चुके वास्तविक उत्पादन का काय कृषक गण ही करते हैं अत स्वामित्व भी उन्हें ही सौप दिया जाय। श्रमिक आन्दोलन के इस रवैये से कृषक आन्दोलन को बल मिला। श्रमिक आन्दोलन और कृषक आन्दोलन के बीच सधि और सहयोग का सूत्रपात यही से हुआ जो बाद मे रोमानिया की सब से शक्तिशाली ताकत के रूप मे प्रतिष्ठित हुआ।

२० वी शताब्दी की सबसे महान घटना, जिसने सम्पूर्ण ससार को प्रभावित किया, प्रथम विश्व युद्ध की शुरूआत, साम्राज्यवादी ताकतों द्वारा विश्व में अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार एव उपनिवेश को हथियाने के लिए की गयी थी। रोमानिया के सामाजिक प्रजा तान्त्रिक पार्टी ने "सेकेन्ड इन्टरनेशनल" के वाम पक्षीय पार्टियों और सगठनों से अपना सबध स्थापित किया। इन लोगों ने साम्रज्यवादी लडाई की निन्दा की। इन लोगों ने युद्ध के खिलाफ जीम्मरवाल्ड में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी अधिवेशन का सगठन किया। साम्राज्य-वादी कैम्पों ने रोमानिया को धमकी दी और भविष्य में ऐसा करने की मनाही की। घबरा कर रोमानिया के समाजवादियो ने तटस्थता की नीति का सहारा लिया। ऐसे समय में देश का श्रमिक सगठन आगे आया। युद्ध के विरोध मे उन्होने नारे लगाये, बैठकें कीं और कही कहीं हडताल का आयोजन भी किया। इस सदभ में जून १९१६ का गालाटी श्रमिकों की हडताल उल्लेखनीय है। गालारी श्रमिकों के वीरोचित सघष का यह अनूठा उदाहरण है। दो वर्षों की तटस्थता की नीति के पश्चात बुजुआ-जमीदार रोमानिया ने इन्टेन्टी के साम्राज्यवादी सह मिलन के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जिसने राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण रखने का बचन दिया।

वह समस्या, जिसने रोमानिया के सामाजिक वर्गों को अत्यधिक प्रभावित किया था। रोमानिया में एकात्मराष्ट्रीय राज्य की स्थापना की थी। रोमानिया के लोगो की यह सबसे बडी आवश्यकता थी। १९१७ में लेनिन ने कहा था—"बहुत सारे रोमानियन और साइ-बेरियन अपने देश की सीमा से बाहर रहते हैं और बुजुआ राष्ट्रीय योजना पर राज्यो का निर्माण अभी तक बालकन क्षेत्रो में पूण नही हुआ।"

"हैप्सवर्ग साम्राज्य" के पतन तथा "महान् अक्तूबर सामाज़वादी क्रान्ति" की विजय ने साम्राज्यवादी पद्धति को ज़वर्दस्त धक्का दिया। उस समय रोमानिया में चिरप्रतीक्षित एकात्मक राष्ट्रीय राज्य की स्थापना की संभावनाएं पनप रही थीं, लोगों में आशा और आत्मविश्वास की भावना का विकास हो रहा था। वे सोच रहे थे कि अब राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम को विजय माल अर्पित किया जा सकता है। देश के प्रत्येक वर्ग को संगठित किया जा सकता है। देश की जन शक्ति को उत्पादन में लगाया जा सकता तथा देश में आर्थिक उन्नति की गति को तेज किया जा सकता है। महान् अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति और उसके साथ प्रथम समाजवादी राष्ट्र के उदय ने मानव इतिहास में सर्वहारा क्रान्ति की विजय का द्वार खोल दिया। पूंजीवादी व्यवस्था से समाजवादी व्यवस्था की तरफ बढ़ने का मानव का यह कदम सर्वहारा क्रान्ति की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। लेनिन के नेतृत्व में गठित साम्यवादी दल के निर्देशन में सर्वहारा वर्ग की विजय ने संसार के हर कोने में जनता की चेतना को आन्दोलिन कर दिया। श्रमिक वर्गों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक पड़ा। उन लोगों को राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम, स्वतंत्रता तथा प्रगति की दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा मिली। रोमानिया के श्रमिक वर्गों ने विजयी सर्वहारा के साथ अपनी पूर्णएकता जाहिर की तथा उनका समर्थन किया। देश में जगह जगह सभायें की गई और सर्वहारा वर्ग की इस विजय को अपनी विजय की संज्ञा दी गयी। रोमानिया के लाखों मजदूर, जो कार्य से अलग कर दिए गये थे, तथा बन्दियों और सैनिकों ने क्रान्तिकारी एककों का निर्माण किया और क्रान्ति की दिशा में बढ़ चले।

युद्ध के विनाश के पश्चात् आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में बुर्जुआ-जमीन्दारी व्यवस्था में बढ़ते हुये अर्न्तविरोध ने आर्थिक उन्नति में भयंकर संकट उपस्थित कर दिया। जन साधारण की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी थी। सर्वत्र असंतोष का वातावरण फैल गया था। लोग इस स्थिति से मुक्त होने के लिए तड़प रहे थे। रूस में सर्वहारा विजय ने रोमानिया के लोगों में क्रान्ति की भावना भर दी। बुर्जुआ जमीन्दारी व्यवस्था के शोषण की जंजीर को तोड़ देने के लिए वे उबल पड़े। संघर्ष के लिए वातावरण तैयार हो चुका था। रोमानिया के समाजवादियों ने घोषणा की "रूस की क्रांन्ति प्रथम चरण है, संसार के इतिहास में नये युग की शुरुआत है। हमारी मुक्ति का मार्ग सिर्फ हमारा काम ही हो सकता है।" समाजवादियों के इस वक्तव्य ने लोगों में क्रान्ति का मंत्र फूंक दिया। वातावरण तैयार था ही। १९१८ के १३ दिसम्बर को बुखारेरस्ट में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया गया। कई हड़तालें की गयीं तथा सभायें संगठित की गयी। श्रमिक नेतृत्व में होने वाले आन्दोलनों ने बुर्जुआ-जमीन्दारी व्यवस्था पर करारी चोट की। वे सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व को स्वीकारने के लिए मजबूर हो गये। सम्पूर्ण देश का वातावरण इनके पक्ष में जा रहा था सर्वहारा वर्ग की बढ़ती शक्तियों को देख कर बुर्जुआ-जमीन्दार वर्ग के लोग घबरा रहे थे। लेकिन अब और कुछ होना संभव नहीं था। वे लोग इस रूप में संगठित हो गये थे कि उनके बीच फूट डालना असंभव सा हो गया था। फलतः सर्वहारा वर्ग के सामने झुकने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था। सर्वहारा वर्ग के सामने भी यह सुनहरा अवसर था उनकी गतिविधियां तीव्रतर होने लगीं। आघात पर आघात पहुंचाये जाने लगे। बुर्जुआ-जमीन्दारी व्यवस्था का अन्त निकट आ रहा था।

इस संदर्भ में १९२० की आम पड़ताल बहुत महत्व की थी। पहली बार सम्पूर्ण रोमानिया के सर्वहारा इसमें सम्मिलित हुये थे। शोषक वर्ग के खिलाफ सर्वहारा का यह संघर्ष-वर्ग संघर्ष के इतिहास का सबसे गौरवमय क्षण था। इस संघर्ष ने बुर्जुआ-जमीन्दारी प्रथा की कमर ही तोड़ दी। सर्वहारा नेतृत्व ने यह सिद्ध कर दिया कि आने वाले समयों में वे देश का नेतृत्व कर सकते हैं, देश को सही दिशा दे सकते हैं और प्रगति के पथ पर आरुढ़ कर सकते हैं। राष्ट्र के सभी वर्गों का मनोबल इनके साथ था। १९२० की आम हड़ताल के समय सर्वहारा नेताओं ने भी यह अनुभव किया कि एक क्रान्तिकारी पार्टी के संगठन तथा स्थापना की आवश्यकता है जो भविष्य में उन्नति के ऐतिहासिक कार्यक्रम को सफल बना सके। उन लोगों ने यह अनुभव किया कि सर्वहारा शक्ति को संघर्ष की दिशा में अग्रसर करने के लिए उन्हें संगठित करने की आवश्यकता है। उनके सामने एक निश्चित आदर्श प्रस्तुत करना पड़ेगा। क्रान्तिकारी परिवर्त्तन के दौर से गुजर रहे रोमानिया में राजनैतिक एवं सद्धान्तिक चेतना का प्रसार हुआ। रोमानिया के लोग इस बात को समझने लगे कि सुधारवादी समाजवादियों से अलग हट कर उन्हें संगठित होना पड़ेगा तभी वे अपने आदर्शों की पूर्ति करने में सक्षम हो सकेंगे। रोमानिया के तत्कालीन समाजवादी पार्टी के नेताओं ने भी इस बात का अनुभव किया। वे साम्यवादी पार्टी की स्थापना करना चाहते थे। बहुत से नेताओं ने समाजवादी पार्टी का अन्त कर साम्यवादी पार्टी के निर्माण की बात कही। वे लोग साम्यवादी पार्टी के झंडे के नीचे संगठित होना चाहते थे और लेनिन द्वारा स्थापित "थर्ड इन्टरनेशनल" के साथ अपने सम्बन्ध कायम करना चाहते थे। साम्यवादी पार्टी के प्रति लोगों का रुझान बढ़ रहा था। जन साधारण भी इस बात को समझने लगा था कि साम्यवादी पार्टी का संगठन ही बुर्जुआ जमीन्दारी व्यवस्था का अन्त करने में सक्षम हो सकेगा तथा देश के विकास को नई दिशा देने में समर्थ हो सकेगा।

इसी संदर्भ में रोमानिया के समाजवादियों ने १९२०में एक शिष्टमण्डल मास्को भेजा। इस शिष्टमण्डल में धीयोरधे क्रीसटेस्कू, कौन्सटनटाइन पोपोमीसी, इयूगेन रोजवानी रोमानिया के प्रतिनिधि थे। इन लोगों को "थर्ड इन्टरनेशनल" से रोमानिया की स्थति और सबंध स्थापित करने के सिलसिले में बातें करनी थीं। इन लोगों ने रोमानिया के लोगों की क्रान्ति में विश्वास तथा लेनिन द्वारा स्थापित सिद्धान्तों के प्रति लोगों की गहरी आस्था पर प्रकाश डाला। उनलोगों ने "थर्ड कम्युनिष्ट इन्टरनेशनल" को सूचित किया कि रोमानिया में क्रान्ति का वातावरण तैयार हो चुका है। वहां श्रमिक वर्ग संगठित हो चुके हैं और लेनिन के क्रान्तिकारी विचारों के अनुरूप वे देश में क्रान्ति का संचालन करना चाहते हैं। अतः उनको भी कम्युनिष्ट इन्टरनेशनल में सम्मिलित कर लिया जाय। कम्युनिष्ट इन्टरनेशनल का निर्देश उन्हें मान्य होगा। 'कोमिनटर्न' के प्रतिनिधियों को रोमानिया में वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं था। उन लोगों ने तरह-तरह के प्रश्न किए तथा रोमानिया की स्थिति पर अपने विचार प्रगट किए। रोमानिया के प्रतिनिधियों ने उन्हें देश की सही स्थिति का परिचय दिया, उनकी शंकाओं का समाधान किया। काभिनटर्न के प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि वे रोमानिया में कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते हैं।

यह कदम उचित भी नहीं होगा। अगर रोमानिया की जनता वास्तव में कम्युनिज्म में आस्था रखती है तो उन्हें खुद से देश में साम्यवादी पार्टी की स्थापना करनी होगी। रोमानिया के प्रतिनिधियों को भी यह सुझाव अच्छा लगा। कम्युनिष्ट इन्टरनेशनल से हर प्रकार की सहायता का वचन ले कर वे देश लौट आये।

समाजवादी पार्टी को साम्यवादी पार्टी में परिवर्त्तित करने के उद्देश्य से मई १९२१ में बुखारेस्ट में एक विशाल अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस अधिवेशन में रोमानिया के प्रमुख समाजवादी नेताओं ने भाग लिया। महान समाजबादी कार्यकर्ता धीयो-रधे क्रीसटेस्कू जो "कांग्रेस" के तृतीय अधिवेशन तक रोमानिया कम्युनिष्ट पार्टी के महामंत्री थे तथा अलेक्जेन्डर डोब्रोगियान घेरिया, एण्डी लोनेस्कू, डीमटू ग्रोफू, धीयोरधे निकोलेस्कू भीजील, बीयरधे कटोइका, कौन्सटैन्टाइन मानेस्कू, मिहाइल क्रूसियेनू आदि प्रमुख नेताओं ने इस अधिवेशन में पार्टी के कार्य-क्रमों पर विचार किया तथा "कम्युनिष्ट इन्टरनेशनल से संबन्ध स्थापित करने पर भी विचार किया गया। इस पार्टी का मुख्य प्रस्ताव श्रमिक वर्ग के आन्दोलन की महत्ता को प्रदर्शित करना तथा देश मे समाजवादी पार्टी की स्थापना करना था। अधिवेशन में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं ने बहुमत से एक प्रस्ताव पारित किया जिसके अनुसार समाजवादी पार्टी की जगह पर साम्यवादी पार्टी को स्थापना की जा सकती थी तथा कम्युनिष्ट इस्टरनेशनल के साथ इसे संबंधित किया जा सकता था। इस प्रस्ताव ने साम्यवादी पार्टी की स्थापना के मार्ग में आने वाली सभी रुकावटों का शमन कर दिया। रोमानिया में कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना में इस अधिवेशन का निर्णय एक तरह से निर्णायक तत्व बन बैठा। सभी उपस्थित सदस्यों ने इसके पक्ष में मत दिया था। यह कहा जा सकता है कि १९२१ के इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से समाजवादी पार्टी के स्थान पर साम्यवादी पार्टी की स्थापना के संबंध में निर्णय लिया जाना कम्युनिष्ट पार्टी की विधिवत स्थापना की दिशा में प्रथम सशक्त कदम था। निश्चित रुप से इस अधिवेशन के समय भी कुछ लोग कम्युनिष्ट पार्टी के निर्माण के पक्ष में नहीं थे। वे लोग समाजवादी पार्टी में ही कुछ सुधार कर आगे बढ़ना चाहते थे। लेकिन बहुमत इनके पक्ष में नहीं था। परिणाम-स्वरुप वे कम्युनिष्ट पार्टी से अलग समाजवादी पार्टी के सदस्य बने रहे। श्रमिक वर्ग के आन्दोलन में फूट की शुरुआत यहीं से हुई। बाद मे इस फूट की बजह से श्रमिक आन्दोलन को गहरा धक्का लगा तथा बहुत दुष्परिणाम भी भोगना पड़ा।

१९२० से लेकर १९३१ तक का समय रोमानिया के श्रमिक आन्दोलन के इतिहास का सबसे अन्धकारपूर्ण समय था। जैसे-जैसे ये एकता के लिए संघर्ष करते रहे बुर्जुआ वर्ग का शोषण और अत्याचार उसी अनुपात में बढ़ता गया। उन लोगों को श्रमिकों के अन्दुरुनी फूट का पता चल गया था। वे बदला लेने की ताक में ही थे। यह सुनहरा अवसर उन्हें अनायास ही प्राप्त हो गया था। शोषण की मशीनरी तेज कर दी गई। सारे प्रजातांत्रिक अधिकार छीन लिए गये। मजदूरों का हर स्तर पर दमन किया जा रहा था। उन्हें नौकरी से अलग कर दिया जाता था। १९२४ का श्रमिक दमन सबसे भयानक था। मजदूरों की रोजी-रोटी की समस्या गंभीर संकट के रुप में उपस्थित हो गई थी। विदेशी पूंजीपतियों और जमीन्दारों

को चूंकि कोई सहानुभूति नहीं थी, अतः उन्होंने जी खोलकर इनका शोषण किया। शुद्ध लाभ की दृष्टि से उत्पादन का कार्य किया जाता था, अतः देश के आर्थिक विकास को भी गहरा धक्का लगा। मजदूरों के शोषण के कानून बनाये गये। उधर प्रजातांत्रिक समाजवादी पार्टी अपनी खिचड़ी आप पका रही थी। ये किसी भी स्तर पर साम्यवादियों से समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे। मजदूरों के लिए संघर्ष करने वाली कम्युनिष्ट पार्टी को अवैध घोषित कर दिया गया था। उसकी सारी सम्पत्ति और कागजात जब्त कर लिए गये। कार्यकर्त्ताओं को जेल में डाल दिया गया। दमनचक्र पूर्ण तेजी से चल रहा था। मजदूरों को अपनी नैया डूबती सी लग रही थी। लगता था जैसे रोमानिया में श्रमिक आन्दोलन और कम्युनिष्ट पार्टी का सितारा डूबने ही वाला है।

इस भयानक परिस्थिति में भी कम्युनिष्ट पार्टी ने हिम्मत नहीं हारी। वे अन्दरुनी संगठन तैयार करते रहे। "युनिटरी ट्रेडयूनियन्स" एवं "वर्कर पीजेन्ट ब्लाक" प्रभृति संगठनों का निर्माण कर राजनैतिक क्षेत्र में इसने अपने प्रभाव को बनाये रक्खा। इसी समय में पार्टी ने अपनी शक्ति को संगठन कायम करने में लगा दिया। किसानों और श्रमिकों के गटबंधन के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। इस समय पार्टी के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अधिवेशनों की व्यवस्था की गयी जिनमें पार्टी के सैद्धान्तिक और देश के राजनैतिक पहलुओं पर विचार किया गया। देश की राजनैतिक समस्याओं पर गंभीर विवेचना की गई और तदनुसार पार्टी के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गयी। पार्टी के भीतर विचारधारा के विभेद को खत्म कर दिया गया। एक शुद्ध साम्यवादी पार्टी के कार्यक्रमों को प्रश्रय दिया गया। पार्टी-संगठन संबंधी एकता स्थापित करने तथा जन साधारण के साथ सम्पर्क स्थापित करने का संकल्प लिया गया।

जन साधारण से संपर्क स्थापित करने का काय अत्यन्त कठिन था। परिस्थितियां इनके प्रतिकूल थीं। बुर्जुआ समर्थक लोग इनके मार्ग में रुकावटें डाल रहे थे। सरकार की ओर से किसी प्रकार की सहायता की संभावना नहीं थी। शोषक वर्ग इनके अस्तित्व का अन्त कर देना चाहते थे। फिर इनकी पार्टी में भी सभी कार्यकर्ता पूर्णतया मार्क्सवादी-लेनिनवादी नहीं हुए थे। उन पर सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टी का प्रभाव अभी भी कायम था। लेकिन ऐसी कठिन परिस्थिति में भी पार्टी को अपना कार्य-क्रम आगे बढ़ाना था। कम्युनिष्ट नेता अपने व्रत पर अटल रहे। पार्टी का कार्य-क्रम शनैः शनैः आगे बढ़ता रहा। इस समय पार्टी को एक और सांगठिनक संकट से गुजरना पड़ा चूंकि उन्हें "कामिनर्टन" के लोग नामजद करते थे और वे लोग दूसरे देश के होते थे तथा उनको सभी देशों की वास्तविक समस्याओं और वातावरण का पता नहीं होता था। परिणाम स्वरुप नीति निर्धारण के समय वे लोग सैद्धान्तिक स्तर पर समस्याओं को परखने की कोशिश करते थे, तथा निदान प्रस्तुत करते थे लेकिन परिस्थितियां कुछ ऐसी होती थीं जिनमें वे निदान तथ्यहीन हो जाते थे। फलतः पार्टी की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगता था। रोमानिया मे भी कुछ ऐसी ही व्यवस्था थी। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के पंचम अधिवेशन तक "कामिनटर्न' की तरफ से पार्टी के महामंत्री का पद वाहर के लोगों को दिया

जाता रहा। रोमानिया के बाहर से आये इन लोगों को वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं था। पार्टी में पेट्टी बुर्जुआ विचारधारा के लोग मौजूद थे, फलत: नीति निधारण के समय संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। रोमानिया के कम्युनिस्ट नेता ने इस प्रथा का विरोध किया क्योंकि इस प्रथा के कारण रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगता था। १९२९ में तो करीब-करीब ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी जिसमें पार्टी का विघटन हो जाता। और यह भी उस समय जब कि बुर्जुआ-जमीन्दार वर्ग का अत्यन्त तीव्र प्रहार श्रमिक वर्ग पर हो रहा था। लेकिन रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के नेताओं ने दूर-दृष्टि से काम लिया। उन लोगों ने पार्टी को विघटन से बचा लिया।

रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के विकास के संदर्भ में एक महत्वपूण पड़ाव उस समय आया जब १९३१ में पार्टी का पंचन अधिवेशन हुआ। यह अधिवेशन उस समय संगठित किया गया जिस समय रोमानिया गंभीर आर्थिक संकटों से गुजर रहा था। इस अधिवेशन में कम्युनिष्ट पार्टी के नेताओं ने रोमानिया की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थितियों पर गंभीरता से विचार किया। उन्हाने देश की मुख्य राजनैतिक शक्ति और उसके साथ अन्य वर्गों के सहयोग पर विचार किया। गंभीर विवेचन के उपरान्त वे इस निर्णय पर पहुंचे कि देश में बुर्जुआ प्रजातांत्रिक क्रान्ति का अन्त हो रहा है। देश में सवहारा वर्ग ही प्रमुख राजनैतिक शक्ति के रूप मे अवस्थित है। इन्हीं के कन्धों पर देश की उन्नति का दायित्व है। बुर्जुआ व जमीदारी व्यवस्था का अन्त करने के लिए इन्हें कृषक वर्ग के साथ मिल कर कार्य करना पड़ेगा। ऐसा होने से ही देश में साम्यवादी समाज का विकास संभव हो सकेगा। इन्हीं निष्कर्षों के आधार पर पार्टी ने अपने कार्य-क्रमों की रूपरेखा तैयार की। विरोधी संघर्ष के अन्त करने का प्रयास किया गया तथा जन साधारण से संबंध स्थापित करने की दिशा में प्रथम ठोस कदम उठाया गया। पार्टी के इसी अधिवेशन ने "युनाइटेड वर्कर्स फ्रन्ट" कायम करने के प्रयास को तीव्र किया गया। संघर्ष के नये तरीकों की खोज की गई। राजनैतिक और आर्थिक हितों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त कदमों की अत्यधिक आवश्यकता थी। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी वास्तविक प्रगति की तरफ बढ़ रही थी। लेकिन इस संघर्ष में एक बात कथनीय है। रोमानिया कम्युनिष्ट पार्टी के इस निष्कर्ष के बावजूद भी राष्ट्र की आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं पर पार्टी के कार्यकर्ताओं के बीच भ्रान्ति बनी ही रही।

यह एक स्वाभाविक बात थी । मानसिक विकास के स्तर पर ही कोई किसी विचार को भोग सकता है उसके सत्य का साक्षात्कार कर सकता है। मानसिक विकास के स्तर की भिन्नता के कारण किसी विचार को सही संदर्भ में परखने की क्षमता में विभिन्ता आ जाती है।। पार्टी में कम्युनिष्ट दर्शन को उसके सही संदर्भ में परखने की शक्ति कुछ इने गिने नेताओं मे ही थी। साधारण कार्यकर्त्ता उससे दूर थे। उनका संबंध निर्धारित कार्यक्रमों तक ही सीमित था। ऐसी स्थिति में भ्रान्ति का वातावरण विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है। फिर ऐसी स्थिति है देश की समस्याओं का विवेचन त्रुटिपूर्ण होना संभव है। कम्युनिष्ट पार्टी के निष्कर्षों में भी त्रुटियाँ रह गई थीं। राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं के

संबंध में कम्युनिष्ट पार्टी के निष्कर्ष ठीक नहीं उतरे। फलत: निर्धारित कार्यक्रमों में गलत-फहमी हो गई। राष्ट्रीय समस्याओं के संदर्भ में उठाये गये कम्युनिष्ट पार्टी के कदम सही नहीं उतरे।

रोमानिया में कृषक वर्गों का एक सामाजिक महत्व था। वे आपस में संगठित थे। कृषि सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिये वे आन्दोलन को बढ़ा सकते थे। कृषि की मूल समस्या भूमि के वितरण की समस्या थी। बड़े जमींदारों से जमीन लेकर गरीब किसानों में उसका वितरण करना था। किसान अपने हक के लिए लड़ने, मरने के लिये तैयार थे। सामन्ती व्यवस्था का अन्त उनका उद्देश्य था। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी कृषकों की इस समस्या को नहीं समझ सकी। बहुत लम्बे समय तक वे भूमि के राष्ट्रीयकरण तथा ग्रामीण कम्युन के द्वारा "सामूहिक कृषि" का नारा देते रहे। यह एक दोषपूर्ण नारा था। बुर्जुआ जमींदारी व्यवस्था में ऐसा नारा तथ्य से कोसों दूर था। इससे पार्टी को बहुत क्षति हुई। रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी के पांचवे अधिवेशन में इस नारे की नि:सारता पर प्रकाश डाला गया पार्टी ने देश के वातावरण तथा कृषि समस्याओं को ध्यान में रखते हुये एक सही। नारा दिया, जिसके अनुसार जमींदारों से जमीन छीन कर बिना मूल्य कृषकों में बांट देना था। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। इस नारे से कम्युनिष्ट पार्टी को आपेक्षिक लाभ नहीं हुआ। कृषक श्रमिक एकता कायम नहीं हो सकी। लेकिन इसका एक महत्वपूर्ण लाभ हुआ। रोमानिया के कम्युनिष्ट नेताओं ने इस बात का अनुभव किया कि विदेशी नारों का नकल कर स्वदेश में कोई फायदा नहीं हो सकता। इसका कारण यह हुआ कि किसी देश का कोई नारा मूल रूप से वहां की समस्याओं और वातावरण से सम्बन्धित रहता है। किसी विशेष देश में विशेष स्थिति में किसी विशेष नारे का महत्व होता है। लेकिन यह एकदम आवश्यक नहीं है कि दूसरे देश में भी वैसी ही परस्थिति हो। ऐसी स्थिति में दूसरे देश के कार्यक्रमों को लागू करने से वास्तविक लाभ की संभावना कम हो जाती है। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के साथ भी यही स्थिति थी। पहले उन लोगों ने रूस के आधार पर रोमानिया को संगठित करने की कोशिश की थी। एक लम्बे समय तक वे इस गलती को दुहराते रहे। लेकिन लाभ के बजाय हानि ही अधिक हुई। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकी।

इस दौरान देश की विभिन्न पार्टियों के सम्बन्ध में कम्युनिष्ट पार्टी का मूल्यांकन भी गलत धारणाओं पर आधारित था। सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टी तथा स्वतंत्र समाजवादी पार्टी शासक वर्ग से मिला हुआ था। इन पार्टियों के सुधारवादी विचारों के पीछे जघन्य अपराध किए जाते थे। जनता में ये पार्टियां कम्युनिष्ट पार्टी के खिलाफ प्रचार करती थीं। इन लोगों ने कम्युनिष्ट पार्टी को बदनाम करने के लिये विभिन्न हथकंडों का प्रयोग किया। वे इसे एक साम्प्रदायिक पार्टी के रूप में देखते थे। उन्होंने तो कम्युनिष्ट पार्टी को बदनाम करने के लिये उसे "फासिष्ट" भी कहा। इसका परिणाम यह हुआ कि रोमानिया में कम्युनिष्ट पार्टी का विकास एक तरह से अवरुद्ध हो गया। पार्टी देश के अखाड़े में राजनैतिक शक्ति के समन्वय में समर्थ नहीं हो सकी। जनसाधारण के साथ सम्पर्क बढ़ाने का उनका

कार्यक्रम धरा का धरा रह गया। देश म सुधारवाद के नाम पर बढ़ते हुये फ़ासिष्टों के चरण को वे रोक न सके। बुर्जुआ और जमीनदारों के सम्मिलित शोषण को वे रोक न सके। पार्टी का कार्यक्रम विफल हो गया। इसका सबसे बड़ा कारण पार्टी के नेताओं द्वारा देश की परिस्थितियों तथा समस्याओं का गलत मूल्यांकन था।

अगर कम्युनिष्ट पार्टी के तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अधिवेशन के प्रलेखों और प्रस्तावों और निर्णयों पर ध्यान दिया जाय तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि इन निर्णयों को लेने में पार्टी ने गंभीर गलतियां की थीं। रोमानिया को एक "बिशिष्ट बहुराष्ट्रीय राज्य" की संज्ञा दी गई थी। साथ ही यह भी बताया गया था कि विदेशी भूमि को हड़प कर इसका निर्माण किया गया है। कम्युनिष्ट पार्टी का यह कथन निराधार तथा सत्य से कोसों दूर था। कम्युनिष्ट पार्टी ने अपने कार्यक्रम में रोमानिया को "रोमानियन साम्राज्यवाद" से मुक्त करने का तथा शोषित वर्ग के उद्धार का बीड़ा उठाया। वे राष्ट्र के "आत्मनिश्चय के अधिकार" के सिद्धान्त के आधार पर रोमानिया को पृथक् करना चाहते थे। वास्तव में ऐसी समस्या थी ही नहीं। फिर वे देश के ऐसे हिस्से से अलगाव की बातें कर रहे थे, जिस पर रोमानिया की जन-संख्या का घनत्व अधिक था। यह एक अजीबोगरीब नीति थी। जहां रोमानिया को एकात्मकराष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिये संघर्ष होना चाहिये था वहां इसका उल्टा ही हुआ। रोमानिया में पृथक्करण की नीति का अनुकरण किया गया। इसका बहुत बड़ा दुष्परिणाम हुआ। जनता का विश्वास कम्युनिष्ट पार्टी से उठ गया। मार्क्स और लेनिन की शिक्षा जनता के आत्मनिर्णय का समर्थन करती है; लेकिन एक स्थापित राष्ट्र को खण्डों में विभक्त की नीति का समर्थन नहीं करती। मार्क्स और लेनिन का आशय शोषित जनता के आत्मनिर्णय से सम्बन्ध रखता है जिसके अनुसार जनता का निश्चय एक सशक्त, सम्पूर्ण-प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र के निर्माण की दिशा में होना चाहिए, न कि देश को खण्ड-खण्ड में बांटने के लिए। इस प्रकार रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के कार्य-क्रम एवं निर्णय दोषपूर्ण थे। १९३८-१९३९ के आसपास इन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया गया। इस समय पार्टी ने अपने सिद्धान्तों और कार्य-क्रमों का पूरा जायजा लिया और गंभीर चिंतन के पश्चात् कार्य-क्रमों तथा घोषणाओं की खामियों को दूर कर एक ठोस कार्य-क्रम बनाया गया जो तथ्य पर आधारित था।

रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी की गलत नीति का कारण रोमानिया के इतिहास तथा वहां की जनता का गलत मूल्यांकन था। वे लोग रोमानिया के सामाजिक तथा आर्थिक विकास को समझने में सफल नहीं हो सके। वे देश में विभिन्न शक्तियों के समन्वय को नहीं समझ सके। इसका कारण "कामिनटर्न" द्वारा निर्धारित नीतियां थीं। असल में रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी "कामिनटर्न" के निर्देशों के अनुसार कार्य कर रही थी। उनके निर्देश रोमानिया के संदर्भ में सैद्धान्तिक अधिक और व्यावहारिक कम थे। उनके निर्धारित कार्यक्रम रोमानिया की परिस्थितियों से मेल नहीं खाते थे। महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक मसलों पर निर्धारित उनके कार्य-क्रम तथ्यहीन थे। तथ्यहीन कार्य-क्रमों पर आधा-

रित कोई भी पार्टी देश के स्तर पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी का भी यही हाल था। उनके पांव उखड़ते नजर आ रहे थे। लेकिन कम्युनिष्ट पार्टी ने फिर भी दूरदर्शिता से काम लिया। अपनी गलतियों को दूर करते हुए पार्टी की एकता को अक्षुण्ण रक्खा। अब तक उनकी समझ में यह बात आ गयी थी कि किसी पार्टी की प्रतिष्ठा उसके अपने कार्य-क्रम द्वारा ही हो सकती है, विदेशी कार्यक्रमों पर नहीं। अपनी समस्याओं का लोग जिस तीव्रता से बोध कर सकते हैं, दूसरे नहीं कर सकते। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने भी इस सत्य का साक्षात्कार किया और भविष्य में पार्टी का कार्यक्रम अपने देश के नेताओं द्वारा निर्धारित किया जाने लगा।

१९२९-१९३३ के बर्षों में श्रमिक वर्ग के नेतृत्व में जनता के बड़े भाग ने विदेशी पूंजीपतियों तथा एकाधिकारियों के विरोध में संघर्ष किया। आर्थिक संकट के समय श्रमिक आन्दोलन ने जोर पकड़ा। देश के विभिन्न भागों के सर्वहारा इन आन्दोलनों में भाग लेने लगे। श्रमिक अपने मांगों को मनवाने में सफल हुए। इनकी सफलता ने देश की जनता को आकर्पित किया। संगठन दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगा। उस समय के राष्ट्रीय आंकड़ों के अनुसार १९२९ से १९३२ के समय में लगभग ३७७ हड़तालें करीब करीब १०५४ प्रतिष्ठानों में हुई तथा ८४५०० लोगों ने इसमें भाग लिया। इससे पता चलता है कि रोमानिया में कम्युनिष्ट पार्टी जोर पकड़ रही थी।

१९२९ में लूथेनी के खान मजदूरों द्वारा किया गया संघर्ष इस समय का सबसे महत्व-पूर्ण वर्ग-संघर्ष था। इसी समय में बुखारेस्ट के धातु कर्मियों ने आन्दोलन किया था। बुखारेस्ट के धातु कर्मियों की सहायता के लिए रेसिटा एवं पासोम के धातुकर्मियों ने भी आन्दोलन किया। बुहुसी तथा क्लज के कपड़ों के कारखानों के मजदूरों ने भी इसी समय हड़ताल की थी। इसके साथ भूरेश भैली के लकड़हारों, लीमजेनी हाईप्रेस्टी तथा एनीनो-आसा के खान मजदूरों, प्राहोमा के तेजम मजदूरों तथा कौन्सटाना, ब्राइला और टरनूसे-मेरीन के डाक मजदूरों ने भी इसी समय हड़ताल की थी।

इस समय की हड़ताल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि संघर्ष के नये तरीके इजाद किये गये। जन साधारण में चेतना जागृत करने के लिये विभिन्न नये कायक्रमों को प्रश्रय दिया गया। "एक्सन कमिटी" स्ट्राइक कमिटी और "इन्टरप्राइज कमिटी" की स्थापना की गई। इसमें सभी तबके के लोग रहते थे। इसमें कम्युनिष्ट, स्वतन्त्र समाजवादी, सामाजिक प्रजातन्त्रवादी तथा अन्य सदस्य होते थे जो किसी भी राजनैतिक पार्टी से सम्बद्ध नहीं होते थे। इस प्रकार से "युनाइटेड वर्कर्स फ्रन्ट" का निर्माण संभव हो सका। निम्न स्तर से लेकर उच्च स्तर तक के संगठन इसी आधार पर बनाये गये—बहुत से उद्योगों तथा स्थानीय स्तर पर ऐसी समितियों का निर्माण हुआ। इन समितियों के निर्माण से संघर्ष के नये रास्तों का पता लगा। गलियों के प्रदर्शन, दूसरे हड़तालियों के साथ सहानुभूति प्रदर्शन तथा आत्मरक्षा इकाइयों का संगठन और "बैठ हड़ताल" आदि नये नये कार्यक्रम लागू किये गये।

इस अवसर पर कर्ज के मार से दबे हुए तथा कमरतोड़ सरकारी कर के खिलाफ बोटोसानी, रोमानारी, सालाज, सीवीयू, गोर्ज तथा विहोर के किसानों ने संघर्ष का बिगुल

बजा दिया। भयानक शोषण कर का दबाव और अधिकारियों द्वारा गाली गलौज को किसान सह नहीं सके। शिक्षक, प्रशासक, श्रमिक, विद्यार्थी, विधवा और कैदी ये सभी एकजूट होकर संघर्ष के मैदान में उतर गये। रोमानिया क्रान्ति की तरफ बढ़ रहा था। रेलवे और तेल कर्मचारियों के १९३३ के संघर्ष ने रोमानिया श्रमिक आन्दोलन के इतिहास में एक गौरवमय अध्याय प्रस्तुत किया। इस समय रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने अपनी सम्पूर्ण संगठित शक्ति का प्रयोग किया। विभिन्न स्तर के कम्युनिष्ट संगठनों ने इस आन्दोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। मूल रूप से यह संघर्ष कम्युनिष्ट पार्टी द्वारा ही संचालित हुआ। इसके संगठन का श्रेय भी रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी को ही गया।

१९३२ में रेलवे कर्मचारियों के राष्ट्रीय अधिवेशन ने एक "केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति" का गठन किया। इस केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का सम्बन्ध स्थानीय कार्यकारिणी समितियों ने कायम किया गया। कम्युनिष्ट पार्टी की योजना थी कि विभिन्न स्तर पर होने वाले हड़तालों में इससे सहयोग प्राप्त हो। केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति में रेलवे के मुख्य केन्द्रों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया गया था। धीयोरधे धीयोरधीयूडेज इसके महामन्त्री बने। पार्टी की तरफ से इनको अधिकार दिया गया था कि वे हड़तालों का सही रूप से संचालन करें।

पार्टी ने रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट का अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चयन किया। पार्टी की बुखारेस्ट समिति को जागृत किया गया। बुखारेस्ट में इन लोगों ने श्रमिकों को संगठित करना शुरू किया। डूमिट्रु पेट्रेस्कू के नेतृत्व में "स्थानीय ट्रेड यूनियन कमिशन" की स्थापना की गई। इनका उद्देश्य बुखारेस्ट में होने वाली हड़तालों का संचालन करना तथा अन्य हड़तालियों को यथायोग्य सहयोग प्रदान करना था। ग्रीमीय की हड़ताल के समय श्रमिकों का दबाव और बढ़ गया। यह हड़ताल सीधे पार्टी के नेतृत्व में हुई थी। इसमें ट्रेड यूनियन और कार्यकारिणी समितियों ने वहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। ट्रेड यूनियन के नेता कौन्सटेन्टाइन डोन्सीया तथा कार्यकारिणी समितियों के सदस्यों, जिसमें डूमिट्रू पोवा, सीमू स्टोईका, कौन्सटैन्टाइन, मारडारे, वासिल विगू, आदि प्रमुख थे, सबने संघर्ष की गति तेज कर दी।

फरवरी १९३३ का ग्रीमीय संघर्ष रोमानिया के कम्युनिष्ट पार्टी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। यह वह संघर्ष था जिसमें मजदूरों ने अटूट साहस और बलिदान का परिचय दिया था। सरकारी और बुर्जुआ, जमींदारों द्वारा दमन चक्र तेज कर दिया गया। हर तरह से मजदूरों को आतंकित किया जा रहा था और उसके मनोबल को तोड़ने की कोशिश की जा रही थी। लेकिन वे मजदूरों की एकता को भंग करने में असमर्थ रहे। मजदूर इस संघर्ष में विजयी हुए। हालांकि यह मजदूरों की एक गौरव पूर्ण विजय थी फिर भी सभी स्तर के लोग अब भी इस आन्दोलन के समर्थक नहीं थे। रोमानिया में सामान्य चेतना के स्तर पर इसके महत्व को अनुभव किया जा रहा था। लेकिन कुछ तबके के लोग इससे कतराते भी थे। उन्हें श्रमिक आंदोलन के भविष्य पर अविश्वास था। ग्रीमीश के रेलवे संघर्ष के

समय अन्य स्थानों पर जैसे—क्लज, जैसी, ओराडिया, गालारी और पासकनी आदि भी संघर्ष हुए थे। लेकिन वे रेलवे हड़ताल के समर्थन में नहीं थे। फिर कुछ ऐसे भी स्थान थे जहां हड़ताल हुई ही नहीं। बटासोम, कौन्साटांटा, टीमीसोआरा, बूजाऊ, और अरार आदि स्थानों में हड़ताल नहीं हो सकी जब कि रेलवे हड़ताल के संचालकों का यह विश्वास था कि इन स्थानों में भी हड़तालें होंगी। इस तरह से इस संघर्ष का आपेक्षिक विस्तार नहीं हो सका। इतना होने के बावजूद भी इस संघर्ष का एक महत्व था। कम्युनिष्ट पार्टी के उत्थान में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जिस प्रकार ग्रीमीय की रेलवे हड़ताल महत्वपूर्ण थी उसी प्रकार जनवरी-फरवरी १९३३ में प्रोहोवा भैली तेल कर्मचारियों की हड़ताल थी। इस हड़ताल ने भी जन-साधारण के महत्वपूर्ण भाग को प्रभावित किया। यह हड़ताल भी कम्युनिष्ट पार्टी के नेताओं द्वारा संचालित थी। इसमें भी स्थानीय ट्रेड युनियनों और कार्यकारिणी समितियों ने महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया। इन संघर्षों की महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि हजारों की संख्या में जनता इसमें भाग ले रही थी। विभिन्न संगठन इसके महत्व को समझ रहे थे तथा अपना समर्थन प्रदर्शन कर रहे थे। प्लोआइस्टी पर मजदूरों का आधिपत्य इस समय की एक अन्यतम घटना हैं। इस संघर्ष के दौरान पार्टी को बहुत सारे कार्यकर्त्ता प्राप्त हुए जो निश्चित रुप से पार्टी के लिए फायदे की बात थी। प्रोहोवा भैली संघर्ष के मुख्य नेता कम्युनिष्ट पार्टी के महामंत्री घेघोरघी वासीलीची, टानासे अब्रामेका, कौन्सटेन्टाइन निकोलेस्कू, कौन्सटैनटाइन मनिस्कू, मिहाइल मोरारु आदि थे। इनके नेतृत्व में हड़ताल पूर्ण सफल रही।

आर्थिक संकट तथा मुख्यत: जनवरी-फरवरी १९३३ की हड़ताल रोमानिया के श्रमिक वर्ग आन्दोलन का गौरवमय अध्याय था। इसका रोमानिया के सामाजिक और राजनैतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। लगातार इन संघर्षों ने शोषक वर्ग को करारा धक्का दिया। श्रमिक-जनता के आर्थिक तथा राजनैतिक अधिकारों पर आक्रमण करने वाले बुर्जुआ और जमींदार वर्ग की नींव हिल उठी। लगातार विजयी होने से श्रमिकों का मनोबल बढ़ रहा था। वे आन्दोलन की सफलता के लिए हर संभव त्याग और बलिदान करने को तैयार थे। लेकिन बुर्जुआ वर्ग की लहलहाती खेती पर तुषारपात हो गया था। उन्हें सर्वप्रथम अपने अस्तित्व पर खतरा नजर आया। १९३३ की हड़तालों का दूसरा ही महत्व था। इस समय तक जर्मनी में फासिस्ट हिटलरशाही की स्थापना हो चुकी थी और फासिष्ट शक्तियों के खिलाफ रोमानिया में यह प्रथम आन्दोलन था। अत: इसका एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व भी था। बाद में हिटलर के फौजी आक्रमण के खिलाफ रोमानिया के लोग जिस उत्साह से मैदाने जंग मे कूद पड वह मानवीय बलिदान के इतिहास मे अत्यन्त दुर्लभ है।

१९२९ से १९३३ तक श्रमिक वर्ग के आन्दोलन का समय रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के लिए महत्वपूर्ण रहा। इस समय मे आन्दोलन और संघर्षों के माध्यम से कम्युनिष्ट पार्टी रोमानिया में अपना पांव जमाने में समर्थ हो सकी। संघर्ष के समय जनमत का पता चलता था। संघर्षों में विजय ने जनमत को इनके पक्ष में कर दिया। रोमानिया की कम्यु-निष्ट पार्टी को आभास होने लगा कि सम्पूर्ण देश के स्तर पर जनतांत्रिक अधिकारों को

प्राप्त करने के लिए तथा एक प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र की स्थापना के लिए पार्टी आन्दोलन कर सकने की स्थिति में है। पार्टी को यह विश्वास हो रहा था कि रोमानिया के लोगों में कम्युनिष्ट पार्टी के संबन्ध में संदेह समाप्त हो रहा है। लोग वस्तुस्थिति को सच्चाई के साथ परख रहे थे तथा जनतांत्रिक आन्दोलन के लिए कम्युनिष्ट पार्टी के महत्व को स्वीकार रहे हैं। जनता में कम्युनिष्ट पार्टी के लिए सहयोगपूर्ण वातावरण की सृष्टि हो रही थी। कम्युनिष्ट पार्टी के नेताओं ने समझा कि अब चिर प्रतीक्षित समय आ गया है जब कि फासिज्म के खतरे का मुकाबला करने के लिए, जन साधारण के आर्थिक, राजनैतिक तथा प्रजातांत्रिक अधिकारों के लिए, देश को बुर्जुआ जमींदार गठबंधन से मुक्त करने के लिए तथा एक प्रभुसत्ता सम्पन्न रोमानिया के लिए देश व्यापी आन्दोलन किया जा सकता है।

आर्थिक संकट के पश्चात् औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में उत्पादन निरन्तर बढ़ रहा था। उत्पादन की निरन्तर वृद्धि ने पूंजी को पूंजीपतियों और जमीदारों के हाथ केन्द्रित कर दिया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि वस्तुओं की मनमानी कीमत वसूल की जाने लगी। गरीब जनता और ज्यादा परेशान हो गयी। साथ ही एकाधिकारी प्रवृत्ति के विकास ने देश के आर्थिक एवं राजनैतिक वातावरण पर गंभीर प्रभाव डाला। देश की जनता लगातार इसके दबाब का अनुभव कर रही थी। धीरे-धीरे उनके सारे अधिकारों का खात्मा हो रहा था। इस प्रकार प्रजातंत्र के सुनहले पर्दे के पीछे बुर्जुआ प्रजातंत्र का गला घोटा जा रहा था। ऊपर से प्रजातंत्र का नारा लगाने वाले बुर्जुआ जमींदार संगठन ने जनतंत्र के नाम पर फासिष्ट किस्म के एक भयानक संगठन का निर्माण किया। इस संगठन का नाम "दी आइरन गार्ड" था। इस संगठन को सरकारी स्तर पर मान्यता दिलाई गयी। वास्तव में यह संगठन रोमानिया मे स्थापित एक हिटलरी संगठन था। फासिज्म के एजेन्ट के रुप में इस संगठन ने जर्मन साम्राज्तवादियों का गुणगान प्रारम्भ किया। जर्मन साम्राज्यवाद के प्रचार ने रोमानिया के लोगों के सामने एक ऐसा सब्जवाग प्रस्तुत किया तथा कम्युनिस्टों के प्रति विष वमन किया कि रोमानिया के लोग एक तरफ से इससे प्रभावित होने लगे थे। जर्मनी को दुनिया का सबसे प्रगतिशील राष्ट्र बताया गया तथा हिटलर को संसार का एक-मात्र नेता। निश्चित रुप से फासिज्म के एक लुभावने कार्य-क्रम की रुप रेखा प्रस्तुत की गयी। हर तरह से यह सिद्ध करने की कोशिश की गयी कि जर्मनी का नाजी संगठन दुनिया का सर्वश्रेष्ठ संगठन है तथा फासिज्म श्रेष्ठतर शासन व्यवस्था। रोमानिया के बुर्जुआ जमीन्दार वर्ग ने इस संगठन का समर्थन किया। इसमें उनका एक बड़ा लाभ था। उन्होंने सोचा कि कम्युनिष्टों के भय से अगर कोई मुक्ति दिला सकता है तो मात्र यह संगठन शनैः-शनैः वे हिटलर के प्रभाव क्षेत्र में आ गये। एक तरह से रोमानिया को हिटलर की इच्छाओं पर छोड़ दिया गया। इन बुर्जुआओं और जमीन्दारों ने रोमानिया को जर्मनी के हाथ बेच दिया।

निश्चित रुप से "आइरन गार्ड" के संगठित प्रचार ने रोमानिया जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग को प्रभावित किया। लेकिन कम्युनिष्ट विचारधारा से सम्बद्ध लोग फासिस्टों के चक्र में नहीं आ सके। उन लोगों ने फासिस्ट राजनीति की इस चाल को भाँप लिया और

इसका प्रतिकार करने के लिए तैयार हुए। कम्युनिष्ट पार्टी के झंडे के नीचे श्रमिक वर्ग तथा जनता का एक बहुत बड़ा भाग, जिसमे बुर्जुआ वर्ग के लीग भी थे, इस प्रतिक्रियावादी राजनीति के विपक्ष में उठ खड़े हुए। बहुत से प्रजातांत्रिक राजनीतिक एवं प्रगतिशील बुद्धि जीवियों ने जनता को "आइरन गार्ड" से सावधान रहने की चेतावनी दी। उन लोगों ने जनता को समझाना शुरु किया कि किस तरह से लुभावने नारे के पीछे हिटलर की खूनी योजना काम कर रही है। किस तरह से सम्पूर्ण रोमानिया दासता की तरफ बढ़ रहा है। किस तरह से "आइरनगार्ड" में विश्वास करने वाले तथा उसका समर्थन करने वाले देश के गद्दारों ने देश की स्वतंत्रता को हिटलर के कदमों मे समर्पित कर दिया है। उस समय के तत्कालीन नेता निकोलाई टिटलेस्कू, निकोलाई लोरगा, ग्रीगोरी लूनियान, मिरजील माउगेरु, डी० डोव्रेस्कू, फिलीपेस्कू ने नाजी जर्मनी के आक्रमण के रवैये की कड़ी निन्दा की और देश की जनता से अपील की कि वे जर्मनों से सावधान रहें। उन लोगों ने जर्मनों का खुल्लमखुल्ला विरोध किया। उन लोगों ने सरकार पर दबाब डाला कि रोमानिया की सुरक्षा को ध्यान में रख कर दूसरे देशों से अपना सम्बन्ध कायम करें। उसी समय में रोमानिया ने सोवियत संघ से राजनैतिक सम्वन्ध स्थापित किया। इसी समय मे सुरक्षा संधि भी की गयी थी। इसके साथ "लिटल इनटेन्ट" के देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया गया तथा बालकन संधि को अन्तिम रुप दिया गया। रोमानिया-सोवियत संधि की सबसे बडी विशेषता यह थी कि यह संधि स्वतंत्रता, प्रभुसत्तात्मकता और परस्पर सहयोग के समानुपातिक आदर्श पर आधारित थी। इस संधि में यह भी बिचार किया गया था कि किस तरह एक देश पर हिटलर का आक्रमण होने से दूसरा देश उसकी सहायता करेगा।

उस समय रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी देश की स्वतन्त्रता और प्रभुसत्ता को अक्षुण्ण रखने के लिए निरन्तर संघर्षरत रही। उन्होंने संयुक्त समाजवादी पार्टी, समाजवादी पार्टी और समाजवादी आदर्शों पर चलने वाले अन्य संगठनों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से संग्राम करने का प्रयत्न किया। विभिन्न पार्टी के एकजुट हो जाने से हिटलर विरोधी संघर्ष को एक नयी शक्ति मिली। देश के किसानों मजदूरों और बुद्धिजीवियों में एक नयी चेतना का संचार हो रहा था। वे लोग फासिष्ट विरोधी आन्दोलन मे सम्मिलित होने लगे। डा० पेट्रू ग्रोजा के नेतृत्व में १९३३ में किसानों का संगठन तैयार हो चुका था। किसानों का यह संगठन बाद में रोमानिया के श्रमिक आन्दोलन की सफलता का सूत्रधार रहा। श्रमिक आन्दोलन की वजह से किसान तथा अन्य वर्ग में जो सर्वहारा की मान्यताओं को स्वीकार नहीं करते थे, एक नयी चेतना जग उठी। वे संघर्ष के महत्व को पहचानने लगे। १९३४ मे रोमानियन और मागयार किसानों का आन्दोलन इसका ज्वलन्त उदाहरण है। धीमेसे भैली के ये किसान करभार तथा जमीन्दारों के भयानक शोषण से मुक्त होने के लिए संघर्ष के पथ पर अग्रसर हुए थे। कृषकों के इस आन्दोलन का प्रभाव यह हुआ कि सम्पूर्ण रोमानिया के स्तर पर किसानों ने हड़तालें कीं तथा शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द किया। कम्युनिष्टों ने किसानों के इस आन्दोलन का खुलकर समर्थन किया। "नेशनल पीजेन्ट पार्टी" और रेडिकल पीजेन्ट पार्टी के सहयोग से १९३६-३७ में सम्पूर्ण रोमानिया में प्रदर्शन किया गया। कम्युनिष्ट नेताओं ने इसमें भाग लिया और किसान आन्दोलन को संघर्ष की

दिशा में मोड़ दिया और अन्त में इसे फासिस्ट विरोधी आन्दोलन का रुप देने मे समर्थ हो सके।

कम्युनिष्ट पार्टी के नेताओं ने इस समय देश के विभिन्न राजनैतिक सगठनों से संबंध स्थापित करना शुरू किया। देश के मुख्य राजनीतिज्ञों तथा विचारकों से संबंध स्थापित किया गया। बुर्जुआ ताकतों से संबंध स्थापित किया गया। इसमें इनका उद्देश्य प्रगतिशील व्यक्तित्वों की तलाश थी। इसमें कम्युनिष्ट युवकों के संगठन ने महत्व पूर्ण योगदान दिया। उन्होंने देश की युवा ताकतों को संगठित किया। मार्क्स-लेनिन दर्शन की शिक्षा दी तथा क्रान्ति की दिशा में अग्रसर किया। इस समय कम्युनिष्ट पार्टी ने फासिष्ट विरोधी बहुत से संगठनों का निर्माण भी किया। नेशनल एन्टीफासिष्ट कमिटी "एशोसियेशन आफ एन्टी-फासिष्ट यूथ" लेवर लीग "वोमेन्स एन्टीफासिष्ट कमिटी" स्टूडेन्टस डिकोक्रेटिक फ्रन्ट तथा अन्य ऐसे संगठनों का निर्माण किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य फासिष्ट विरोधी प्रचार करना तथा रष्ट्रीय हितों और प्रजातंत्र की रक्षा के लिये जनता में चेतना उत्पन्न करना था। प्रजातंत्र के समर्थन में विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन किया गया तथा देश के बुद्धिजीवियों से जनता में फासिष्ट विरोधी चेतना उत्पन्न करने की अपील की गई। कम्युनिष्टों के देश व्यापी कार्य-क्रम का एक बहुत ही अच्छा परिणाम हुआ। सम्पूर्ण रोमानिया के स्तर पर "डिमोक्रेटिक फ्रन्ट" की स्थापना हो सकी। इस "डिमोक्रेटिक फ्रन्ट" के मुख्य सदस्य रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी, समाजवादी पार्टी, संयुक्त समाजवादी पार्टी, "प्लाउमेन्स फ्रन्ट", "यूनियन औफ मागयार वर्किंग पिपुल ऑफ रोमानिया", सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टी, नेशनल पिजेन्टस पार्टी "रौडिकल पिजेन्ट्स पार्टी, डा० लूपू का पीजेन्ट्स पार्टी तथा अन्य संगठन थे।

"डिमोक्रेटिक फ्रन्ट" के रूप के संगठित इस शक्ति को देश के राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में आशातीत सहायता प्राप्त हुई। १९३६ में हुनेडोआरा एवं मेहाडटी के राज्यों में पार्लियामेन्ट्री उप चुनावों में भारी बहुमत से ये विजयी हुए। तथा १९३७ के काउन्टी काउन्सिल के चुनावों में प्लोईस्टी, क्लज, जेसी, विहोर तथा अन्य स्थानों पर भी इन्हें विजय मिली। इस तरह से रोमानिया के लोगों ने कम्युनिष्ट पार्टी में अपनी आस्था प्रकट की तथा इनके नेतृत्व में फासिष्टों के विरोध में दृढ़ता से संगठित हुए। कम्युनिष्ट पार्टी द्वारा प्रजातंत्र की रक्षा तथा देश की स्वतंत्रता के लिए किए गए वीरोचित संघर्ष ने शासक दल की आंखें खोल दीं। शासक वर्ग के अन्दर कुछ गुट के लोग कम्युनिष्ट आन्दोलन का समर्थन करने लगे थे। वे अनुभव कर रहे थे कि रोमानिया हिटलर की दासता में जा रहा था तथा देश की स्वतंत्रता को वास्तविक खतरा पैदा हो गया था। इस समय संसार की बड़ी शक्तियों की स्थिति दूसरे प्रकार की थी। वे हिटलर के सामने घुटने टेक रहे थे। हिटलर आक्रमाण के लिए वहानों की तलाश करता था। एक छोटा सा बहाना मिलने से ही अपने आक्रमण को उचित सावित करना शुरू कर देता था। जर्मनी रेडियो प्रचार कार्य में रत हो जाता और एक ऐसा वातावरण तैयार कर देता था जिससे आक्रमण आवश्यक लगने लगता था। लेकिन इतना होने पर भी रोमानिया पर हिटलर के आक्रमक रवैये का ऋणात्मक प्रभाव पड़ा।

म्युनिख समझौते के पश्चात, जिसने पूर्व योरोप के देशों में जर्मनी के लिए मार्ग प्रशस्त किया, रोमानिया की प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने इस संदर्भ में राष्ट्रीय हित को ध्यान में नहीं रक्खा। १९३९ में रोमानियन-जर्मन आर्थिक समझौता तथा अन्य समझौते में रोमानिया की अर्थ व्यवस्था को हिटलर की आक्रमक नीति का दास बना दिया गया। राजनैतिक जीवन पूर्णत: जर्मनी के अधीन हो गया। देश की स्वायत्तता और स्वतंत्रता हिटलर को समर्पित कर दी गयी। रोमानिया के श्रमिक वर्गों ने इस स्थिति को समझा। उन्होंने अनुभव किया कि प्रतिक्रियावादियों की यह नीति रोमानिया के राजनैतिक अस्तित्व का अन्त है। उन लोगों ने कम्युनिष्ट पार्टी के नेतृत्व में रोमानिया के प्रतिक्रियावादी शासन का विरोध किया। साथ ही नाजी रीख द्वारा रोमानिया पर अधिकार का भी विरोध किया। कम्युनिष्टों ने इसके लिए देश में सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान किया। लाखों की संख्या में लोग क्रान्ति के लिए तैयार होने लगे। उन लोगों ने प्रतिज्ञा की कि जब तक शरीर में रक्त का एक बूंद भी मौजूद है हम फासिस्ट साम्राज्यवाद का विरोध करेंगे। श्रम पर जीने वाले लोगों ने देश की रक्षा के लिए अस्त्र धारण कर लिया था। १९३९ में जब चेकेस्लोवाकिया पर जर्मन आक्रमाण हुआ और चेकेस्लोवाकिया को जर्मन अधिकृत राष्ट्र घोषित किया गया, रोमानिया के लोग नाजी विस्तार के विरुद्ध चेकोस्लोवाकिया की मदद करने के लिए तैयार थे। जब रोमानिया की सरकार ने कानून द्वारा कम्युनिष्टों के इस कार्यक्रम का विरोध किया तो रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने अपने संगठन को यह निर्देश किया कि शसस्त्र क्रान्ति के लिए तैयार रहें। मातृभूमि पर संकट के बादल मड़रा रहे हैं और यही समय है जब मातृभूमि के प्रति अपने कर्त्तब्य का निर्वाह किया जा सकरा है। इसी समय पोलैन्ड की सेनाओं तथा जनता ने हिटलर के आक्रमाण से बचने के लिए रोमानिया में शरण ली थी। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने उनका आदर किया। रोमानिया में कम्युनिष्ट पार्टी का महत्व बढ़ रहा था।

रोमानिया में कम्युनिष्ट पार्टी के नेतृत्व में फासिस्ट विरोधी आंदोलन की शुरूआत हो चुकी थी। इस समय में बहुत से छोटे बड़े संघर्ष हो चुके थे। इसमें "मे डे" के अवसर पर १९३९ का प्रदर्शन बहुत ही महत्वपूर्ण था। कम्युनिष्ट पार्टी के नेतृत्व में इस प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। यह प्रदर्शन रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में हुई थी जिसमें लगभग २०००० लोगों ने भाग लिया था। यह एक खुला प्रदर्शन था जिसमें तत्कालीन सरकार से देश के नागरिकों के प्रजातांत्रिक अधिकारों तथा स्वतंत्रताओं को अक्षुण्ण रखने की मांग की गयी थी। साथ ही यह भी मांग की गई थी कि रोमानिया को हिटलर के प्रभाव क्षेत्र से मुक्त रक्खा जाय। उन लोगों ने मातृभूमि की रक्षा की कसमें खाई और लाखों करोड़ों अनाम बहादुरों के मजार पर फूल माला अर्पित की। क्लज और जैसी आदि जगहों पर भी इसी प्रकार का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का असर यह हुआ कि कुछ बुर्जुआ नेताओं ने भी देश पर आये खतरे का अनुभव किया। उन लोगों ने भी फासिस्टों के विरोध में कदम उठाया। उन लोगों ने आर्थिक संधि में जर्मनों द्वारा जबर्दस्ती लादी गई धाराओं का विरोध किया और जनता को बताया कि ये धाराएं रोमानिया के हक में नहीं हैं। वर्लड् कानफ्रेंस आफ डीफेंस आफ पीस एण्ड डिमोक्रेसी, जिसका आयोजन १३ मई १९३९ में हुआ था, ने भी रोमानिया के कम्युनिष्टों की नीति की सराहना की। उन लोगों

ने कहा कि रोमानिया के "मे डे" का प्रदर्शन वास्तव में वहां की साधारण जनता का फासिज्म के खिलाफ प्रदर्शन है। वहां की जनता की इच्छा है कि रोमानिया को फासिज्म के क्षेत्र से मुक्त रक्खा जाय। अगर ऐसा नहीं हो सकेगा तो वहां की जनता अन्तिम सांस तक फासिष्टों के विरोध में संघर्ष करेगी।

जिस समय रोमानिया की जनता में क्रांति की लहर उमड़ रही थी तथा कई योरोपीय देशों पर जर्मन फासिष्टों का अधिकार हो चुका था, १९४० में कामिनटर्न ने रोमानिया की जनता को सम्बोधित कर अपना एक निर्देश जारी किया। इसमें रोमानिया के लोगों की प्रशंसा करने के बजाय उसकी निन्दा की गयी थी। रोमानिया की जनता का फासिष्ट तथा जर्मनी-विरोधी प्रचार तथा अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये कृत संकल्प होकर आगे बढ़ना कामिनर्टन को पसन्द नहीं था। जर्मन रेडियो द्वारा प्रचारित तथ्यों के आधार पर तथा वास्तविकता से कोसों दूर कामिनटर्न के निर्देश में कहा गया था कि "जर्मनी और इटली नहीं चाहता है कि इस समय बालकन राज्यों को लड़ाई में घसीटा जाय। सिर्फ लड़ाई के बावले ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवादी इन देशों के उत्पादन और व्यापार में वाधा प्रस्तुत कर रहे हैं। ये वे ही लोग हैं जो बालकन क्षेत्र में इटली के विरुद्ध किसी भी तरह से मोर्चा कायम करना चाहते हैं तथा बाद में बगल से जर्मनी पर आक्रमण करना चाहते हैं। कामिनर्टन के इस निर्देश से रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी के आन्दोलन को गहरा धक्का लगा। कामिनर्टन ने अपने स्वेच्छा चारी निर्णय के आधार पर जर्मनी और रूस को एक साथ कर दिया और रोमानिया के लोगों को बताया कि उनका आन्दोलन वास्तव में ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवादियों के इशारे पर चल रहा है जो रोमानिया को रूस तथा जर्मनी से लड़ा देना चाहते हैं। अत: रोमानिया में ऐसी स्थिति का सृजन नहीं होना चाहिए। रोमा-निया-वासियों को ब्रिटिश एवं फ्रेंच साम्राज्यवादियों के लिए रोमानिया में ऐसा मोर्चा तैयार नहीं करना चाहिये जिसे पीछे चलकर वे रूस और जर्मनी के खिलाफ इस्तेमाल करें। इसके साथ ही इन लोगों ने मांग की कि देश के राजनैतिक क्षेत्रों की सुरक्षा के नारे को, जिसके द्वारा रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी जन साधारण को क्रान्ति के पथ पर अग्रसर कर सकी थी, ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवादियों के साथ पुनर्मेल की संज्ञा दी जाय तथा इसे जर्मनी और रूस के विरुद्ध लड़ाई कह कर सम्बोधित किया जाय। कामिनटर्न के इस निर्देश ने रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी की जड़ हिला दी। अभी तक पार्टी जिस कार्यक्रम को लेकर आगे बढ़ रही थी, कामिनटर्न का निर्देश उसके प्रतिकूल था। पार्टी के लिए गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी। एक तरफ देश की वास्तविक स्थिति पर आधारित कार्यक्रम था और दूसरी तरफ कामिनर्टन का निर्देश। पार्टी के कार्यकर्त्ताओं में नितान्त भ्रान्ति का वातावरण पैदा हो गया। एक तो गहुत कठिनाइयों के पश्चात् हिटलर की आक्रम-णकारी नीतियों के खिलाफ जबर्दस्त जनमत तैयार करने में वे सफल हुए थे दूसरी तरफ कामिनटर्न के निर्देशन ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। गंभीर संकट की इस स्थिति में पार्टी का सभी कार्य-क्रम ठप्प हो गया। खतरा यहां तक बढा कि बहुत से समाज-बादी लोगों को पार्टी छोड़ने की नौबत आ गयी।

जिस समय रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी गंभीर सांगठनिक संकटों से गुजर रही थी,



१ मई १९३९ को बुखारेस्ट से प्रारम्भ होने वाली युद्ध-विरोधी जनसभा का वह दृश्य जिसके संगठन में निकोलाई चाउसेस्कू ने मुख्य भूमिका निभायी थी।

रोमानिया पर १६४० में "वियना डिक्टाट" लागू किया गया जिसके अनुसार ट्रांसिलवा-निया का दक्षिणी हिस्सा लेकर होर्थी के हंगरी को दे दिया गया । कम्युनिष्ट पार्टी इस स्थिति को वर्दास्त नहीं कर सकी । अन्य प्रजातांत्रिक और राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिल कर इन्होंने "वियना डिक्टाट" के विरोध में देश व्यापी प्रदर्शन किया और सम्पूर्ण जनता से सशस्त्र क्रान्ति की अपील की । अपने देश की स्वतंत्रता और स्वायतता की रक्षा के लिए अपने आपको न्योछावर करने की अपील की । इस भयानक राजनैतिक संकट के समय, जब कि रोमानिया का भाग्य अनिश्चितता के झूले पर झूल रहा था, रूमानिया के लोग अकेले थे । बाहर किसी देश और किसी संगठन से इन्हें कोई सहायता नहीं मिली । योरोपीय शक्तियों ने रोमानिया पर कोई ध्यान नहीं दिया । उपेक्षित रोमानिया को मजबूरी में अन्यायपूर्ण "वियना डिक्टाट" को मानना पड़ा । रोमानिया को हिटलर के खूनी पंजों में छोड़ दिया गया । अब रोमानिया पूर्णतः हिटलर के अधीन हो गया था । रोमानिया पर विधिवत हिटलर का अधिकार घोषित कर दिया गया था । इसके कुछ दिनों के बाद ही जर्मन सेनाओं ने रोमानिया में प्रवेश किया और इसके बाद ही रोमानिया सोवियत विरोधी लड़ाई में घसीट लिया गया ।

फासिष्ट सैनिक तानाशाही और जर्मनी के साथ रोमानिया की दूसरे देशों से लड़ाई रोमानिया के आधुनिक इतिहास का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण समय कहा जा सकता है । रोमानयिा जर्मन तानाशाहों की इच्छा का दास था । हिटलर के इच्छानुसार रोमानिया के सम्पूर्ण प्राकृतिक साधनों, तथा सम्पत्तियों का खुल कर शोषण किया गया । सम्पूर्ण उद्योग, कृषि और यातायात को हिटलर की आक्रमणकारी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया गया । लड़ाई के समय में रोमानिया की अर्थ व्यवस्था का विनाश हो गया, लड़ाई में रोमानिया की सम्पत्ति का इतना ह्रास हुआ कि लड़ाई के बाद औद्योगिक उत्पादन आधा रह गया । औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन का जो भाग बिना भुगतान किए जर्मनी ने ले लिया था, वह करीब-करीब ४४६ मिलियन डालर तक पहुंच गया था ।

कम्युनिष्ट पार्टी, जो रोमानिया की जनता की इच्छाओं का प्रतीक था, शुरू से ही फासिष्त विरोध अभियान में संलग्न रहा । दृढ़तापूर्वक उसने जर्मनी के साम्राज्यवादी एवं आक्रमक नीति की आलोचना की तथा सोवियत संघ के साथ युद्ध को गलत बताया । देश की जनता का उन्होंने आह्वान किया और अपील की कि फासिज्म के प्रतिनिधि एन्टोनेस्कू सर-कार का वे अन्त कर दें । वह युद्ध का अन्त करे तथा जर्मनी से संबंध विच्छेद करे । सोवियत विरोधी लड़ाई के संबध में १६४१ का प्रस्ताव, १६४१ के प्लेटफार्म प्रोग्राम और रोमानिया जनता के विनाश नामक १६४२ के दस्तावेज में जनता को सम्बोधित कर उन्होंने एन्टोने-स्कू सरकार के अन्त, सोवियत विरोधी युद्ध के अन्त तथा जर्मनों को रोमानिया की पवित्र भूमि से खदेड़ने का नारा लगाया । कम्युनिष्ट नेताओं ने रोमानिया के नागरिकों को चेता-वनी दी कि युद्ध का परिणाम अत्यधिक भयावह होगा और हिटलर की दासता में जीने से मर जाना कहीं बेहतर होगा । कम्युनिष्टों की इस अपील ने रोमानिया के जन मानस को आन्दोलित कर दिया । हजारों लोग कम्युनिष्ट पार्टी के साथ हो गये । कम्युनिष्ट पार्टी ने गुरिल्ला सेना का संगठन किया जिसका उद्देश्य जगह-जगह तोड़-फोड़ करना तथा फासिस्ट कैम्पों पर छिप कर हमला करना था । कम्युनिष्ट पार्टी द्वारा संगठित इस गुरिल्ला संगठन ने जर्मनी समर्थक

लोगों में आतंक का वातावरण पैदा कर दिया। इसके अलावे कम्युनिष्ट पार्टी ने देश भक्त सैनिकों की अलग-अलग दस्ती तैयार की थी। इन सैनिक दस्तियों तथा गुरिल्ला सैनिकों की मदद से आन्दोलन को चालू रक्खा गया। प्रोहोवा भैली, ब्रान्सिया और पारिंग पहाड़ियों, डैन्यूब नदी के डेल्टा, मारामुरेस तथा मुसेमा प्रदेशों में इनकी गतिविधियां तेज हो गयी थीं। १६४३ में "एन्टी हिटलेराईट पैट्रीओटिक फ्रन्ट" के संगठन तथा निर्माण ने फासिष्ट विरोधी आन्दोलन को और बढ़ावा दिया। कम्युनिष्ट पार्टी प्लावमैन्स फ्रन्ट यूनियन आफ पैट्रीओट्स, माडोस्ज, समाजवादी कृषक पार्टी तथा समाजवादी प्रजातांत्रिक पार्टी के अन्य स्थानीय संगठन इस फासिष्ट विरोधी संगठन के सदस्य थे।

फासिस्ट विरोधी ग्रान्दोलन जिस तेजी से रोमानिया में बढ़ रहा था, उसमें सिर्फ उपर्युक्त संगठन के लोग ही नहीं थे वरन् समाज के सभी वर्ग के लोग इसमें सम्मिलित थे। यहां तक कि बुर्जुआ समर्थक लोग भी रोमानिया में जर्मनी का शासन वर्दास्त नहीं कर सकते थे। फासिष्ट विरोधी आन्दोलन में वे भी सम्मिलित हो गये। उन लोगों ने भी जर्मनों के लूटने तथा शोषण की नीति का विरोध किया। उस समय रोमानिया में जर्मनी के प्रतिनिधि ने अनुभव किया कि राष्ट्रीय बैंक बुर्जुआ क्षेत्र में एक जवर्दस्त फासिष्ट विरोधी भावधारा का सृजन हो रहा है। अक्तूबर १६४३ में रोमानियामें हिटलर के आर्थिक सलाहकार क्लोडियस ने वर्लिन सरकार को सन्देश दिया कि रोमानिया सरकार किसी भी कीमत पर जर्मनी की मांगों को पूरा करने के लिए तैयार नहीं है। जर्मनी ने रोमानिया सरकार से यह मांग की थी कि उसके उत्पादन का अधिक से अधिक हिस्सा जर्मनी को सौंप दिया जाय। क्लोडियस ने लिखा था "रोमानिया सरकार के रुख में परिवर्तन करने के मेरे सभी प्रयत्न निष्फल हो गये। नेशनल बैंक का गवर्नर अपनी बात पर अड़ा रहा, बैंक के प्रबंध से अपनी एकता प्रदर्शित करते हुये उन्होंने घोषणा की कि अगर जर्मनी की सम्पूर्ण मांग का एक हिस्सा भी पूरा किया गया तो वे पद त्याग कर देंगे। इस तरह से जब प्रत्येक क्षेत्र में जर्मनी का विरोध शुरू हो गया तो लड़ाई के खर्चों को पूरा करने के लिए जर्मनी ने रोमानिया पर सैनिक अधिकार की घोषणा कर दी। १६४४ में जर्मनी के सैनिक कमांड ने घोषित किया कि "वे रोमानिया में किसी भी प्रकार की राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों के संदर्भ में सोचने के लिये तैयार नही हैं। वे जिस बात की आवश्यकता का अनुभव करेंगे वैसी आज्ञा देंगे। वास्तविकता यह थी कि जिस दिन से रोमानिया में जर्मन सैनिकों ने प्रवेश किया था उसी दिन से वे अपने आज्ञानुसार सरकार का संचालन कर रहे थे।

रोमानिया पर जर्मनी के सैनिक अधिकार के विरोध में सार्वजनिक हड़ताल तथा तोड़-फोड़ की कार्यवाहियां तेज हो गयीं। श्रमिकों ने, जो औद्योगिक संस्थानों में कार्य करते थे तथा एक संगठित शक्ति के रूप में थे, हिटलरी शासन के विरोध में देश व्यापी हड़ताल का सहारा लिया। यातायात संबंधी कर्मचारियों ने भी इनके समर्थन में हड़ताल कर दी। देश के बुद्धि जीवियों ने भी हिटलर की खूनी नीतियों के विरुद्ध रोमानिया की सरकार के समक्ष अपना असंतोष व्यक्त किया। फिर सैनिक दस्तों तथा गुरिल्ला सैनिकों की कार्यवाहियों ने देश में हिटलर विरोधी आन्दोलन को पनपने में अत्याधिक सहायता की। देश के प्रमुख राजनैतिक नेताओं, विद्वानों तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने एन्टोनेस्कू सरकार के समक्ष

पत्रों, प्रतिवेदनों तथा विरोध पत्रों के माध्यम से अपना असतोष व्यक्त किया। अप्रैल १९४४ में ६६ वैज्ञनिकों, रोमानिया एकेडेमी के सदस्यों तथा बुखारेस्ट जैसी और कालेज, विश्व-विद्यालयों के प्राध्यापकों द्वारा एक प्रतिवेदन दिया गया जिसमें कहा गया था "कि एक भयानक विनाश हमारे देश के अस्तित्व का अन्त कर देना चाहता है।" उस प्रतिवेदन में आगे कहा गया था कि "हमारे देश और जनता का हित अविलम्ब युद्ध का अन्त चाहता है, चाहे यह कदम कितना भी कठिन क्यों न हो। रोमानिया को इस संदर्भ में जो भी बलिदान करना पड़ेगा वह लड़ाई को आगे बढ़ाने के दुष्परिणामों से प्रत्येक स्थिति में कम दुखदायी होगा।" युद्ध के भयंकर परिणामों के सबंध में तत्कालीन समाचार पत्रों ने शीर्षलेखों तथा संपादकीय लेखों के माध्यम से जनता के समक्ष अपना विचार रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण रोमनिया में जर्मनी तथा फासिष्ट विरोधी एक लहर पैदा हो गयी। फासिष्ट विरोधी आन्दोलन जोर पकड़ गया। श्रमिक वर्गों, राजनैतिक पार्टियों, किसानों तथा बुद्धि-जीवियों के इस आन्दोलन ने देश के सैनिकों तथा पदाधिकारियों को भी प्रभावित किया। सैनिकों ने मोर्चे पर जाने से इन्कार कर दिया तथा सैनिक पदाधिकारियों ने खुलेआम फासिष्ट समर्थक एन्टोनेस्कू सरकार के विरुद्ध आवाज बुलंद की। वे सेना की नौकरी छोड़ कर आन्दोलनकारियों के साथ हो गये। सैनिकों के समर्थन ने क्रान्तिकारियों तथा आन्दोलन कारियों में एक नयी चेतना का संचार कर दिया। फासिष्ट विरोधी आन्दोलन को इससे काफी बल मिला। इन स्थितियों को देखने से ज्ञात होता है कि रोमानिया के लोग किसी भी तरह फासिष्ट शासन को देश से उखाड़ फेंकना चाहते थे तथा उनके दिल-दिमाग में असंतोष का तूफान उमड़ रहा था।

१९४३-४४ के वर्षों में सोवियत सेनाओं तथा फासिस्ट विरोधी अन्य शक्तियों के संगठन के हाथों जर्मन सैनिकों की पराजय ने इतिहास की धारा को मोड़ दिया। जर्मनों पर विजय ने सम्पूर्ण विश्व के स्तर पर हिटलर विरोधी आन्दोलन को एक नई शक्ति दी। रोमानिया में एक तो पहले से हिटलर विरोधी आन्दोलन तेजी पर था ही जर्मन सैनिकों की पराजय ने इसे और भी तेज कर दिया। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने अन्य हिटलर विरोधी शक्तियों के साथ मिलकर एन्टोनेस्कू सरकार को अन्त करने के लिए तथा जर्मनों के खिलाफ शस्त्र उठाने के लिए आन्दोलन की रूप-रेखा तैयार की। इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर घीयोरधे धेयोरधीयू देज के नेतृत्व में कारागार के बाहर तथा अन्दर के सक्रिय कार्य-कर्त्ताओं ने सशस्त्र क्रान्ति के लिये कार्य -क्रम तैयार किया। इस संदर्भ में पार्टी के भीतर से वैसे लोगों को बाहर कर दिया गया जिनकी नीयत पर पार्टी को शंका थी। पार्टी के इस लक्ष्य की पूर्ति का भार कैन्सटेन्टाइन पिरयूवेस्कू इमिल वोदनारास एवं रांघेट जैसे अनुभवी नेताओं के जिम्मे डाल दिया गया।

हिटलर विरोधी शक्तियों के संयुक्तीकरण के सिलसिले में १९४४ अप्रैल में रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी तथा सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टी का संगठन अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इन दोनों पार्टियों के गठबंधन से संयुक्त श्रमिक मोर्चा की स्थापना संभव हो सकी थी। संयुक्त श्रमिक मोर्चा के संगठन के महत्व को इस बात से आंका जा सकता है कि इसके तीन महीने के भीतर ही "नेशनल डेमोक्रेटिक ब्लाक" का संगठन सम्पादित हो सका। इसमें देश

की चार प्रमुख पार्टियां सम्मिलित थीं—रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी, सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टी, नेशनल पिजेन्ट पार्टी तथा लिबरल पार्टी—इन चार पार्टियों के सम्मिलित प्रोग्राम में इस बात की मांग की गयी कि रोमानिया सोवियत विरोधी युद्ध से अलग हो तथा संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बने। देश को जर्मनी की दासता से मुक्त किया जाय। राष्ट्रीय स्वायत्तता तथा स्वतन्त्रता की पुर्नःस्थापना हो। देश को फासिष्ट अधिनायकवादी शासन से मुक्त किया जाय तथा प्रजातांत्रिक शासन की स्थापना की जाय। पार्टी ने सैनिकों से तथा उनके उच्च पदाधिकारियों से भी सम्बन्ध बनाये रक्खा। १९४४ में सैनिक समिति का गठन किया गया था जिसका कार्य सशस्त्र सैनिक क्रान्ति की तैयारी करना था।

एक तो सम्पूर्ण रोमानिया में हिटलर विरोधी आन्दोलन तेजी पर था, हिटलर और एन्टोनेस्कू ने यह निर्णय किया कि रोमानिया के सैनिक जर्मन सैनिकों के साथ मिलकर रूस पर आक्रमण करें। एन्टोनस्कू के इस निर्णय ने जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया। सम्पूर्ण देश में इसकी भीषण प्रतिक्रिया हुई। कम्युनिष्ट पार्टी अब और अधिक नहीं रुक सकी। सशस्त्र क्रान्ति का बिगुल बज उठा। २३ अगस्त को एन्टोनेस्कू की सरकार को राजमहल में कैद कर लिया गया तथा इसके पश्चात् उन्हें क्रान्तिकारियों के हवाले कर दिया। सानाटेस्कू के अधीन एक नयी सरकार का गठन किया गया जिसमें देश की चारों प्रमुख पार्टियों के एक-एक सदस्य थे। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अपनी घोषणा में कहा कि "रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी श्रमिक वर्ग की पार्टी है जो सम्पूर्ण रोमानिया समाज के हितों का प्रतिनिधित्व करती है। यह राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के लिए रोमानिया के श्रमिक वर्ग, किसानों, बुद्धिजीवियों तथा शहरी आबादी का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। उनके राजनैतिक तथा नागरिक अधिकारों के संघर्ष का सूत्र है…हिटलर की सेनाओं के साथ संघर्ष अनिवार्य है। अतः रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी यह आह्वान करती है कि रोमानिया का श्रमिक वर्ग, किसान, बुद्धिजीवी तथा सभी नागरिक अपने भविष्य के लिए, रोमानिया की जनता के महान् शत्रु से अपने सभी अस्त्रों से सुसज्जित होकर संघर्ष के लिए तैयार रहें।" २३ और २४ अगस्त की रात में रोमानियन सैनिकों तथा देश भक्त एंककों ने जर्मन सैनिक एककों से मुठभेड़ शुरू कर दी। भयानक युद्ध के बाद वे राजधानी तथा देश के बड़े भाग को जर्मनों की दासता से मुक्त करने में समर्थ हो सके।

रोमानिया के इतिहास में एक नये युग की शुरूआत हुई। मुक्ति तथा सामाजिक उन्नति के सभी बन्द द्वार अनायास ही खुल गये। रोमानिया ने जर्मनी के खिलाफ अस्त्र उठाया तथा हिटलर-विरोधी गुट का सदस्य हो गया। रोमानिया नाज़ी जर्मनी को अन्तिम पराजय देने के लिए अपनी सम्पूर्ण सैनिक तथा आर्थिक शक्तियों के साथ मैदान में उतरा। रूसी सैनिकों के कंधे से कंधा मिला कर रोमानिया के सैनिक लड़े तथा उन्होंने हिटलर और हौर्थी की सेनाओं को देश से खदेड़ कर ही दम लिया। रोमानिया तथा रूसी सैनिकों के दिल दिमाग में हिटलर की नीति के प्रति इतना असंतोष था कि वे सम्पूर्ण विश्व से हिटलर की सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये तड़प उठे। वे लोग हंगरी तथा चेकोस्लोवाकिया को भी जर्मनों से मुक्त करने के लिये लड़े। वे तब तक लड़ते रहे जब तक हिटलर का पूर्ण पराजय नहीं हो गया। इस युद्ध में रोमानिया के ५,४०,००० लोगों ने भाग लिया था। १,७०,०००

लोग युद्ध की बलिवेदी पर भेंट चढ़ गये। युद्ध में रोमानिया के सैनिकों ने जिस वीरता और साहस का परिचय दिया था वह संसार में अन्यत्र दुर्लभ है। वीरतापूर्ण कार्य के लिए ३०० हजार सैनिकों तथा सैनिक अधिकारियों को रूसी, चेकोस्लोवाक तथा रोमानियन सरकार ने सम्मानित किया था। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप सोवियत संघ और रोमानिया एक-दूसरे के बहुत करीब आ गये। वे एक दूसरे के मित्र बन गये। संसार के अन्य देशों से रोमानिया का राजनैतिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध भी उसी समय से शुरू हुआ। रोमानिया के इतिहास में इन वीरों का नाम सदा के लिए अमर रहेगा जिन्होंने मातृभूमि की मुक्ति के लिए अपनी जानें गंवाई।

२३ अगस्त के तुरंत बाद पार्टी ने देश की शक्तियों को संगठित करना शुरू किया। अपने हजारों कार्यकर्त्ताओं पर, जिन्होंने युद्ध के समय इसके नेतृत्व में कार्य किया था विश्वास करते हुए, बहुत ही कम समय में पार्टी। मुख्य औद्योगिक संस्थानों, गाँवों, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक संस्थानों तथा देश के प्रमुख केन्द्रों में अपनी शक्ति को संगठित करने में सफल हो सकी। उस समय में पार्टी ने संयुक्त श्रमिक संगठनों एवं युवकों को संगठित किया तथा "युनाइटेड वर्क्स फ्रन्ट" को और मजबूत बनाया। इसके साथ ही पार्टी ने अन्य प्रजातांत्रिक संगठनों से सम्बन्ध स्थापित कर "नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट" की स्थापना की। "नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट" में जिन पार्टियों को सम्मिलित किया गया था उनके नाम क्रमशः इस प्रकार है—रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी, सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टी, संयुक्त श्रम संगठन, प्लावमेन्स फ्रन्ट, युनियन आफ पैट्रीओट्स, मागयार पिपुल्स युनियन, नेशनल पिजेन्ट्स पार्टी जिसके नेता अन्टोनी अलेकजेन्ड्रेस्कू थे, युवक, कामगर तथा अन्य छोटे छोटे संगठन। वास्तव में "नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट" रोमानिया का प्रथम प्रजातांत्रिक संगठन था जिसने रोमानिया के आवश्यकतानुसार सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के कार्य-क्रमों को लागू किया।

इतना होने के बावजूद भी पार्टी में अवसरवादियों की कमी नहीं थी। देश में मुख्य मुख्य जगहों पर अब भी बुर्जुआ समर्थक लोग थे। बड़े-बड़े पदाधिकारी तथा नौकरशाही परम्परा में पले लोगों को नयी व्यवस्था पसन्द नहीं आ रही थी। मजदूरों तथा किसानों का शोषण अब भी चल रहा था। फिर कुछ साम्राज्यवादी देशों ने भी रोमानिया में अन्दरुनी संगठन तैयार कर कम्युनिष्टों के बढ़ते कदम को रोकने की कोशिश की। एक तरह से सर्वत्र अराजकता की स्थिति पैदा हो गयी थी। कम्युनिष्ट पार्टी के अस्तित्व को फिर से खतरा पैदा हो गया। ऐसी स्थिति में पार्टी के कार्यकर्त्ताओं ने धैर्य से काम किया। पार्टी सम्पूर्ण देश के स्तर पर संगठित हो ही चुकी थी, उन लोगों ने प्रजातांत्रिक विकास के मार्ग में बाधक तत्वों के सम्मिलित रूप का सफाया करना शुरू कर दिया। बड़े-बड़े पदाधिकारियों को पद से अलग कर दिया गया तथा बुर्जुआ समर्थक लोगों का सफाया कर दिया गया। कारखानों का प्रबन्ध श्रमिकों के हाथ दे दिया गया तथा जमीन कृषकों को दे दी गयी। सम्पूर्ण प्रतिक्रियावादी तत्वों का सफाया कर दिया। इसी सनसनीपूर्ण वातावरण में डा० पेट्रु ग्रोजा के नेतृत्व में मार्च १९४५ में रोमानिया के इतिहास में पहली वार श्रमिक वर्ग के प्रतिनिधि कम्युनिष्ट पार्टी की सरकार, जिसने आधुनिक रोमानिया के निर्माण के स्वप्न को साकार कर दिया, सत्तारूढ़ हुई।

जिस समय कम्युनिष्ट पार्टी की सरकार का गठन रोमानिया में हुआ उस समय देश की स्थिति दयनीय थी। चार वर्षों की हिटलरी दासता और कमरतोड़ शोषण ने देश को आर्थिक रूप से पंगु कर दिया था। उद्योगों में उत्पादन की दर बहुत घट गयी थी। कच्चे माल का अभाव हो गया था। किसानों के पास जमीन तो चली गयी थी लेकिन उनके पास पूंजी नहीं थी। कृषि का उत्पादन स्तर भी निम्न था। फिर उत्पादन के लिए जनशक्ति की कमी हो गयी थी। युद्ध में भौतिक सम्पत्तियों का बहुत विनाश हुआ था। फिर १९४५-४६ में रोमानिया में भयंकर अकाल पड़ा। रोमानिया की मुद्रा का विदेशों में मान घट गया था। प्रतिक्रियावादियों द्वारा तोड़-फोड़ का कार्यक्रम अब भी छिटफुट चालू था। रोमानिया को युद्ध "की क्षति-पूर्ति के रूप में भी करीब करीब १००० मिलियन डालर दूसरे देशों को देना पड़ा। इन सबका परिणाम यह हुआ कि रोमानिया की अर्थव्यवस्था मृतप्राय हो गयी थी। कम्युनिष्ट पार्टी के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या देश में आर्थिक विकास की समस्या थी। देश की अर्थव्यवस्था जिस स्थिति में पहुंच गयी थी उसे फिर से विकसित करने के लिए कठोर प्रयत्न और आत्मविश्वास की आवश्यकता थी। रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने देश की स्थिति में सुधार लाने का बीड़ा उठाया। वे अपनी पूर्ण शक्ति, आस्था और जितने उत्साह से विकास कार्य में लगे वह इनके व्यक्तित्व का ही कमाल था। आजीवन क्रांतिकारी, तथा कम्युनिज्म में आस्था रखने वाले इस महान् नेता ने रोमानिया में नवजागरण का मंत्र फूंक दिया। प्रत्येक स्तर पर संगठन का कार्य किया गया। उत्पादन पर केन्द्रित नीति ने उत्पादन के क्षेत्र में अपूर्व सफलता प्रदान की तथा देश के नागरिकों का जीवन स्तर उन्नत होने लगा।

डा० पेट्रु ग्रोजा के नेतृत्व में सरकार के गठन होने के पश्चात् रोमानिया में सामाजिक परिवर्तन का कार्य तेजी से चला। १९४७ के अन्त तक वैसे सभी मंत्री, जो कम्युनिष्ट पार्टी के नहीं थे, ने सरकार से पदत्याग कर दिया। अब कम्युनिष्ट पार्टी की सरकार पूर्ण हो गई थी। ११ जून १९४८ में एक कानून बना कर सरकार ने बैंकों, खानों, बीमा कम्पनियों, यातायात, टेलीफोन तथा अन्य बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। आर्थिक विकास की व्यवस्था की गयी। प्रथम वार १९५१ ते १९५५ तक के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना बनाई गई।

इन वर्षों में, योरोप के अन्य देशों की तरह, रोमानिया ने भी रूस द्वारा निर्धारित पार्टी के कार्यक्रमों के आधार पर ही देश में विकास कार्य की योजना बनाई। रूस संसार में कम्युनिष्ट क्रान्ति का एक मात्र प्रतीक था, अतः उसके द्वारा निर्धारित कार्य-क्रम अन्य कम्युनिष्ट देशों के लिए एक आचार संहिता के रूप में मान्य था। पूर्वी यूरोप के अन्य कम्युनिष्ट देशों में भी रूस द्वारा निर्धारित नीतियों का पालन होता था। अन्य पूर्वी यूरोपयिन कम्युनिष्ट देशों के साथ रोमानिया भी "कोमेकोन" का सदस्य हो गया। परस्पर आर्थिक सहयोग परिषद की स्थापना १९४९ में हुई थी। १९६२ में यह संगठन अपने सदस्यों के आर्थिक विकास के लिए अधिक तेजी से कार्यरत हुआ। प्रत्येक सदस्य देश के आर्थिक विकास कार्य में रुचि लेना, उनकी समस्याओं को दूर करना तथा सामंजस्य स्थापित करना इनका कार्य था।

अक्तूबर १६४५ में रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। पार्टी ने समस्याओं पर गंभीरता पूर्वक विचार किया। देश के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुये कार्य-क्रम को अन्तिम रूप दिया गया। आर्थिक विकास के लिए नये कार्य-क्रम अपनाये गये। रोमानिया में आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। पूरे स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता थी। किसानों की आर्थिक दशा खराब थी। उन लोगों के पास पूंजी का अभाव था। कृषि उत्पादन देश के भोजन की समस्या को पूरी तरह से सुलझा नहीं सकती थी। कच्चे माल का अभाव था। युद्ध के खर्चे को पूरा करने के लिये कागजी मुद्रा का सहारा लिया गया, जिससे कीमतें ऊंची हो गई थी। फैक्टरी दिन रात कार्य करने के कारण कार्य के लायक ही नहीं रह गई थी। अधिकांश मशीनों के परिवर्तन की आवश्यकता थी। फिर बमबारी के कारण बहुत से औद्योगिक क्षेत्र नष्ट हो गये थे। कारखाने बरबाद हो गये थे। फसलें नष्ट हो गई थीं। यातायात के साधनों की स्थिति भी खराब थी। कुल मिलाकर एक ऐसी स्थिति थी कि जहां अर्थव्यवस्था को नये सिरे से शुरू करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। कम्युनिष्ट पार्टी के कंधों पर राष्ट्रीय विकास का दायित्व आ गया था। अत: युद्ध के स्तर पर ही लोगों को कार्य में लगना था। ऐसे समय में कम्युनिष्ट पार्टी ने अपूर्व साहस का परिचय दिया। उनके कार्यकर्त्ता देश-निर्माण के कार्य में लग गये। रोमानिया के लोगों ने जी खोलकर निर्माण के कार्य में भाग लिया। आज जितनी तेजी से रोमानिया ने सर्वांगीण प्रगति की वह संसार के इतिहास में अपूर्व घटना है।

डा० पेट्रु ग्रोजा का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व था। उनकी वाणी में ओज टपकता था। उनके नेतृत्व में रोमानिया शुरू से एक कम विकसित औद्योगिक देश था। कोमेकोन का सदस्य बनने के पश्चात् रोमानिया बराबर ही देश के भीतर औद्योगिक शक्तियों के विकास की नीति का समर्थन करता रहा। जब यह सुझाव दिया गया कि कुछ भारी उद्योगों का विकास रोमानिया अपने देश में न करे। क्योंकि न तो वहां कच्चे माल की सुविधा थी और न तकनीकी ज्ञान का ही। इसके विपरीत जिस समाजवादी देश में इसकी सुविधा है, वहीं इसका विकास हो। रोमानिया इस नीति के समर्थन के लिए तैयार नहीं हुआ। उन लोगों का कहना था कि अर्थ व्यवस्था के विकास का अर्थ आत्मनिर्भरता है। प्रत्येक देश को अपने आप में आत्म निर्भर होना चाहिए। अत: सभी उद्योगों का विकास सभी देशों में होना चाहिए और सामंजस्य की बात उसी बिन्दु पर की जा सकती है। इसीलिए जब श्री क्रुश्चेव ने रूस की कम्युनिष्ट पार्टी के केन्द्रीय समिति की बैठक के अवसर पर अपने रिपोर्ट में कहा कि विश्व के स्तर का बड़ा उद्योग सिर्फ बड़ी शक्तियों के लिये है क्योंकि बड़ी शक्तियां इसे चलाने की क्षमता रखती हैं और उन लोगों के लिये भी यह तभी संभव हो सका है, जब उनके पास अपनी वस्तुओं के विक्रय के लिए बड़ा बाजार है तथा सट्टेबाजी की प्रवृत्ति के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सका है तो क्रुश्चेव के इस विचार को रोमानिया के लोग मानने के लिये तैयार नही हुए। उसी प्रकार जब "कोमेकोन" की कार्यकारिणी समिति ने फरवरी १६६३ में रोमानिया के शासकों से अपनी योजनाओं में सुधार करने की अपील की, जिससे दोहरे उद्योगों के खतरे से बचा जा सके, रोमानिया इसे मानने के लिए तैयार नहीं हुआ। रोमानिया और रूस का मतभेद यहीं से शुरू होता है।

अगर इन मतभेदों के कारणों पर दृष्टिपात किया जाय तो स्पष्ट मालूम होगा कि रोमानिया के नेताओं के समक्ष अपने देश का स्वार्थ सबसे पहले था। वे अपने देश की आवश्यकताओं के अनुसार ही देश में उद्योगों का विकास चाहते थे। वाह्य निर्देश को मानने का दुष्परिणाम वे भुगत चुके थे। अतः रूस के निर्देश को नहीं मानना, उनके लिए स्वाभाविक था। फिर उस समय एक घटना ऐसी भी हो गयी जिसने रोमानिया-रूस के मतभेद को और तीव्र कर दिया। जून १९६३ में रोमानिया की सरकार ने रूस-चीन विवाद सबंधित विज्ञप्ति को प्रकाशित कर दिया था। एक तरफ रूस के दस्तावेज को रखा गया तथा दूसरी तरफ चीनियों के २५ सूत्री घोषणा पत्र को जिसमें उन्होंने रूस की आलोचना की थी तथा अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन के सिद्धान्त पर आधारित नीतियों को "बड़ी शक्तियों का मखौल" कहा था। फिर रोमानिया द्वारा पूंजीवादी देशों के साथ सीधा व्यापारिक संबंध और व्यापारिक समझौता भी रूस की नजरों में खटका। इसी समय रोमानिया ने युगोस्लाविया के साथ "डैन्यूब हाइड्रो इलैक्ट्रिक" पावर स्टेशन के निर्माण के लिए समझौता कर लिया।

रोमानिया साम्यवादी सरकार के इन साहसपूर्ण कदमों की विश्व स्तर पर प्रतिक्रिया हुई। यह रूस और चीन के बीच लगभग एक तटस्थ राज्य के रूप में उदित हो रहा था। रूस और चीन के नेताओं ने रोमानिया के इन कदमों की कड़ी आलोचना की। रोमानिया के नेताओं के सम्मान में अपशब्दों का भी प्रयोग किया। लेकिन रोमानिया के नेता इससे घबराये नहीं। उन लोगों के आरोपों का खंडन करते हुये, निर्भीकता पूर्वक अपनी बातें रखीं। उन लोगों ने यह घोषणा की कि समाजवादी राष्ट्रों की प्रभुसत्ता को अखंडित रखा जाय। किसी भी देश को किसी अन्य देश के निजी मामले में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। बल प्रयोग और बाह्य दबाव की नीति को बर्दास्त नहीं किया जा सकता है। मार्च १९६४ में रोमानिया के प्रधान मंत्री लोन घेयोरघे माउरर के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल पेकिंग और मास्को गया था। वहां से लौटने के पश्चात् उन लोगों ने एक घोषणा पत्र जारी किया जिसमें कहा गया था कि प्रत्येक समाजवादी राष्ट्र को चाहिए कि प्रत्येक स्तर पर वे अपने अस्तित्व को बनाये रक्खें तथा देश के आर्थिक विकास को अपने हाथ रक्खें। इनके नेताओं ने "युगोस्लावलीग ऑफ कम्युनिष्टस्" को कामिनटर्न से बाहर निकाले जाने पर गंभीर प्रतिक्रिया व्यक्त की तथा किसी राष्ट्र के मामले में हस्तक्षेप न करने की नीति की घोषणा की।

रोमानिया द्वारा अपनाई गई इस प्रकार की नीति वास्तव में एकात्मक केन्द्रवाद के विचारधारा के अत्यन्त करीब है। एकात्मक केन्द्रवाद के विचार का जन्मदाता इटली के कम्युनिष्ट नेता पालमिरो टौगीलाटी थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् लूइगी लोगों ने उनके विचारों का विस्तार किया। रोमानिया के नेताओं ने देश को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आगे बढ़ाया। संयुक्त राष्ट्र संघ में इसके सदस्यों ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रक्खा। यहां तक कि कभी कभी सोवियत रूस के विरुद्ध भी अपने मतों का प्रयोग किया। इसके अलावा इन लोगों ने पश्चिमी यूरोपीय देशों के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित किया। अक्तूबर १९६४ में घेयोरघे माउरर ने फ्रांस की यात्रा की तथा जेनरल दीगाल से मुलाकात की। जेनरल

दीगाल उन दिनों पश्चिमी संधियों से अलग, एक तटस्थ राष्ट्र के रूप में फ्रांस की प्रतिष्ठा के लिये सक्रिय था। रोमानिया की तटस्थता की नीति ने दीगाल और रोमानिया के बीच मैत्री को और सुदृढ़ बना दिया।

जब अगस्त १९६४ में 'प्रावदा' ने घोषणा की कि २६ कम्युनिस्ट देशों की एक बैठक मास्को में होगी, जिसमें यह तय किया जायेगा कि विश्व के स्तर पर साम्यवादी आन्दोलन का क्या रूप होगा और उसे सही दिशा देने तथा साम्यवादी राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के विकास करने पर भी विचार किया जायेगा। रोमानिया ने इस बैठक में जाने से इन्कार कर दिया था। जबकि उस समय श्री क्रुश्चेव का पतन हो चुका था। उसके कुछ दिनों के पश्चात् ही रोमानिया के प्रसिद्ध कम्युनिष्ट नेता धियोरधे धीयोरधीयू देज का निधन हो गया और पार्टी के नवें अधिवेशन में श्री चाउसेस्कू उनके उत्तराधिकारी नियुक्त किये गये।

१९६५ में, पार्टी के नवें अधिवेशन के समय, वास्तव में देश के सामाजिक विकास और पार्टी के कार्यक्रमों में एक नये युग की शुरूआत हुई। इस अधिवेशन में रोमानिया के लिए एक संविधान को स्वीकारा गया तथा रोमानिया को "समाजवादी गणतंत्र" घोषित किया गया। १९६६-७० के पंचवर्षीय योजना में समाजवादी निर्माण कार्य को महत्व दिया गया था तथा समाजवादी समाज की रचना का प्रयत्न किया गया था। देश के सामान्य विकास, जनता की भलाई तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को ध्यान में रख कर नवें अधिवेशन में उद्योगों के विकास के सम्बन्ध में जो निर्णय लिया गया था वह शीघ्र पूरा कर दिया गया। इन दिनों आधुनिक मौलिक उद्योगों के विकास पर पूरा ध्यान दिया गया था जिसका एक मात्र उद्देश्य मशीन निर्माण, रासायनिक तथा धातु उद्योगों का तीव्र विकास करना था। उद्योगों में प्रत्येक स्तर पर शोध कार्य किए गये तथा अति आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान के उद्योगों में प्रयोग करने की दिशा में प्रयत्न किया गया। कृषि उत्पादन को अत्यधिक विकसित किया गया तथा उत्पादन सहकारी संस्थाओं को और अधिक मजबूत बनाया गया। शिक्षा के विकास के लिए नये-नये कदम उठाये गये तथा आठ साल की शिक्षा आवश्यक कर दी गयी। शिक्षा को उत्पादन पर आधारित बनाया गया। जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाया गया।

समाजवादी निर्माण के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण घटना प्रशासकीय क्षेत्रीय पुनर्गठन थी। बीच के संगठनों को खत्म करके देश के मुख्य एककों से सीधा सम्बन्ध स्थापित किया गया तथा उसे उत्पादन के करीब लाया गया। उत्पादन शक्तियों का समूचे देश में सही ढंग से विभाजन के लिए एक दृढ़ नीति का पालन किया गया। इसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि अर्द्ध-विकसित तथा अविकसित सभी सूत्रों का तीव्र विकास संभव हो सका। अर्थ व्यवस्था तथा सामाजिक उन्नति को ध्यान में रख कर योजना, संगठन और प्रबन्ध में सुधार किये गये। वैसे कानूनों का निर्माण किया गया जिनसे प्रत्येक आर्थिक एककों में आपसी सम्बन्ध कायम हो, देश की भौतिक सम्पदाओं का अधिकतम लाभ के लिए प्रयोग हो सके, तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो सके। पूर्ण समाजवादी प्रजातंत्र के निर्माण के लिए कार्यक्रम अपनाये गये। मुख्य रूप से आर्थिक प्रजातंत्र कायम करने की दिशा में प्रयत्न किया गया।

यह कोशिश की गयी कि जनसंख्या का अधिक से अधिक भाग देश के शासन-प्रबन्ध तथा आर्थिक विकास में भाग ले।

१९६६-७० पंचवर्षीय योजना के निर्धारित लक्ष्यों में प्राप्त सफलता ने रोमानिया में राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को मजबूत बनाया, समाज को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध किया तथा समाजवादी मूल्यों के प्रति लोगों को आस्थावान बनाया। इस समय तक रोमानिया अपने संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के लिए सक्रिय रहा। अच्छे अच्छे कार्यकर्त्ताओं को पार्टी के संगठन में लगाया गया। सम्पूर्ण जनता को साम्यवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराया गया। उन्हें साम्यवाद के सिद्धान्तों की पूर्ण शिक्षा दी गयी। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय नीति से परिचित कराया गया। देश के विकास में उनके योगदान के महत्व को समझाया गया, उन्हें अधिकारों और कर्त्तव्यों से परिचित कराया गया। समाजवादी निर्माण की दिशा में साम्यवादी परिवेश में जनता की शिक्षा कम्युनिष्ट पार्टी का उचित कदम था।

बहुपक्षीय विकास की ओर

१९६५-१९७० समाजवादी निर्माण के इन वर्षों में योजना की सफलता ने रोमानिया के लोगों में आत्म विश्वास का सृजन किया। पार्टी के नेतृत्व में लोगों की पूर्ण आस्था स्पष्ट हो गयी। समाजवादी निर्माण के बाद पार्टी के पास एक महत्वपूर्ण समस्या थी और वह समस्या थी देश के बहुपक्षीय विकास की। १०वें अधिवेशन के अवसर पर पार्टी के नेताओं ने यह अनुभव किया कि अब उपयुक्त अवसर आ गया है, जब कि चिरप्रतीक्षित बहुपक्षीय विकास का कार्यक्रम लागू किया जाना चाहिए। देश विकास के उस स्तर पर पहुंच गया है जहां बहुपक्षीय विकास कार्यक्रम लागू किया जा सकता है। यह कार्यक्रम १९७१-१९७५ की पंचवर्षीय योजना से लागू किया जा सकता है। यह कार्यक्रम १९७१-१९७५ की पंचवर्षीय योजना से प्रारम्भ हुआ और जैसा कि पार्टी के नेताओं का अनुभव है, कई पंचवर्षीय योजनाओं तक चलेगा। वास्तविकता की द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवादी व्याख्या के अनुसार पार्टी ने देश के बहुपक्षीय विकास के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम अपनाया है :—

१--वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों के आधार पर उत्पादन शक्तियों का शक्तिशाली विकास करना जिससे भौतिक सम्पत्ति में निरन्तर वृद्धि हो तथा जन साधारण की आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा बहुपक्षीय बिकास का कार्य आसान हो।

२--क्षेत्रीय प्रशासकीय और आर्थिक पुनर्विचार का कार्यक्रम लागू करना तथा उत्पादन शक्तियों का सम्यक् क्षेत्रीय बिकास करना जिससे प्रत्येक क्षेत्र तथा देश का यथोचित विकास हो तथा सम्पूर्ण जनता को ऊंचे स्तर की आर्थिक उपलब्धि हो।

३--राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की प्रत्येक शाखा का यथोचित विकास करना, उद्योग और कृषि के बीच उचित अनुपात स्थापित करना, क्योंकि कृषि और उद्योग दोनों ही देश के

बहुपक्षीय विकास के लिए आवश्यक तत्व हैं। आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों के आधार पर इन दोनों का विकास आवश्यक है।

४--समाजवादी उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी जायगी। इसमें उच्च स्तरीय विकसित शाखाओं और उप-शाखाओं का विकास किया जायेगा जिससे सामाजिक श्रम साधन और कच्चे माल का पूर्ण उपयोग हो सके। शक्तिशाली उद्योगों का विकास समाज के रहन सहन के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए तथा जन संख्या के अधिभौतिक स्तर को समुन्नत करने के लिए आवश्यक है। देश की स्वतन्त्रता, प्रभुसत्ता तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सम्मान के लिए औद्योगिक विकास आवश्यक है। उद्योगों के समुचित विकास के अभाव में बहुपक्षीय बिकास की कल्पना यथार्थ का रूप धारण नहीं कर सकती।

५--कृषि, जो राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की मूल शाखा है, का गहरा विकास किया जायेगा। कृषि क्षेत्र में नई मशीनों का प्रयोग किया जायेगा। नये तकनीकी ज्ञान, नये बीज तथा खाद का प्रयोग किया जायेगा। कृषि सुधार का कार्यक्रम लागू किया जायेगा। कृषि उत्पादन को इस स्तर तक बढ़ाया जायेगा जिससे जन संख्या की उपभोक्ता-आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा कारखानों के लिए कच्चे माल की जरूरतों को पूरा किया जा सके। कृषि विकास राष्ट्रीय आय की वृद्धि तथा सम्पूर्ण जनसंख्या की समृद्धि में सहायक होगा।

६--देश का सम्पूर्ण आर्थिक और सामाजिक विकास एक राष्ट्रीय योजना के आधार पर किया जायेगा। पार्टी के इस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए देश की सम्पूर्ण जनशक्ति तथा साधनों का प्रयोग किया जायेगा।

७--समाज के विकास के लिए सामाजिक श्रम-उत्पादकता में प्रगति की दर तेज की जायेगी। इसमें मशीनीकरण एवं स्वचालित उत्पादन-तरीका का प्रयोग किया जायेगा। उत्पादन तथा श्रम को वैज्ञानिक ढंग से संगठित किया जायेगा। सम्पूर्ण राष्ट्रीय साधनों एवं अवशिष्ट सम्पत्तियों तथा आर्थिक संभावनाओं का प्रयोग किया जायेगा।

८--आर्थिक कार्य क्षमता का निरन्तर विकास किया जायेगा। आर्थिक व्यय में कमी की जायेगी। आर्थिक साधनों एवं श्रम का पूर्ण उपयोग किया जायेगा।

९--सभी आर्थिक शाखाओं में उच्च स्तरीय उत्पादन किया जायेगा तथा तकनीकी प्रगति और उत्पादन तकनीक का विकास किया जायेगा।

१०--शिक्षा का, जो सामाजिक विकास में मूल तत्व है, विकास किया जायेगा। शिक्षा का विकास इस ढंग से किया जायेगा जो उत्पादन पर आधारित हो तथा जिससे जन साधारण के आधिभौतिक विकास को बल मिल सके।

११--आर्थिक और सामाजिक प्रगति को ध्यान में रख कर विज्ञान का विकास किया जायेगा। प्रायोगिक वैज्ञानिक शोध एवं लम्बे समय के लिए मूल शोध-कार्य को प्रोत्साहित

किया जायेगा। इसके साथ ही दूसरे देश के साथ वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग पर बल दिया जायेगा।

१२--उपभोक्ता कोष एवं विकास कोष में समुचित अनुपात कायम किया जायेगा। सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था के ऊंचे विकास दर के लिए यह आवश्यक है। साथ ही जनता की आर्थिक समृद्धि, आधिभौतिक विकास तथा आधुनिक सभ्यता में श्रमिकों की आवश्यकताओं की निरन्तर पूर्ति के लिए उपभोक्ता कोष एवं विकास कोष में उचित अनुपात आवश्यक है।

१३--उत्पादन शक्तियों, उत्पादन सम्बन्धों एवं सामाजिक सम्बन्धों में पूर्ण सामंजस्य की स्थापना की जायेगी।

१४--उत्पादन सम्बन्धों में प्रगति होगी, अन्तर विरोध को समाप्त कर दिया जायेगा, पुराने की जगह सभी क्षेत्रों में नये की स्थापना की जायेगी, आर्थिक और सामाजिक जीवन में एक योजना और एक प्रबन्ध का महत्व बढ़ा दिया जायेगा।

१५--आधुनिक तथा नये लोगों के विचार परिवर्तन के लिए राजनैतिक, वैचारिक तथा शैक्षणिक क्रिया कलापों को तीव्रतर कर दिया जायेगा समाजवादी आचार शास्त्र और निष्पक्षता के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन को ढालने का प्रयत्न किया जायेगा।

१६—उत्पादन और वितरण के समाजवादी सिद्धान्त को बढ़ावा दिया जायेगा। देश के प्रत्येक नागरिक के लिए श्रम एक गौरव का कार्य होगा। वे समाज के प्रत्येक सामाजिक कार्य क्रम का निर्वाह करेंगे। अपनी योग्यता तथा शक्ति के अनुसार वे कार्य करेंगे। कोई भी व्यक्ति दूसरे के श्रम पर अपना हित नहीं साध सकेगा। मनुष्यों द्वारा मनुष्यों का शोषण पूर्णतया बन्द कर दिया गया है। सामाजिक श्रम अपने तथा सामाजिक आय का स्रोत होगा। वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का दृढ़ता पूर्वक प्रयोग किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य के अनुरूप भुगतान किया जायेगा। नागरिकों की बढ़ती हुई आवश्यकता को देखते हुये उंची आय तथा निम्न आय के बीच की खाई को पाटने का प्रयत्न किया जायेगा।

१७—समाज की आवश्यकताओं की संतुष्टि पर पूरा ध्यान दिया जायेगा। ये वे मूल आवश्यकताएँ हैं जो देश के प्रत्येक नागरिकों के लिये आवश्यक हैं तथा इनकी पूर्ति के लिए प्रयत्न किया जायेगा। भविष्य में समाजवादी वितरण के सिद्धान्त तथा साम्यवादी वितरण सिद्धान्त क्रमश: "कार्य के अनुरूप" तथा "आवश्यकताओं की पूर्ण संतुष्टि के अनुसार" सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जायेगी।

१८—परिवार के विकास पर पूरा ध्यान दिया जायेगा। परिवार समाज के विकास का केन्द्र विन्दु है। परिवार में जन्मदर को बढ़ाया जायेगा जिससे जनसंख्या के स्वरूप का निर्धारण संभव हो सके। बच्चों के स्वास्थ्य तथा शिक्षा का उचित प्रबंध किया जायेगा, क्योंकि इन्ही बच्चों की उन्नति पर देश का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है।

१९---शारीरिक और बौद्धिक श्रम के बीच के अन्तर का विलोपन कर दिया जायेगा। उत्पादन पद्धतियों के मशीनीकरण और स्वचालन के कारण श्रमिकों की कार्य क्षमता में अपूर्व प्रगति हुई है। उनके साँस्कृतिक क्रिया कलापों का विस्तार हुआ है। शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच सामंजस्य स्थापित कर उसे ज्ञान के करीब लाया जायेगा।

२०---कृषि श्रमिकों और औद्योगिक श्रमिकों के बीच के अन्तर को और अधिक कम कर दिया जायेगा। कृषि में मशीनों के प्रयोग तथा रासायनिक प्रयोगों ने कृषि श्रम को औद्योगिक श्रम के रूप में परिवर्तित कर दिया है। कृषि श्रमिक कालक्रम से औद्योगिक श्रमिक हो जायेंगे। इसके परिणाम स्वरूप किसान समृद्ध होंगे, ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होगा तथा शहरी और ग्रामीण जीवन के स्तर में सामंजस्य स्थापित हो सकेगा।

२१---देश के सामाजिक स्तर में परिवर्तन के फलस्वरूप देश की उन्नति में श्रमिक वर्ग की भूमिका का और अधिक विकास होगा। वे एक दूसरे के निकट आयेंगे फलतः राष्ट्रीय एकता की स्थापना होगी।

२२---संगठनों और प्रबंधों के आर्थिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों का विस्तार और विकास किया जायेगा। भौतिक तथा मानवीय साधनों के पूर्ण प्रयोग को दृष्टिकोण में रख कर ऐसा किया जायेगा। इससे किसी प्रकार के साधनों की बरवादी को रोका जा सकेगा। जनता को भौतिक तथा आधिभौतिक उन्नति की दिशा में आगे वढ़ाया जा सकेगा। अधिक से अधिक सहयोग एवं अधिकतम कार्य क्षमता का विकास किया जा सकेगा तथा पार्टी के कार्य-क्रमों को पूर्ण रूपेण कार्यान्वित किया जा सकेगा।

२३---देश में समाजवादी प्रजातंत्र का विकास किया जायेगा। इसका मुख्य उद्देश्य बहुपक्षीय विकसित समाज का निर्माण और क्रमशः साम्यवाद की स्थापना होगा। संगठन के क्षेत्र का विस्तार किया जायेगा। राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय नीतियों के निर्धारण में अधिक से अधिक जनता प्रत्यक्ष भाग ले, ऐसा प्रबन्ध किया जायेगा। बहुपक्षीय विकसित समाजवादी समाज विभिन्न दिशाओं में मानवीय व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करेगा। इससे सम्पूर्ण जन शक्ति का प्रयोग विकास कार्यों के लिए हो सकेगा तथा जनता को इसका गौरव होगा कि उन्होंने अपने परिश्रम से इतिहास का निर्माण किया है।

२४---रोमानिया की आर्थिक प्रगति को औद्योगिक-आर्थिक रूप से समृद्ध समाजवादी देश तथा संसार के अन्य देशों के स्तर के समकक्ष लाना पड़ेगा। १९९० तक यह कार्यक्रम पूरा किया जा सकेगा। तकनीकी और आर्थिक आधार पर समाज की उत्पादन शक्तियों का विकास किया जायेगा। इससे उच्चस्तरीय समाजवादी सभ्यता का निर्माण सम्भव हो सकेगा। जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी तथा साम्यवाद की स्थापना के लिए भौतिक एवं सांस्कृतिक आधार का निर्माण हो सकेगा।

२५—सामाजवादी देशों, सथा संसार के अन्य विकासशील देशों के साथ विनिमय एव सहयोग की स्थापना की जायेगी। इसमें देश के सामाजिक तथा शासन पद्धति से संबंधित विभेद नहीं किया जायेगा। जटिल तथा उच्च स्तरीय आर्थिक विकास पर आधारित एवं आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों पर आधारित उन्नति रोमानिया चाहता है। इसी आशय को ध्यान में रखकर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन तथा सम्पत्ति के अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय में रोमानिया सहयोग करता है। संसार की वैज्ञानिक खोज़ों एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्रान्तियों से रोमानिया अपने को अलग नहीं रखना चाहता है।

२६—भौतिक उत्पादन और आर्थिक कार्य क्षमता पर आधारित राष्ट्रीय आयमें वृद्धि की दर तेज की जायेगी। ल्यु के विनिमय दर को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत किया जायेगा और वैसी मूल्य नीति का निर्धारण किया जायेगा, जो अधिकतम लाभ पर आधारित हो तथा जिससे श्रमिकों का जीवन स्तर उन्नत हो।

२७—जन साधारण के सामान्य जीवन स्तर को उन्नत किया जायेगा। उसके भौतिक तथा अधिभौतिक विकास के लिए प्रयत्न किया जायेगा। पार्टी तथा राज्य के कार्यक्रमों द्वारा निरन्तर इस दिशा में प्रयत्न किया जायेगा। क्योंकि जन साधारण के जीवन स्तर की उन्नति ही पार्टी तथा राज्य का मुख्य लक्ष्य है।

इस तरह से बहुपक्षीय विकसित समाजवादी समाज और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समाजवादी सिद्धान्तों की स्थापना करने में रोमानिया सक्षम होगा। मानवीय व्यक्तित्व के विकास तथा वैयक्तिक और सामाजिक स्वार्थ के बीच समन्वय की स्थापना की जा सकेगी। यह उच्च स्तरीय समाजवादी समाज के निर्माण में सक्षम हो सकेगा तथा साम्यवाद की स्थापना के लिये पृष्ठभूमि तैयार करने में सक्षम होगा।

आर्थिक चेतना की परिणति

जटिल तथा अत्यधिक सक्षम उद्योगों के गहन और वहुपक्षीय आर्थिक विकास के लिए रोमानिया के पास प्रचुर भौतिक सम्पदा है। वहां की धरती तेल, प्राकृतिक गैस, नमक, वौक्साइट, कोयला, लौह-ओर तथा अन्य खनिज पदार्थों के मामले में अत्यन्त सम्वृद्ध है। सम्पूर्ण देश का चतुर्थांश वन सम्पत्ति से भरपूर है तथा कृषि योग्य भूमि जनसंख्या के भरण-पोषण तथा निर्यात की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ छोटे उद्योगों के कच्चे माल की आवश्यकता को पूरा करने में भी समर्थ है। उत्पादन के साधन के रूप में महत्वपूर्ण 'श्रम' की पूर्त्ति जनसंख्या करती है। रोमानिया की जनसंख्या का आकार ऐसा है कि वह किसी विशाल एवं बहुमुखी योजना को भी सफल बनाने की शक्ति रखती है। साथ ही अर्थ-व्यवस्था के भीतर उत्पादि तवस्तुओं के उपभोग के लिए रोमानिया की जनसंख्या, उपभोक्ता के रूप में, बाजार का अवसर स्वतः प्रस्तुत करती है। फलतः संसार की आर्थिक श्रेणियों में रोमानिया का सम्मिलित होना उसकी कार्यक्षमता की वृद्धि तथा आर्थिक विकास के लिए किए गए राष्ट्रीय प्रयासों को परिलक्षित करता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व रोमानिया की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। औद्योगीकरण का अभाव तो था ही, साथ ही कृषि क्षेत्र में तकनीकी प्रयोगों का भी अभाव था। साधारण जनता का आर्थिक स्तर अत्यन्त निम्न था। इतने भौतिक साधनों से सम्पन्न रोमानिया की स्थिति वास्तव में अमीरी के बीच पनपी गरीबी की स्थिति थी। रोमानिया के आर्थिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्त्तन उस समय शुरू हुआ जब डा० पेट्रु ग्रोजा के नेतृत्व में ६ मार्च १९४५ को क्रान्तिकारी समाजवादी सरकार का गठन हुआ। रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में शासन की बागडोर आयी और तब से लेकर आज तक समाजवादी आदर्शों के अनुरूप प्रजातांत्रिक पद्धति से अर्थ व्यवस्था का विकास हुआ।

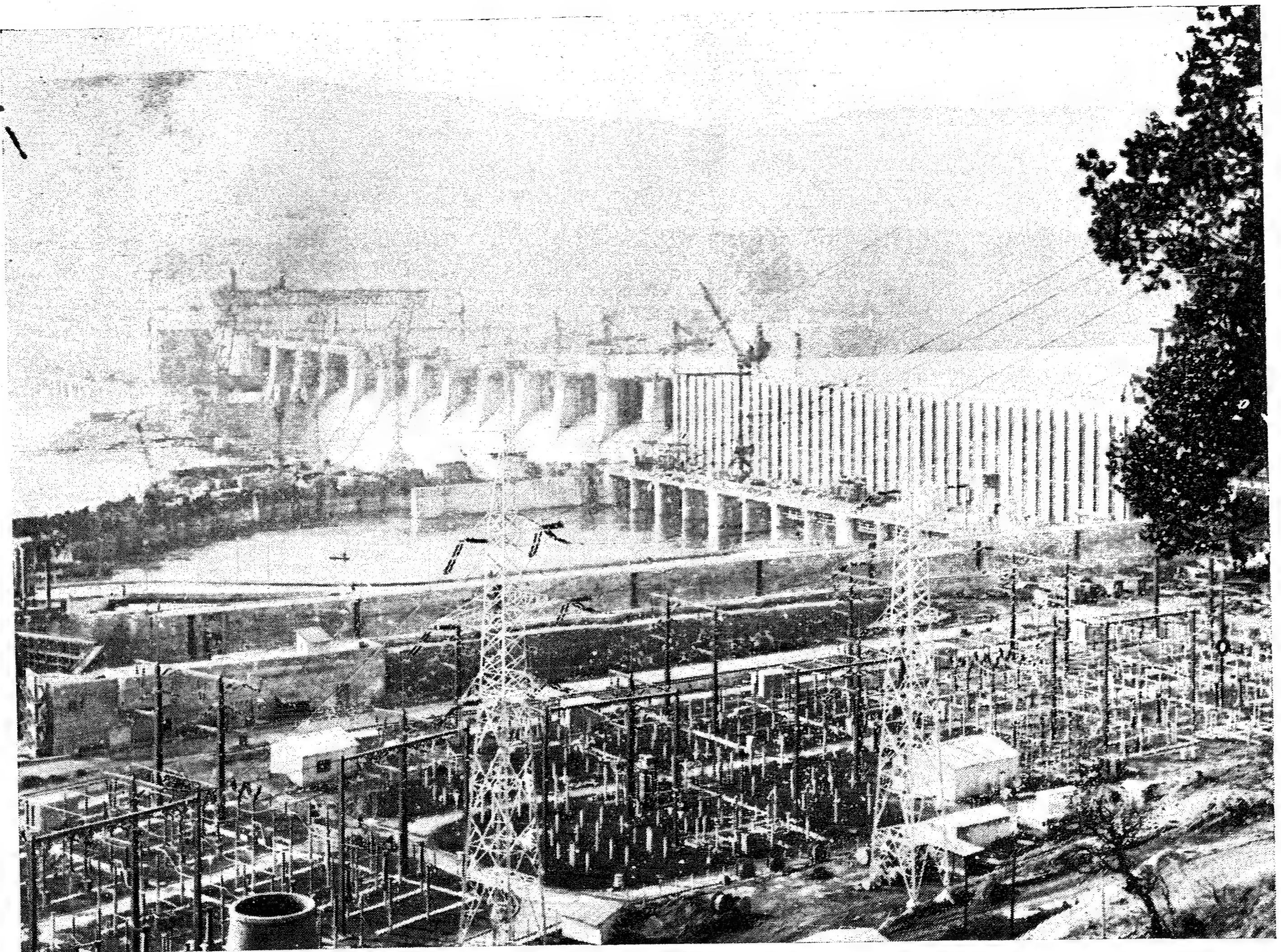
रोमानिया के आर्थिक इतिहास के स्वर्णिम युग का प्रारंभ श्री चाउसेस्कू के शासन काल से शुरू होता है। जिस समय श्री चाउसेस्कू ने रोमानिया के शासन-क्षेत्र में प्रवेश किया उस समय रोमानिया की अर्थ-व्यवस्था गम्भीर संकटों से गुजर रही थी। अर्थ व्यवस्था के समक्ष कई समस्यायें थीं जिनका निदान अर्थ व्यवस्था के स्वरूप में परिवर्त्तन करने से ही संभव था। रोमानिया की अर्थ व्यवस्था के सामने सबसे प्रमुख समस्या उसके स्वरूप परिवर्त्तन की थी। युद्ध के पहले और युद्ध के बाद की स्थितियों में विशेष अन्तर नहीं था। लोग गरीब थे तथा अर्थ-व्यवस्था का विकास नगण्य था। ऐसी स्थिति में अर्थव्यवस्था में आमूल परिवर्त्तन की आवश्कता थी। प्रत्येक क्षेत्र के सम्यक विकास के लिए आर्थिक कार्यक्रमों में सामंजस्य आवश्यक था। विविध भौतिक सम्पत्तियों से परिपूर्ण रोमानिया के लिए एक जटिल अर्थव्यवस्था का सृजन आवश्यक था जिसमें जनशक्ति तथा भौतिक

सम्पदाओं का पूर्ण उपयोग किया जा सकता था। विकास की गति को तेज करने के लिए ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता का अनुभव किया गया जो समाजवादी प्रजातांत्रिक आदर्शों के अनुरूप विकास कार्य में सक्षम हो। अर्थ व्यवस्था के स्वरूप के परिवर्त्तन के संदर्भ में आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनी की विकास को भी ध्यान में रखना आवश्यक था। विश्व में हो रहे वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास को उत्पादन के क्षेत्र में कार्यान्वित करना आवश्यक था। साथ ही प्रत्येक आर्थिक इकाइयों को इस तरह से समृद्ध करना था जिससे अधिकतम उत्पादन की संभावना को बल मिले। इसके लिए विस्तृत अर्थनीति की आवश्यकता थी।

इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि किसी देश के विकास में आधुनिक उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उद्योगों के माध्यम से ही राष्ट्रीय सम्पत्ति का सही उपयोग हो सकता है। जनशक्ति का अधिकाधिक उपयोग भी उद्योगों में ही संभव है। उद्योग ही अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा राष्ट्रीय आय का एक बड़ा भाग उत्पन्न करते हैं। रोमानिया में अर्थव्यवस्था के स्वरूप में परिवर्त्तन के साथ-साथ औद्योगीकरण की नीति को प्रश्रम दिया गया था जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय आय में बहुत तेजी से वृद्धि हुई तथा जनसाधारण का जीवन स्तर उन्नत हो गया। औद्योगीकरण के महत्व का प्रतिपादन करते हुए श्री चाउसेस्कू ने कहा है "अपने देश के अनुभव तथा आधुनिक समाज के विकास का इतिहास निष्कर्ष रूप में औद्योगीकरण की महत्ता को स्वीकार करता है। उद्योग ही मुख्य तत्व है जो राष्ट्रीय सम्पत्ति, जनसाधारण के जीवन स्तर तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास की दिशा निर्धारित करता है।"

औद्योगीकरण की नीति को वैज्ञानिक आधार-प्रदान करने के लिए तथा सही रूप से कार्यान्वित करने के लिए उद्योगों को अर्थव्यवस्था की मुख्य शाखा के रूप में प्रतिष्ठित करना आवश्यक था। यह सिर्फ मात्रात्मक परिवर्तन से ही संभव नहीं था वरन् अर्थव्यवस्था के स्वरूप में भी परिवर्तन की आवश्यकता थी। सम्यक आर्थिक विकास की नीति को कार्यान्वित करने के संदर्भ में रोमानिया इस धारणा को लेकर आगे बढ़ा कि उद्योग अर्थव्यवस्था की अन्य शाखाओं के साथ अटूट रूप से सम्बद्ध है तथा सबों का सम्मिलित रूप एक एकल आर्थिक संरचना को जन्म देता है। दूसरे शब्दों में, उद्योग अर्थव्यवस्था की अन्य शाखाओं। जैसे कृषि, से सम्बद्ध है। उद्योग का विकास कृषि के विकास को प्रभावित करता है तथा कृषि का विकास उद्योगों के लिये कच्चेमाल की सुविधा प्रदान करता है। इस तरह एक का विकास दूसरे के विकास के लिए आवश्यक शर्त है। श्री चाउसेस्कू ने कहा "भौतिक दृष्टिकोण से सामाजिक प्रगति, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास तथा जनसंख्या के जीवन को ऊंचा उठाने का एकमात्र निर्णायक तत्व उत्पादक शक्तियों का अखंड विकास है।" औद्योगीकरण की नीति के अन्तर्गत अर्थ व्यवस्था के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ यातायात के साधनों के विकास पर भी ध्यान दिया गया। यातायात के साधनों को आधुनिक बनाने के लिये ठोस कदम उठाये गये थे।

रोमानिया में समाजवादी प्रजातंत्र के परिवेश में एक समानुपाती, संतुलित तथा सामंजस्यपूर्ण अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। अर्थव्यवस्था के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण



डैन्यूब नदी पर युगोस्लाविया के सहयोग से बना हुआ जलविद्युत शक्ति पावर हाउस का लौह द्वार।

१९४८ में औद्योगिक उत्पादन के मुख्य साधनों—खान, बैंकिंग, बीमा तथा यातायात—के राष्ट्रीयकरण के उपरान्त हुआ। आरम्भ में सन १९४९-५० के लिए एक-वर्षीय योजना बनाई गई, इसके उपरान्त पंचवर्षीय योजना का आरंभ हुआ। यह योजनाकरण रोमानिया राज्य एवं अर्थव्यवस्था के समाजवादी संगठन पर आधारित है। परियोजना का उद्देश्य सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को सुनिश्चित व्यवस्थाओं के आधार पर संगठित करना है तथा विकास की दर तेज करके "गुणात्मक तथा परिमाणात्मक" लक्ष्य की पूर्ति करना है। योजनाकरण अपने आप में एक जटिल कार्य है। इसके लिए लम्बे समय की आवश्यकता होती है। योजनाकरण की सबसे प्रमुख आवश्यकता उपलब्ध साधनों की रूपरेखा तैयार करना तथा चयन करना है। आवश्यकतानुसार उन साधनों का विकास करने पर भी ध्यान दिया जाता है तथा उत्पादन सम्बन्धी आधुनिक टेकनीक के सम्पूर्ण विवरणों की प्राप्ति आवश्यक हो जाती है। इसके बाद लक्ष्य का निर्धारण किया जाता है तथा सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था के स्तर पर सामंजस्य कायम करते हुए साधनों का प्रयोग किया जाता है।

आर्थिक परियोजना राज्य प्रभुसत्ता की असंक्राम्य विशेषता है तथा समाजवादी राज्य के आर्थिक संघटनात्मक कार्यों के प्रयोग किए जाने का मुख्य क्षेत्र भी। इस आधार पर बनाई गई योजना एक अनिवार्य योजना है। यह प्रजातंत्रीय केन्द्रीयकरण का स्पष्ट प्रत्यारूप है जो कि अर्थव्यवस्था के नियोजित संगठन एवं प्रबन्ध मे सभी श्रमिकों के सक्रिय योगदान तथा राज्य द्वारा अर्थव्यवस्था के केन्द्रीय प्रबन्ध में एक अटूट संगठन स्थापित करता है। निर्धा-रित सुधारों तथा कार्यवाहियों का लक्ष्य संगठनात्मक पद्धति के मध्यस्थ निकायों को कम करके प्रबन्ध समिति में समान्तरण के निवारण द्वारा प्रबन्ध समिति को उत्पादन के अधिक समीप लाना है। यह कार्यवाही परियोजना की प्रगति के साथ-साथ उसके कार्य क्षेत्र को भी विस्तृत कर देती है, जैसे कि उद्योगों की आर्थिक कार्यविधि में अतिरिक्त केन्द्रीयकरण तथा शासकीय प्रतिबन्धों को वहिष्कृत करना। यह सामूहिक प्रबन्ध और कार्य के साथ-साथ वास्तविक उत्तरदायित्व की घोषणाओं को भी संरक्षित करता है। इससे स्थानीय आर्थिक शासन का प्रयोग सुविधाजनक हो जाता है तथा कार्यक्षमता में भी वृद्धि हो जाती है।

रोमानिया का राष्ट्रीय उद्योग तथा प्रबन्ध समितियां संरचनात्मक आधारों पर संगठित हैं। इसके तीन सोपानक हैं, जिनका उत्तरदायित्व तथा लक्ष्य स्पष्टतः निर्धारित है। केन्द्रों से संबंधित उद्यम, जिनका आर्थिक प्रशासन स्वशासित है, अर्थ मंत्रालय के संरक्षण में कार्य करता है। उद्योग केन्द्रों, कारखानों तथा आर्थिक मंत्रालयों के विभिन्न अंगों के आधु-निकीकरण ने "उद्यमों द्वारा अपने उत्तरदायित्वों के प्रयोग में स्वायत्त तथा परिचालित प्रबन्ध को सशक्त किया है।" ये केन्द्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत बनी सार्वजनिक योजना द्वारा स्थापित लक्ष्यों के आधार पर अपनी आर्थिक योजनाओं का स्वयं निर्माण करते हैं। केन्द्रों द्वारा बनाई गयी योजना उद्यमों की कार्यविधि के साथ-साथ अपनी कार्य-विधि की सूचक होती है। रोमानिया की अर्थव्यवस्था के स्वरूप में हुए आवश्यक परिवर्तनों द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में उत्पादन तथा श्रम को व्यवस्थित करने के वैज्ञानिक संकल्प का प्रयोग कृषि में भी किया जा सकता है। यही एक ऐसा साधन था जिसके द्वारा युद्ध से पहले उत्पन्न दरी को अन्य योरोपीय देशों की तुलना में ही नहीं अपितु

रोमानिया में उपलब्ध प्रकृति साधनों के सन्दर्भ में कम किया जा सकता था। कृषि योग्य भूमि कम थी तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए कृषि-क्षेत्र के विस्तार की संभावना सीमित थी। अतः कृषि के क्षेत्र में प्रगति का एक मात्र उपाय ऐसे सहकारी उद्यमों का संगठन था जिसमें कृषि कार्य विस्तृत क्षेत्र में आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा सम्पन्न हो सकता था। इस प्रकार कृषकों के हितों तथा कृषि उत्पादन में निरन्तर वृद्धि करके देश के कच्चे माल की आवश्यकता पूरी की जा सकती है। सन १९६२ तक ऐसे पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर जहां विस्तृत क्षेत्रों में वैज्ञानिक पद्धति को लागू नहीं किया जा सका, सम्पूर्ण कृषि-भूमि पर सहकारिताओं का निर्माण किया जा चुका है।

सहकारीकरण की प्रक्रिया ने रोमानिया के ग्राम्य जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन का सूत्रपात किया तथा विस्तृत पैमाने पर कृषि कार्य को एक समाजवादी आधार प्रदान कर, कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए परिस्थितियों का भी सृजन किया। रोमानिया की कृषि तीन समाजवादी इकाइयों में संगठित है। पहला, राज्य कृषि-उद्यम है जो उत्पादन की स्वतंत्र इकाइयों के रूप में कार्यरत है। ऐसे उद्यमों की संख्या १९७४ में ३६९ थी। दूसरी इकाई कृषि उत्पादन सहकारी समितियां हैं। ये ऐसी समाजवादी इकाइयां हैं जिनमें उत्पादन के साधनों पर सहयोगियों का संयुक्त अधिकार होता है। इसकी संख्या करीब-करीब ४४६२ है। कृषि-यंत्रीकरण-केन्द्र तृतीय समाजवादी राज्य इकाई है, जो कृषि उत्पादन सहकारिताओं को कृषिकार्य में तकनीकी तथा यांत्रिक मदद करती है। इसकी संख्या ७४३ है। उत्पादन तथा श्रम संगठनों की कार्य क्षमता के विकास के लिए आधुनिक साधनों का प्रयोग रोमानिया-अर्थव्यवस्था की विशेषता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों का अधिक से अधिक प्रयोग तथा उत्पादन एवं उत्पादन में सहायक साधनों का उचित संगठन नियोजन का लक्ष्य है। यह राज्य परियोजना तथा आर्थिक-वित्तीय घटक, पार्टी एवं राज्य द्वारा निर्देशित होता है तथा प्रणाली के एकात्मक स्वरूप का विस्तार करता है। इस पद्धति के निरन्तर विकास में रोमानिया राज्य उन अनुभवी सिद्धान्तों के आधार पर आगे बढ़ता है जिसके अन्तर्गत सामाजिक प्रबन्ध एवं संगठन का स्वरूप तथा तरीका परिवर्तनशील है। इन सिद्धान्तों का जीवन में हो रहे सामाजिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक परिवर्तनों के अनुरूप उत्तरोत्तर विकास आवश्यक है।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा उसके स्वरूप एवं प्रणाली का विकास रोमानियन अर्थतंत्र का एक आवश्यक अंग माना जाता है। आर्थिक प्रजातंत्र की उन्नति के लिए अति कुशल कार्यक्रमों का प्रयोग किया गया है। प्रजातंत्री केन्द्रीयकरण एवं सामूहिक नेतृत्व का कठोरता से प्रयोग किया जा रहा है। श्रमिक परिषदों का निर्माण तथा अन्य सार्वजनिक संगठनों का शक्तिशाली बनना ऐसे तत्व हैं जिनके विकास से सामूहिक चिंतन की दिशा में बल मिलता है। प्रबन्ध निकायों में विशेषज्ञों को अधिक संख्या में आकर्षित करके अर्थ व्यवस्था में प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना की गयी है। परियोजना में आर्थिक वस्तुओं तथा उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में सामंजस्य स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय पूंजी के निर्माण के लिए दिशा-निर्धारण करना है। इसके साथ ही निर्माण सह-सम्बन्धों



बुखारेस्ट स्थित हार्ड केक एरिया का निरीक्षण करते हुए राष्ट्रपति चाउसेस्कू (५-३-१९७७)

ऊर्जा शाखाओं एवं सम्बन्धित औद्योगिक शाखाओं के मध्य आवश्यक अनुपात कायम रखा जाता है। रोमानिया की राज्य-नीति विज्ञान तथा तकनीक के प्राथमिक विकास को महत्ता देती है। इसका उद्देश्य विद्युत एवं उष्मीय उर्जा के उत्पादन, यांत्रिक निर्माण तथा रासायनिक एवं धातुशोधन उत्पादनों को अधिकाधिक विकसित करना तथा उसे संरक्षण प्रदान करना है।

रोमानिया की आर्थिक कार्यप्रणाली का एक मुख्य तत्व श्रमिकों को भौतिक एवं नैतिक प्रेरणा प्रदान करना है। उत्तम परिणामों की प्राप्ति तथा राज्य परियोजना में लिखित लक्ष्यों की पूर्त्ति के लिए यह एक आवश्यक परिस्थिति है। सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के धागे में पिरोये रखने के लिए नैतिक प्रेरणा के साथ-साथ भौतिक प्रेरणा की आवश्यकता का भी अनुभव किया गया है। इस उद्देश्य की पूर्त्ति एक तरफ प्राप्त आर्थिक परिणामों के अनुपात में श्रमिकों की आय में वृद्धि करके तथा और दूसरी तरफ आर्थिक कार्यक्षमता के आधार पर उत्प्रेरण कोषों के निर्माण द्वारा की जाती है।

राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था द्वारा आवश्यक वर्गों के प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण सिर्फ योग्य वर्गों, मध्य तकनीकी एवं उच्च योग्यता विशेषज्ञों के लिए ही नहीं है। राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के आवश्यकतानुसार पुनः प्रशिक्षण और पदोन्नति की भी विशेष व्यवस्था की जाती है। तकनीकी विकास और उसके प्रयोग के प्रत्येक चरण के साथ श्रमिकों की पदोन्नति के लिए निरन्तर प्रयास किया जाता है। इस ध्येय को ध्यान में रखकर संबंधित शिक्षा के विकास के लिए आवश्यक आर्थिक सुविधाएं प्रदान की जाती हैं तथा अर्थ व्यवस्था के आवश्यकतानुसार शिक्षा का सामंजस्य किया जाता है। इसके परिणाम स्वरूप १९७० तक ८२ प्रतिशत औद्योगिक श्रमिकों तथा १२५००० तकनीकी श्रमिकों एवं स्नातक इंजीनियरों को प्रशिक्षण दिया चुका था।

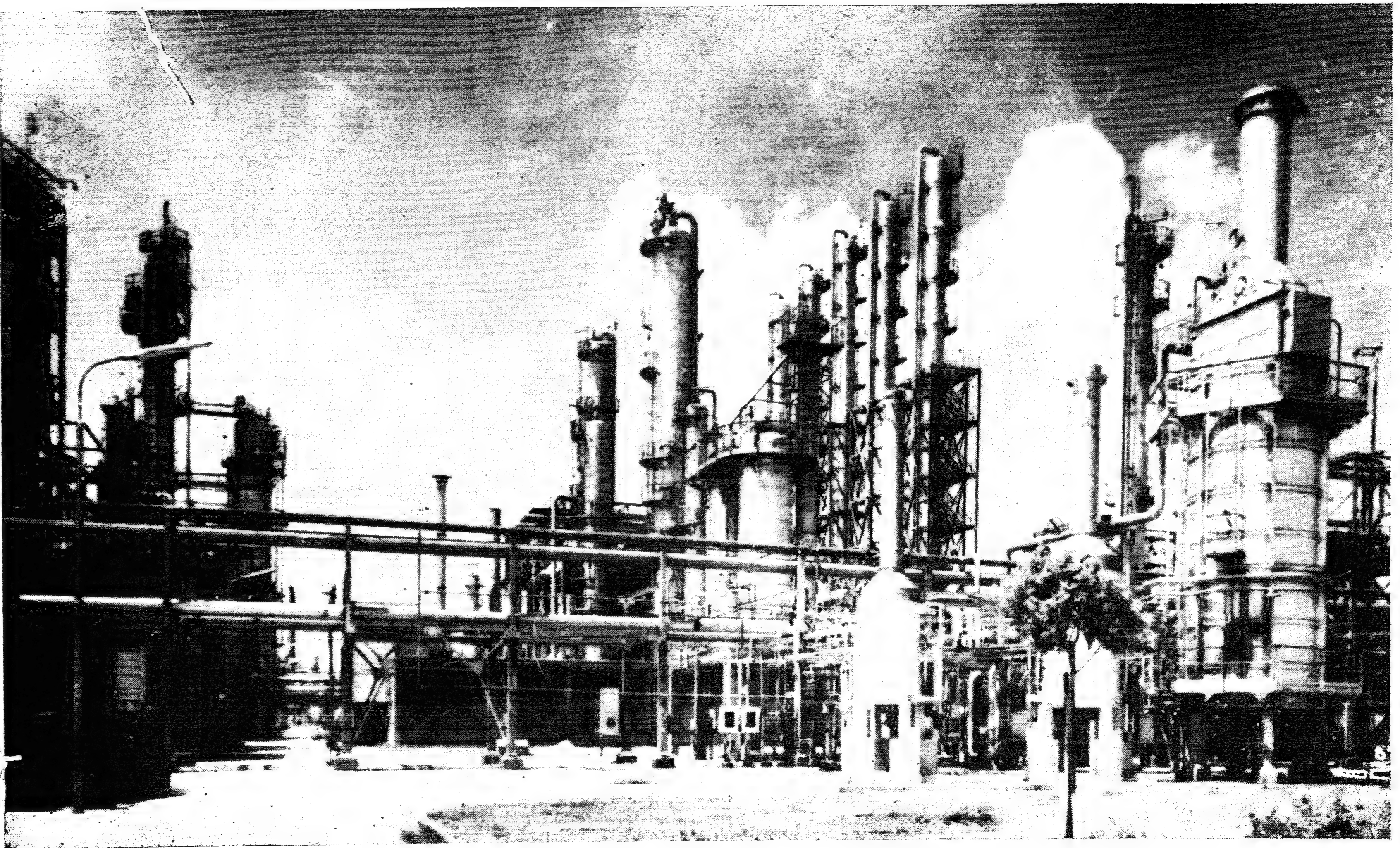
रोमानिया की अर्थव्यवस्था आधुनिक दृष्टिकोण से एक अत्यन्त ही विकसित अर्थव्यवस्था है। एक तरफ जब कि विश्व की नवीनतम वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों को रोमानिया की अर्थव्यवस्था में अपनाया गया है, वहां रोमानिया अपने देश में वैज्ञानिक तथा तकनीकी आविष्कारों को प्रोत्साहित करता है। आर्थिक विज्ञान का विकास वस्तुतः वैज्ञानिक अनुसंधान के आवश्यक योगदान द्वारा हुआ, जैसे आंकड़ों के क्षेत्र में कम्प्यूटर तथा उत्पादन और प्रशासन के क्षेत्र में साइबरनेटिक्स तथा इनफौरमेटिक्स आदि।

देश के राष्ट्रीय साधनों का "जटिल तथा बहुपक्षीय" प्रयोग की नीति का आर्थिक रचना में विशेष योगदान है। इस नीति के कार्यान्वियन के परिणाम स्वरूप ही उत्पादन क्षमताओं में वृद्धि, मानवीय श्रम का अधिकाधिक उपयोग तथा उत्पादन विधि में तकनीकी विकास संभव हो सका। साथ ही कच्चे माल, भौतिक पदार्थ, उर्जा तथा इंधन के उपभोग में सीमा के निर्धारत लक्ष्य की प्राप्ति संभव हो सकी। रचनात्मक परिवर्तनों के संदर्भ में ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर रोमानिया में अर्थ व्यवस्था के ऐसे प्रतिमान का सृजन हुआ जो प्रत्येक स्तर पर एक दूसरे से सम्बद्ध है तथा आर्थिक नियमों पर आधारित है।

रोमानिया की सामाजवादी अर्थव्यस्था की सबसे बड़ी विशेषता यथार्थवादी योजना है। इसकी स्थापना विवेकपूर्ण ढंग से हुई है। योजना को कार्यन्वित करने की विधि आसान है। इसका बड़ा लाभ यह है कि कार्य के सिलसिले में उत्पन्न होने वाली त्रुटियों का निवारण अल्प श्रम द्वारा कम समय में ही किया जा सकता है। अगर श्रमिक राष्ट्रीय बजटों तथा अर्थ व्यवस्था के विकास के लिए किये गये विनियोग की तुलना की जाय तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा कि देश मे आर्थिक विकास की गति को तेज करने के लिए रोमानिया सराहनीय प्रयत्न कर रहा है। विवेकपूर्ण तथा उत्तरोत्तर विनियोग की नीति द्वारा देश के अविकसित भाग की उन्नति तथा क्षेत्रीय योजना का सफल कार्यान्वियन संभव हो सका है। सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था का जटिल तथा बहुपक्षीय विकास, अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन तकनीकी ज्ञान का प्रयोग, प्राकृतिक साधनों का अधिकतम उपयोग, राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि तथा देश के सभी क्षेत्रों में सांमजस्यपूर्ण आर्थिक विकास, सफल योजनाकरण के द्वारा ही संभव हो सका। यह सम्पूर्ण विश्व द्वारा स्वीकृत विश्वास की पुष्टि करता है कि सम्पूर्ण क्षेत्र में औद्योगिक कार्यविधि का यथोचित विस्तार ही देश के आर्थिक तथा सामाजिक विकास में विषमताओं का निषध कर सकता है। किसी भी क्षेत्र के विवेकपूर्ण औद्योगीकरण की कल्पना स्थानीय विशेषताओं के अनुकूल होती है। इसका मूल सिद्धान्त सामान्य आर्थिक परिधि में सम्पूर्ण प्राकृतिक तथा जन साधनों का समन्वय तथा कच्चे माल का उद्योगों में सदुपयोग होता है। इसीलिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए क्षेत्रों का औद्योगीकरण एक युक्ति संगत प्राथमिकता है।

अविकसित क्षेत्रों में नये औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के साथ-साथ पुराने औद्योगिक प्रतिष्ठानों का भी नवीनीकरण किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा कायम करने के लिए उद्योगों का विशिष्टीकरण करना आवश्यक था। तकनीकी उन्नति तथा कार्यकुशलता, निरन्तर आर्थिक विकास के लिए किये गये प्रयास का आवश्यक अंग है। आर्थिक विकास में गुणात्मक पक्ष की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। रोमानिया में उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की दर तेज रही। उद्योगों के आधुनिकीकरण और नवीन तकनीकी प्रयोगों तथा विस्तार से ही यह संभव हो सका। नई मशीनों तथा आधुनिक उपकरणों से युक्त यंत्रों के प्रयोग ने उत्पादन के क्षेत्र में रोमानिया में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन की दिशा निर्धारित की। साथ ही रोमानिया में राष्ट्रीय आय की ३२ प्रतिशत पूंजी संचय के लिए सुरक्षित रक्खी गयी है। इससे रोमानिया की गिनती उन राष्ट्रों में होने लगी जहां संचय दर ऊंची है। संचय तथा उपभोग के बीच अनुपात का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है जिससे सामाजिक उत्पादन और जनता के जीवन स्तर की निरन्तर प्रगति को सुरक्षित रखा जा सके। इस तरह एक निश्चित संकल्प के अनुरूप यह कार्यक्रम देश में भौतिक तथा तकनीकी विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

रोमानिया की योजना प्रणाली में पंचवर्षीय योजनाओं का मुख्य स्थान बना रहेगा। अर्थव्यवस्था के पूर्ण विकास के लक्ष्यों तथा प्राथमिक समस्याओं के समाधान के लिए पंचवर्षीय योजना ही आवश्यक भूमिका प्रस्तुत करती है। अर्थव्यवस्था के केन्द्रीय संगठन तथा आर्थिक इकाइयों की निर्णय-क्षमता के बीच निकटतम सम्बन्धों की स्थापना पंचवर्षीय



रोमानिया का प्लोयस्टी स्थित सबसे बड़ा तेल शोधक केन्द्र

योजनाओं द्वारा ही संभव हो सकी। उत्पादक इकाइयों की रचनात्मक कार्यशीलता की प्रगति हेतु अधिक शक्ति और संभावनाओं का समन्वय योजनाकरण पद्धति की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

रोमानिया का यह विश्वास है कि आर्थिक उन्नति के लिए देश के स्तर पर जन-साधारण द्वारा प्रयत्न तथा श्रम आवश्यक है लेकिन किसी देश का आर्थिक विकास विश्व के आर्थिक विकास से सम्बद्ध होता है। यही कारण है कि देश के बहुपक्षीय विकास को ध्यान में रखते हुए रोमानिया विश्व स्तर पर भी आर्थिक, तकनीकी और वैज्ञानिक कार्यक्रमों में यथोचित सहयोग प्रदान कर रहा है। १९७४ में अपनाये गये कार्यक्रमों में रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी ने समाजवादी समाज के निर्माण और कम्युनिज्म की स्थापना का उद्घोष करते हुए देश के विकास में योजनाओं के महत्व को स्वीकार किया है। १९९० तक के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का प्रारूप तैयार किया जा चुका है। इन्हीं योजनाओं के सफल कार्यान्वियन पर रोमानिया का भविष्य निर्भर करता है। रोमानिया समाजवादी राज्य के सार्वजनिक कल्याण, समाजवाद तथा कम्युनिज्म की दृढ़ प्रगति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता स्वायत्तता, विश्व के अन्य राष्ट्रों से सम्बन्ध, इन योजनाओं के आवश्यक अंग है। निष्कर्ष में योजनाकरण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास का महत्वपूर्ण घटक है।

औद्योगीकरण की नीति रोमानिया की अर्थनीति का दूसरा मुख्य आधार है। अर्थ-व्यवस्था का विकास औद्योगीकरण के अभाव में संभव नहीं है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व रोमानिया के उद्योगों में अनेकों कमियां थीं, जैसे मन्द प्रगति, राष्ट्रीय आय की अल्प वृद्धि, उत्पादन के लिए भौतिक साधनों और जनशक्ति के प्रयोग में सामंजस्य का अभाव, अपर्याप्त तकनीकी यंत्र तथा औद्योगिक इकाइयों का विवेकहीन निर्माण आदि। औद्योगिक कारखानों में बिदेशी पूंजी का आधिपत्य था। विदेशी एकाधिकार राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की प्रगति में बाधक था। कच्चे माल का निर्यात तथा उत्पादित वस्तुओं का आयात किया जाता था। समाजवादी शासन के निर्माण के उपरान्त रोमानिया की जनता का मुख्य लक्ष्य ऐसे स्वतंत्र, स्वायत्त और शक्तिशाली रोमानिया का निर्माण करना था जिसमें जनता अपने भाग्य का निर्माता खुद हो। उस समय यह घोषणा की गयी थी "हमारे देश का विकास प्रत्यक्ष रूप से औद्योगीकरण पर निर्भर है तथा देश की औद्योगिक क्षमता राज्य की स्वतंत्रता पर आधारित है।"

औद्योगीकरण से अर्थव्यवस्था के निर्माण के साधन उपलब्ध हुए तथा रोमानिया अन्तर्राष्ट्रीय श्रम आन्दोलन में योगदान करने योग्य हो गया है। आर्थिक गतिविधि में समन्वय स्थापित किया गया है तथा औद्योगिक प्रयत्नों को कृषि के साथ जोड़ा गया है। अनेक नवीन उद्योगों का गठन किया गया है तथा विद्यमान इकाइयों का पुन: यंत्रीकरण तथा विकास किया गया है। देश की आर्थिक शक्तियों को निरन्तर बढ़ावा दिया जा रहा है।

आधुनिक औद्योगिक इकाइयों का निर्माण उन स्थानों में हो रहा है जहां युद्ध के पहले

कोई कारखाना नहीं था। जैसे रोमान में पाइप रोलिंग कारखाना, इयासी में एन्टीवायोटिक्स कारखाना तथा साबिनेस्टीं में रासायनिक यार्न तथा फाइबर कारखाना। गोवोरा के घेयोरघे घेयोरधीयूदेज नामक नगर में एक महान रासायनिक कारखाने का निर्माण हुआ। कई विद्यु त उर्जा केन्द्रों का निर्माण किया गया जो डोईसेस्टी, ओमीड्यू द्वितीय, वोरजेस्टी, तथा भिन्टीया में स्थित हैं। जल-विद्यु त केन्द्र, बिकाज, आगेज, आयरनगेट्स तथा लोटरु में स्थित हैं।

उद्योग ने अर्थ व्यवस्था में अपनी भूमिका को स्पष्ट किया है। सामाजिक उत्पादन, राष्ट्रीय आय, विदेशी व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग, औद्योगीकरण से ही संभव हो सका है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों के आधुनिकीकरण तथा विकास में सामंजस्य स्थापित कर उत्पादन में वृद्धि की गयी है। उच्च तकनीकी संयंत्रों से सुसज्जित औद्योगिक शाखाओं में उत्पादन गति अपेक्षाकृत तेज है। यह निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो चुका है कि संपन्न उद्योग के बिना देश का आर्थिक तथा सामाजिक विकास, जनता के भौतिक तथा नैतिक जीवन में निरन्तर प्रगति, बहुमुखी समाजवाद का निर्माण तथा कम्युनिज्म की ओर समाज को ले जाना रोमानिया के लिए संभव नहीं हो सकता।

रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी अपनी आर्थिक नीति को देश के समाजवादी औद्योगीकरण पर केन्द्रित करती है क्योंकि यही सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, संस्कृति, जीवन स्तर तथा राष्ट्रीय स्वातंत्र और स्वायत्ता का आधार है। कम्युनिस्ट पार्टी के ग्यारहवें अधिवेशन में समाजवादी औद्योगीकरण की आवश्यकता का अनुभव किया गया तथा लक्ष्य प्राप्ति की दरों का निर्धारण किया गया। आगामी पांच वर्षों में समाजवादी औद्योगीकरण का प्रमुख लक्ष्य उच्च विकास दरों को कायम रखना है। पार्टी के इस अधिवेशन के अनुसार १९७६-१९८० की अवधि में कुल औद्योगिक उत्पादन की वार्षिक औसतदर ९ से १० प्रतिशत होगी। समाजवादी औद्योगीकरण के लिए निर्धारित निर्देशों में से एक, उर्जा तथा कच्चे माल, साधनों की उत्तम उपयोगिता, आधुनिक तकनीकियों का प्रयोग 'तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक नये उत्पादनों का निर्माण है। समाजवादी औद्योगीकरण नीति का लक्ष्य उत्पादन साधनों के क्षेत्रीय वितरण में विकास, अल्पविकिसित प्रान्तों की प्रगति तथा रोमानिया प्रान्तों में उद्योग को प्रमुखता प्रदान करना है। १९८० तक प्रत्येक प्रान्त का कुल औद्योगिक उत्पादन दस हजार मिलियन ल्यु होगा तथा प्रत्येक प्रान्त में न्यूनतम उत्पादन १८ से २० हजार मिलियन ल्यु होगा। पार्टी द्वारा निर्धारित प्रगति के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उद्योगों पर विनियोग की राशि बढ़ाने की आवश्यकता है। १९७१-७५ की अवधि में यह राशि ५५५ हजार मिलियन ल्यु था। १९७६-८० की अवधि में इसे बढ़ाकर ९२० से ९६० हजार मिलियन ल्यु कर दिया गया है। उद्योग की प्राथमिक शाखाओं में, जैसे धातु कर्म, मशीन निर्माण तथा रासायनिक पदार्थों के निर्माण के साथ-साथ, नवीन उत्पादन क्षमताओं तथा उद्योगों के यंत्रीकरण में कुल विनियोजन का ७० प्रतिशत व्यय किया गया। वर्तमान दशक के अन्त में कुल उत्पादन १९७० के उत्पादन से तीन गुना अधिक तथा १९२८ की तुलना में ५० से ५२ गुना ज्यादा होगा।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की बढ़ रही आवश्यकताओं और कच्चे माल एवं उर्जा-म्बन्धित विश्व की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, ग्यारहवें अधिवेशन में कम्युनिस्ट पार्टी ने कच्चे माल एवं ऊर्जा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया है। इन साधनों के विकास पर १९७६-१९८० में १२५ हजार मिलियन ल्यु व्यय की जाने की संभावना है। कच्चे माल और ऊर्जा के क्षेत्र में यह विनियोग पिछले २५ वर्षों के कुल विनियोग का ७० प्रतिशत होगा। कई नई परियोजनाओं को शुरु करने पर विचार किया गया है। टरकेनी का ताप विद्युत केन्द्र और ओल्ट, सेब्स, ड्गन, सीरेट एवं सरनामोटरु आदि नदियों पर जल विद्युत केन्द्रों की स्थापना की जायेगी। साथ ही सरनाभोडा जल विद्युत केन्द्र के निर्माण का कार्य शुरु होगा जिसमें बाइट्यूमिनस चट्टानों का इंधन के रुप में में प्रयोग किया जायेगा।

खनिज तेल, कोयले तथा लकड़ी का अपेक्षा, ऊर्जा प्राप्ति का उत्ताम साधन है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बहुत ही कम समय में रोमानिया अपने पूर्व की स्थिति प्राप्त करने में समर्थ हो सका। तेल खानों की खुदाई के साथ-साथ रोमानिया ने प्रथम श्रेणी के उपकरणों से सुसज्जित तेल शोधक कारखानों का निर्माण कर लिया है। प्योयस्टी का प्रथम माई कारखाना, ट्रिगोवेस्टी का तेल शोधक कारखाना, तथा बुखारेस्ट का बुल्कन कारखाना, कुछ नवीन तथा उच्च क्षमता वाले ऐसे एकक हैं जो तेल उद्योग के लिए आधुनिक संयंत्रों का निर्माण भी करते हैं।

औद्योगिक विकास तथा सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निरन्तर आधुनिकीकरण में मशीन निर्माण का मुख्य स्थान है। औद्योगिक नीति के अन्तर्गत इस ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मशीन निर्माण उद्योग में उच्च विकास दर इस बात का द्योतक है। विद्युत इंजीनियरिंग में २० प्रतिशत, इलैक्ट्रानिक्स में २७, उत्ताम यांत्रिकी तथा औप्टिक्स में ३३, मशीन यंत्र में ३३, तकनीकी उपकरणों में २५, जहाज निर्माण में १९ प्रतिशत की औसत वृद्धि दर रोमानिया को संसार के सामने विकसित देश के रुप में प्रतिष्ठित करती है। पार्टी के कार्यक्रमों में दिये गये निर्देशों के आधार पर मशीन निर्माण उद्योग में प्रवल विकास की संभावना है। आगामी पंचवर्षीय योजना में इस ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीकी विस्तार द्वारा अर्थव्यवस्था का विकास तथा अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय के क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित करना है। कार्यक्रम के अन्तर्गत उच्च स्तर की तकनीकी सामग्री का उत्पादन किया जायेगा। जटिल उपकरण और उच्च क्षमता वाली मशीनों तथा आधुनिक धातु-कर्म तकनीकियों का प्रयोग किया जायेगा। यातायात साधनों, कृषि सम्बन्धी कार्यवाही के यंत्रीकरण के लिए आवश्यक उपकरण तथा भवन निर्माण उद्योग में भी उच्च दर से विकास किया जायेगा। मशीन निर्माण उद्योग की पद्धति का विकास विश्वस्तर पर हुई तकनीकी तथा वैज्ञानिक उन्नति की दीर्घकालिक प्रवृति को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इलैक्ट्रानिक्स, सूक्ष्म मैकेनिक्स तथा औपटिक्स, मेटलकटिंग मशीन का निर्माण जैसी प्रमुख शाखाओं का तीव्र विकास, विश्व की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जायेगा। रोमानिया में औद्योगिक क्षेत्र में मशीन निर्माण उद्योग की प्रगति इस बात से आंकी जा सकती है कि कुल ओद्योगिक उत्पादन का ३४ प्रतिशत सिर्फ मशीन निर्माण उद्योग से होगा। आशा की जाती है कि सन् १९९० में मशीन निर्माण उद्योग में विकास की

दर इतनी उच्च होगी कि १९७५ का कुल उत्पादन ७० से ७५ दिनों में तथा १९७० का कुल उत्पादन ३० से ३७ दिनों में प्राप्त कर लिया जा सकेगा।

आदिकाल से धातु-उत्पादन देश की प्रगति और औद्योगिक विकास में अपनी महत्व-पूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। धातु-उत्पादन देश के आर्थिक विकास स्तर का सूचक है। हूनेडोअरा और रेजिटा कारखानों के पुनः निर्माण और आधुनिकीकरण तथा गैलाटी के नवीन कारखाने के निर्माण से रोमानिया में लौह तथा स्टील उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। पार्टी के ग्यारहवें अधिवेशन के निर्देशों के अनुसार लौह तथा अलौह धातुकर्म का विकास उच्च गति से होता रहेगा। कुल धातुकर्म-उत्पादन में मिश्रित-धातुओं, विशेष स्टीलों, वेल्लित धातुओं तथा अन्य विशेष धातुओं का अंश निरन्तर बढ़ता रहेगा। १९७५ में जब कि रोमानिया १९६५ की अपेक्षा तीन गुणा तथा १९३८ की अपेक्षा ३५ गुणा स्टील का उत्पादन कर रहा था, १९८० में स्टील का कुल उत्पादन १७ से १८ मिलियन टन हो जाने की संभावना है। १९९० तक २५ से २७ मिलियन टन स्टील उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

रासायनिक उद्योग रोमानिया का प्रमुख उद्योग है। प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता तथा उसके लाभदायक उपयोग की वजह से अन्य उद्योगों की अपेक्षा रासायनिक उद्योग में प्रगति की दर तेज है। सन् १९७० तक कुल उत्पादन १९३८ के कुल उत्पादन से ८० गुणा अधिक था। १९७५ तक यह बढ़कर १०० गुणा अधिक हो गया है। जहां तक रोमानिया द्वारा निर्मित रासायनिक पदार्थों के स्तर का प्रश्न है विश्व के करीब ६५ देशों में इसकी उच्चता प्रमाणित हो चुकी है। इन देशों में अर्जेनटाइना, वेल्जियम, ब्रिटेन, अरब, पूर्वी तथा पश्चिमी जर्मनी, ग्रीस, भारत, इटली, जापान, लेवनान, सोवियत संघ, टर्की तथा यूरुग्वे आदि सम्मिलित हैं। पेट्रो रसायन तथा रासायनिक खाद के उत्पादन में भी रोमानिया बहुत आगे बढ़ गया।

भवन निर्माण सामग्री और काष्ठ उद्योग रोमानिया के प्रमुख उद्धोगों में से एक है। १९७४ में भवन निर्माण सामग्री का कुल उत्पादन १९५० के उत्पादन की अपेक्षा २३ गुणा तथा १९७० के उत्पादन की तुलना में ४५ प्रतिशत अधिक था। उच्च क्षमता वाले तथा नवीन तकनीकी संयंत्रों से युक्त ये कारखाने रोमानिया की आवश्यकताओं की पूर्त्ति के साथ साथ अन्य देशों को निर्यात करने में भी सक्षम है। आगामी पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान भवन निर्माण तथा काष्ठकला उद्योगों का विकास एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में तथा जनता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जायेगा। सीमेंट निर्माण उच्चस्तर के संकलन पर केन्द्रित होगा। प्लास्टिक द्वारा भवन निर्माण सामग्री के निर्माण में विस्तार किया जायेगा जिससे हल्के, सस्ते उच्च श्रेणी के भवनों का निर्माण किया जा सके और धातुओं तथा काष्ठ का प्रतिस्थापन किया जा सके। साथ ही कंक्रीट तथा लकड़ी के तख्तों और बुरादे और गत्तों के उत्पादन का विकास किया जायेगा। १९९० तक सीमेंट का कुल उत्पादन २५ से २८ मिलियन टन हो जाने की संभावना है जो कि १९७० की तुलना में तीन गुणा अधिक है। १९९० तक काष्ठ निर्मित फर्नीचर तथा बुरादे और गत्ते के उत्पादन में भी तीव्र वृद्धि का आशा की जाती है।

उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और जनता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस उद्योग में उत्पादन की गति को तेज रक्खा गया है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना के दौरान उपभोक्ता उद्योग में उत्पादन की वार्षिक औसत दर १४ प्रतिशत है जो १९७० की तुलना में दो गुणा है। इसी योजना के दौरान ५० प्रतिशत प्रगति का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं। खाद्य सामग्री जैसे मांस, चीनी, तेल आदि के उत्पादन में आशातीत सफलता मिली है। रोमानिया में खाद्य सामग्री के के उत्पादन से सम्बन्धित उद्योगों को आधुनिक बनाया गया है। कपड़े तथा जूतों आदि के निर्माण में अपूर्व वृद्धि देखी गयी है। १९७० की तुलना में १९७४ में कपड़े के उत्पादन में तिगुनी और जूतों के निर्माण में दुगुनी प्रगति हुई है। १९७६-१९८०, पंचवर्षीय योजना की इस अवधि में उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में ६.९ से ७.३ प्रतिशत की वृद्धि का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कृषि को इस ढंग से विकसित किया जायेगा जिससे उच्च श्रेणी की भोज्य सामग्री उपलब्ध हो सके।

रोमानिया की अर्थव्यवस्था के विकास के संदर्भ में कृषि का आधुनिकीकरण अर्थ-नीति की प्रमुख विशेषता है। देश में प्राकृतिक परिस्थितियां कृषि के विकास के लिए अनुकूल है। देश की सम्पूर्ण भूमि का ६६ प्रतिशत कृषि योग्य भूमि है, शेष घास के मैदान, चारागाह, अंगूर के खेत, फलों के बाग आदि हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद औद्योगीकरण के साथ-साथ कृषि के आधुनिकीकरण पर भी ध्यान दिया गया। जनता के रहन-सहन को ऊंचा उठाने के लिए, उद्योगों के कच्चे माल की आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए, राज्य संग्रह तथा विदेशी व्यापार की आवश्यकता को ध्यान में रखकर कृषि उत्पादन में वृद्धि आवश्यक हो गयी थी। पार्टी तथा राज्य का एक स्थायी उद्देश्य तकनीकी तथा भौतिक आधारों पर कृषि का विस्तार करना है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर कृषि क्षेत्र में आधुनिक यंत्रों एवं रासायनिक खाद तथा अन्य साधनों का प्रयोग किया गया। भूमि विकास तथा सिंचाई की सुविधाओं का विस्तार किया गया। नये नये वैज्ञानिक प्रयोग किए गये। अंगूर तथा फलों के बागों का विकास, पौधे उगाने के आधुनिक उष्ण शीशे के मकानों का निर्माण, तथा पशुपालन केन्द्रों की स्थापना और विकास किया गया।

रोमानिया में कृषि के तकनीकी एवं भौतिक आधारों के विकास, उसके आधुनिकीकरण तथा तीव्र प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम-रासायनिक उर्वरकों, कीट तथा कवक नाशक, शकनाशक तथा जैव उद्दीपकों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि है। रासायनिक खाद का उत्पादन बढ़ाया गया है। रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी के ग्यारहवें अधिवेशन में कृषि के विकास पर बल देते हुए एक वृहद कार्यक्रम बनाया गया है जो वस्तुतः कृषि के आधुनिकीकरण तथा कृषि उत्पादन में तीव्र विकास से सम्बन्धित है। पार्टी के निर्देशों में भावी विकास का प्रारंभिक लक्ष्य अनाजों, विशेषतः गेहूं एवं मक्का, के उत्पादन में वृद्धि है। वृक्षों, साग सब्जियों, फलों तथा द्राक्षोत्पादन की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

कृषि उत्पादन को संगठित करने की दिशा में समाजवादी विधियों को प्रयोग में लाया गया है। परिवार से लेकर सम्पूर्ण देश को इस तरह संगठित किया गया है जिससे

कृषि उत्पादन में किसी तरह की बाधा नहीं हो। १९७४ के आरंभ में ३६९ कृषि राज्य उद्यम, ७४३ कृषि यंत्रीकरण केन्द्र तथा ४४६२ कृषि उत्पादन सहकारिताओं के सदस्य ३४ लाख परिवार कृषि उत्पादन में संलग्न थे।

पार्टी के ग्यारहवें अधिवेशन में निर्देशित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए १९७६ से १९८० की अवधि में ९३००००-९८०००० लाख ल्यु राज्य कोष से तथा कृषि उत्पादन सहकारिताओं के कोष से १४०००० लाख ल्यु के विनियोग की व्यवस्था की गई है। यह विनियोजन १९६६-१९७० अवधि में हुए विनियोजन से दो गुणा है। १९७६-१९८० में १० लाख हेक्टेयर भूमि सिंचाई के लिए तैयार होगी, ११ लाख हैक्टेयर भूमि पर जल निःसारण कार्यवाही की जायेगी तथा ८०० हजार हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र में अपसरण नियंत्रित करने की व्यवस्था की ज़ायेगी। १९९० तक ५० लाख हैक्टेयर भूमि सिंचाई के क्षेत्र में आ जाने की संभावना है। विभिन्न फसलों में औसत पैदावार का लक्ष्य इस प्रकार है—चुकन्दर ८·४ से ९ मिलियन टन, ९५० से १०५० हजार टन सूरजमुखी बीज, ५०० से ५२० हजार टन सोयाबीन, ३०० से ३२० हजार टन सनई तथा १८ से २० हजार टन कच्चे रूई आदि। साथ ही सब्जी उत्पादन में ४५ से ५२ प्रतिशत की वृद्धि की संभावना व्यक्त की गई है। साथ ही द्राक्षोत्पादन एवं फल उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रयत्न किया गया है। विभिन्न फल वृक्षों तथा अंगूर वाटिकाओं में वृक्षारोपण का विस्तार किया जायेगा। अच्छी किस्म के वृक्षों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। मवेशियों के लिए चरी-आधार तथा उसके परिणामात्मक और प्रकारात्मक विकास पर भी ध्यान दिया जायेगा। चरी अनाज उत्पादन तथा लूसर्न, क्लोवर तथा चारा के अन्य पौधों की पैदावार की जायेगी। चारागाहों एवं घास-प्रदेशों को विकसित किया जायेगा। हरे चारे के निर्जलीकरण हेतु सरल एवं सस्ते तरीकों का विस्तार किया जायेगा। इस प्रकार संयुक्त चारा उत्पादन में वृद्धि होगी।

पार्टी की कृषि योजना का एक मुख्य लक्ष्य पशुपालन में विकास तथा पशुउत्पादन में वृद्धि करना है। १९७६-१९८०, पंचवर्षीय योजना की इस अवधि में, पशुओं की संख्या में काफी विस्तार होगा। पहाड़ी प्रान्तों में सींगधारी पशुओं तथा भेड़ों की पैदावार की ओर अधिक ध्यान दिया जायेगा। देश के सम्पूर्ण पशुधन का विकास समान रूप से नहीं हो सकता है। नस्ल और जाति स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित हैं। पशुओं को अनुकूल वातावरण में रखा जाता है तथा जन्मदर में वृद्धि करके और मृत्यु दर में कमी करके पशुधन की हानि को कम किया जाता है। १९९० में सींगधारी पशुओं की संख्या १९७० से दो गुनी तथा सूअरों की संख्या तीन गुनी होगी। पशुओं की संख्या में वृद्धि होने के कारण मांस, दूध, पनीर, अण्डों तथा ऊन का उत्पादन भी अधिक हो जायेगा। इस योजना में पार्टी के निर्देश के अनुसार कोष कीट पालन तथा मधुमक्खी पालन में विकास किया जायेगा। रेशम कीट-कोष का उत्पादन १९८० तक ५००० से ५५०० टन हो जायेगा तथा शहद का उत्पादन २०-२५ प्रतिशत बढ़ जायेगा। इस तरह से १९७६-१९८० में सम्पूर्ण वार्षिक औसत कृषि उत्पादन १९७१-७५ की तुलना में २५ से लेकर ३४ प्रतिशत अधिक होगा।

आर्थिक गतिविधियों में विकास और विस्तार के साथ-साथ उत्पादन में बढ़ती हुई

जटिलता के कारण देश में यातायात और दूर संचार व्यवस्था का विकास आवश्यक हो गया। यातायात मानवीय विकास का आवश्यक अंग है। यातायात के आधुनिक साधन का विकास किया जायेगा। आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निम्न कार्यवाहियां की जायेंगी: —उत्पादन और उपभोग केन्द्रों के सम्बन्धों में वृद्धि, विभिन्न परिवहन साधनों द्वारा यातायात में यथायोग्य योगदान, उनकी उपयोगिता सूचियों में विस्तार, परिवहन के यंत्रीकरण और स्वचालन की दर में वृद्धि, पैलेटाइजेशन, सन्वेष्टीकरण, अन्तर्विष्टी करण तथा ट्रांस-अन्तर्विष्टीकरण द्वारा आधुनिक तकनीकियों का विस्तार जिससे ईंधन और विद्युत ऊर्जा की खपत में कमी हो सके। परिवहन के साधनों के रूप में रेलवे का मुख्य स्थान है। वर्तमान वर्षों में रेल परिवहन के तकनीकी तथा भौतिक आधारों का विकास तथा आधुनिकीकरण किया गया है। सन् १९७४ के अन्त तक रेल मार्ग की कुल दूरी ११००० किलोमीटर से अधिक थी। धिमेज-च्यु-डीडा और कौरनसेब्स-लूगोज रेल मार्गों के विद्युतीकरण से सम्बन्धित कार्यवाहियों में डीजल तथा विद्युत-कर्षण की स्थापना तथा विस्तार मुख्य है। यह कुल रेल परिवहन का ९४ प्रतिशत है तथा रोमानिया को अन्य विकसित देशों की श्रृंखला में रख देता है। सन् १९७४ में रेल परिवहन के लिए २२२ डीजल तथा विद्युत चालकों, २७५८ मालवाहक डिब्बों तथा २९० यात्री डिब्बों को कार्यरत किया गया है। इस वर्ष आधुनिकीकरण और स्वचालन कार्यक्रम को जारी रखा गया है। १९८० तक रेल मार्ग द्वारा १९७५ की तुलना में ३० से ३२ प्रतिशत माल तथा १९ से २२ प्रतिशत यात्रियों का अधिक परिवहन किया जायेगा।

सड़क यातायात परिषहन का दूसरा आवश्यक अंग है। रोमानिया में देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इसका गठन किया है। सम्पूर्ण परिवहन का ३६ प्रतिशत सड़क यातायात द्वारा पूर्ण किया जाता है। केवल १९७५ में ही ८२४० मालवाहक गाड़ियां तथा २६३२ बसों को कार्यरत किया गया है। सड़क यातायात में हुए विकास के साथ-साथ सार्वजनिक सड़कों के निर्माण में भी वृद्धि हुई है। सड़कों की सम्पूर्ण लम्बाई अब ७७००० किलोमीटर है जिसमें १६ प्रतिशत आधुनिक सड़कें हैं। सिर्फ १९७४-७५ में २९० किलोमीटर आधुनिक सड़कों का निर्माण ३१४ किलोमीटर तीव्र यातायात सड़कों का आधुनिकीकरण तथा ७०० कि०मी० मन्द यातायात सड़कों पर डाभर का हल्का लेपन किया गया है। १९८० तक सड़कों पर माल वाहन १९७५ की अपेक्षा २६ से २८ प्रतिशत अधिक हो जाने की संभावना है।

आर्थिक विनियम तथा विदेशी सम्बन्धों के विस्तार को ध्यान में रखते हुए रोमानिया के लिए देश में नदी, समुद्र तथा वायु यातायात का विकास आवश्यक हो गया। रोमानिया में जहाज निर्माण उद्योग तथा नदी यातायात की काफी प्रगति हुई है। समाजवादी शासन के दौरान समुद्री यातायात में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। १९७४ में रोमानिया के समुद्री बेड़े को तीन तेल वाहक, एक अयस्क वाहक, तथा पन्द्रह अन्य जहाज प्रदान किये गये हैं जिसकी कार्य क्षमता क्रमशः ८५२५०, २५०००, ३२६००० टीडी डब्लू है। १९८० तक रोमानिया के समुद्री व्यावसायिक बेड़े में लगभग २०० जहाज होंगे जिसकी क्षमता ३० लाख टी डी डब्लू होगी।

वर्तमान वर्षों में वायु यातायात तथा उसके तकनीक में विशेष वृद्धि हुई है। वायु यातायात बेड़ों को अनेक नये वायुयानों की प्राप्ति हुई है जो रोमानिया की राजधानी को देश के अन्य मुख्य नगरों तथा विदेश से जोड़ते हैं। नई वायु सेवाओं में बुखारेस्ट-न्यूयार्क एवं बुखारेस्ट-पेकिंग वायु सेवायें सम्मिलित हैं। वायुयान द्वारा यात्रा करने वाले यात्रियों की कुल संख्या १९७४ में लगभग १५ लाख थी। १९७६-८० में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वायु यातायात में १९७१-७५ की अपेक्षा ५० प्रतिशत की वृद्धि होगी। भौतिक साधनों का काफी विकास किया जायेगा। औटोपेनी तथा मिहाई कोगालनिसियानु के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का आधुनिकीकरण किया जायेगा। टिमिसियोरा हवाई अड्डे को विकिसत किया जायेगा। सभी हवाई अड्डों में रेडियो नैचालन उपकरणों का संस्थापन किया जायेगा जिससे वे वायुयानों को निर्दिष्ट कर सकें तथा उड़ान सुरक्षा में वृद्धि की जा सके। वायुयानों की कार्यशीलता में वृद्धि तथा बिस्तार किया जायेगा।

समाजवादी निर्माण के वर्षों में डाक तथा दूर संचार सेवाओं का निरन्तर विकास तथा आधुनिकीकरण किया जा रहा है। स्वःचालित तथा दूरभाष केन्द्रों में ७९६०० टेली-फोन लाइनों का योग हुआ तथा १९७४ में टग, म्युर्स, सिनाइआ, बहुसी, सिसानेडी और एलेक्जैन्ड्रिया नगरों को अन्तर अर्बन टेलीफोन जाल द्वारा जोड़ा गया है। वर्तमान समय में यह जाल ३० नगरों में फैला हुआ है। १९७६-८० में स्वचालित स्थानीय टेलीफोन केन्द्रों की क्षमता १९७५ की तुलना में ३० से ४० प्रतिशत अधिक हो जाने की संभावना है।

राजकीय बजट वित्तीय प्रणाली की रचना का आवश्यक अंग है। उत्पादन का विस्तार, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राज्य-बजट साधनों के संचालन तथा पुनः वितरण का एक रूप है जो राज्य द्वारा नियोजित है। साख, प्रगति के साथ-साथ अर्थ व्यवस्था में वित्तीय नियंत्रण को शक्तिशाली बनाने की संभावनाएं उत्पन्न करता है। वित्तीय एवं साख प्रणाली का निर्माण, वित्त मंत्रालय जन-परिषद के वित्तीय कार्यालयों, राष्ट्रीय बैंक, विनियोजन बैंक, कृषि बैंक, विदेश व्यापार बैंक, बचत बैंक, सार्व-जनिक राज्य बीमा प्रशासन के द्वारा होता है। मंत्रि परिषद की वित्तीय एवं बैंकिंग परिषद का सन् १९७२ में निर्माण किया गया जिससे इस क्षेत्र की कार्यवाहियों में सामंजस्य स्थापित किया जा सके।

विदेश व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक, तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग रोमानिया के विदेशी सम्बन्धों के मूल आधार हैं। अर्थ व्यवस्था के निरन्तर विकास, उत्पादित वस्तुओं के बाजार तथा देश की प्रगति से सम्बन्धित समस्याओं ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व रोमानिया का विदेश व्यापार नगण्य था लेकिन समाजवादी निर्माण के २० वर्षों के दौरान विदेश व्यापार में ११ प्रतिशत की उल्लेखनीय प्रगति हुई। यह विश्व प्रगति दर, जो ८ प्रतिशत है, से कहीं अधिक है। पिछले कुछ दशकों में समाजवादी रोमानिया द्वारा अभिलिखित आर्थिक रूपांतरणों ने वाणिज्य विनियम प्रणाली में परिणात्मक और प्रकाशात्मक वृद्धि की है। रोमानिया के सम्पूर्ण निर्यातों में औद्योगिक एवं अन्य सामग्री का योगदान १९५० में ४·२ प्रतिशत से बढ़ कर

१९७० में २२·६ प्रतिशत हो गया। रासायनिक पदार्थों के निर्यात में १९७० में ७ प्रतिशत की वृद्धि हुई जब कि १९५० में यह सिर्फ १·७ ही था। देश की औद्योगिक क्षमता में विकास होने के कारण उस कच्चे माल का, जिसका पहले निर्यात किया जाता था, उपयोग करके आवश्यक सामग्री बनाना संभव हो गया है। इसी कारण वर्तमान समय में रोमानिया अपने सम्पूर्ण औद्योगिक उत्पादन का १८ प्रतिशत निर्यात कर देता है। सम्पूर्ण ट्रैक्टरों के उत्पादन में ४६ प्रतिशत, फर्नीचर में ४० प्रतिशत तथा वेयरिंग में ३० प्रतिशत उत्पादित वस्तुएं विदेशों को निर्यात कर दी जाती है।

निर्यात के साथ-साथ अपने अर्थ व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये रोमानिया को विदेशों से आयात भी करना पड़ता है। रोमानिया की विदेश-व्यापार-क्रिया विधि का आवाश्यक तथ्य यह है कि अर्थ व्यवस्था की सम्पूर्ण संरचना में सुधार के साथ-साथ तैयार माल के अंश को कम करने तथा कच्चे माल और अर्ध-पूर्ण माल के अंश में वृद्धि करने के लिए आयात को बढ़ाया जा रहा है। जब कि निर्यात के क्षेत्र में तैयार माल के अंश में वृद्धि तथा अर्ध-पूर्ण माल और कच्चे माल के अंश में कमी की जा रही है फिर भी पारस्परिक निर्यात माल की विदेशी बिक्री जारी है। इन वस्तुओं में तेल तथा तेल उत्पादन, अनाज, काष्ठ एवं उपभोक्ता तथा भोज्य-सामग्री उद्योगों के उत्पादन सम्मिलित हैं। युद्ध के पहले जिन वस्तुओं का निर्यात नहीं होता था उनका भी अब निर्यात होने लगा है। इतना होने पर भी अर्थ व्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक कुल मशीनों और सामग्री का ३० प्रतिशत आयात करना ही पड़ता है। रोमानिया के औद्योगिक उत्पादन के साथ-साथ, यह आवश्यकता, अर्थ व्यवस्था को प्रबल करने की जरूरत को आमिलिखित करती है। यह अर्थ व्यवस्था, रोमानिया द्वारा वर्तमान सभी उपलब्धियों तथा विश्व की वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों का राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय सहयोग चाहती हैं।

१९७१-१९७५ पंचवर्षीय योजना के दौरान सी० एम० ई० ए० (C.M.E.A.) सदस्य राष्ट्रों तथा अन्य समाजवादी राष्ट्रों के साथ रोमानिया के सबंधों का विकास तथा विस्तार हुआ है। पारस्परिक आर्थिक सहयोग परिषद के सदस्य के रूप में रोमानिया, सी० एम० ई० ए० सदस्य राष्ट्रों के समाजवादी आर्थिक संगठन की उन्नति तथा उनके जटिल कार्यक्रम में निरन्तर सहयोग दे रही है, जिससे कि प्रत्येक सहयोगी राष्ट्र की आर्थिक क्षमता में वृद्धि हो और उनके उत्पादन साधनों का अधिक गति से विकास हो। वे आपस में निकट आ सकें तथा उनके आर्थिक विकास-स्तर समान हो सकें। साथ ही समाजवादी राष्ट्रों की एकता को शक्तिशाली बनाया जा सके। रोमानिया सरकार का विश्वास है कि १५-२० बर्षों के लिए बनाये गये कार्य-क्रम की पूर्ति प्रत्येक सी० एम० ई० ए० राष्ट्र के भौतिक तथा तकनीकी आधारों की नयी प्रणाली के निर्माण तथा उन्नति को सक्रियता प्रदान करेगा। यह कार्यक्रम आपसी विचार विमर्श का फल है। समस्याओं के समाधान का आधार परस्पर विश्वास तथा सौहार्द पूर्ण वातावरण है। समाजवादी देशों के हितों तथा समाजवाद के सामान्य हितों को दृष्टि में रखने का भी यह प्रतिफल है।

रोमानिया ने विश्व के सभी राष्ट्रों के साथ अपने व्यापारिक सबंध बनाये है चाहे

उनकी कोई भी राजनैतिक या सामाजिक प्रणाली हो। यह संबंध समान अधिकारों, सदस्य राष्ट्रों की स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता के आदर, घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति तथा पारस्परिक आर्थिक लाभ पर आधारित है। सन् १६७१ में रोमानिया जी०ए०टी०टी० (G.A.T.T.) में सम्मिलित हो गया। इससे उन परिस्थितियों का सुधार हुआ जिनसे रोमानिया विश्व विनियमों में अपना सक्रिय तथा न्यायोचित योगदान कर सकता था।

रोमानिया, संयुक्त राष्ट्र संघ के आर्थिक निकायों में भी काफी सक्रिय है। इस निश्चय का परिणाम यह हुआ कि इस देश के विभिन्न उपक्रमों के प्रति सहयोगी राष्ट्रों में अनुकूल प्रतिक्रिया हुई और इसके अनेक उपक्रमों को इन निकायों के प्रस्तावों में सम्मिलित कर लिया गया। उन देशों, जिनकी विभिन्न सामाजिक तथा आर्थिक पद्धतियां हैं और जिनके विभिन्न विकास स्तर है, के विस्तृत आर्थिक सम्बन्धों के अन्तर्गत रोमानिया ने संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास अधिवेशन के दो सम्मेलनों में भाग लिया। व्यापार एवं विकास परिषद के कार्यों में इसने बांछनीय योगदान इस कारण दिया है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार हो सके और अन्तर्राष्ट्ररीय विनिमयों में प्रगतिशील देशों का न्यायोचित योगदान हो सके। संयुक्त राष्ट्र यूरोपीय आर्थिक आयोग के सदस्य के रूप में रोमानिया ने इस निकाय की कार्यशीलता में अन्य देशों के साथ काफी सहयोग किया है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में उपस्थित बाधाओं और भेदभाव के निराकरण, आपसी सहयोग के द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय स्वरूपों की प्रगति तथा औद्योगिक उत्पदानों के निर्यात में प्रगति तथा विस्तार के लिए भी रोमानिया ने विभिन्न उपायों का सृजन किया है।

कई अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशनों में रोमानिया के प्रतिनिधियों ने ऐसे अनेक सुझाव प्रस्तुत किये हैं जो प्रगतिशील राष्ट्रों के औद्योगीकरण के हित में सहयोग का विस्तार कर सके। रोमानिया ने अन्य देशों के साथ अपने सम्बन्धों में इस प्रकार के आर्थिक सहयोगों का प्रयोग किया है। इसके परिणामस्वरूप इन राष्ट्रों में, राष्ट्रीय महत्व की औद्योगिक योजनाओं का निर्माण, रोमानिया के विशेषज्ञों तथा उपकरण सामग्री के सहयोग से हुआ है। भुगतान सबंधी उपबन्धों की स्थापना लाभदायक शर्त्तों पर हुई जिसके फलस्वरूप तत्सम्बन्धित उद्यमों द्वारा भुगतान उन उद्यमों में निर्मित माल के द्वारा होगा। रोमानिया में उच्च कोटि के विशेषज्ञों का प्रशिक्षण एक ऐसा सहयोग है जिस पर प्रगतिशील राष्ट्र आसक्त है।

रोमानिया की विदेश-व्यापार नीति अन्य देशों के साथ आर्थिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग में विस्तार पर अत्यधिक बल देती है। यह अन्तर्राष्ट्ररीय आर्थिक सहयोग की प्रगति का सफल साधन है। रोमानिया ने ६० से अधिक देशों के साथ पारस्परिक समझौते किये हैं जिनमें ईजिप्ट, बुलगारिया, चेकेस्लोवाकिया, क्यूबा, फ्रांस, पूर्वी तथा पश्चिमी जर्मनी. इरान, इटली, युगोस्लाविया, ब्रिटेन, पौलैंड, सोवियत यूनियन, तथा हंगरी सम्मिलित हैं। वर्तमान बर्षों में निम्नलिखित बस्तुओं के उत्पादन हेतु विदेशी कम्पनियों से सहयोग समझौते हुये हैं, आटोमोवाइलों, डीजल विद्युत चालकों, मशीनी यंत्रों ड्रिलिगंरिग्स, सिंचाई व्यवस्था के निर्माण, होटल इत्यादि। रोमानिया राज्य अन्य देशों में आर्थिक,

औद्योगिक, कृषि तथा अन्य परियोजनाओं के सामूहिक निर्माण में सहयोग के विस्तार तथा रोमानिया में आर्थिक परियोजनाओं एवं ऐसी नवीन उत्पादन क्षमताओं के निर्माण की ओर विशेष ध्यान देती है जिसके लिये विदेशी साझेदारों द्वारा मशीनी संस्थानों, सयंत्रों अभिलेखीकरण एवं तकनीकी सहयोग संभरण हुआ हो और जिसका सम्पूर्ण या आंशिक भुगतान इन एककों में उत्पादित सामग्री या अन्य लाभपूर्ण तरीकों द्वारा होता हो। वर्तमान बर्षों में इस प्रकार के कार्य-क्रमों में जर्मनी प्रजातंत्रीय गण राज्य के उद्यमों के तकनीकी सहयोग से रोमानिया में स्वाचालित स्क्रू काटने की मशीनों एवं अभिदृश्यों तथा लेंसों के निर्माण; पौलैंड के जलयान कारखानों के तकनीकी सहयोग से रोमानिया में मालवाहक नौकाओं का निर्माण; फ्रांस की रेनाल्ट कम्पनी के साथ तकनीकी सहायता जिससे रोमानिया में कारों के साथ-साथ फ्रांस में निर्मित स्टेफेटी गाड़ियों के लिए गेयर वाक्स का निर्माण हो सके, प्रमुख हैं। अन्य सहयोगी कार्यवाहियों का लक्ष्य रोमानिया द्वारा अन्य देशों, में आर्थिक परियोजनाओं एवं उत्पादन क्षमताओं का, उद्योग एवं अन्य शाखाओं के लिये निर्माण करना है। इस कार्य-क्रम में रोमानिया मशीनी संस्थानों को आवश्यक वस्तु अभिलेखीकरण एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करता है और उसका भुगतान इन संस्थाओं में निर्मित माल के द्वारा लेता है।

रोमानिया के व्यापार सबंधी नवीन तथा विस्तृत लक्ष्यों के लिए नई संरचनाओं की आवश्यकता हुई जिनकी कार्य क्षमता नये साझेदारों के साथ स्थापित सबंधों के समान विकास को प्रत्याभूत कर सके। पिछले बर्षों में आयात एवं निर्यात विदेश व्यापार मंत्रालय के केन्द्रीय उद्योग द्वारा होता था। परन्तु अब आयात एवं निर्यात औद्योगिक केन्द्रों तथा अन्य उत्पादन एककों, विदेशी व्यापार संस्थाओं एवं अन्य केन्द्रों के समूह जिनकी समान रूपरेखा है या ऐसी विदेश व्यापार संस्थाओं द्वारा होता है जो औद्योगिक मंत्रालयों से सम्बद्ध हैं। औद्योगिक मंत्रालय सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की विशिष्ट शाखाओं का समन्वय करता है। रोमानिया की अर्थ व्यवस्था में विदेशी साझेदारों के साथ सम्बन्धों का उपर्युक्त विकेन्द्रीकरण, विचार विमर्श के लिए विस्तृत आधार उत्पन्न करता है क्योंकि विदेश व्यापार से सम्बन्धित देश के आर्थिक एकक अब पूर्णतया स्वतंत्र हैं। उन्हें विदेश पूर्वेक्षण, अपने आयात निर्यात कार्य क्रमों को स्वयं निश्चित करने, वाणिज्य प्रतिनिधित्व को विदेश में संगठित करने, अपने उत्पादनों का विदेश में विक्रय करने तथा विदेशी समझौते और अनुबन्ध करने की स्वतंत्रता प्राप्त है।

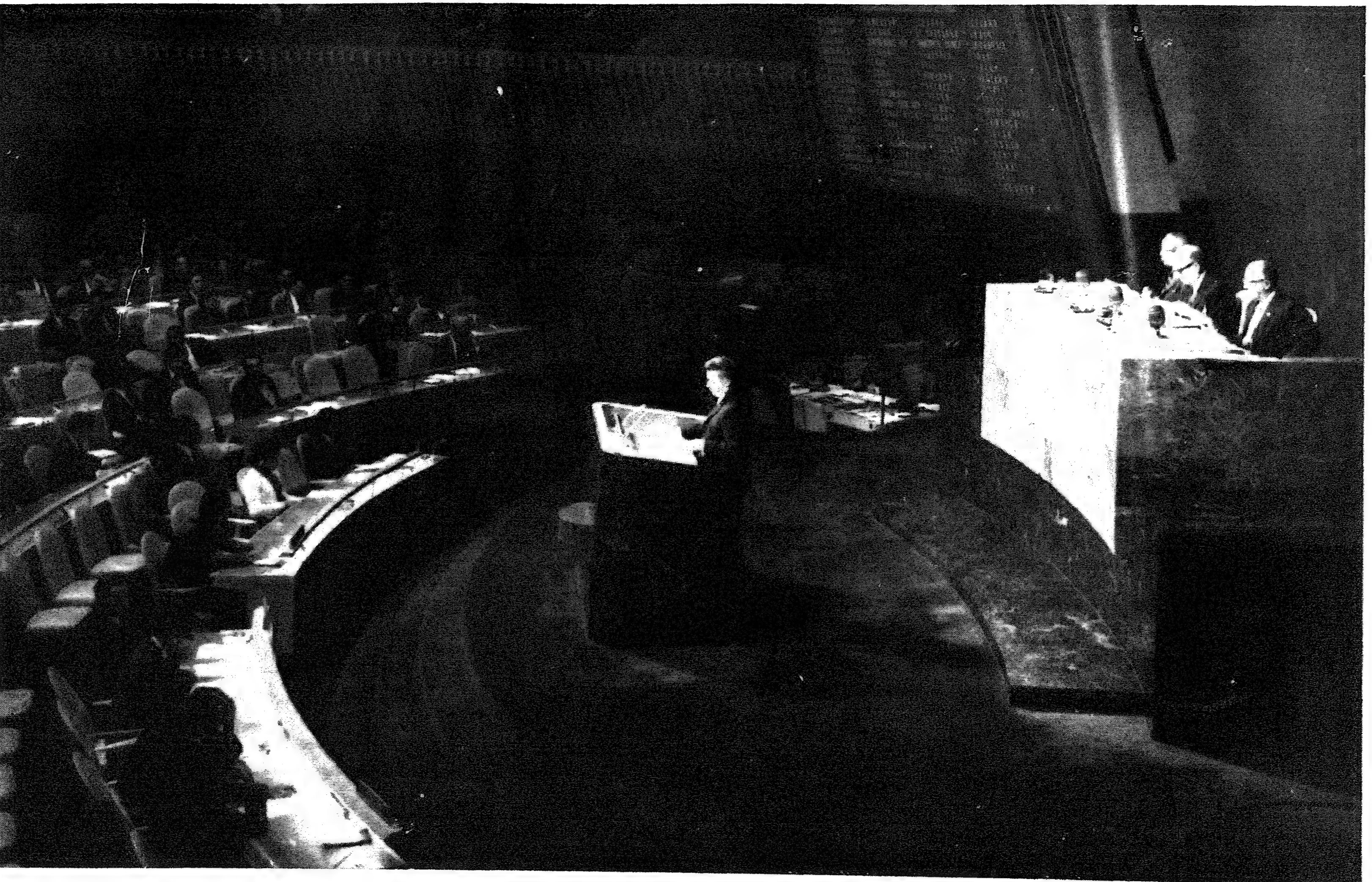
इस बात का उल्लेख भी आवश्यक है कि मिलों, फैक्टरियों या सहयोग की जटिल कार्यबाही से सम्बन्धित आयात निर्यात के प्रमुख निर्णय उन औद्योगिक केन्द्रों के जेनरल मैनेजरों द्वारा लिया जाता है चाहे इन केन्द्रों तथा एककों का विदेश व्यापार संस्थाओं द्वारा विदेश बाजार से सबंध क्यों न हो। रोमानिया की विदेश-व्यापार कार्यवाहियों के नियोजन और उनके पूर्ति-साधनों के मध्य उपस्थित सम्बन्धों को समझने के लिए उपर्युक्त

तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस नई संरचना की प्रत्युपकारी विवेचना से नवीन सार्वजनिक लक्ष्यों का सदैव सुत्रपात होता रहता है तथा भविष्य के कार्यक्रमों की दृढ़ उपलब्धियों का संकेत अत्यधिक सुनिश्चित आर्थिक आंकड़ों के आधार पर मिलता रहता है। इन नयी परिस्थितियों में रोमानिया के आर्थिक संगठनों के लिये यह जरूरी है कि वे विदेशी कम्पनियों के साथ विस्तृत सहयोग करें, रोमानिया तथा अन्य राज्यों के सबंध में यह विस्तृत सहयोग उतना ही आवश्यक है। यह सगंठन, रोमानिया के साथ-साथ विदेश में संयुक्त कम्पनियों का अनेक क्षेत्रों में निर्माण कर सकता है जैसे कृषि, भवन-निर्माण, यातायात व्यापार, तकनीकी व वैज्ञानिक अनुसंधान सेवाएं इत्यादि।

अपनी क्रियाविधि में इन साझा कम्पनियों को रोमानिया के कानून का आदर करना होता है। इन कम्पनियों की कार्यवाही रोमानिया राज्य द्वारा प्रत्यामूत होती है। इन कम्पनियों में रोमानिया द्वारा ५१ प्रतिशत सहयोग आवश्यक है। लेकिन प्रत्येक साझेदार अपने योगदान के प्रति अनुबंध में निर्धारित अवधि तक ही उत्तरदायी होता है। विदेशी बैंक, रोमानिया के साझेदारों के अपने ऋण परिशोध की निर्धारित मात्रा, लाभों तथा अन्य सुविधाएँ जो उन्हें देय हैं, कर अदायगी और अनुबन्धों की पूर्ति के उपरान्त, अपनी इच्छानुसार विदेश में स्थानान्तरित कर सकने के प्राधिकार को प्रत्याभूत करते हैं। साझा कम्पनियों के निर्माण, संगठन, कर्त्तव्य पालन साझेदारों के अधिकार तथा दायित्वों, विरासता के निर्माण तथा योगांश के निवर्त्तन की रीतियों, लाभों के वितरण तथा अन्य तस्सबंधी कार्यवाहियों की सभी दृढ़ परिस्थितियाँ, उन समझौतों के अनुसार होंगी जो साझेदारी द्वारा किये गये अनुबंधो में अभिलिखित हैं।

रोमानिया द्वारा अन्य राष्ट्रों के आर्थिक सम्बन्धों की विकास क्षमता को आगामी वर्षों में निर्यात वस्तुओं के आधुनिकीकरण द्वारा बढ़ाया जायेगा। विदेश बाजार में विभिन्न वस्तुओं की उपलब्धि सूची में वृद्धि प्रशंसनीय है। निर्यात में औद्योगिक वस्तुओं का योग निरन्तर बढ़ता रहेगा। इसमें मशीन-निर्माण उद्योग, रासायनिक उद्योग तथा उपभोक्ता वस्तुओं से सम्बन्धित उद्योग सम्मिलित हैं। आयल-ड्रिलिंग-रिग्स के निर्यात में अमेरिका के बाद रोमानिया का दूसरा स्थान है। रोमानिया में निर्मित वस्तुओं ने अन्तर्राष्ट्रीय मेलों तथा प्रदर्शिनियों में स्वर्ण पदक तथा अन्य सम्मान प्राप्त किया है। इन उपलब्धियों के उपरान्त रोमानिया आज ८० देशों को मशीन तथा अन्य वस्तुओं का निर्यात करता है जबकि १९५० में यह सिर्फ ४ ही देशों को निर्यात करता था। रोमानिया मे निर्मित रासायनिक पदार्थों का ७२ देशों में विक्रय होता है जिनमें जर्मन प्रजातंत्रीय गणराज्य, ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी, जापान तथा इटली सम्मिलित हैं।

सन् १९७१ में विदेश व्यापार के सम्बन्ध में हुए अधिवेशन ने रोमानिया के विदेश वाणिज्य विकास हेतु नये निर्देशों का निर्धारण किया। सम्बन्ध-प्रणाली का निरन्तर विकास तथा विदेश-व्यापार कार्यविधि का विस्तार और आधुनिकीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में रोमानिया की प्रगति का मुख्य साधन है। १९७१ में विदेश-व्यापार कार्यवाही के लिए विधि



संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा में भाषण करते हुए राष्ट्रपति चाउसेस्कू

निर्माण के पश्चात्, रोमानिया के विदेश व्यापार सम्बन्धों और आर्थिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग ने विधि व्यवस्था का अभिग्रहण किया है। यह कानून वर्तमान राष्ट्रीय आर्थिक विकास तथा रोमानिया के अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक क्षेत्रों में सक्रिय सहयोग की आवश्यकताओं के अनुरूप है। यह कानून विदेश-व्यापार कार्यविधि, देश के आर्थिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग; इस कार्यक्रम के संस्थापन, नियोजन तथा संगठन के लिए एकात्मक अधिनियमों का निर्माण करता है तथा मंत्रालयों, अन्य केन्द्रीय निकायों, औद्योगिक केन्द्रों, उत्पादन एककों, विदेशी व्यापार उद्यमों और विदेश-व्यापार कार्य विधि से सम्बन्धित सभी कारकों की विवेचना करता है जिससे रोमानिया के विदेशी आर्थिक-विनियमों का विकास हो तथा उसकी क्षमता में वृद्धि हो सके। विस्तृत तथा विरोधहीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग में भी शक्तिशाली विकास हुआ है। इससे रोमानिया अन्य देशों की भांति भौतिक सम्पत्ति के विश्व विनिमय से सम्पूर्ण लाभ उठा सकेगा। तथा उसके द्वारा व्युत्क्रम आधारों पर देश की उन्नति और विकास हो सकेगा। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा बोधशक्ति का विस्तार होगा जिससे विश्व में शान्ति की स्थापना में मदद मिलेगी।

समाजवादी रोमानिया, अपनी विदेश नीति, अन्य देशों के साथ मैत्री तथा सहयोग सम्बन्धों के विस्तार पर केन्द्रित करता है; इस बात पर विश्वास करते हुये कि इससे रोमानिया के लोगों तथा उन लोगों के हितों का विस्तार होगा जो नई प्रणाली के निर्माण के सहयोगी हैं तथा शान्ति एवं समाजवाद के सार्वजनिक कारणों के विकास में योगदान कर रहे हैं। सी० एम० ई० ए० के सदस्य के रूप में रोमानिया इस निकाय की कार्यवधि में पूर्ण योगदान कर रहा है। सदस्य राष्ट्रों के बहुपक्षीय सहयोग तथा योगदान के विस्तार और निरन्तर उन्नति के जटिल कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर नये प्रकार के उन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों की स्थापना हुई है, जो पूर्ण एकता के मार्क्स-लेनिनवादी सिद्धान्तों पर आधारित हैं। इस तरह रोमानिया प्रगतिशील राष्ट्रों के साथ बहुपक्षीय विस्तार के लिये सक्रिय कार्य कर रहा है।

शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्तों के प्रोत्साहन पर रोमानिया ने अन्य राष्ट्रों के साथ सहयोग की निरन्तर वृद्धि की है, चाहे उनकी कोई भी राजनीतिक प्रणाली हो। इन में समृद्ध पूंजीवादी राष्ट्र भी सम्मिलित हैं।

नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन की स्थापना के लिए रोमानिया आग्रहशील कार्य कर रही है। यह कार्यक्रम न्यायोचित एवं पूर्णतया प्रजातांत्रिक आधारों पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अवरोधहीन विकास कर रहा है जिससे विश्व आर्थिक क्षेत्र में सभी देशों के योगदान को संरक्षित किया जा सकेगा। आधुनिक विज्ञान तथा तकनीकी शास्त्र के अभिगमन और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सभी प्रतिबन्धों एवं भेदभाव के निराकरण के लिए रोमानिया कार्यरत है। रोमानिया, अपने विदेशी सम्बन्धों को, राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों के नये सिद्धान्तों पर आधारित करता है। यह सिद्धान्त है—पूर्णतया समान अधिकार, राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता में निष्ठा, घरेलू मामलों में अहस्तक्षेप, पारस्परिक लाभ, हिंसा का त्याग, प्रत्येक पुरुष के पवित्र अधिकार के अन्तर्गत उसे बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप

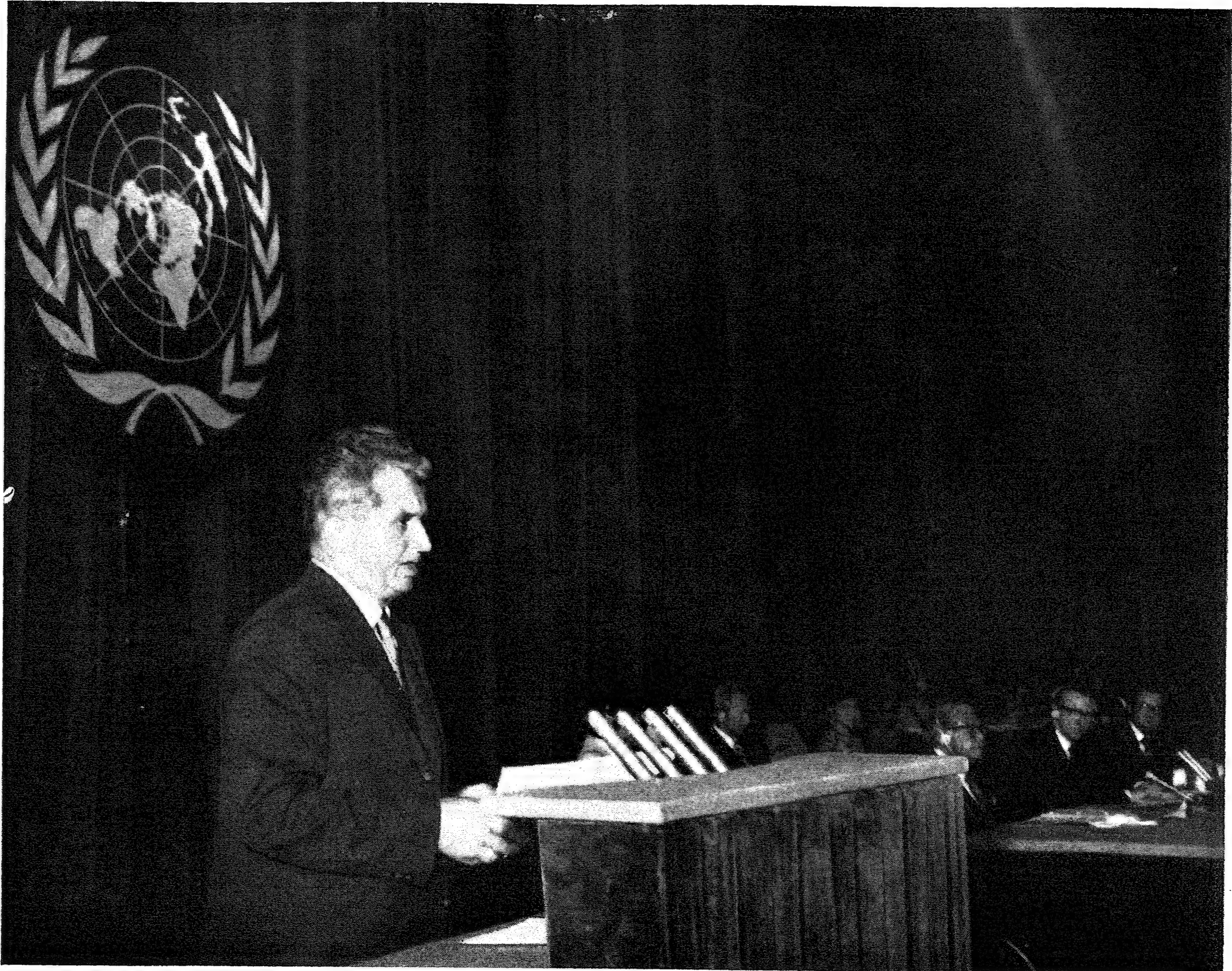
के अपनी इच्छानुसार अपने आर्थिक तथा समाजवादी विकास करने तथा अपने लिए स्वतंत्र जीवन का निर्माण करने का अधिकार। रोमानिया अवरोधहीन अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के विकास तथा कोषों के स्वतंत्र तथा न्याय संगत विनिमय का समर्थन करता है जिससे देशों के आपसी सहयोग तथा वाणिज्य में कृत्रिम अवरोध का विस्तार और घनिष्ठ संघों का निर्माण किसी भी भाँति न हो सके।

वर्तमान वर्षों में रोमानिया ने उत्पादन, बैंकिंग, वाणिज्य तथा यातायात सम्बंधी ४७ साझा कम्पनियों का निर्माण किया है जिससे सभी राष्ट्रों के साथ सहयोग सम्बंधों में विस्तार हो चाहे वे किसी भी सामाजिक पद्धति के हों। इससे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन के सिद्धान्त के प्रति रोमानिया के तीव्र सहयोग की नीति का आभास मिलता है।

रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी के ग्यारहवें अधिवेशन में १६७६-८० पंचवर्षीय योजना की अवधि के लिए निर्धारित लक्ष्यों से यह विदित होता है कि विदेश व्यापार अपनी संरचना में विकास करेगा। साथ ही उत्पादन, तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का विस्तार किया जायेगा। १६७१-७५ की अपेक्षा विदेश व्यापार अब ७२-८० प्रतिशत अधिक होगा। १६८० में विदेश व्यापार १६५० की अपेक्षा ३० गुणा तथा १६६० में ५० गुणा अधिक होगा। निर्यात में तीव्र विस्तार होगा तथा उसमें ७५ से ८५ प्रतिशत की वृद्धि की संभावना है। मशीन निर्माण तथा रासायनिक उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं के निर्यात में ५० प्रतिशत की वृद्धि की संभावना व्यक्त की गयी है। आयात में १६७१-७५ की अपेक्षा ६० से ७० प्रतिशत की वृद्धि होगी। आयात में मुख्यत: कच्चा माल, मशीन, तथा अन्य तकनीकी उपकरणों के साथ साथ उन उत्पादनों का विनिमय होगा जिनकी प्राप्ति अन्य राष्ट्रों के सहयोग से होती है।

आने वाले वर्षों में, उत्पादन तथा तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग, रोमानिया क विदेशी आर्थिक संबन्धों की आधारशिला होगी। उत्पादन क्षमताओं में तीव्र प्रगति तथा उनके आधुनिकीकरण की आवश्यकताओं का तदनुरूप उपयोग, समकालीन विज्ञान तथा उच्च प्राद्योगिक उपलब्धियों की विस्तृत अभिवृद्धि तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की प्रगति में यथोचित योगदान इसका मूल उद्देश्य होगा। साथ ही अन्तर-राज्य सहयोग के विकास को लक्ष्य कर अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन में विस्तार किया जा रहा है। मुख्य पर्यटन केन्द्रों, पहाड़ी तथा अन्य स्वास्थ्यप्रद स्थानों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना के आधार पर रोमानिया अपने देश के आर्थिक विकास में संलग्न है।

अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास आवश्यक ह। रोमानिया में वैज्ञानिक प्रयोगों पर पूरा ध्यान दिया जा रहा ह। रोमानिया में इस समय १५०००० वैज्ञानिक है जो शोध तथा निर्माण कार्यों में संलग्न है। यह संख्या १६३८ की अपेक्षा ३० गुनी है। लगभग ६०००० विशेषज्ञ वैज्ञानिक अनुसंधान में कार्यरत हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान के तकनीकी तथा भौतिक आधारों में प्रगति हुई है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना के दौरान इस विभाग के लिए ४०००० लाख लेई व्यय का लक्ष्य निर्धारित किया



१९७४ में बुखारेस्ट में हुए जनसंख्या सम्बन्धी विश्व सम्मेलन को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति चाउसेस्कू

गया है। यह मात्रा १९६१-६५ की तुलना में ५ गुणा अधिक है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना के दौरान उद्योगों के आधुनिकीकरण तथा उसके तकनीकी एवं प्रकारात्मक स्तर में वैज्ञानिक योगदान से महत्वपूर्ण परिणामों की प्राप्ति हुई है। ७०० से अधिक नये औद्योगिक उत्पादकों को उत्पादन कार्य में सम्मिलित किया गया है। तकनीकी तथा आधुनिक संयंत्रों के ८० प्रतिशत का निर्माण रोमानिया खुद करता है।

पार्टी कार्य-क्रम इस दिशा में मुख्य लक्ष्यों का संकेत करता है। पार्टी देश में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों के छिपे भंडारों का पता लगाने तथा साधनों के आधुनिक प्रयोग को ध्यान में रखकर वैज्ञानिक अनुसंधानों को प्रोत्साहित करती है। नई उर्जा, ईंधन और कच्चे माल की खोज तथा मनुष्य निर्मित बस्तुओं के उत्पादन पर विशेष बल दिया जाता है। वैज्ञानिक अनुसंधान को, उद्योग, कृषि एवं भौतिक उत्पादन की अन्य शाखाओं में बड़ी मात्रा में, तकनीकी प्रगति, आर्थिक समता की प्रगति तथा जन कल्याण के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। १९७६-८० की अवधि में वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यवाही एवं प्राद्योगिक विकास के अन्तर्गत लगभग ६०० लक्ष्यों का निर्धारण किया गया है जो समाजवादी विकास में कार्यरत रहेंगे। इस अवधि में रोमानिया द्वारा निर्मित तकनीकी ज्ञान के प्रयोग में ८० प्रतिशत विकसित तकनीकी उपलब्ध की जायेगी जिसका प्रयोग आगामी पंचवर्षीय योजनाओं के विनियोगों में होगी।

नवीन तथा विकसित तकनीकियों में, जिनका आगामी पंचवर्षीय योजना में प्रयोग होगा, रासायनिक पदार्थ, मशीन निर्माण एवं धातु कर्म उद्योग सम्मिलित हैं। रासायनिक उद्योग में रोमानिया की अर्थ व्यवस्था की नई और विकसित तकनीकियों का ३० प्रतिशत प्रयोग में लाया गया है। इन तकनीकियों में प्लास्टिक, कृत्रिम रबर, मानव निर्मित यार्न एवं रेशमी डोरा, खनिज उर्वरक, पेन्टस और वार्निश इत्यादि के निर्माण से सम्बन्धित तकनीको सम्मिलित है। सम्पूर्ण नई तथा विकसित तकनीकियों के 12 प्रतिशत का प्रयोग सिर्फ मशोन निर्माण उद्योग में किया जायगा। ढ़लाई तथा झलाई कारखानों के तकनीकी स्तर के विस्तार में ये सहायक होगें।

मशीन-निर्माण-उद्योग नये प्रकार के यंत्र औजार, स्वःचालित उपकरण, कम्पयूटर, कम्पयूटरों के लिए नये इलेक्ट्रानिक घटकों तथा विलचित परिपथों का निर्माण करेगा। इससे रोमानिया के उत्पादन का तकनीकी स्तर विश्व तकनीकी स्तर के बराबर हो जायेगा। इनका निरन्तर आधुनिकीकरण, आर्थिक क्षमता में निरन्तर प्रगति और उत्पादनों द्वारा विदेशी बाजार में निरन्तर प्रतियोगिता, रोमानिया के बहुपक्षीय विकसित समाजवादी समाज की रचना के लिए औद्योगीकरण के मुख्य लक्ष्यों की पूर्ति को संरक्षित करेगा। वैज्ञानिक अनुसंधान समाजवादी तथा सांस्कृतिक निर्माण की ओर विशेष ध्यान देगा। भवन निर्माण सामग्री, वस्तुओं तथा कार्यविधियों से सम्बन्धित प्रश्नों, गुणों एवं उपयोगिता को मिलाकर आधुनिक व्यवस्था की रचना तथा आर्थिक क्षमता के सिद्धान्तों में आने वाली कठिनाइयों के साथ-साथ नगर तथा प्रान्तीय परियोजना कार्यवाही की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा। यह केवल प्रशासकीय मामले ही नहीं हैं। नगर तथा प्रान्तीय परियोजना और नए नगरों और गावों

के निर्माण में आर्थिक तथा समाजवादी संकट आते हैं और चूंकि वे कई बर्षों तक देश की प्रगति को प्रभावित करते है इसलिए इस क्षेत्र में गम्भीर अनुसंधान तथा वैज्ञानिक साधनों के प्रयोग की आवश्यकता है।

वातावरण संरक्षण के लिए, रोमानिया वातावरण की आवश्यकता के अनुसार प्राकृतिक साधनों का यथा योग्य प्रयोग करता है। वातावरण की आवश्यकताओं के अन्तर्गत-नवीकरणीय प्राकृतिक साधनों के विकास और पुनर्वास के लिए बनी परिस्थितियाँ, भौतिक नियोजन के क्षेत्र में आर्थिक तथा समाजवादी क्षमता के व्यवस्थित समिश्रण, वातावरण सम्बन्धी अवक्रमण के रोक व नियंत्रण तथा सभी प्राप्त तकनीकी और वैज्ञानिक साधनों के प्रसूषण की रोकथाम, आते हैं।

समाजवादी संरचना और आर्थिक योजनाकरण ने जनसाधारण के भौतिक तथा आध्यात्मिक कल्याण को संभव कर दिया है। योजनाओं में राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय तथा जीवन स्तर को उन्नत बनाने के लिये सराहनीय कदम उठाये गये हैं। वितरण के समाजवादी सिद्धान्त के अनुसार उत्पादित वस्तुओं का स्वामित्व मजदूरों के हाथ में होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार वस्तुएं उपलब्ध होती हैं। चूंकि जनसंख्या का सम्पूर्ण भाग उत्पादन कार्य में भाग लेती है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के विकास के लिए वस्तुओं के उपभोग की पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी और राज्य-नीति का ध्येय है कि नगरों तथा प्रान्तों में श्रमिकों के जीवन स्तर में निरन्तर वृद्धि हो तथा समाज की सभ्यता तथा कल्याण उच्च स्तर का हो। राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की तीव्र प्रगति तथा राष्ट्रीय आय की वृद्धि से ही इस लक्ष्य की पूर्ति सम्भव हो सकती है। राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में प्रगति की दर, १९७१-७४ की अवधि में, ११.५ प्रतिशत थी जो अन्य प्रगतिशील राष्ट्रों की तुलना में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय आय की यह वृद्धि वास्तव में अर्थ व्यवस्था के प्रगति की सूचक है। सन् १९८० में राष्ट्रीय आय १९७४ की अपेक्षा ५४ से ६१ प्रतिशत अधिक होगी तथा प्रति व्यक्ति आय १९९० में १९७० की अपेक्षा ३.५ गुना अधिक होने की संभावना है।

प्रत्येक राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति तथा सभ्यता के स्तर का निर्धारण खपत-कोष तथा विकास-कोष में उच्च अनुपात की स्थापना के द्वारा होता है। रोमानिया की कम्यूनिस्ट पार्टी ने इन कोषों के बीच उचित सामंजस्य स्थापित कर देश की जनता के वर्तमान एवं भविष्य के विकास को संभव किया है। सभी क्षेत्रों की कार्य क्षमता के आर्थिक विकास तथा प्रगति के फलस्वरूप सन् १९७६-८० पंचवर्षीय योजना की अवधि में सम्पूर्ण आय का ६६-६७ प्रतिशत खपत-कोष के लिए तथा ३३-३४ प्रतिशत विकास-कोष के लिए संरक्षित किया जा सकेगा। सन् १९८० में खपत कोष १९७० की अपेक्षा तीन गुना अधिक होगा।

राष्ट्रीय आय तथा खपत में वृद्धि के साथ-साथ सभी श्रेणियों की आवादी की आय में वृद्धि हुई है। १९७१-१९७२ में सार्वजनिक वेतन वृद्धि के प्रथम चरण की पूर्ति तथा अल्प पारिश्रमिकों में काफी वृद्धि हुई है। वेतन वृद्धि के द्वितीय चरण को १९७४ में लागू किया गया जिससे कुशल श्रमिकों का न्यूनतम वेतन १३४६ ल्यु तथा अकुशल श्रमिकों

का न्यूनतम मासिक वेतन ११४० ल्यु हो गया है। वेतन वृद्धि के अंतिम चरण में सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था मे औसत वेतन १६५० ल्यु प्रतिमास होने की संभावना है। १६७१-१६७५ की अवधि में वास्तविक आय में २३ प्रतिशत की वृद्धि हुई। साथ ही सहकारी सदस्यों और सहकारी कृषकों के न्यूनतम आय में भी वृद्धि हुई। कार्यरत प्रति व्यक्ति आय, धन तथा सम्पति के रूप में, ३२ प्रतिशत से अधिक होगी। कृषकों को भी कृषि कार्य से प्राप्त वास्तविक आय में २० से २५ प्रतिशत की वृद्धि की संभावना है।

पारिश्रमिक में वृद्धि के साथ-साथ समाजवादी खपत-कोष की आय से भी जनता को लाभ होता है। रोमानिया में अवकाश प्राप्त व्यक्तियों के जीवन यापन के लिए भी विशेष ध्यान दिया जाता है। बच्चों के लिये राज्य द्वारा दी गई सहायता में ४५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विद्यार्थियों तथा छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है।

उपभोक्ता सामग्री के उत्पादन में वृद्धि क कारण जनता की आय में भी वृद्धि हुई ह। जनता के लिये आवश्यक वस्तुओं के कोटे में काफी विस्तार हुआ है। पूर्ति-कार्य को काफी तेज रक्खा गया है। १६७५ का कुल विक्रय १६७० की अपेक्षा ५० गुना अधिक था। १६७६-८० में इसमें ४० से ४५ प्रतिशत तक वृद्धि की संभावना है। स्थायी प्रयोग की वस्तुओं की जनता द्वारा मांग की पूर्ति उच्च स्तर पर होगी। वेतार अभिग्राहों, टेलीवीजन, रेफ्रीजरेटर तथा कपड़ा धोने की मशीनों का सन् १६६० में कुल उत्पादन १६७५ की अपेक्षा २ से २.२ गुना तथा मोटर गाड़ियों के उत्पादन में ३.५ से ४ गुना अधिक वृद्धि होने की संभावना है।

आवास मानव की मूल आवश्यकता है। स्वच्छ और सुन्दर आवास मानव विकास के लिए आवश्यक है। रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी आवास निर्माण की ओर विशेष ध्यान दे रही है। राज्य की तरफ से प्रतिवर्ष आवास निर्माण के लिए धन का व्यय किया जाता है। १६६६-१६७० की अवधि में राज्य की सहायता से ३४५ हजार मकानों का निर्माण हुआ था। १६७१-७४ में ३६५·७ हजार और १६७५ में १३३.३ हजार मकानों का और निर्माण किया गया है। सन् १६७६-१६८० पंचवर्षीय योजना की अवधि में ८५० हजार घरों का और निर्माण किया जायेगा। २५०-३०० हजार घरों का निर्माण राजकीय सहायता से ग्रामीण आवादी द्वारा किया जायेगा। इस समय छात्रावासों में अविवाहित छात्रों के लिए उपलब्ध स्थान की संख्या २०० हजार से अधिक हो जायेगी। १६८० में यह संख्या ५०० हजार होगी जिससे लगभग सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति हो जायेगी। १६६० में निर्मित घरों की संख्या २५०० से ३००० हो जायेगी।

गृह निर्माण के साथ-साथ समाजवादी तथा सांस्कृतिक परियोजनाओं का भी निर्माण होगा। आराम के लिए उद्यानों तथा खेलकूद मैदानों का निर्माण होगा। सांस्कृतिक तथा कलात्मक संस्थाओं के ढांचे में विस्तार होगा। विद्यमान एककों में तकनीकी सुविधाओं का विकास किया जायेगा।

सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र में उत्पादन साधनों के वैधानिक निर्धारण तथा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था

में उच्च दर के विकास द्वारा आर्थिक परिधि में अनेक स्थानीय परिस्थितियों का एकीकरण हुआ है। इसके फलस्वरूप अनेक गावों का शहरी केन्द्रों में रूपान्तर हुआ। अनेक नगरों का स्वरूप सुव्यवस्थित हुआ तथा राज्य में स्थानीय क्षेत्रों की सुविधाओं के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गयी। सन् १९५०-१९७४ की अवधि में ऐसे क्षेत्रों, जिनमें जल की सुन्दर व्यवस्था है, की संख्या चार गुनी हो गई है तथा जल वितरण प्रणाली में तीन गुनी वृद्धि हुई है। ऐसे स्थानों की संख्या में काफी विकास हुआ है जिनमें गैस वितरण की सुन्दर व्यवस्था है। ऐसी सुविधाओं से पूर्ण क्षेत्रों की संख्या ४०० से अधिक है तथा वितरण प्रणाली में सातगुनी वृद्धि हुई है।

नगरों में सार्वजनिक यातायात की प्रर्याप्त वृद्धि हुई है। १९७४ में ट्रामों, बसों तथा ट्रालीबसों द्वारा तय की गई दूरी १४००० किलोमीटर से अधिक थी जब कि १९५० में यह सिर्फ ७५० किलो मीटर थी। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को विद्युत की सुविधा उपलब्ध कराने के दृष्टिकोण से १९७४ तक लगभग १२०० गावों में विद्युत की व्यवस्था की गयी। वर्तमान पंचवर्षीय योजना की अवधि में देश के सभी गावों में विद्युत व्यवस्था होगी।

जीवन स्तर के विकास सन्दर्भ में रोमानिया द्वारा जन स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए उठाये गये कदम सराहनीय हैं। राज्य की ओर से प्रत्येक स्तर पर चिकित्सा सम्बन्धी सहयोग दिया जा रहा है। १९७४ तक चिकित्सा केन्द्रों में १८६२२० बेड्स तथा ३३००० चिकित्सक थे। १२०० हजार लोगों ने स्वास्थ्य प्रद स्थानों पर अवकाश व्यतीत किया और चिकित्सा प्राप्त की। कैम्पों में छुट्टियां व्यतीत करने वाले बच्चों की संख्या २६०००० थी।

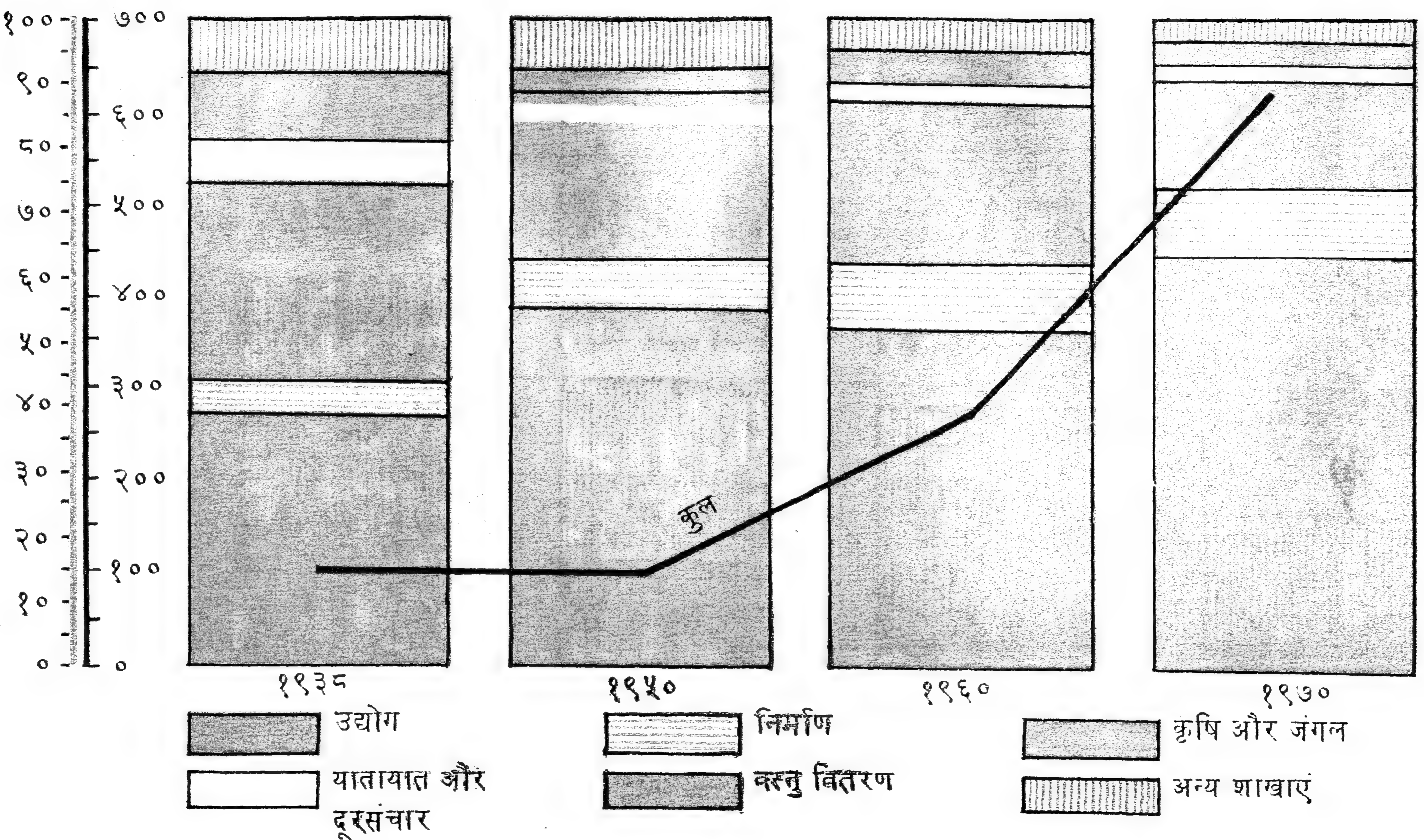
जन-स्वास्थ्य-सुरक्षा की भौतिक सुविधाओं के विकास के लिए १९७६-८० अवधि में प्रयाप्त धन संरक्षित किया जायेगा, अस्पतालों एवं विश्वविद्यालय चिकित्सा गृहों, बहु चिकित्सा गृहों, प्रसूति गृहों, निषेध गृहों का निर्माण किया जायेगा। ४५ नये अस्पतालों में २३४०० से अधिक "बेड्स" की अतिरिक्त सुविधा प्रदान की जायेगी। विद्यमान केन्द्रों का विकास किया जायेगा तथा चिकित्सा सुविधाओं को देश के प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्ध कराया जायेगा। आगामी वर्षों में जन-स्वास्थ्य-सुरक्षा का केन्द्रण अवरोध, औषधियों के विकास और जनता के स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि करके किया जायेगा। श्रमिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए कदम उठाये जायेंगे। जन-स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये कार्य करने के वातावरण की अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी परिस्थितियों के विकास के लिये कार्य किया जायेगा। माताओं तथा जीवन तथा बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए भी विशेष सुविधायें प्रदान की जायेंगी। बाल उद्यानों तथा बाल निवास गृहों की संख्या में वृद्धि की जायेगी। नये नये स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना की जायेगी जिनकी वर्तमान संख्या १०० हजार है लेकिन १९८० तक इसके २०० हजार हो जाने की संभावना है।

सांस्कृतिक तथा कलात्मक कार्यवाहियों के लिए वर्तमान पंचवर्षीय अवधि के प्रथम चार वर्षों के दौरान राजकीय बजट से लगभग ३९००० लाख लेई का व्यय किया गया।

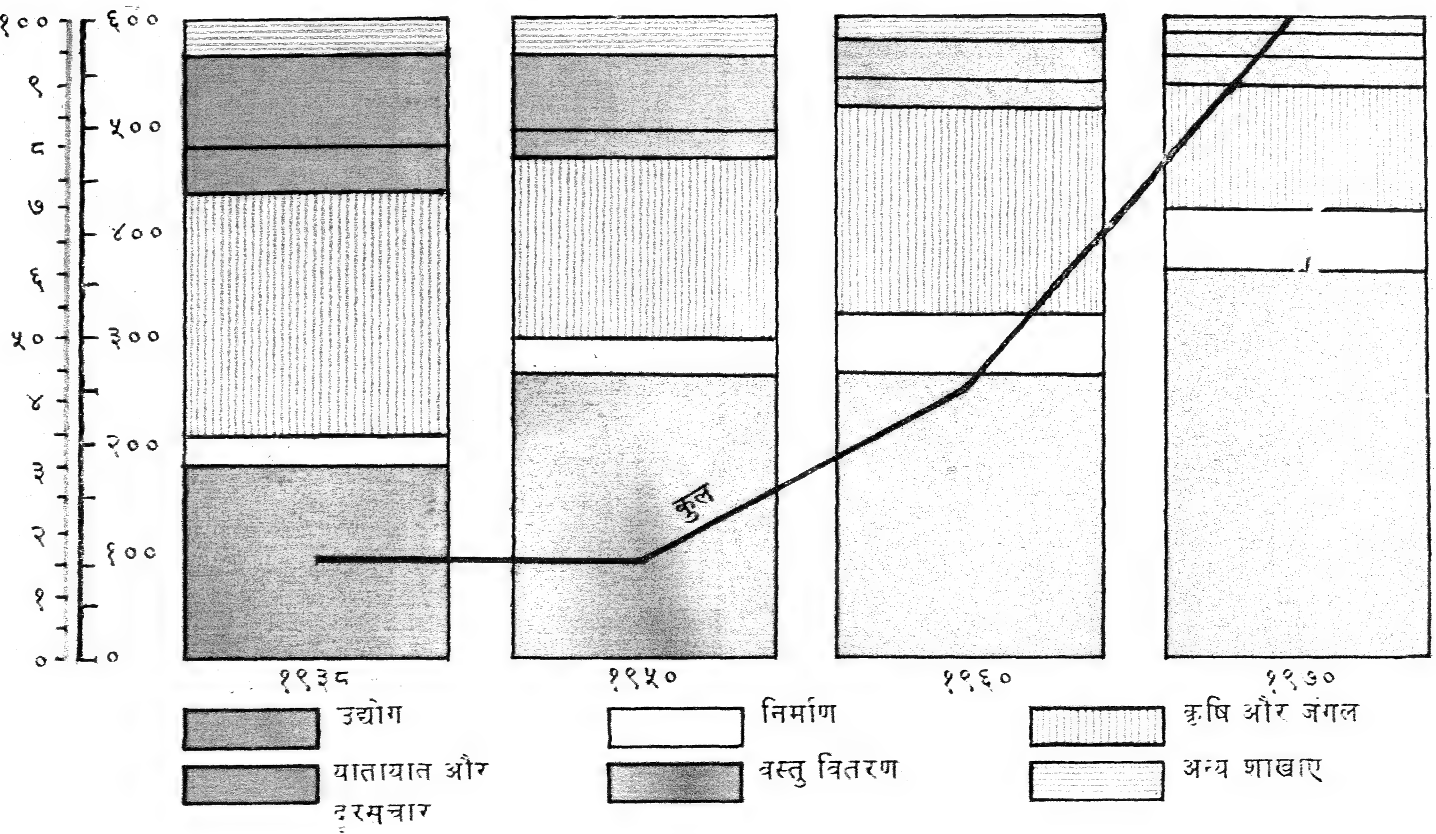
१९७४ तक रोमानिया में १४५ रगशाला तथा गायन संस्थायें तथा २००० चल-चित्र गृह थे। सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक एवं कलात्मक संस्थाओं के कार्य में पर्याप्त प्रगति हुई है। अनेक रंगशाला कम्पनियों के लिये नये भवन का निर्माण हुआ। अन्य तत्संबधित भवनों का आधुनिक आवश्यकताओं के आधार पर पुनः निर्माण हुआ। पिछले दो वर्षों में बुखारेस्ट के राष्ट्रीय रंगशाला, क्राईयोवा की राष्ट्रीय रंगशाला तथा टैग-मूर्स के राज्य रंगशाला के नये भवनों का उद्घाटन हुआ। चल-चित्र उत्पादन में प्रगति हुई। अनेक लघु चलचित्रों, कार्टून एवं वृत्त चित्रों का निर्माण हुआ।

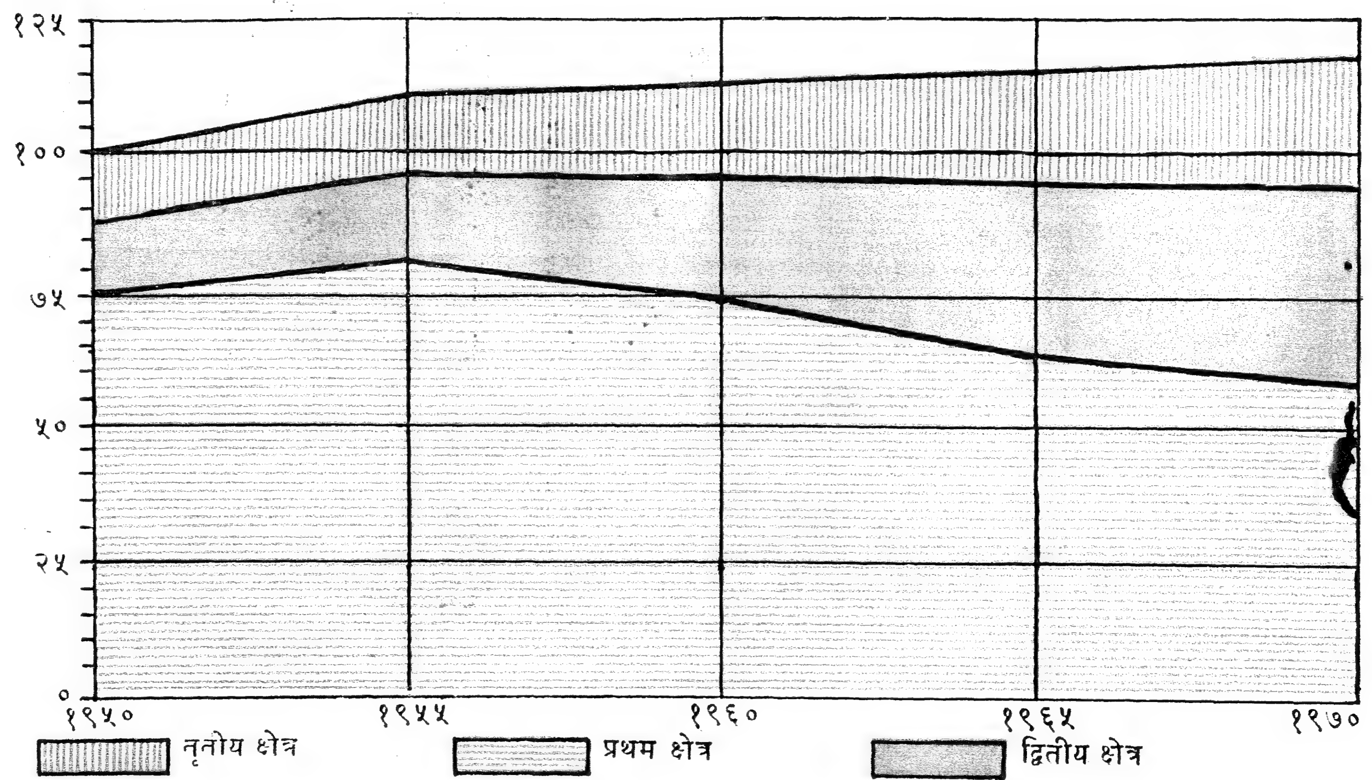
इसी बीच २०००० से अधिक पुस्तकालयों का निर्माण हुआ। इसमें उच्च शिक्षा संस्थाओं, तहरीरी विद्यालय व सार्वजनिक पुस्तकालय सम्मिलित हैं। इन पुस्तकालयों में १३०० लाख पुस्तकें तथा अनेक समाचार तथा समीक्षा-पत्रों के संग्रह पाठकों के लिए उपलब्ध हैं। प्रकाशन के क्षेत्र में अत्याधिक वृद्धि हुई है। १९६९-१९७५ की अवधि में रोमानिया में ११३५९ पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। रोमानिया में अनेक दैनिकों, समीक्षाओं एवं अन्य पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है जिनका वार्षिक वितरण १४००० लाख प्रतिलिपियों से अधिक है।

जनता के सांस्कृतिक विकास में रेडियो एवं टेलीवीजन एक आवश्यक माध्यम हैं। १९७४ तक रोमानिया के पास ६२ रेडियो ट्रांसमीटर थे। इनसे अच्छे संग्रहण के साथ-साथ प्रसारण क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है। १९६८ से ही रोमानिया के पास टेलीवीजन के दो माध्यम हैं। १९७४ में २० प्रमुख ट्रांसमीटर तथा १७४ अतिरिक्त ट्रांसमीटर थे। वर्तमान वर्षो में अनेक प्रतिभाशाली सांस्कृतिक व्यापारिक संघ भवनों का निर्माण हुआ जिनमें औराडिया, सिब्यू, पिटेस्टी, सुसीवा, रौमान, धियोरधे धियौरध्यूदेन के नगर वासुलई, बुजाओ, प्लोइस्टी, गैलैटीये, विरलाउ आदि प्रमुख हैं। रोमानिया में ७९८५ सांस्कृतिक क्लब, २४३ सांस्कृतिक केन्द्र तथा २३६ अन्य क्लब हैं। रोमानिया के समकालीन सांस्कृतिक मूद्रश्य में ३५७ संग्रहालय भी हैं जिनकी गतिविधियां समाजवादी संस्कृति तथा शिक्षा में योगदान देती हैं।

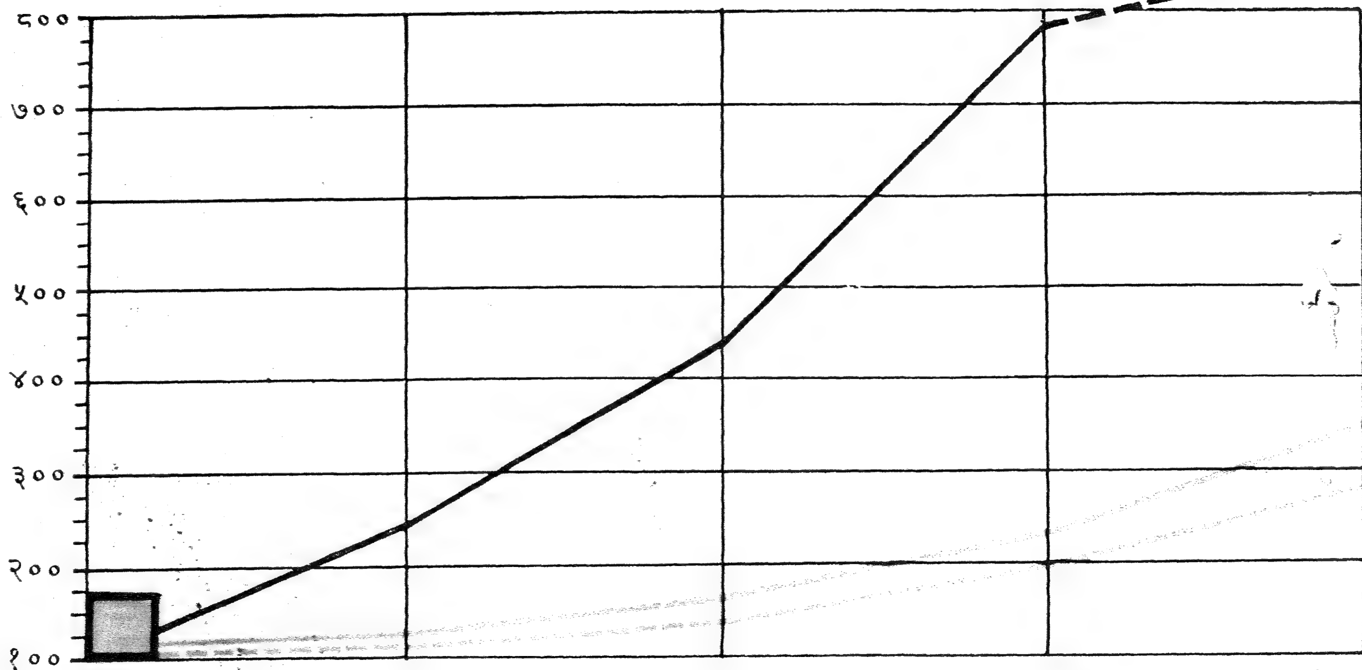

कुल सामाजिक उत्पादन का स्वरूप और विकास
१००
९०
८०
७०
६०
५०
४०
३०
२०
१०
०
७००
६००
५००
४००
३००
२००
१००
०
कुल
१९३८
१९५०
१९६०
१९७०
उद्योग
यातायात और दूरसंचार
निर्माण
वस्तु वितरण
कृषि और जंगल
अन्य शाखाएं

राष्ट्रीय आय का स्वरूप और विकास

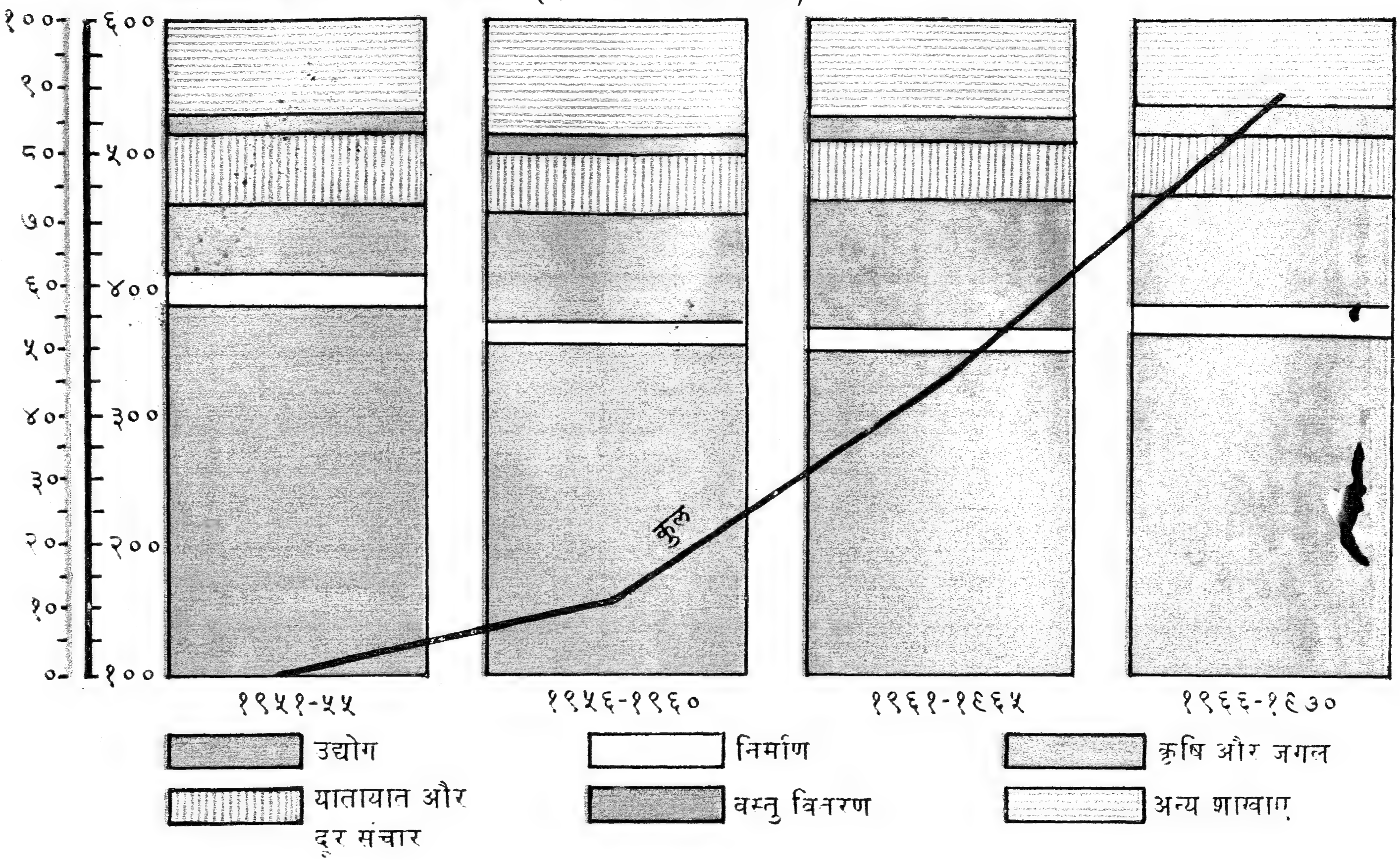



क्षेत्रों में नियोजित जनसंख्या और गति की
प्रतिशत में
१२५
१००
७५
५०
२५
०
१९५०
१९५५
१९६०
१९६५
१९७०
तृतीय क्षेत्र
प्रथम क्षेत्र
द्वितीय क्षेत्र

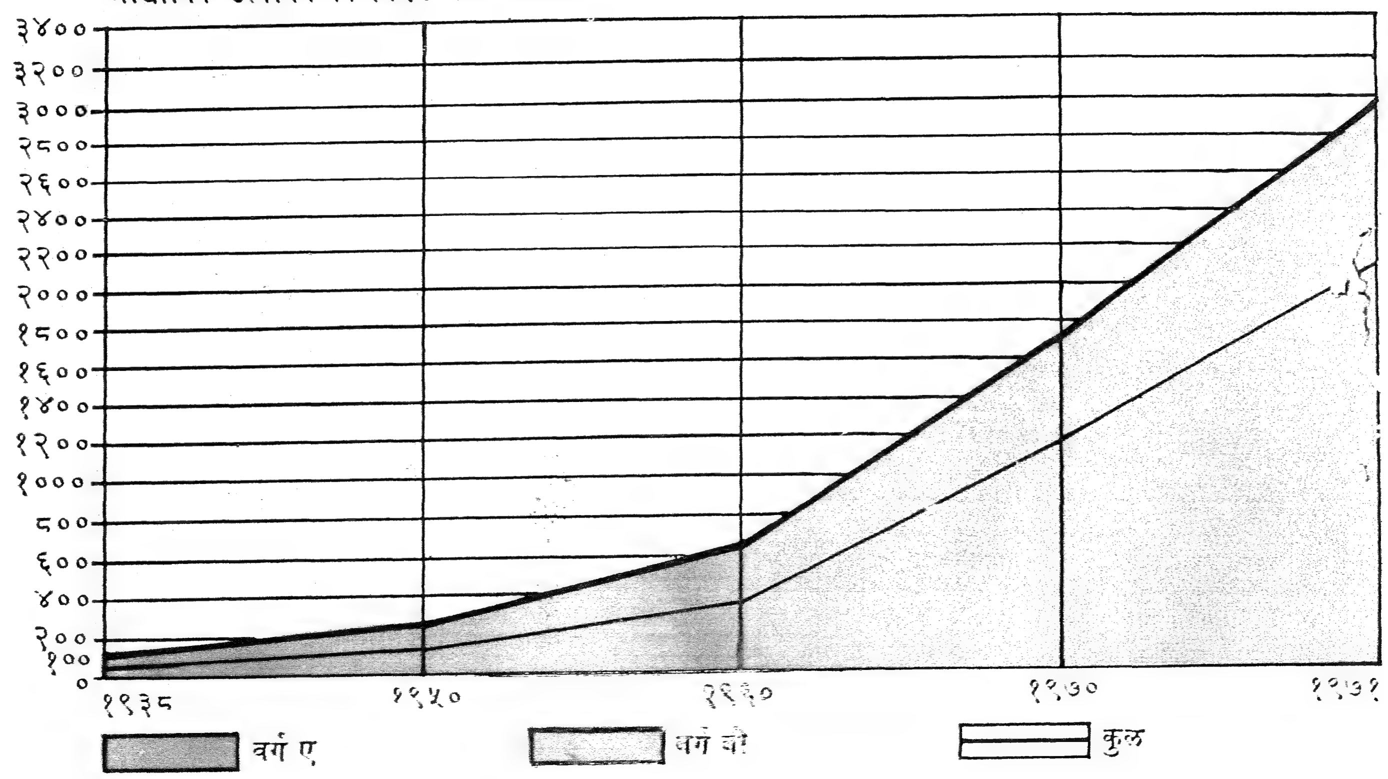
विनियोग और निश्चित कोष का विकास



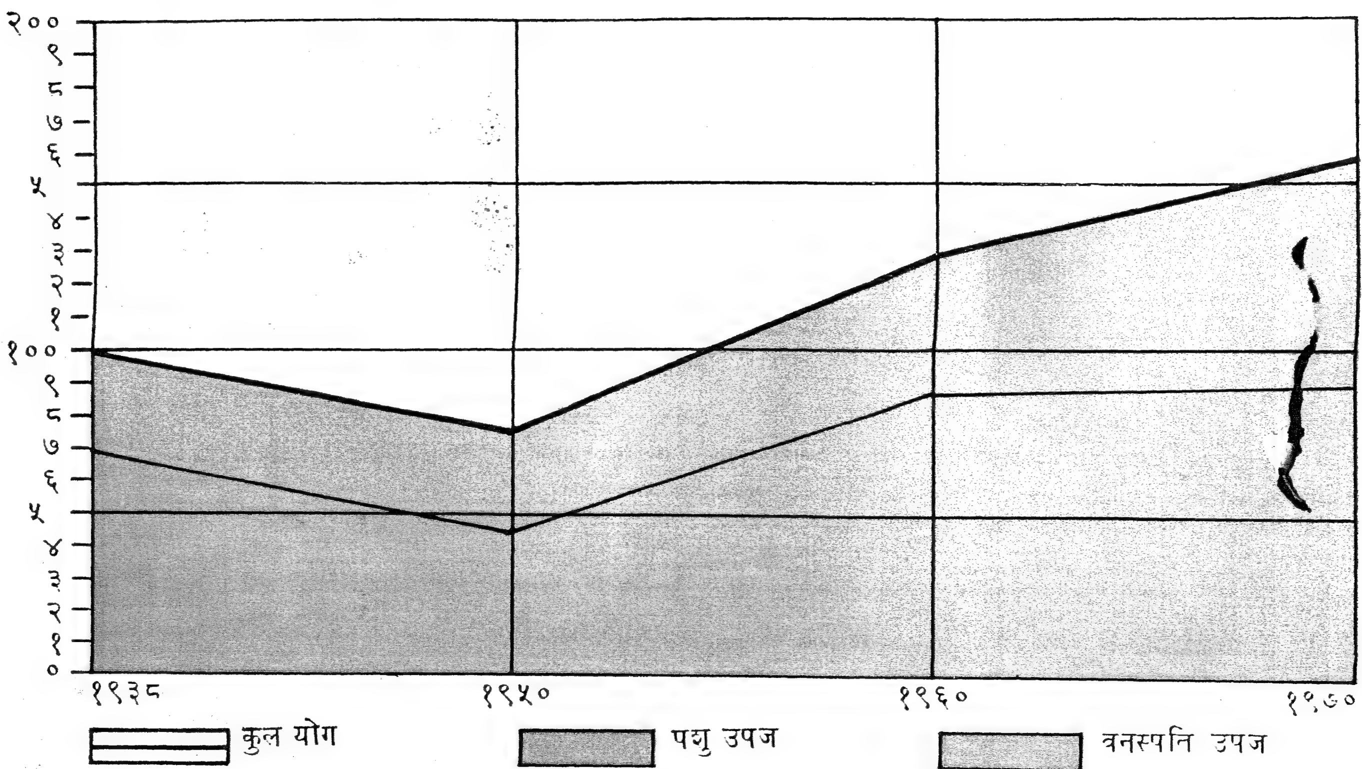
विनियोग का स्वरूप और विकास (पंचवर्षीय योजनाओं में)



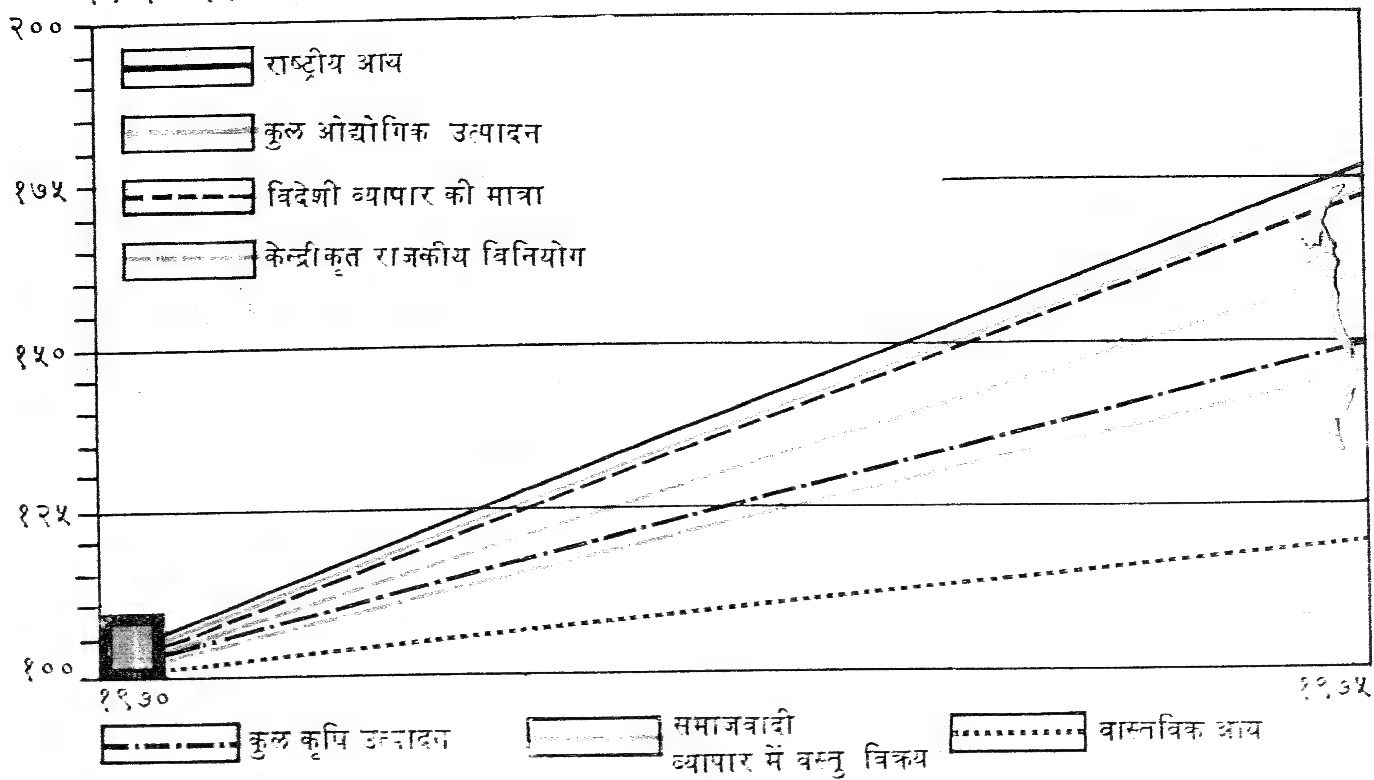
औद्योगिक उत्पादन का स्वरुप और विकास



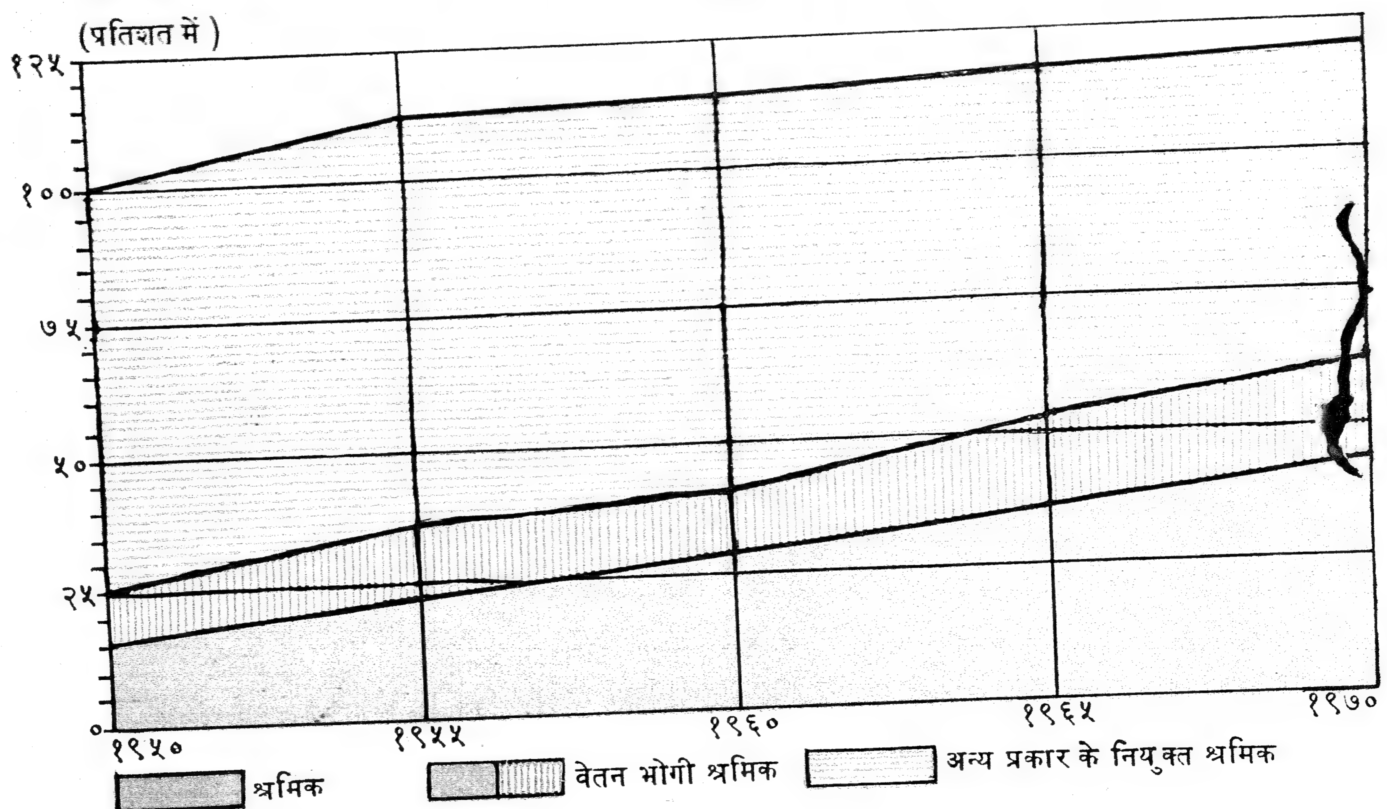
कुल कृषि उत्पादन का स्वरूप और विकास

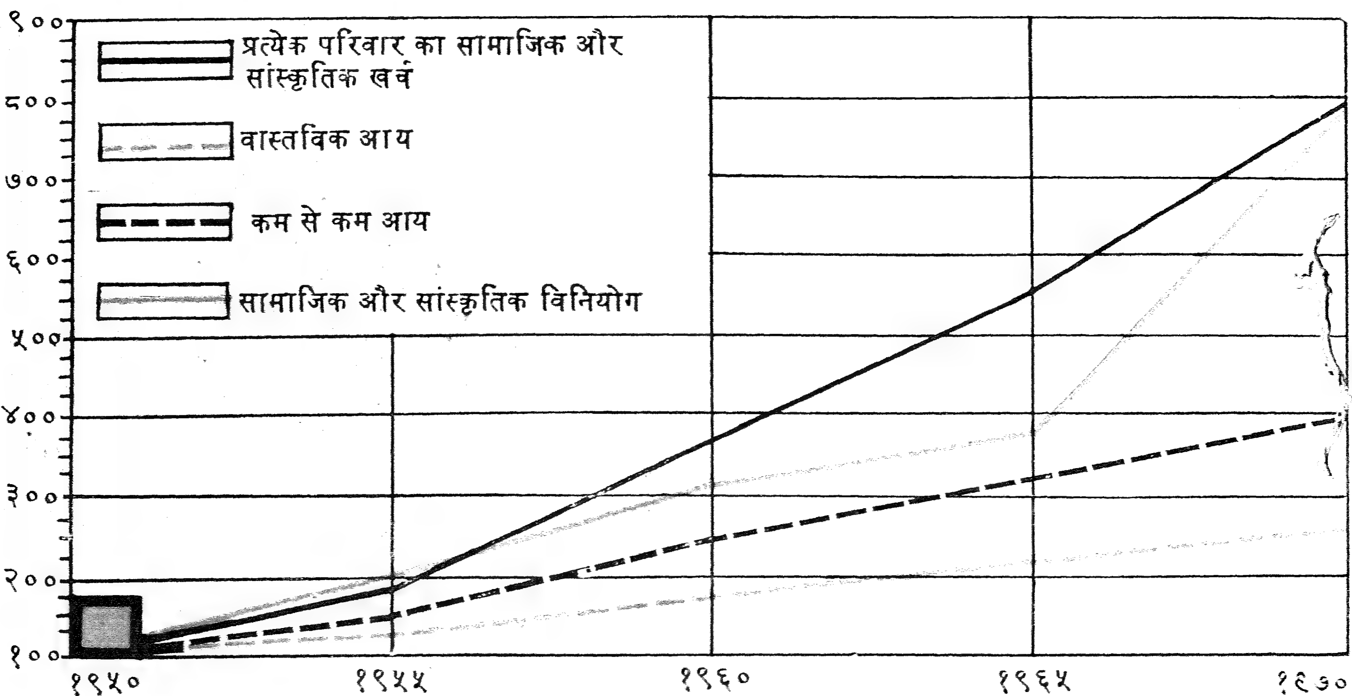


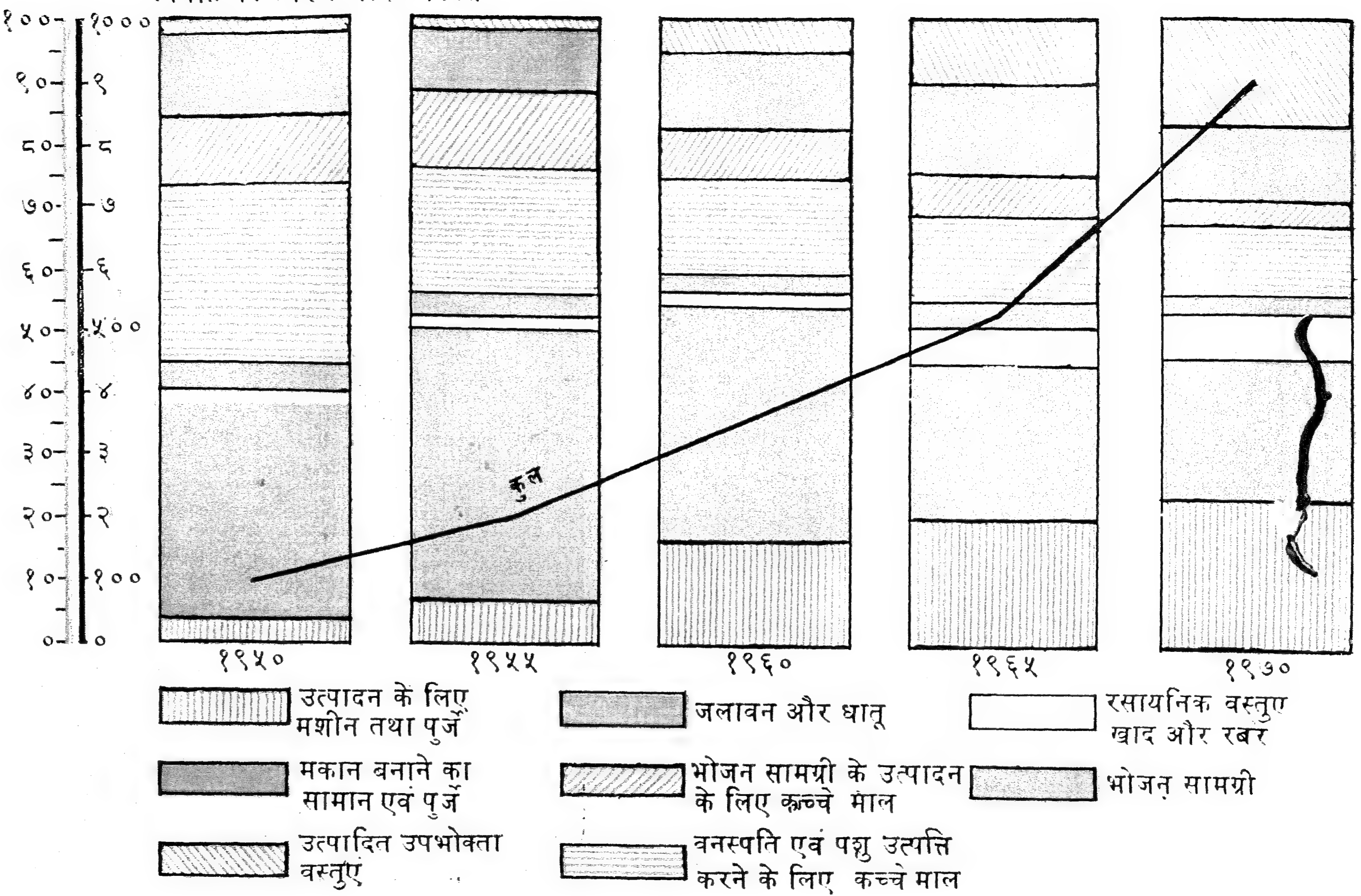
१९७१ से १९७५ की योजना में रोमानिया के आर्थिक विकास का सूचक

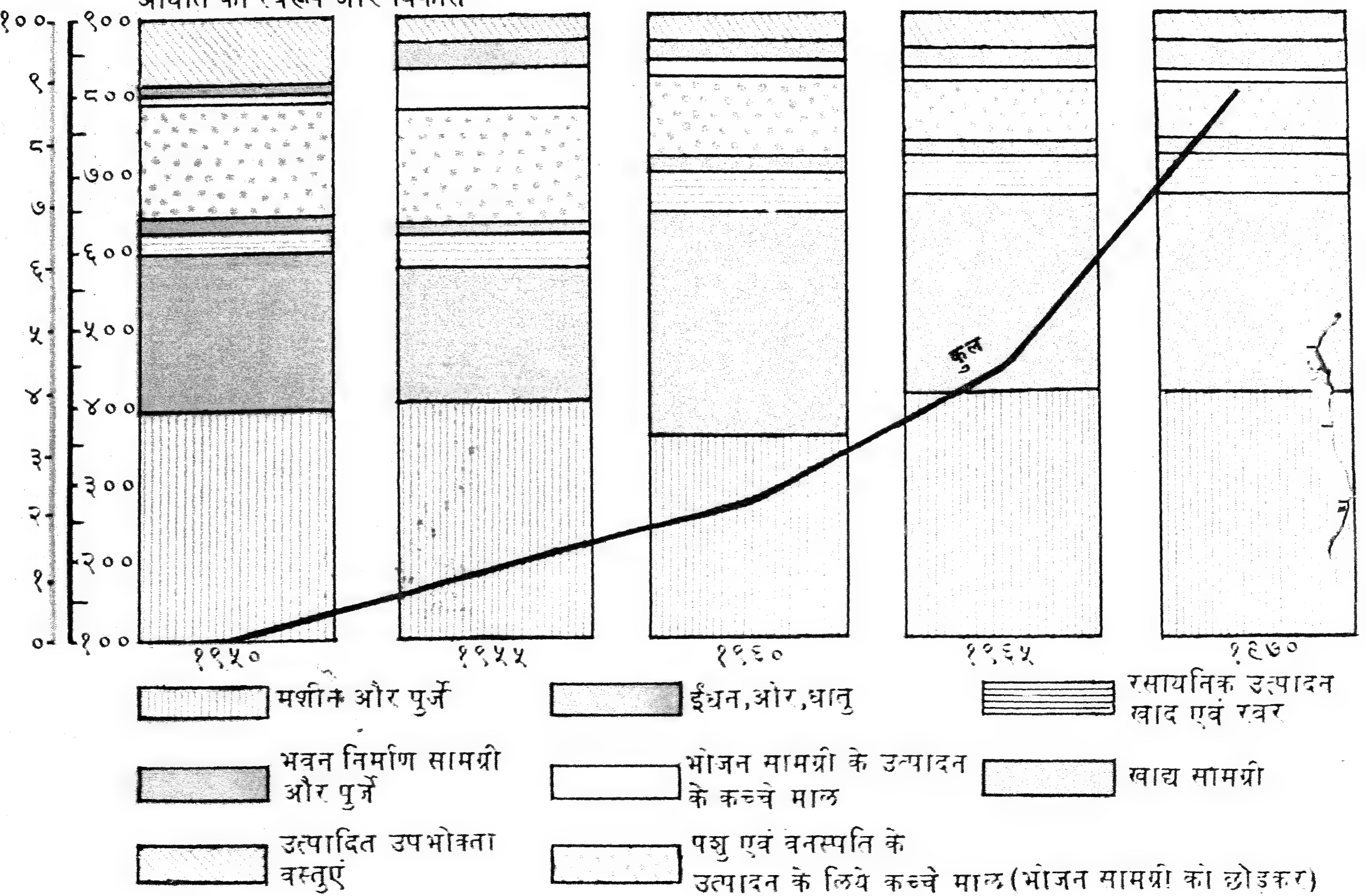


रोमानिया में वेतन भोगी श्रमिक, श्रमिक, कुल नियुक्त जनसंख्या में उसका अनुपात और विकास




रहन सहन के स्तर का मुख्य सूचक
१९५०=१००
प्रत्येक परिवार का सामाजिक और सांस्कृतिक खर्च
वास्तविक आय
कम से कम आय
सामाजिक और सांस्कृतिक विनियोग
९००
८००
७००
६००
५००
४००
३००
२००
१००
१९५०
१९५५
१९६०
१९६५
१९७०


निर्यात का स्वरूप और विकास
१००
९०
८०
७०
६०
५०
४०
३०
२०
१०
०
१०००
९
८
७
६
५००
४
३
२
१००
०
कुल
१९५०
१९५५
१९६०
१९६५
१९७०
उत्पादन के लिए मशीन तथा पुर्जे
जलावन और धातु
रसायनिक वस्तुए खाद और रबर
मकान बनाने का सामान एवं पुर्जे
भोजन सामग्री के उत्पादन के लिए कच्चे माल
भोजन सामग्री
उत्पादित उपभोक्ता वस्तुएं
वनस्पति एवं पशु उत्पत्ति करने के लिए कच्चे माल



आयात का स्वरूप और विकास
१००
९
८
७
६
५
४
३
२
१
०
९००
८००
७००
६००
५००
४००
३००
२००
१००
१९५०
१९५५
१९६०
१९६५
१९७०
कुल
मशीन और पुर्जे
ईंधन, ओर, धातु
रसायनिक उत्पादन खाद एवं रबर
भवन निर्माण सामग्री और पुर्जे
भोजन सामग्री के उत्पादन के कच्चे माल
खाद्य सामग्री
उत्पादित उपभोक्ता वस्तुएं
पशु एवं वनस्पति के उत्पादन के लिये कच्चे माल (भोजन सामग्री को छोड़कर)



रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट के प्रमुख भाग का एक दृश्य

समाजवादी प्रजातंत्र

साम्राज्यवादी तथा हिटलरी शक्तियों के विरूद्ध १९४४ में हुए सशस्त्र क्रान्ति ने रोमानिया में जिस युग का सूत्रपात किया और जिस गौरवमय शासन व्यवस्था को जन्म दिया वह रूमानिया के इतिहास की स्वर्णिम घटना है। युग परिवर्त्तन की दिशा में रोमानिया का यह प्रथम चरण इतना महत्वपूर्ण था कि इसने प्रत्येक क्षेत्र में आमूल परिवर्त्तन कर संसार के नक्शे में एक देदीप्यमान प्रभुतासम्पन्न एवं स्वतंत्र रोमानिया को प्रतिष्ठत किया। इस प्रकार पुरातन व्यवस्था के अवशेष पर समाजवादी प्रजातंत्र की स्थापना हुई।

मानव जाति ने अपने विकास के क्रम में कितनी ही शासन व्यवस्थाओं को जन्म दिया। समय और स्थान के अनुरूप इन व्यवस्थाओं की महत्ता भी रही लेकिन कोई भी व्यवस्था प्रत्येक समय के लिए मान्य नहीं हो सकती क्योंकि मानव अपने स्वभाव के अनुरूप पूर्णता की ओर बढ़ता है। विकास का यह क्रम चिरन्तन है। निश्चित रूप से प्रत्येक ठहराव पर वह रुकता है और फिर स्वाभाविक गति में बढ़ता है जब तक उसे चरम की उपलब्धि नहीं हो जाती है। राजतंत्र से प्रजातंत्र तक की लम्बी परम्परा मानव के इसी स्वभाव का परिचायक है। आधुनिक मानव प्रजातंत्र के इर्दगिर्द चक्कर काट रहा था लेकिन उसे प्रजातंत्र के सही रूप का ज्ञान नहीं हो रहा था। कार्ल मार्क्स ने मानवीय विकास की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी व्याख्या कर प्रजातंत्र को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि प्रदान की। मानव जाति के लिए स्वर्ग का द्वार खुल गया। प्रजातंत्र के परिवेश में समाजवाद की स्थापना मानव समाज की सर्वोत्तम उपलब्धि है।

मार्क्स की कोई कल्पना यथार्थ से हट कर नहीं थी। मार्क्स ने शोषण के प्रत्येक पहलू पर गहराई से विचार किया था। शोषण पर आधारित सामन्तशाही और साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था के प्रति उसके मन में भयानक आक्रोश था। फलतः अपने सिद्धान्तों में उसने पूंजीवादी व्यवस्था की कब्र खोद दी। अपने सिद्धान्तों में उसने कार्यक्रमों की ऐसी सूची तैयार की जो शोषण विहीन समाज की स्थापना करता है। शोषण समाप्त हो जाने से समाज का प्रत्येक सदस्य देश की सम्पूर्ण सम्पदाओं का निर्वाध उपयोग कर सकता है और अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है।

आज जब कि प्रजातंत्र और समाजवाद साधारण चर्चा का विषय बना हुआ है, विभिन्न विचारक विभिन्न मतों की सृष्टि कर रहे हैं। कुछ मानवीय संवेदनाओं को प्राथमिकता देते हैं तो कुछ समानता के पक्षपाती हैं। इस प्रकार सिद्धान्त के स्तर पर युद्ध की स्थिति है। प्रजातंत्र के सही निरुपण के लिये मानदण्डों की तलाश आवश्यक है। मात्र सिद्धान्त के

स्तर पर समाजवाद और प्रजातंत्र की माला जपने से काम नहीं चलेगा। वरन व्यवहार के स्तर पर उसे जांचना और परखना पड़ेगा। प्रजातंत्र एक शासन व्यवस्था है लेकिन यह समाजवादी कैसे हो सकता है ? इसका मापदण्ड क्या है ? ऐसे प्रश्न हमारे सामने आते हैं। इस संदर्भ में कुछ मूल बातों पर विचार करना आवश्यक है। समाज में सत्ता किस वर्ग के अधीन है ? उत्पादन के साधनों पर किस वर्ग का स्वामित्व है ? राजनैतिक व्यवस्था का स्वरूप क्या है ? समाज का स्वरूप कैसा है तथा सम्पूर्ण जनता किस स्तर पर आर्थिक राजनैतिक और सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेती है ? जनता की अवस्था कैसी है ? उसे क्या राजनैतिक और न्याय सम्बन्धी अधिकार प्राप्त हैं तथा क्या स्वतन्त्रतायें प्राप्त हैं ? उन्हीं मानदण्डों की पृष्ट भूमि में किसी देश में प्रजातंत्र किस सीमा तक तथा किस स्वरूप में मौजूद है, उसका विश्लेषण किया जा सकता है। मार्क्स की राजनैतिक तथा आर्थिक विचारधाराओं के ये मूल तत्व ही अन्त में वर्ग चरित्र के स्वरूप की स्थापना करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कोई भी एक तत्व अपने आप में सर्वमान्य नहीं है, वरन् मार्क्स की धारणाओं की प्रमुखता इस बात में है कि ये तत्व आपस में इस प्रकार जुड़े हुये हैं जिससे सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था का एक नक्शा उभर कर सामने आता है। मार्क्स की विचारधारा तथा अन्य विचारधाराओं में मूल अन्तर यह है कि उत्तरवर्त्ती सिर्फ शासन यंत्र पर अधिकार और सरकार के स्वरूप को ही समाजवाद की संज्ञा देते हैं जबकि मार्क्स इसके अतिरिक्त समाज के प्रत्येक स्तर पर समाजवादी मूल्यों की स्थापना और कार्यान्वयन पर अधिक बल देता है।

मार्क्स ने अनुभूति की गहराइयों में जा कर जिस आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी उसके ठोस और व्यवहारिक रूप का एक ज्वलन्त उदाहरण रोमानिया है। रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री तथा रोमानियन गणराज्य के अध्यक्ष निकोलाई चाउसेस्कू ने अपने अथक परिश्रम से रोमानिया को जिस रूप में प्रतिष्ठित किया है वह एक महामानव के अद्वितीय त्याग, तपस्या और कर्त्तव्य निष्ठता की अनमोल निशानी है। प्रजातंत्र के सैद्धान्तिक मतवादों से दूर, संसार के क्षितिज पर नवोदित सूर्य चाउसेस्कू, सिंह की तरह दहाड़ कर प्रजातंत्र तथा समाजवाद का एक नया स्वरूप प्रस्तुत करते हैं जो मार्क्स की आत्मा के अनुरूप तथा बौद्धिक स्तर पर यथार्थ का दिग्दर्शन कराने में सक्षम है।

सम्पूर्ण मानव-समाज को ऐतिहासिक संरचना के लिए जाग्रत करना तथा जीवन स्तर से सम्बन्धित सभी पहलुओं में परिवर्तन की सही दिशा निर्धारित करना और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए प्रत्येक सदस्य का तत्पर रहना समाजवादी क्रान्ति की सबसे बड़ी उपलब्धि है। समाजवादी क्रान्ति की चरम उपलब्धि सिर्फ प्रजातंत्र में ही संभव है। प्रजातंत्र से अलग समाजवादी क्रान्ति की सफलता असंभव है। प्रजातंत्र और समाजवाद का एक दूसरे से चोली दामन का साथ है। एक अभाव में दूसरे की कल्पना वकाण्ड प्रत्याशा मात्र है। श्री चाउसेस्कू ने अपने राजनैतिक दल की नीति के सम्बन्ध में घोषणा करते हुये कहा है "समाजवाद प्रजातंत्र से पृथक् नहीं हो सकता"। उनका यह कथन एक व्यवहारिक सत्य है।

समाजवाद क्रमिक विकास का परिणाम होता है । समाजवाद कहीं से आता नहीं न एक दिन में पैदा ही किया जा सकता है, परन् लम्बे समय तक विभिन्न परिस्थितियों के आपसी द्वन्द के फलस्वरूप उभरता है । निरन्तर संघर्ष की प्रक्रिया में समाज कुछ जीवनीय तत्वों को इस तरह आत्मसात करता चलता है कि अन्ततोगत्वा वह वांछित आदर्श को प्रतिष्ठित करने में सक्षम होता है । यह प्रत्येक व्यक्ति के अथक परिश्रम, त्याग और बलिदान की गाथा है । इसके फलस्वरूप सभी प्रत्येक के और प्रत्येक सभी का हो जाता है । इस संदर्भ में श्री चाउसेस्कू का वह वक्तव्य एक राजनैतिक दस्तावेज है जो उन्होंने रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी की दशवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिया था :—

"हमारा दल इस संकलपना से शुरू होता है कि समाजवाद से अनुप्राणित समाज में मानवीय व्यक्तित्वों के पूर्ण विकास की गारंटी हो, प्रत्येक नागरिक यह अनुभव करे कि अपने नियति का मालिक वह खुद है, सामाजिक विकास के अपने कर्त्तव्यों को निर्वाध पूरा कर सकता है तथा वह उपलब्ध-लाभ का अधिकारी भी है ।"

मानवीय अधिकारों पर आधारित इतना निर्भीक तथा स्पष्ट वक्तव्य इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है । रोमानियन गणराज्य की पृष्ठभूमि मे उनका यह वक्तव्य एक स्वप्न द्रष्टा का स्वप्न मात्र नहीं वरन् एक ठोस यथार्थ है । वस्तुत: श्री चाउसेस्कू के व्यक्तित्व में सम्पूर्ण रोमानिया निहित है । उनकी सांसों में रोमानिया जागता और सोता है ।

"समाजवादी प्रजातंत्र के विकास की समस्या वस्तुत: देश के प्रबन्ध में नागरिकों की क्रियाशील सहभागिता की समस्या हैं ।" श्री चाउसेस्कू का यह अनुभव वास्तव में समस्याओं के व्यावहारिक समाधान से सम्बन्ध रखता है । वगैर कार्यक्षेत्र में प्रवेश किए इस बात की अनुभूति असंभव है । इससे उनकी कर्मठता स्पष्ट परिलक्षित होती है । आज रोमानिया उन्नति और लोक प्रतिष्ठा के जिस पद पर आसीन है वह मात्र एक व्यक्ति की दूरदर्शिता तथा कठिन परिश्रम का नतीजा है । रोमानिया ने इतने कम समय में प्रगति की जितनी मंजिलें तय कर ली हैं, वे नि:संदेह सराहनीय हैं । देश में व्यक्तिगत सम्पत्ति का खात्मा कर दिया गया, एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के शोषण का अन्त कर दिया गया, उत्पादन के साधनों पर सम्पूर्ण समाज का स्वामित्व स्थापित कर कामगारों को "उत्पादक तथा मालिक" के रूप में प्रतिष्ठित किया गया, सभी वर्गों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के आधार पर सामाजिक, राजनैतिक, नैतिक तथा अर्थनैतिक एकता की स्थापना की गयी, विभेद का अन्त कर पूर्ण समानता की स्थापना की गयी, प्रत्येक व्यक्ति को सत्ता में भागीदार बनाया गया तथा अपनी नियति के सम्बन्ध में फैसला करने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया, सामाजिक चेतना की सर्वोच्चता स्थापित की गयी तथा प्रत्येक नागरिक को खुल कर राजनीति में भाग लेने तथा अपना नेता चुनने का अधिकार प्रदान किया गया । श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में रोमानिया में तेजी से हुये ये परिवर्तन विकसित देशों के लिए आज भी आकाश कुसुम हैं । आज संसार श्री चाउसेस्कू से और अधिक अपेक्षा कर रहा है । वास्तव में चाउसेस्कू संसार के गौरव हैं ।

रोमानिया के लोग प्रजातंत्र को मात्र सिद्धान्त के स्तर पर ही स्वीकार नहीं करते वरन् ठोस उपलब्धियों को इसका आधार मानते हैं। सिद्धान्त की महत्ता तभी है जब व्यवहार के स्तर पर उसकी उपादयेता सिद्ध हो। प्रजातंत्र सच्चे अर्थों में एक जीवन दर्शन है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के लिए जीता है तथा सम्मिलित परिश्रम से समाजवाद के आदर्शों को प्राप्त करता है। वह समाज जहां किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं हो, कार्य करने का समान अवसर प्राप्त नहीं हो, लोग आलसी तथा कामचोर हों, निश्चय ही पतन की तरफ जायेगा। ऐसा समाज किसी भी तरह उन्नत नहीं हो सकता। रोमानिया के लोगों ने इस तथ्य को पहचाना है और वे निरन्तर संघर्षरत है, अपने तथा अपने देश के विकास के लिए। प्रजातंत्र अत्यधिक प्रगतिशील व्यवस्था है। प्रजातंत्र का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। यह जीवन के प्रत्येक पहलू को अपने में समाविष्ट करता है तथा सर्वांगीण विकास का पक्षधर है। प्रजातंत्र में किसी विशेष उपलब्धि का अर्थ उसका अन्त नहीं है। प्रत्येक उपलब्धि मानव में एक जलजला पैदा करती है। नये आयामों तथा नये क्षितिज की तलाश आरम्भ होती है। नये नये प्रयोग किये जाते हैं और अन्ततः सत्य का साक्षात्कार होता है। एक क्षेत्र में विकास कार्य पूरा होने पर दूसरे क्षेत्र में कार्य शुरू होता है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती है। प्रगति का यही राज है। अतः, प्रजातंत्र प्रत्येक स्थिति में एक शुरूआत है। अनन्त विस्तार इसका सही रूप है और अनन्त विस्तार की परिणति शुद्ध समाजवाद में ही संभव है। यह वह स्थिति है जहां आदमी भेद-भाव की परिधि से ऊपर उठकर एकत्व को प्राप्त करता है। समाजवाद मात्र राजनैतिक चिन्तन नहीं वरन सभ्ययुग की बहुत बड़ी आवश्यकता है और यही समाजवाद रोमानिया गणराज्य का प्राण है।

आज जब कि समाजवाद के महत्व को सवत्र स्वीकारा जा रहा है कुछ विचारक व्यक्तिगत स्वतंत्रता के पक्षपाती हैं। वे व्यक्तिवादी परम्परा को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। व्यक्तियों का विकास ही उनका चरम ध्येय है। समाज की महत्ता को वे अस्वीकार करते हैं। तर्कों के आधार पर वे प्रमाणित करना चाहते हैं कि समाजवाद महज एक धोखा है। यह शब्द आडम्बरों के अलावे कुछ भी नहीं है क्योंकि व्यक्ति की सत्ता तो स्पष्ट देखने को मिलती है लेकिन समाज का कहीं आभास नहीं है। समाजवाद के नाम पर कुछ लोग नेता बने फिरते हैं तथा मानवीय अधिकारों का अपहरण कर तानाशाह बन बैठते हैं। समाजवादी जीवन दासता का जीवन है। यह ब्यक्तिकादी विचारधारा सत्य से कोसों दूर है। असल में समाजवाद व्यक्तिवाद से ऊपर की वस्तु है। व्यक्ति से समाज का महत्व निश्चित रूप से है लेकिन समाज एक व्यक्ति का नाम नहीं है। अगर "बसुधैव कुटुबकम्" की बात है तो समाजवाद ही इसका सच्चा स्वरूप है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने विकास का पूर्ण अधिकार है लेकिन दूसरे की कीमत पर नहीं। समाजवाद वस्तुतः व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं और स्वार्थ पर एक आवश्यक नियंत्रण है। विकास मानव का स्वभाव है लेकिन यह तो सभी के लिए है तथा समाज के संरक्षण में ही संभव है। नियम या मान्यताएं एक व्यक्ति के लिए नहीं, सम्पूर्ण व्यक्ति-जगत् के लिए होता है। असल में व्यक्ति का विकास ही समाजवाद का लक्ष्य है—इस तथ्य

को नकारा नहीं जा सकता । समाजवादी राष्ट्रों में ही व्यक्ति का अधिकतम विकास संभव हो सका है । रोमानिया इसका ज्वलन्त उदाहरण है ।

राज्य पद्धति

राज्य मानवीय संगठन का सबसे प्राचीन रूप है । राज्य किसी भी युग में तत्कालीन समाज का प्रतिनिधि होता है । सदियों से, शासन व्यवस्था के अनुरूप, राज्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहा है । प्रत्येक शासन व्यवस्था का अलग अलग लक्ष्य होता है । राज्य के स्वरूप में परिवर्तन किए बिना लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है । समाजवादी शासन व्यवस्था में भी राज्य का अपना स्वरूप होता है । इसमें राज्य के स्वरूप का निर्माण इस तरह किया जाता है ताकि सम्पूर्ण जनता के साथ सम्पर्क बना रहे तथा जनता की भावनाओं का उचित प्रतिनिधित्व भी हो सके। रोमानिया में राज्य का गठन भी इसी प्रकार किया गया है। रोमानिया मूलतः एक स्वायत्त, स्वतंत्र तथा एकात्मक समाजवादी गणराज्य है। नवोदित रोमानिया राज्य का पुनर्गठन अगस्त १९६५ में अपनाये गये नये संविधान के अनुरूप हुआ है जो श्री चाउसेस्कू के निर्देश में बना तथा लागू किया गया । रोमानिया को श्री चाउसेस्कू की यह महानतम् देन है ।

नये संविधान के अनुसार गण राज्य की सारी शक्ति जनता में निहित है । जनता अपनी शक्तियों का उपयोग ग्राण्ड नैशनल असेम्बली तथा जन परिषदों के माध्यम से करती है । इन निकायों का चुनाव प्रत्यक्ष प्रणाली तथा गुप्त मतदान द्वारा होता है ।

ग्रांड नेशनल असेम्बली रोमानिया की विधानपालिका है। यह राज्यशक्ति का सर्वोच्च संगठन है । इसका कार्य संविधान का अधिग्रहण तथा रूपान्तरण करना है । आर्थिक तथा सामाजिक विकास संबंधी राष्ट्रीय योजना, राज्य बजट का अनुमोदन, रोमानिया सामाजिक गणतंत्र, राज्य-परिषद, सरकार, उच्चतम न्यायसभा तथा सार्वजनिक न्यायिक कार्यालयों के अध्यक्षों का चुनाव, जन-परिषदों की कार्यशीलता तथा संगठन के लिए निर्मित आदर्शों की स्थापना, सभी राज्य समुदायों की कार्यवाही का नियंत्रण, और राज्य की आंतरिक तथा विदेश नीतियों के सामान्य सिद्धान्तों की स्थापना का अनुमोदन करना ग्रांड नैशनल असेम्बली के प्रधान कार्य हैं । इसका चुनाव पांच वर्ष की अवधि के लिए होता है तथा यह खुले अधिवेशनों, पूर्ण सम्मेलनों तथा आयोगों के माध्यम से कार्य करती है । रोमानिया की आबादी के स्वरूप का आकार तथा अधिकार को ध्यान में रखकर इसके ३४९ सदस्य चुने जाते हैं । ये सदस्य रोमानियन, हंगेरियन, जर्मन या अन्य किसी भी राष्ट्रीयता के हो सकते हैं । सामाजिक स्वरूप के आधार पर राज्य शक्ति की यह सर्वोच्च संस्था श्रमिकों, कृषकों तथा बुद्धिजीवियों द्वारा निर्मित है ।

ग्रांड नेशनल असेम्बली ने रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रस्तावित संशोधन सम्बन्धी विधेयक को १९७४ में पारित किया । यह विधेयक रोमानियन समाजवादी गण राज्य के राष्ट्रपति के कार्य क्षेत्र से संबंध रखता था । सर्व सम्मति से इस विधेयक को पारित करते

हुये, रोमानियन नागरिकों की आकाक्षाओं के केन्द्रविन्दु श्री निकोलाई चाउसेस्कू को असेम्बली ने नवोदित रोमानिया के राष्ट्रपति के पद पर आसीन किया। उनके नेतृत्व में रोमानिया उत्थान के शिखर पर चढ़ गया। प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य हुये। उनके महान् व्यक्तित्व तथा कार्य कौशल से प्रभावित हो ग्रांड नेशनल असेम्बली ने १९७५ में पुनः उन्हें राष्ट्रपति के पद पर आरूढ़ किया।

समाजवादी रोमानिया का राष्ट्रपति राज्य का प्रधान है। वह राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। उसका चुनाव ग्रांड नेशनल असैम्बली द्वारा विधान मण्डल के सम्पूर्ण कार्यकाल के लिये होता है। वह विधान मण्डल की स्वीकृति से, नये राष्ट्रपति के चुनाव तक कार्य करता है। वह राज्य-परिषद की अध्यक्षता करता है। आवश्यकता पड़ने पर सरकारी सम्मेलनों की भी अध्यक्षता करता है। प्रधान मंत्री के प्रस्ताव पर, वह सरकार के उप प्रधान-मंत्री, राज्य शासन की केन्द्रीय संगठनों के मंत्रियों तथा अध्यक्षों, केंद्रीय राज्य संगठनों के अध्यक्षों तथा सर्वोच्च न्याय सभा के सदस्यों की नियुक्ति तथा पदच्युति करता है। सेनाध्यक्ष, नौसेनाध्यक्ष तथा वायुसेनाध्यक्ष के पदों पर वही नियुक्ति करता है। जब ग्रांड नैशनल असैम्वली पूर्णाधिवेशन में नहीं होती, सर्वोच्च न्याय-सभा तथा सर्वोच्च न्याययिक कार्यालयों के अध्यक्षों को नियुक्त तथा पदच्युत राष्ट्रपति ही करता है। राष्ट्रपति सेना का सर्वोच्च अध्यक्ष तथा सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष होता है। राष्ट्रपति ग्रांड नैशनल असैम्वली के प्रति अपने सम्पूर्ण कार्यकलाप के लिए उत्तरदायी है तथा समय समय पर अपने अधिकारों के प्रयोग किए जाने की सूचना देता है।

राज्य-परिषद, ग्रांड नैशनल असैम्बली के अधीन एक स्थायी संगठन है। इसके अधिकार विधान मण्डलों के अधिवेशन के दौरान कार्यशील होते हैं। इसके कुछ स्थायी अधिकार भी है। जैसे, ग्रांड नैशनल असैम्बली तथा जन परिषदों के चुनाव की तारीख निश्चित करना, मंत्रिमंडलों तथा केन्द्रीय राज्य समुदायों को संगठित करना, अन्तर्राष्ट्रीय संधियों का पुष्टीकरण या वहिष्कार करना, सेना सम्वन्धी पदों का अनुमोदन करना, पदक तथा सम्मान की उपाधियां प्रदान करना आदि। रोमानिया समाजवादी गणराज्य का राष्ट्रपति राज्य-परिषद का अध्यक्ष होता है।

राज्यशक्ति स्थानीय संगठन जन-परिषद है, जिसका चुनाव तत्सम्वन्धी क्षेत्र के शासकीय एककों के निवासियों द्वारा होता है। यह अपने से उच्च परिषदों तथा राज्य शक्ति की सर्वोच्च समुदाय के अधीनस्थ होती है। जन परिषदों का कार्य है—अपने अपने क्षेत्रों में आर्थिक, समाजवादी सांस्कृतिक तथा शासकीय विकास करना, समाजवादी सम्पत्ति, नागरिकों के अधिकारों, समाजवादी कानून की सुरक्षा तथा जनशक्ति को बनाये रखना। स्थानीय स्तर पर राजकीय तथा नागरिक मामलों के समाधान में नागरिकों को सम्मिलित करना भी इसका कार्य है। जन परिषदों को उनके कार्य के दौरान सहयोग देने के लिए स्थायी आयोग होते हैं जो अपनी अनेक शाखाओं द्वारा कार्य करते हैं। जनपरिषद साधारण तथा विशेष अधिवेशनों में कार्य करती है। अपने अधीनस्थ कार्यकारी समितियों तथा आयोगों की कार्यवधि का निर्देशन तथा प्रबंध जन-परिषद द्वारा होता है।

सरकार के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक मंत्री-परिषद का गठन किया गया है। ग्रांड नैशनल असैम्बली द्वारा पारित कानून तथा नीतियों को लागू करने का कार्य मंत्री परिषद का है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी नीतियों के कार्यान्वियन का कार्य मंत्री परिषद ही करती है। यह अपने कार्यों के लिये ग्रांड असैम्बली के प्रति उत्तर-दायी है। सरकार की रचना एक प्रधान-मंत्री, उप-प्रधान-मंत्रियों तथा विधि के अन्तर्गत निर्मित अन्य राज्य शासन की केन्द्रीय समितियों के अध्यक्षों द्वारा होती है। सरकार उप-प्रधान-मंत्रियों में से किसी एक को प्रथम उप-प्रधान-मंत्री नियुक्त कर सकती है। व्यापारिक संघों के सार्वजनिक संगठन की केन्द्रीय परिषद के अध्यक्ष, कृषि उत्पादन समितियों के राष्ट्रीय संघ के अयध्क्ष, राष्ट्रीय महिला परिषद की अध्यक्षा तथा कम्युनिस्ट युवक संघ की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव, मंत्रियों के रूप में सरकार में सम्मिलित होते हैं। ऐसा प्रावधान सरकार में जनता के प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व का एक रूप है। शासन के केन्द्रीय तथा स्थानीय घटकों में एकात्मक के स्थान पर सामूहिक नेतृत्व के महत्व स्वीकार किया गया है।

जन परिषदों के कार्यों में सहयोग देने के लिये कार्यकारी समितियों का संगठन किया गया है। ये कार्यकारी समितियां स्थानीय होती हैं। शहर तथा ग्राम और मोहल्ले स्तर पर इनका संगठन होता है। साधारण जनता द्वारा देश की राजनीति में भाग लेने के लिये यह सबसे छोटी इकाई है। इसका चुनाव प्रत्यक्ष प्रणाली से होता है। सभी तबके के लोग इसके सदस्य होते हैं तथा प्रत्यक्ष चुनाव में भाग लेते हैं।

नगरपालिका नगर तथा सार्वजनिक जन-परिषदों की कार्यकारी समितियों के अध्यक्ष और तत्सम्बन्धी क्षेत्रीय शासन इकाइयों के महापोर भी होते हैं। रोमानिया कम्युनिष्ट पार्टी की प्रान्तीय समितियों के प्रथम सचिव प्रान्तीय जन-परिषदों के भी अध्यक्ष होते हैं। न्यायिक इकाइयों का कार्य राज्य व्यवस्था तथा नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा करना है। वे राज्य संगठनों, संस्थाओं तथा सहकारी संस्थाओं द्वारा निर्मित कानून की सुरक्षा करते हैं तथा जनता द्वारा इनके पालन की प्रवृति को उभारते हैं। विधि की परिधि में आने वाले सारे मुकदमों का निर्णय जन समूहों तथा न्यायाधीशों के परस्पर सहयोग के आधार पर किया जाता है। राज्यपाल अपनी कार्यकारिणी तथा नागरिकों के सहयोग के द्वारा मंत्रि-मण्डलों तथा राज्य प्रशासन के अन्य केन्द्रीय तथा प्रान्तीय निकायों के विधि-पालन को नियन्त्रित करता है। कानून के उल्लंघन पर उसे दंड देने का अधिकार है तथा कानून के समुचित पालन कराने का भी कार्य उसी का है। राज्यपाल के ऊपर एक महाराज्याल होता है जो अपने कार्यों के लिए नैशनल एसैम्बली के समक्ष उत्तरदायी होता है। अगर नैशनल एसेम्बली अधिवेशन में न हो, तो राज्यपरिषद् से संलग्न एक विधानपरिषद् के समक्ष उत्तरदायी होता है। १९७१ में राज्यपरिषद् से संलग्न एक विधानपरिषद् की रचना हुई जिसका प्रयोजन सामाजिक न्याय-स्थिति को शक्तिशाली बनाना तथा प्रत्येक सामाजिक क्षेत्र में विधि निर्माण करना है। यह एक विशेष परामर्श-दात्री समिति है, जिसका कार्य विधि व्यवस्था हेतु उपक्रम, समन्वय तथा सामंजस्य उत्पन्न करना है।

इन राजनैतिक सगठनों के अलावे भी रोमानिया के नागरिकों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले बहुत संगठन हैं जिनका सीधा सम्बन्ध देश की राजनीति से है। इन संगठनों का प्रभाव देश की राजनीति पर स्पष्ट परिलेक्षित है। इन संगठनों में रोमानिया की कम्युनिष्ट पार्टी अग्रगणीय है। कम्युनिस्ट पार्टी देश की प्रमुख राजनैतिक शक्ति है जिसके नेतृत्व में महान् सामाजिक क्रान्ति हुई तथा रोमानिया में समाजवाद की स्थापना हुई। इस पार्टी का निर्माण श्रमिकों, कृषकों, बुद्धि जीवियों तथा विभिन्न राष्ट्रीयता के लोगों में परस्पर सहयोग से हुआ है। रोमानिया की मुख्य राजनैतिक शक्ति के रूप में इस पार्टी का मुख्य कार्य समाज की वास्तविक समस्याओं का अध्ययन, तथा सम्बद्ध श्रमिकों से विचार विमर्श कर उसके समाधन के लिए प्रयत्न करना है। सामाजिक जीवन में राजनैतिक सिद्धान्तों के प्रति आस्था तथा सिद्धान्त का पूर्ण विकास पार्टी का उद्देश्य है। चूंकि पार्टी को इस संदर्भ में आई कठिनाइयों का राजनैतिक समाधान न कर सहयोग से समाधान करती है अतः जनता के विभिन्न वर्गो से इसे सीधा सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। इस तरह से इसका सम्बन्ध जनता के एक छोटे वर्ग से लेकर सम्पूर्ण राष्ट्र तक होता है। प्रत्येक स्तर पर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता आपस में इस तरह से गुथे रहते हैं कि एक वर्ग की समस्या सम्पूर्ण देश की समस्या बन जाती है। फलतः समस्याओं का समाधान सही पृष्ठभूमि में तथा आसानी से हो जाता है। पार्टी इस सिद्धान्त में विश्वास करती है कि प्रजातंत्र और समाजवाद में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। इसलिए पार्टी सामाजिक स्तर पर प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिये निरन्तर कार्यरत है। इस दिशा में उसके प्रयत्न सराहनीय हैं। १९६५ में पार्टी के नवें अधिवेशन के अवसर पर ग्रांड नैशनल एसेम्बली के कार्यों में व्यापक विस्तार किया गया। ध्येय सिर्फ इतना ही था कि सम्पूर्ण जनता को समाजवादी आदर्शों के अनुरूप अपना अधिकार मिले। पार्टी अपने देश में आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक्र क्षेत्र में विकास के लिए प्रयत्न रत रहने के साथ-साथ विश्व के श्रमिक वर्गों के प्रति निर्धारित अपने कर्त्तव्यों को भी पूरा करती है। विश्व के श्रमिक आन्दोलन में पार्टी ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना १९२१ ई० में हुई थी। तब से आज तक यह पार्टी जनता की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर रही है। महान् कम्युनिष्ट पार्टी रोमानिया का गौरव है तथा इसके महामंत्री श्री चाउसेस्कू संसार के गौरव हैं।

नागरिक संगठनों की दूसरी कड़ी ट्रेड यूनियन है। देश में हुये राजनैतिक तथा आर्थिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में ट्रेड यूनियन का विकास हुआ। ट्रेड यूनियन के विकास ने श्रमिकों के बहुत बड़े भाग को देश के भविष्य से सम्बंधित किया। रूमानिया में ट्रेड यूनियन का राष्ट्रीय हित से अलग कोई हित नहीं है। सम्पूर्ण श्रमिक वर्ग के उत्थान के साथ सम्पूर्ण देश का पूर्ण विकास जुड़ा हुआ है। चूंकि श्रमिकों का उत्पादन के साधनों पर पूर्ण अधिकार है शोषण की कोई संभावना नहीं है। श्रमिक ही उत्पादक हैं तथा मालिक भी। ट्रेड यूनियन ही सामूहिक नेतृत्व का आधार है। ट्रेड यूनियन का संगठन प्रजातांत्रिक है। सरकार द्वारा अनुमोदित समाजवादी नीतियों के अन्तर्गत ट्रेड यूनियन कार्य करता है। ट्रेड यूनियन के माध्यम से मजदूरों का प्रतिनिधित्व सरकार में होता है। मजदूरों की कोई



निकोलाई चाउसेस्कू की लावण्यमयी जीवन संगिनी
प्रो. (डा.) डोसेन्ट इंजिनियर एलेना चाउसेस्कू

समस्या सरकार की समस्या होती है। ट्रेड यूनियन पर ही अधिकतम उत्पादन का कार्यभार है। ट्रेड यूनियन के कार्यकर्ता अपने कर्त्तव्यों को पहचानते है तथा पूर्ण जिम्मेदारी के साथ उसका पालन भी करते हैं। ट्रेड यूनियन का इतना विकसित रूप संसार में दुर्लभ है। वास्तव में ट्रेड यूनियन को इतना विकसित करने का श्रेय श्री चाउसेस्कू को है जिन्होंने अपनी अपूर्व सूझ-बूझ से तथा दूरदर्शिता का परिचय देकर इसके विकास की दिशा निर्धारित की। आज रोमानिया का ट्रेड यूनियन कांग्रेस सिर्फ रोमानिया के स्तर पर ही नहीं विश्व के स्तर पर सक्रिय है तथा इसका सम्बन्ध विश्व के विभिन्न ट्रेड यूनियन संगठनों से है।

नागरिक संगठनों की परम्परा में कम्युनिस्ट युवक संघ की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह युवा पीढ़ी का संगठन है जिसका मुख्य उद्देश्य युवकों की उचित शिक्षा तथा उनकी शक्ति को देश के निर्माण की दिशा में मोड़ना है। देश के समाजवादी ढांचे को ध्यान में रखते हुये ये युवक अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिये अन्य नागरिक संगठनों की मदद लेते हैं। राज्य स्तर के संगठनों से इनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। जनता में ये नयी चेतना का प्रचार करते हैं फलतः जनता से इनका सीधा सम्बन्ध होता है। ये युवक समय पर कारखानों, कृषि-उत्पादन संस्थानों तथा अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्य करते हैं, नये तकनीकी ज्ञान का अध्ययन करते हैं तथा उसका प्रयोग भी करते हैं। कम्यु-निष्ट युवक संघ के केन्द्रीय संगठन का प्रथम सचिव, सरकार का सदस्य होता है। युवक प्रतिनिधि अनेक नागरिक संगठनों से भी सम्बद्ध होते हैं। इसके अन्तर्गत कार्य करने वाले रोमानिया के कम्युनिष्ट छात्र संगठनों का कार्य विश्व विद्यालय की प्रबंध समिति तथा परिषदों की कार्य विधि में योगदान देना है। विश्वविद्यालय में छात्रावासों तथा जलपान गृहों के प्रबंध में भी ये सहयोग करते हैं। मूल रूप से नयी पीढ़ी का यह महान् संगठन शिक्षा की दिशा में एक सफल प्रयोग है। श्री चाउसेस्कू के स्वप्न को साकार करने में इसका योगदान सराहनीय है। देश के ये भावी कर्णधार श्री चाउसेस्कू के इस प्रयोग को सम्पूर्ण जगत् में कार्यान्वित होने की आशा रखते हैं।

रोमानिया की महिला परिषद संसार में अपने ढंग का एक अनूठा संगठन है। आज संसार को पता चल गया है कि महिलाएं पुरुषों से किसी क्षेत्र में कम नहीं है। रोमानिया की समाजवादी पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है महिलाओं की रचनात्मक प्रतिभा के विकास के लिये परिस्थितियां पैदा करना। महिलाएं देश की सम्पूर्ण जनसंख्या का आधा भाग है। सरकार महिलाओं के जीवन स्तर को उन्नत करने लिये सतत् प्रयत्नशील है। श्री चाउसेस्कू ने रूमानिया की महिलाओं में चेतना का एक जलजला पैदा कर दिया है जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्र के विकास के लिये महिलाएं अपने को उत्सर्ग करने से पीछे नहीं हटतीं। जन-शक्ति का आधा भाग अगर इस प्रकार कार्यरत हो तो देश का भविष्य निश्चित ही उज्जवल होगा। महिलाओं का संगठन प्रजातांत्रिक रूप से गठित है, समाजवादी सिद्धान्त की स्थापना इसका लक्ष्य है। केन्द्र से लेकर मोहल्ले के स्तर तक गठित यह संस्था महिला

आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु है। रूमानिया के महिला परिषद के संगठन को संसार के अन्य राष्ट्रों की कल्पना का साकार रूप कहा जा सकता है।

रोमानिया गण राज्य के राष्ट्रति पद पर आसीन होने के बाद श्री चाउसेस्कू ने समाजवादी एकता-मोर्चा का निर्माण किया। कम्युनिष्ट पार्टी के अधीन गठित यह संस्था रोमानिया के महान् नागरिक संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है इसे देश की अधिकांश जनता का समर्थन प्राप्त है। सभी राष्ट्रीयता के लोग इसके सदस्य हैं तथा देश के शासन में इनका सक्रिय योगदान है। देश के अन्दर कार्यरत विभिन्न संघों के प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हैं और इसका कार्य क्षेत्र देशव्यापी है। इसका संगठन प्रजातांत्रिक है तथा उद्देश्य समाजवादी सिद्धान्तों के अनुरूप देश का विकास करना है। स्वयं श्री चाउसेस्कू इसके अध्यक्ष हैं। उन्हों की देखरेख में यह संगठन देश तथा विदेशों में कार्यरत है। समाजवादी एकता-मोर्चा वास्तव में रोमानिया को श्री चाउसेस्कू की महानतम देन है। यह वह संगठन है जिसमें समाजवाद तथा प्रजातंत्र का अपूर्व सामंजस्य है। भेदभाव से परे, एकता स्थापित करने के मामले में यह अपने नाम को सार्थक करता है।

मूल रूप में रोमानियन संगठन का उपयुक्त रूप है। यह प्रजातांत्रिक है। ऊपर से नीचे तक के सभी संगठन एक दूसरे से इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि सम्पूर्ण रोमानिया का प्रत्येक व्यक्ति इसकी परिधि में आ जाता है। संगठन की यह रूपरेखा श्री चाउसेस्कू की संगठन योग्यता का परिचायक है। प्रजातंत्र सभी व्यक्तियों का तथा सभी की भलाई के लिये होता है। अगर जनता का कोई भी भाग या वर्ग उपेक्षित रह जाता है तो ध्येय की पूर्ति असंभव हो जायगी क्योंकि प्रजातंत्र की मूल भावना पर ही कुठाराधात हो जाता है। प्रजातांत्रिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये संगठन का जैसा रूप होना आवश्यक है वह निश्चित रूप से एक दिन की उपज नहीं होती। साथ ही वह सदा के लिये समान भी नहीं रह सकता है। उसमें प्रयोग किये जाते हैं। उसमें उत्पन्न खामियों को दूर करने के हेतु समय समय पर उसमें परिवर्तन की आवश्यकता महसूस होती है। किसी राष्ट्र का गतिशील होना इस बात पर निर्भर करता है कि एक प्रगतिशील नेता को किस सीमा तक परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढ़ालने की क्षमता है। रोमानिया गण राज्य को इस अर्थ में गतिशील कहा जा सकता है क्योंकि श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में समय समय पर व्यवस्था में परिवर्तन होते रहे हैं। वे खुद देखते हैं कि कहां कौन सी कमी रह गई तथा किस स्थिति में किस प्रकार के नीति की आवश्यकता है। अधिक उत्पादन के लिये मजदूरों की स्थितियों में सुधार और कार्य करने के वातावरण में सुधार आवश्यक है, अत: श्री चाउसेस्कू पहले मजदूरों की स्थितियों में सुधार करेंगे, उसमें ऐसा मंत्र फूंक देंगे कि वह प्राण पन से उत्पादन कार्यों में जुट जाय। सच्चे नेता का यही विशेषता है। श्री चाउसेस्कू इस कसौटी पर खरे उतरते हैं।

श्री चाउसेस्कू ने रोमानिया के समाजवादी ढांचे के अन्तर्गत प्रजातांत्रिक पद्धतियों के पूर्णतया विकास के लिये कुछ नियमों का उल्लेख किया है। इन्हीं नियमों

के अन्तर्गत रोमानिया की राज्य व्यवस्था, सरकार, पार्टी तथा नागरिक संगठन कार्य करते हैं। ये नियम रोमानिया में स्थिति प्रत्येक संगठन के लिये मूल आधार प्रस्तुत करते हैं। रोमानिया की वास्तविक स्थिति, उसके राजनैतिक चरित्र तथा आर्थिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुये प्रत्येक स्तर पर इस आचार संहिता का पालन अनिवार्य है। वास्तव में ये सिद्धान्त इतने व्यापक हैं कि अगर इन्हें पूर्ण रूपेण कार्य रूप में परिणत किया गया तो विकास स्वाभाविक होगा। श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में रोमानिया में सिर्फ इन सिद्धान्तों पर ही अमल नहीं वरन पूरी शक्ति से इसे कार्यान्वित किया गया है। इसके परिणाम स्वरूप आज रोमानिया एक उन्नत देश की श्रेणी में आता है। समाजवादी देशों के खेमों में भी इसका स्थान सर्वोपरि है। श्री चाउसेस्कू द्वारा प्रस्तुत आचार संहिता है :—

१ सम्पूर्ण प्रभुत्व, सम्पन्नता, पूर्णता और जनशक्ति की एकता।

२ समाजवादी योजना-करण।

३ प्रजातांत्रिक केन्द्रीकरण।

४ प्रतिनिधियों का एकीकरण तथा प्रत्यक्ष प्रजातंत्र।

५ सामूहिक कार्य और प्रबन्ध।

६ वैज्ञानिक तथा प्रजातांत्रिक प्रबन्धों की एकता।

७ विधि-समस्त व्यवस्था और अनुशासन।

८ दृढ़ धारणा तथा सामंजस्य।

९ आचार संहिता, निष्पक्षता तथा मानवतावाद।

१० सामूहिक दायित्व।

११ आलोचना और प्रत्यालोचना।

सम्पूर्ण प्रभुत्व, सम्पन्नता, पूर्णता और जनशक्ति की एकता ऐसे राजनैतिक तथा व्यापक तत्व हैं जिनके अभाव में रोमानिया में प्रजातांत्रिकता की कल्पना नहीं की जा सकती है। सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है और यही शक्ति प्रजातांत्रिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। जनता खुद ही देश के राजनैतिक ढांचे, उसके कार्य, आर्थिक समस्याओं, सामाजिक संस्थाओं के निर्माण और विकास तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नीति निर्धारण में भाग लेती है। इस प्रकार जनता को राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत करने और उसको एक सूत्र में बांधने का प्रशंसनीय कार्य श्री चाउसेस्कू ने किया है। वहां की जनता श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में जितनी जागरूक है और देश के निर्माण के लिए जिस रूप में गतिशील है कि

यह अनुमान सत्य प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में रोमानिया विकास के सर्वोच्च शिखर पर होगा।

जनता में जागरण का मंत्र फूंकने के साथ साथ श्री चाउसेस्कू ने सम्पूर्ण देश के लिए एक समाजवादी योजना करण की पद्धति का प्रतिपादन किया है। सम्पूर्ण देश की जन शक्ति तथा भौतिक सम्पदाओं को केन्द्रित कर उत्पादन के कार्य में लगाया गया है। इस एकल योजना करण का उद्देश्य एक समाजवादी समाज का विकास करना तथा क्रमश: साम्यवाद की तरफ बढ़ना है। योजनाकरण के अन्तर्गत सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करने के लिये कार्यक्रम अपनाये गये हैं। जनता का प्रत्येक वर्ग इसमें प्रत्यक्ष रूप से भाग लेता है। योजनाकरण का भार बहुत ही योग्य व्यक्तियों के हाथों में है। चूंकि योजना जनता की आकांक्षाओं का प्रतीक है प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक स्तर पर इसे सफल बनाने के लिए कार्यरत है। रोमानिया में योजना करण की सफलता इस बात से आंकी जा सकती है कि आज वहां अधिकतम उत्पादन होता है, राष्ट्रीय आय निर्धारित लक्ष्य से अधिक है, प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है तथा जीवन स्तर बहुत ऊंचा हो गया है।

समाजवादी योजनाकरण के साथ साथ देश में प्रजातांत्रिक केन्द्रीकरण क सिद्धान्त को अपनाया गया है। यह सिद्धान्त देश के राजनैतिक संगठनों को आधार प्रदान करता है। प्राचीन नौकरशाही-केन्द्रीकरण की परम्परा को तिलांजलि देकर समाजवाद और केन्द्रीकरण के बीच द्वन्दात्मक एकता के सिद्धान्तों के आधार पर संगठन तथा उसके प्रबन्ध की स्थापना कर सच्चे अर्थों में समाजवादी प्रजातंत्र की नींव को मजबूत किया गया है। केन्द्रीकरण तथा प्रजातंत्र के बीच एक अपूर्व सामंजस्य स्थापित किया गया है। स्थानीय क्षेत्रों को पूर्ण स्वतन्त्रता तथा स्वायत्तता प्रदान करने के बावजूद भी उसे इस प्रकार संगठित किया गया है कि केन्द्रीय एकता पर किसी प्रकार की आंच नहीं आ सके। दो विपरीत सिद्धान्तों का ऐसा सामंजस्य श्री चाउसेस्कू के व्यक्तित्व के कारण ही संभव हो सका है। इसकी मुख्य विशेषता इस तथ्य पर आधारित है कि प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक इकाइयों को अपने विकास की पूर्ण स्वतन्त्रता है लेकिन इन स्वतंत्रताओं का उपयोग केन्द्रीय तथा समाजवादी नीतियों की परिधि में किया जाता है। जनता में अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा स्वयं पैदा होती है। अनुशासन बंधन नहीं होता, वरन वह एक आवश्यक शर्त है। इस प्रकार यह प्रजातांत्रिक केन्द्रीकरण का सिद्धान्त जीवन की स्वस्थ रचना में अनायास और सहज रूप में सहायक सिद्ध होता है। समयानुसार आवश्यक परिवर्तन का आह्वान किया जाता है तथा उसे सहर्ष स्वीकार भी किया जाता है। मूल उद्देश्य है अनुशासन में रह कर प्रत्येक व्यक्ति अपना निर्माण और विकास खुद करे। किसी भी समस्या पर प्रत्येक स्तर पर विचार होता है तथा सर्वोत्तम विचारों को कार्यान्वित किया जाता है। अनुशासन और मानवीय स्वतंत्रताओं की दिशा में यह एक उचित और ठोस कदम है।

प्रजातांत्रिक केन्द्रीकरण के साथ-साथ प्रतिनिधियों के एकीकरण तथा प्रत्यक्ष प्रजा-

तन्त्र को प्रश्रय दिया गया है। वास्तव में प्रत्यक्ष प्रजातंत्र और प्रतिनिधियों का एकीकरण प्रजातांत्रिक केन्द्रीकरण की परिणति है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक स्तर पर जनता को प्रत्यक्ष रूप से शासन तथा प्रबन्ध कार्य में भाग लेने का अधिकार है। साथ ही प्रत्येक स्तर पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार भी जनता को है। प्रतिनिधियों के एकीकरण तथा प्रत्यक्ष प्रजातंत्र को पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने का कार्य कुछ तरीकों के अन्तर्गत है। जनता वाद-विवाद प्रणाली इसमें सबसे महत्वपूर्ण है। देश के आर्थिक, राजनैतिक या सामाजिक विकास से सम्बद्ध प्रस्तावित विधेयक का प्रारूप जनता के समक्ष पेश किया जाता है। जनता पूर्ण वाद-विवाद के पश्चात् अपना मतामत देती है। तत्पश्चात् उसे राज्य विधान-पालिकाओं के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। वहां भी वाद-विवाद होने के पश्चात् उसे पूर्णता प्रदान की जाती है और फिर उसे कार्यान्वित किया जाता है। जनता, वाद-विवाद के इस कार्य को विभिन्न स्तरों पर सभा करके करती है। इन सभाओं में विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि होते हैं, वे विभिन्न दृष्टिकोणों से उस पर विचार करते हैं तथा निर्भीकता पूर्वक अपने विचारों को रखते हैं। फलस्वरूप जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप ही विधेयक पास किया जाता है। जनमत द्वारा वांछित संशोधन तत्काल कर दिया जाता है।

किसी व्यवसाय की उन्नति के लिये उठाये गये किसी कदम के सिलसिले में प्रबन्धकों और कार्यकर्त्ताओं में प्रत्यक्ष बातचीत होती है। दोनों के सहयोग से ही कोई कदम उठाया जा सकता है। छोटे से छोटे आर्थिक या सामाजिक इकाइयों का कार्य इसी ढंग से सम्पादित किया जाता है। साथ ही विभिन्न स्तर पर उचित समस्याओं के समाधान के लिए उसी क्षेत्र की जनता को आमन्त्रित करना प्रजातंत्र का अत्यधिक विकसित रूप है। नागरिक संस्थाओं की इस क्षेत्र में उल्लेख्य देन है। समय-समय पर सरकार इन लोगों को आमंत्रित कर किसी समस्या विशेष पर मतामत होता है। मूल रूप से श्री चाउसेस्कू चाहते हैं कि राज्य शासन का कार्य अधिक से अधिक प्रजातांत्रिक हो तथा जनता अपने कर्त्तव्यों का पालन अधिक सावधानी से करे।

अभी हाल ही में संगठन के क्षेत्र में सामूहिक कार्य और प्रबन्ध के सिद्धान्त को लागू किया गया है। इस सिद्धान्त को रोमानिया के संविधान तथा रोमानियन कम्युनिष्ट पार्टी द्वारा मान्यता प्राप्त है। इस सिद्धान्त को लागू करने के सिलसिले में इस भावना को ध्यान में रखा जाता है कि प्रबन्ध कार्य अत्यन्त जटिल तथा जिमेदारी का है। कोई भी प्रबन्धक चाहे कितना भी योग्य क्यों न हो, सम्पूर्ण जिम्मेदारियों को निभाने में असमर्थ रहता है। किसी विशेष स्थिति में उसके निर्णय अनुकूल नहीं हो सकते हैं। अतः उन्हें सामूहिक निकाय से परामर्श करना चाहिये। इसका लाभ यह है कि किसी विशेष समस्या पर उचित परामर्श मिल सकता है साथ ही नौकरशाही तथा स्वेच्छाचारिता पर भी आवश्यक रोक लग जाता है। जनता का एक बड़ा भाग प्रत्यक्ष रूप से इसमें भाग लेता है। जिम्मेदारी सामूहिक होती है तथा शासक और शासित के बीच की दूरी खत्म हो जाती है। कार्यक्षेत्र में इस सिद्धान्त के विकास से एक दिन ऐसा भी होगा जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति राजनैतिक, आर्थिक तथा

सामाजिक कार्यों में भाग लेगा। रोमानिया में कार्यक्षेत्र संबंधी इस सिद्धान्त का विकास प्रजातंत्र की आत्मा के अनुरूप है।

वैज्ञानिक तथा प्रजातांत्रिक प्रबन्धों की एकता 'संगठन और प्रबन्ध' की महत्वपूर्ण विशेषता है। यह सिद्धान्त रोमानिया के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन में 'संगठन और प्रबन्ध' के प्रति गहरे यथार्थवादी तथा प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। इसमें कोई दो मत नहीं कि सामान्य स्तर पर भी प्रबन्ध का कार्य एक जटिल विषय है। इसके लिए योग्यता और तत्परता की आवश्यकता होती है। फिर नित नये वैज्ञानिक आविष्कारों की वजह से तकनीकी क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिक तकनीकी ज्ञान का पूर्ण प्रयोग राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है। प्राचीन पद्धति तथा नये आबिष्कारों के बीच एक संतुलन आवश्यक है। इसके लिए प्रगतिशील नीति का होना आवश्यक है तथा इस नीति को कार्य रूप देने के लिए योग्य कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। आधुनिक रोमानिया में इस सिद्धांत के महत्व को समझा जा रहा है। इसके लिए सरकार प्रबन्ध से सम्बन्धित कर्मचारियों के उचित चयन, प्रशिक्षण तथा पदोन्नति पर पूरा ध्यान दे रही है। प्रबन्ध से सम्बन्धित कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम अपनाया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रबन्ध के ऊंचे पदों पर योग्य तथा प्रशिक्षित व्यक्ति को प्रतिष्ठित करने का है। प्रशिक्षण का कार्यक्रम सुयोग्य व्यक्तियों तथा विशेषज्ञों के निर्देशन में होता है। समाजवादी प्रजातंत्र के विभिन्न सिद्धान्तों का प्रयोग भी प्रशिक्षण के सिलसिले में किया जाता है। 'रोमानिया बहुपक्षीय विकसित समाजवादी समाज के पथ पर' नामक अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ में श्री चाउसेस्कू ने कहा है—"समाजवादी प्रजातंत्र का विकास तथा सम्पूर्ण राष्ट्र का देश की नियति तथा प्रबन्ध में भाग लेना वैसे व्यक्ति की मांग करता है जिसे विस्तृत ज्ञान हो, जो जीवन द्वारा उत्पन्न समस्याओं को समझता हो, देश के क्रान्तिकारी विकास से सम्बन्धित परिस्थितियों को समझता हो, संसार के क्रांतिकारी रूपान्तरन तथा परिवर्तनों को समझता हो, अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों को समझता हो, साथ ही यह भी जानता हो कि किसके निर्देशन में क्या करे।"

रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी के मतानुसार भी समाजवादी तथा वैज्ञानिक चरित्र राज्य संगठन तथा नेतृत्व का अभिन्न अंग है। रोमानिया में वैज्ञानिक तथा प्रजातांत्रिक प्रबन्धों की एकता तथा सामंजस्य श्री चाउसेस्कू का देन है।

देश के शासन में विधिसम्मत व्यवस्था तथा अनुशासन का महत्व सर्वोपरि है। रोमानिया में समाजवादी सिद्धान्तों के अनुरूप विधिसम्मत व्यवस्था की स्थापना की गयी है। नये संविधान को ध्यान में रखते हुये पुरानी न्याय-व्यवस्था समाप्त कर दी गयी है। वैसे कानून जो देश की प्रगति में बाधक थे उनका अन्त कर दिया गया है। सम्पूर्ण कानूनी व्यवस्था को पूर्णतया परिवर्त्तित कर दिया गया है और उसकी जगह एक ऐसे कानून व्यवस्था की स्थापना की गयी है जो जनता की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है। कानूनी

व्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ अनुशासन पर भी पूरा ध्यान दिया गया है। अनुशासन-हीनता की स्थिति में लक्ष्य-सिद्धि असंभव हो जाती है। देश को प्रगति के सर्वोच्च शिखर पर ले जाने के लिए अनुशासन पहली शर्त है। रोमानिया ने अनुशासन के महत्व को पहचाना है तथा प्रत्येक व्यक्ति और संगठन स्वेच्छा से अनुशासन का पालन करे, इसे अपसे शासन का ध्येय बनाया है। देश के अन्तर्गत कार्यरत कोई भी संगठन या व्यक्ति संविधान की अवहेलना नहीं कर सकता। अवहेलना करने वालों के लिए दण्ड विधान की भी व्यवस्था है। लेकिन रोमानिया में दण्ड विधान का प्रयोग नहीं के बराबर होता है क्योंकि जनता अपने आप में ही अत्यधिक अनुशासित है। यहां भी श्री चाउसेस्कू के व्यक्तित्व का चमत्कार दिखाई पड़ता है। चाउसेस्कू ने नागरिकों में जागरण का ऐसा मंत्र फूंक दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र की उन्नति के लिए सक्रिय हो गया है तथा अनुशासन वहां समस्या नहीं वरन एक उपलब्धि हो गयी है।

दृढ़ धारणा तथा सामंजस्य रोमानियन राजनैतिक समाज की दूसरी प्रबंधकीय विशेषता है। सामाजिक-राजनैतिक एकता की मूलधारणा की पृष्ठभूमि में इसका विकास हुआ। बहुपक्षीय समाजवादी समाज के विकास के लिए—पार्टी के कार्यक्रम, जनता का सक्रिय रूप से सम्मिलित होना, विधि के स्तर पर सम्पूर्ण देश के लिये एक योजनाकरण, राज्य तथा नागरिक संस्थाएं—इन सब के प्रबन्धकीय तत्व के रूप में दृढ़ धारणा का विकास हुआ है। दृढ़ धारणा का अर्थ किसी राजनैतिक सिद्धान्त के प्रति आस्थावान होना है। सम्पूर्ण रोमानिया के लोग साम्यवाद के सिद्धान्तों में आस्था रखते हैं। प्रजातांत्रिक ढंग से समाज वादी समाज की स्थापना और समाजवाद से साम्यवाद की ओर क्रमशः बढ़ना इनका लक्ष्य है। इसीलिए सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक, प्रत्येक स्तर पर एकता की भावना का विकास सम्भव हो सका। अगर साम्यवादी विचारधारा के प्रति लोगों की धारणा इतनी दृढ़ नहीं होती तो प्रत्येक क्षेत्र में सामंजस्य नहीं हो सकता था और देश की प्रगति भी सम्भव नहीं हो सकती थी। यह दृढ़ धारणा का ही प्रभाव है कि प्रत्येक कार्य सर्वसम्मति से होता है तथा जनमानस का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। साम्यवादी मूल्यों के प्रति लोगों का स्वाभाविक रूझान तथा देश के अन्दर अतीत से विकसित परम्पराओं के बीच सामंजस्य का होना आवश्यक था। श्री चाउसेस्कू ने जिस अदम्य उत्साह तथा दूरदर्शिता का परिचय इन समस्याओं को सुलझाने में दिया है, वह सम्पूर्ण विश्व के नेतृत्व के क्षेत्र में अपना पृथक महत्व रखता है।

उपर्युक्त सिद्धान्तों के सही परिपालन के लिए एक अचार संहिता, निष्पक्षता तथा मानवताबाद की भावनाओं को होना आवश्यक है। सामाजिक क्रांति का वास्तविक लक्ष्य आदमी के लिए एक नये, न्यायपूर्ण, दबाब मुक्त तथा शोषण विहीन समाज की रचना करना है। इस लक्ष्य की पूर्ति तभी सम्भव है जब निष्पक्षता तथा मानवतावाद के आधार पर, कार्य की शर्तों के रूप में, एक आचार संहिता का निर्माण हो। रोमानिया में इन मौलिक बातों के महत्व को समझा गया है तथा परिस्थितियों का सृजन किया गया है जिनमें इन बातों का

विकास सम्भव हो सके। श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में १९७२ में हुए पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर, कम्युनिस्टों के जीवन के प्रतिमान तथा समाजवादी आचारशास्त्र और निष्पक्षता से सम्बन्धित एक पाण्डुलेख तैयार किया गया था। उस पर वाद विवाद किया गया था तथा मतामत जानने के लिए उसे जनता के समकक्ष प्रस्तुत किया गया था। इसमें सभी राष्ट्रीय व्यावसायिक तथा नागरिक संगठनों ने भाग लिया। पाण्डुलेख की गंभीर आलोचना हुई। आवश्यकतानुसार उसके स्वरूप को परिवर्तित किया गया और अन्त में दल के ११ वें महा-सम्मेलन ने उसे अंगीकार कर लिया। ये ही प्रतिमान रोमानियां की जनता को एक सूत्र में बांधे हुये हैं। वास्तव में निष्पक्षता तथा मानवतावादी भावना समाजवाद को एक नैतिक विस्तार प्रदान करता है।

सामूहिक जिम्मेदारी रोमानियन सामाजिक और राजनैतिक प्रणाली की विशेषता है। चूंकि सम्पूर्ण प्रभुसत्ता जनता में निहित है, समाज के प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी असीम हो जाती है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में समाज के प्रति जबाबदेह है। किसी को भी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं किया जा सकता है। यह अलग बात है कि प्रत्येक व्यक्ति के सन्दर्भ में जिम्मेदारी की मात्रा अलग अलग हो सकती है। उच्च पद पर कार्यरत लोगों की जिम्मेदारी अधिक रहती है। समाज के दूसरे वर्ग के सदस्य उनसे अधिक आकांक्षा रखते हैं। कोई व्यक्ति यदि एक छोटे एकक के स्तर पर कार्य करता है, तो उसका कार्य क्षेत्र सीमित होगा ही अतः उसकी जिम्मेदारी भी उसी अनुपात में कम होगी। श्री चाउसेस्कू ने अपने कार्य के दौरान इस क्षेत्र में बहुत सी बुराइयों की तरफ इशारा किया और उसको खत्म करने के लिये कानून बनाये। श्री चाउसेस्कू के प्रयत्न से रोमानिया के लोगों में जिम्मेदारी की भावना का ऐसा विकास हुआ कि समाज का प्रत्येक सदस्य अत्यन्त सर्तकता पूर्वक अपनी जिम्मेदारियों का पालन करता है तथा समाज के नाम पर अपने को उत्सर्ग करने पर तैयार रहता है। लोगों के अन्तःकरण में प्रजातंत्र के प्रति सच्ची श्रद्धा का उद्रेक सामाजिक जिम्मेदारी की इस भावना से ही होती है।

प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति रोमानियन जनता की सच्ची आस्था, वहां के लोगों को प्राप्त आलोचना और प्रत्यालोचना के वास्तविक अधिकार में, सन्निहित है। वास्तव में आलोचना और प्रत्यालोचना का यह अधिकार किसी भी समाजवादी समाज में एक पवित्र निधि मानी जाती है। आलोचना और प्रत्यालोचना एक ऐसा साधन है जिससे समाज को वास्तविक उपलब्धि का ज्ञान होता है, उसके मार्ग में आयो कठिनाईयों, सामाजिक क्षेत्र में फैली बुराइयों तथा कमियों का एहसास होता है और फिर कालक्रम से उसे दूर करने का प्रयास किया जाता है। अर्थात् वास्तविकता उभर कर सामने आती है और भविष्य में उसी के आधार पर कार्यक्रम निर्धारित किया जाता है। चाहे वह राजनैतिक दल हो, चाहे सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक संगठन हो, आलोचना प्रत्यालोचना एक आवश्यक कार्यविधि के रूप में प्रयुक्त होती है। रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी इस मामले में अत्यधिक सक्रिय है। खुद श्री चाउसेस्कू ने अनेक अवसरों पर इसके महत्व पर बल दिया है। स्वस्थ आलोचना का विकास सामाजिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। खासकर जनता के स्तर पर होने वाली

आलोचनाओं का महत्व अधिक होता है। 'नीचे' से आनी वाली आलोचनायें वास्तविकता की पृष्ठभूमि से आती है—अतः आदर योग्य हैं। इसमें साधारण आदमी अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। वे अपने से ऊपर के संगठनों की आलोचना करते हैं, उसकी बुराईयों को दिखलाते हैं। फिर ऊपरी संगठन इन आलोचनाओं को वास्तविकता के संदर्भ से जोड़ता है और उसी के अनुरूप कार्यक्रम निर्धारित करता है। इसके लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता है—जैसे गोष्ठी, प्रेस, रेडियो, टेलिविजन आदि। आलोचना को किसी भी तरह दबाया जाना रोमानिया वासी वर्दास्त नहीं कर सकते हैं। किसी भी आलोचक को दण्डित करना रोमानियावासियों की दृष्टि में घोर निंदनीय कर्म है। १९७२ में पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर श्री चाउसेस्कू ने कहा था" साहसपूर्ण और खुली आलोचना एक तरफ बुराइयों के समापन का तथा जिम्मेदारी पूर्ण कार्य के निर्णय का आश्वासन देता है तो दूसरी तरफ पार्टी की उपलब्धि तथा राज्य के निर्णय का मार्ग प्रस्तुत करता है। इस तरह आलोचना प्रत्यालोचना कमजोरी का लक्षण नहीं है वरन् प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति आस्था का सूचक है।

प्रजातांत्रिक समाजवाद के विकास के लिए रोमानिया में जिन सिद्धान्तों का प्रयोग किया जा रहा है वे एक दूसरे से अलग नहीं है। वे एक दूसरे से इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि एक के अभाव में दूसरा महत्वहीन हो जाता है। इन सभी सिद्धान्तों का पूर्ण विकास स्वाभाविक रूप से रोमानिया में सर्वशुद्ध प्रजातांत्रिक समाजवाद की स्थापना करेगा। श्री चाउसेस्कू रोमानिया की जीवन नौका है और साथ ही कर्णधार भी हैं। देश और जनता के विकास के प्रति इनकी अटूट निष्ठा से ऐसा प्रतीत होता है कि रोमानिया चाउसेस्क का जीवन है और चियासेस्कू रोमानिया का।

समाजवादी प्रजातंत्र और मानवीय व्यक्तियों का बहुपक्षीय विकास

समाजवादी संरचना और विकास, समाजवादी प्रजातंत्र की परिणति नहीं है। इसका मूल उद्देश्य एक विकसित बहुपक्षीय समाज तथा शनैः शनैः साम्यवाद की स्थापना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही समाजवादी परम्परा में मानवीय व्यक्तित्वों के विकास का मूल्यांकन किया जाता है। मानव को अधिक से क्षधिक स्वतंत्रताएं प्रदान की जाती है जिससे उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास हो। व्यक्तित्व के विकास का अर्थ सम्पूर्ण मानवीय गुणों का तथा उसकी क्रिया शक्तियों का विकास है। अगर विचारों के ठोस धरातल पर किसी व्यवस्था का परीक्षण किया जाय तो उसके केन्द्र में मानव के अस्तित्व का ही दिग्दर्शन होगा। मानवीय विकास ही वह परिधि है जिसके चारों ओर व्यवस्था का ताना बाना रहता है। मानवीय विकास ही वह उद्देश्य है जिसका प्रतिफलन व्यवस्था के रूप में देखने को मिलता है। अन्य शासन व्यवस्थाओं की अपेक्षा समाजवाद में मानवीय विकास का उद्देश्य पूर्ण रूपेण क्रियान्वित किया जा सकता है। विकास के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक स्वतंत्रता आवश्यक है। बिना इसके विकास की कोई संभावना नहीं है। समाजवादी प्रजातंत्र ही वह व्यवस्था है जिसमें मानवीय व्यक्तित्वों

के विकास का सुअवसर प्राप्त हो सकता है। समाजवादी प्रजातंत्र वास्तव में एक दिन की उपज नहीं है। सदियों से मानव एक विकसित जीवन की तलाश में भटकता रहा है। हजारों वर्षों के संघर्ष के पश्चात समाजवादी प्रजातंत्र के इस रूप का दर्शन हुआ है तथा सर्वमान्य व्यवस्था के रूप में इसका विकास हुआ है। समाजवादी प्रजातंत्र आधुनिक मानव सभ्यता की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

समाजवादी प्रजातंत्र का सबसे विकसित रूप श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में संगठित रोमानिया है। प्रजातंत्र का आदर्श वहां सिर्फ कल्पना के रूप में नहीं प्रस्तुत एक ठोस समाज के रूप में मौजूद है। समाज के प्रत्येक सदस्य को इतनी राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान की गयी है जिससे उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव हो सके। सामाजिक न्याय के आदर्श रूप में वहां सभी सदस्यों का सम्मान, प्रजातांत्रिक अधिकार, कार्यशक्ति प्रतिभा तथा व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए समान अवसर, वैज्ञानिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करने की पूरी सुविधा तथा सामाजिक नेतृत्व के विकास के लिए स्थितियां आदि विद्यमान हैं। यहां समाजवाद का आदर्श वैसे समाज की संरचना नहीं है जिसमें आदमी मशीनों का दास हो जाता है वरन् ऐसे समाज का गठन है जिसमें प्रत्येक वस्तु का उपयोग आदमी की विकास के लिये किया जाता है। रोमानिया की सबसे बड़ी विशेषता समाज के प्रत्येक सदस्य को प्रदत्त स्वतंत्रता तथा प्रत्येक क्षेत्र में उसके समान अवसर की प्राप्ति है। चाहे वह सदस्य किसी भी राष्ट्रीयता का हो रोमानियन समाज में समान अवसर का भागी है। हालांकि स्वतंत्रता और समानता का यह सिद्धान्त बहुत पहले से प्रचलित था लेकिन श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में ही इसका कार्यान्वयन हो सका। कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता स्थापित होने के साथ साथ, विकास के प्रथम चरण के रूप में उन्होंने स्वतंत्रता तथा समानता की भावना को प्रत्येक स्तर पर कार्यान्वित किया। भाषा का प्रतिबन्ध खत्म किया। समाजवादी एकता मोर्चा में सभी राष्ट्रीयता के सदस्यों को सम्मिलित किया गया, जैसे जर्मन, मैगयार, साइबेरियन, युक्रानियन कामगार जनता के परिषद-सदस्य। अन्य समाजवादी संगठनों के सदस्य भी इसमें सम्मलित हैं। गैन्ड नेशनल एसेम्बली से लेकर देश के सभी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक एककों के चुनाव में इस भावना को प्राथमिकता प्रदान दी गयी है। पूर्वकाल में उपेक्षित महिलाओं की समस्या का भी समाधान कर दिया गया। देश की सम्पूर्ण जनसंख्या का आधा भाग महिलाओं का है। प्रत्येक क्षेत्र में उन्हें समान स्वतंत्रता और समानता प्रदान कर महिलाओं की अधिकाधिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया गया। उनके कार्य शक्ति के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। मां और बहनों की सुविधा के लिये विभिन्न कानूनों का निर्माण किया गया। समयानुसार छुट्टियों की व्यवस्था की गयी, गर्भवती महिलाओं को उचित आराम, बच्चों की देखभाल के लिए व्यवस्था तथा अन्य आर्थिक सहायता के लिये कदम उठाकर महिलाओं का सर्वांगीण विकास किया गया।

व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के संदर्भ में रोमानियन समाजवादी प्रजातंत्र में

परिगणित नागरिकों के मूल अधिकारों तथा कर्तव्यों की सूची के महत्व को आंका जा सकता है। इन अधिकारों के पीछे संविधान की शक्ति तथा जनता की इच्छा तथा आकांक्षा प्रतिध्वनित होती है। किसी देश के नागरिकों की समृद्धि तथा जीवन-स्तर का एक मात्र सूचक—मूल अधिकार, वहां के नागरिकों के हाथ में, राज्यशक्ति के दुरुपयोग के विरुद्ध, एक सुरक्षा-कवच होता है। ये अधिकार मूलत: जीवन यापन के आधारभूत आवश्यकताओं से सम्बद्ध रहने के कारण सम्बंधित देशों की सही तस्बीर पेश करते हैं। इसी कारण समाजवादी परम्परा में इसका महत्व शरीर में प्राण के सदृश माना गया है। रोमानिया में नागरिकों को निम्नलिखित मूल अधिकार प्राप्त है:

१ कार्य करने का अधिकार।

२ आराम करने का अधिकार।

३ वृद्धावस्था, बीमारी तथा आरोग्यता के विरुद्ध आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करने का अधिकार ।

४ शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार।

५ व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा उत्तराधिकार प्राप्त करने का अधिकार।

६ अन्य अधिकार।

रोमानिया के संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को कार्य करने का अधिकार प्राप्त है। १६ वर्ष की आयु के ऊपर के व्यक्तियों के लिये कार्य एक आवश्यक शर्त है। प्रत्येक व्यक्ति जो कार्य करने योग्य है तथा शिक्षा संस्थानों में अध्ययन नहीं कर रहा है, वितरण के समाजवादी सिद्धान्त के अनुसार अपने कार्य के अनुरूप वेतन पाने का अधिकारी है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये कार्य की चोरी तथा किसी प्रकार की परजीविका—जो समाजवादी आचार संहिता के प्रतिकूल है, निषिद्ध कर दिया गया है। समाजवादी आदर्श के अनुरूप कार्य के लिए अच्छे वातावरण की सृष्टि, संरक्षण, आवश्यक चिकित्सा सहायता प्राप्त करने, आदि का भी अधिकार मजदूरों को प्राप्त है। उन्हें अपने योग्यतानुसार पदोन्नति का भी अधिकार है। स्त्रियों और कम उम्र के लोगों को विशेष सुविधायें दी गयी हैं। कार्य की शर्तों को उदार बनाया गया है।

कार्य के इस अधिकार के साथ-साथ समयानुसार आराम पाने का भी अधिकार प्रदान किया गया है। इसके लिए साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक सवैतनिक छुट्टियों का प्रवन्ध किया गया है। कठोर परिश्रम के स्थलों पर, वेतन में किसी प्रकार की कटौती किये विना,

काम के घंटों को कम कर दिया गया। छुट्टियां बिताने के लिये विभिन्न स्थलों पर मनोरंजन केन्द्र की व्यवस्था है। स्वास्थ्य लाभ के दृष्टिकोण से संविधान द्वारा प्रदत्त यह अधिकार अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है।

शिक्षा मानवीय जीवन के विकास के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता है। क्रान्ति के पहले रोमानिया में संसार के अन्य देशों की अपेक्षा अशिक्षितों की संख्या सबसे अधिक थी। कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता स्थापित होने के साथ श्री चाउसेस्कू ने शिक्षा-क्षेत्र में आमूल परिवर्तन कर ७ वर्ष से १६ वर्ष के सभी बच्चों के लिये शिक्षा अनिवार्य कर दिया। इस हेतु सरकार की तरफ से सहायता दी जाती है। आज रोमानिया में अशिक्षित लगभग रह ही नही गये हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अन्य परिवर्तनों के साथ-साथ आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा के प्रसार का भी पूरा प्रबन्ध किया गया है जिससे कि रोमानियावासी ससार के अन्य विकसित देशों की तुलना में पीछे नहीं रहें।

रोमानिया में नागरिकों को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने का भी अधिकार है। वे अपने वेतन की बचत द्वारा अर्जित सम्पत्ति के मालिक हैं। उन्हें मकान तथा गृह कार्य सम्बन्धित अन्य आवश्यक वस्तुओं पर स्वामित्व के साथ, उत्तराधिकार भी प्राप्त है। सरकार प्रत्येक कदम पर इस कार्य में सहायक होती है।

सरकार तथा जनता के बीच के सम्बन्धों के संदर्भ में 'जन-आवेदन' के अधिकार का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस मूल अधिकार के द्वारा जनता अपनी समस्याओं का समाधान किसी भी राजकीय या स्थानीय निकाय के माध्यम से करा सकती है। जनता के द्वारा किसी समस्या से सम्बन्धित दरखास्त प्राप्त करने के वाद ये निकाय उस पर विचार विमर्श करते हैं तथा उसके समाधान के लिये उचित परामर्श देते हैं। यह अधिकार वास्तव में समाजवादी आचार संहिता के अनुरूप है।

रूमानिया के नागरिकों के परम पावन सामाजिक—राजनैतिक अधिकारों के अन्तर्गत, उसे नेतृत्व के चुनाव का अधिकार प्राप्त है। इसके अनुसार प्रत्येक नागरिक राज्य के प्रबन्ध में भागीदार है। इसमें किसी प्रकार का विभेद बर्दास्त नहीं किया जाता है। वे किसी भी संगठन के चुनाव के लिए उम्मीदवारों का चयन कर सकते हैं, खुद उम्मीदवार हो सकते हैं और चुनाव सम्बन्धी कानूनों में संशोधन कर सकते हैं। इस प्रकार नेतृत्व के चुनाव के सम्बन्ध में जनता को विस्तृत अधिकार प्राप्त है।

जनता को संगठन बनाने का अधिकार है। विभिन्न स्तरों पर जैसे ट्रेड यूनियन, सहकारी संस्थाएं नवयुवक, महिलाओं, वैज्ञानिक, तकनीकी और खेलकूद आदि से सम्बन्धित संघ

कायम करने का उन्हें अधिकार है। रोमानिया में ऐसे हजारों छोटे-बड़े संगठन कार्यरत हैं। जनता का एक बड़ा हिस्सा इसमें सम्मिलित होता है। इनका उद्देश्य रोमानिया के बहुद्देशीय विकास के लिए कार्यरत रहना है।

इसके साथ ही नागरिकों को भाषण देने, प्रेस, सभा करने और धरणा देने का अधिकार भी प्राप्त है। वे अपने विचारों को बेझिझक तथा बिना किसी प्रतिबंध के प्रकाशित कर सकते हैं। देश की किसी भी समस्या पर उन्हें विचार-विमर्श का अधिकार प्राप्त है। वे इसके लिए रेडियो, टेलिविजन आदि का प्रयोग कर सकते हैं। सिर्फ वैसे विचारों के प्रकाशन तथा प्रचार पर प्रतिबन्ध है जो समाजवादी दृष्टियों के अनुकूल न हों तथा जो फासिज्म से सम्बन्धित हो।

रोमानिया की जनता को किसी भी धार्मिक विश्वास को मानने का भी अधिकार दिया गया है। रोमानिया में १४ प्रकार के धर्मों को राजकीय मान्यता प्राप्त है। कोई भी व्यक्ति किसी भी धार्मिक विचारों को मान सकता है। इसमें राज्य किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता है। रोमानिया में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अपहरण को किसी तरह से वर्दास्त नहीं किया जाता है। ऐसे अधिकारों का संविधान में उल्लेख है जिनके कारण किसी व्यक्ति को बिना किसी कारण जेल के सीखचों में बन्द नहीं किया जा सकता है; वे अपनी निर्दोषता सिद्ध कर सकते हैं और व्यक्तिगत गोपनीयता को कायम रख सकते हैं। टेलीफोन या पत्र व्यवहार के सिलसिले में नागरिकों की गोपनीयता को ध्यान में रक्खा जाता है। नागरिकों के इन अधिकारों का कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता है। इस प्रकार व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए समाजवादी प्रजातंत्र में जो प्रावधान अपेक्षित हो सकते हैं उन सबों को रोमानिया में कार्य रूप में परिणत किया गया है।

समाजवादी आदर्शों के अनुरूप इन अधिकारों को नागरिकों को उपलब्ध कराने के साथ ही राज्य तथा समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों का भी उल्लेख संविधान में कर दिया गया है। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यरत रहे। उसे वैसा कोई भी कार्य नहीं करना होगा जो राज्य तथा समाज के विकास में बाधक तत्व के रूप में आये।

राज्य या अन्य स्तर के संगठनों में व्याप्त ऊपर उल्लिखित प्रजातांत्रिक मूल्यों की विवेचना से स्पष्ट विदित होता है कि श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में रोमानिया में जिस समाजवादी प्रजातंत्र की परम्परा का विकास हुआ है वह उनके व्यक्तित्व की गरिमा को परिलक्षित करता है। जन मानस के नेता के रूप में रोमानिया की हर धड़कन में चाउसेस्कू हैं और चाउसेस्कू की हर सांस में रोमानिया है।

विदेश नीति

रोमानिया की वैदेशिक नीति रोमानिया राज्य की प्रगाढ़ आकांक्षाओं का प्रतीक है। सम्पूर्ण विश्व की समस्याओं की पृष्ठभूमि में रोमानिया की विदेश नीति अपने आप को मानवीय मूल्यों के उस धरातल पर ला खड़ा करती है जहां विश्वशांति, संसार के प्रत्येक व्यक्ति की समृद्धि तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की महत् भूमिका में छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों के महत्व की गरिमा प्रतिष्ठित होती है। चाहे समाजवादी परम्परा में विकसित राष्ट्र हों चाहे पूंजीवादी परम्परा में रोमानिया का उन देशों के साथ अविछिन्न सम्बन्ध है। सामाजिक उन्नति, सुरक्षा और सद्भावना पर आधारित उसकी विदेश नीति सराहनीय है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता के प्रति आदर, प्रत्येक व्यक्ति का वाह्य हस्तक्षेप से रहित स्वतंत्र विकास करने का अधिकार, पूर्ण आपसी एकता तथा लाभ में परस्पर हिस्सेदारी, रोमानियन नीति के आधारभूत अंग हैं। रोमानिया अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्वच्छन्दता के आरोप तथा शक्ति प्रयोग के विरुद्ध है। पार्टी के ग्यारहवें अधिवेशन के अवसर पर श्री चाउसेस्कू द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में घोषणा की गई है कि मानव जाति के समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के विस्तार में रोमानिया का प्रत्यक्ष योगदान होगा। साथ ही, अपने इस रिपोर्ट में उन्होंने परस्पर सहयोग, सुरक्षा एवं विश्वशांति के लिए एक नीति के निर्धारण करने का दृढ़ समर्थन किया है। विश्व रंगमंच की घटनाओं पर दृष्टि डालने से स्पष्टत: विदित होता है कि विश्व समस्याओं के समाधान में रोमानिया का योगदान प्रशंसनीय है।

रोमानियन वैदेशिक नीति के तीन मूल तत्व है :—

१ समाजवादी देशों के साथ सहयोगात्मक सम्बन्ध।

२ विश्वशांति और सुरक्षा।

३ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रजातंत्रीकरण।

समाजवादी राष्ट्र के रूप में रोमानिया की विदेश नीति का मूल आधार संसार के अन्य समाजवादी राष्ट्रों के साथ सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सम्बन्धों की सृष्टि करना है। इस दृष्टि से रोमानिया ने आर्थिक-सहयोग के लिए निर्मित परिषद के सदस्यों के साथ सहयोग-सम्बन्धों के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया है। इस आर्थिक परिषद का ध्येय प्रत्येक देश की उन्नति, सदस्य राष्ट्रों के आर्थिक-प्रगति स्तर को समान बनाना तथा उनके



भारत के राष्ट्रपति की रोमानियन राजकीय यात्रा (१९७३ ई.)
के अवसर पर दोनों देशों के राष्ट्रपति

भौतिक साधनों और मानवीय शक्तियों का उत्पादन के क्षेत्र में सफल उपयोग करना है। इस संदर्भ में सदस्य राष्ट्रों की स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता, सम्पूर्ण एकता, घरेलू मामलों में पूर्ण स्वतंत्रता, आपसी सहयोग तथा परस्पर लाभ की नीति को ध्यान में रखा जाता है। साथ ही योरोप, एशिया एवं लैटिन अमेरिका के सभी समाजवादी राज्यों के साथ रोमानिया पारस्परिक सहयोग सम्बन्धों का निरन्तर विकास कर रहा है। आपसी सहयोग प्रत्येक समाजवादी राष्ट्र के बहुपक्षीय एवं तीव्र विकास के लिए आवश्यक साधन है।

सोवियत यूनियन, बुलगारिया, चेकोस्लोवाकिया, पौलैंड और हंगरी के साथ की गई मैत्री, पारस्परिक सहयोग की सन्धि का नवीनीकरण तथा जर्मन प्रजातंत्री गणराज्य के साथ पहली मैत्रीपूर्ण सन्धि इस दिशा में रोमानिया द्वारा उठाये गये महत्वपूर्ण कदम हैं। इससे रोमानिया के आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक विनिमय में काफी प्रगति हुई है। रोमानिया तथा अन्य मित्र समाजवादी राष्ट्रों के बीच उत्पादन में सहयोग की प्रगति और अनुभव के आदान-प्रदान में काफी प्रबलता आई है। रोमानिया और युगोस्लाविया के बीच सभी क्षेत्रों के सम्बन्धों में विकास हुआ है। अल्बानिया गणराज्य के साथ बहुपक्षीय पारस्परिक योगदान में काफी प्रगति हो रही है। समाजवादी राष्ट्रों के साथ आपसी मैत्री और सहयोग के सम्बन्धों में स्थायी विस्तार के लिए पार्टी तथा राज्य के नेताओं के बीच द्विपक्षीय या बहुपक्षीय वार्तालाप एवं विचारों का आदान प्रदान निरन्तर होता रहता है।

रोमानिया तथा चीन के जनवादी गणराज्य, वियतनाम का प्रजातंत्री गणराज्य, कोरिया का प्रजातंत्री जनवादी गणराज्य, वियतनाम का प्रजातंत्री गणराज्य, एवं मंगोलिया के जनवादी गणराज्य के बीच आपसी आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सहयोगमें निरन्तर प्रगति हो रही है। राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू के नेतृत्व में रोमानिया के पार्टी तथा राज्य प्रतिनिधि मण्डलों द्वारा एशिया के समाजवादी राष्ट्रों की यात्रा तथा उन देशों की पार्टी तथा नेताओं से हुई बातचीत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्यूबा, जो लैटिन अमेरिका का प्रथम समाजवादी राज्य है, के साथ मैत्री तथा पारस्परिक सहयोग के सम्बन्ध तथा पार्टी और सरकारी प्रतिनिधि मण्डल द्वारा इस देश की यात्रा भी विचारणीय है। इस भ्रमण के दौरान पारस्परिक सम्बन्ध और सहयोग की भावना और भी प्रबल हो गई है। ये सभी देश स्वतंत्र आर्थिक तथा समाजवादी विकास की ओर अग्रसर हैं। रोमानिया के राष्ट्रपति द्वारा इन देशों की यात्रा से यह प्रदर्शित होता है कि रोमानिया इन देशों के साथ दीर्घकालिक सहयोग की भावना की प्रगति चाहता है। रोमानिया के विचार में इन राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों के निरन्तर विकास से अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रोमानिया की स्थिति मजबूत होगी, आर्थिक तथा राजनैतिक स्वतन्त्रता की रक्षा हो सकेगी तथा शक्ति-प्रदर्शन और उपनिवेशवाद की पूंजीवादी नीति के विरुद्ध सम्मिलित संघर्ष किया जा सकेगा। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संदर्भ में विधि-सिद्धान्तों और नैतिकता की भी प्रगति संभव हो सकेगी। समाजवादी तथा प्रगतिशील राज्य होने के नाते, रोमानिया का यह विश्वास है कि अफ्रो-एशियन तथा लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों के स्वतंत्र आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विकास के मूल उद्देश्यों की

प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन सर्व प्रथम अपने प्रयास को तीव्र करना, सम्पूर्ण भौतिक सम्पदा तथा जनशक्ति का उपयोग करना, तथा प्रत्येक राष्ट्र में प्रगतिशील तथा विकसित शक्तियों का केन्द्रीयकरण करना है। किसी देश की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति तथा जनसाधारण द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गये आन्दोलनों का रोमानिया पूर्ण रूपेण समर्थन करता है।

रोमानिया विश्वास करता है कि संसार के समक्ष सबसे गंभीर समस्या उपनिदेशवाद तथा नव-उपनिवेशवाद के अन्त करने की है। ऐसे सभी राष्ट्रों के स्वतंत्रता-संग्राम में रोमानिया सक्रिय सहयोग प्रदान करता है जिनकी जनता अब भी उपनिवेशवादी प्रभुत्व में है। रोमानिया उन राष्ट्रीय आन्दोलनों की अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता के लिए सतत प्रयत्नशील है जो जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप तथा जनता के वास्तविक प्रतिनिधियों द्वारा संचालित है। आज जबकि आर्थिक, राजनैतिक तथा सैनिक आधिपत्य के प्रत्येक साम्राज्यवादी अवशेष की समाप्ति के लिए दुनियां भर में निरन्तर प्रचण्ड संघर्ष हो रहा है; रोमानिया, जनता के इस अधिकार का प्रबल समर्थन करता है कि वे अपने देश के स्वामी हों तथा अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करने का उनका अधिकार बना रहे। रोमानिया विश्वास करता है कि प्रत्येक राष्ट्र का यह प्रभुसत्तात्मक अधिकार है कि वह राष्ट्रीय सम्पत्तियों का प्रयोग जनता की आकांक्षाओं एवं हितों को ध्यान में रख कर करे और यह तभी संभव हो सकता है जब साम्राज्यवादी तथा उपनिवेशवादी प्रवृत्तियों का अन्त हो जाय।

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना से प्रेरित होकर तथा अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में सुधार की नीति का पालन करते हुये रोमानिया पूंजीवादी देशों से भी सहयोग-सम्बन्ध रखता है। उसका विचार है कि संसार के सारे देशों के सम्बन्धों तथा सहयोग में निरन्तर वृद्धि हो, चाहे उनका सामाजिक संगठन किसी प्रकार का हो। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में इस नीति का महत्व स्पष्ट है। रोमानिया इसके महत्व को स्वीकार करता है तथा इसके सम्वर्धन के लिए सचेष्ट है। वर्तमान समय में वस्तुत: विज्ञान तथा तकनीकी उपलब्धियाँ लोगों को विभिन्न प्रकार के साधन प्रदान करती हैं जिनसे उनके भौतिक एवं आध्यात्मिक सम्पदा की वृद्धि होती है तथा प्राकृतिक साधनों का सामाजिक कल्याण के लिए उपयोग होता है। भिन्न-भिन्न सामाजिक प्रणाली वाले देशों के सम्बन्धों में प्रगति तथा पारस्परिक लाभ के लिए सारे देशों का योगदान आवश्यक है। दुनिया में शांति एवं उन्नति के लिए तथा विश्व भर में उपलब्धियों के आदान प्रदान के लिए भी यह आवश्यक है। रोमानिया राष्ट्र के अध्यक्ष ने विकसित पूंजीवादी देशों के नेताओं से जो बातचीत की है; उसके फलस्वरूप पूंजीवादी देशों से रोमानिया के सम्बन्धों में विविधता तथा प्रसार हुआ है। ऐसे अवसरों पर अत्यधिक महत्वपूर्ण अभिलेख हस्ताक्षरित हुए जिनके द्वारा उन देशों से रोमानिया के सम्बन्धों का प्रादुर्भाव हुआ। इन सम्बन्धों की विस्तृत अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया हुई तथा उन्नत एवं न्यायपूर्ण



अपने देश में आये हुए (१९७५ ई. में) अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जी. फोर्ड के साथ राष्ट्रपति चाउसेस्कू

विश्व के निर्माण के लिए तथा राजनैतिक वैमनस्य के अन्त एवं सर्वत्र शान्ति और सहयोग के विस्तार के लिए इसके विकास पर बल दिया गया।

विश्वशान्ति

एक योरोपीय देश होने के नाते, रोमानिया, योरोप के अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के विकास के लिए निरन्तर कार्यरत है। सुरक्षा की स्थापना योरोपवासियों के जीवन की मूल समस्या है तथा यह विश्वशांति एवं व्यवस्था के लिए आवश्यक तत्व है। वस्तुतः योरोप में शांति की स्थापना सम्पूर्ण विश्व के तनावपूर्ण राजनैतिक सम्बन्धों को एक नयी दिशा प्रदान करने में सक्षम हो सकेगी। जनवरी १९७२ में शान्ति सुरक्षा तथा सहयोग के लिए बारसा-सन्धि की प्राग विज्ञप्ति को बनाने में रोमानिया ने सक्रिय भाग लिया है। यह सन्धि योरोप की सुरक्षा तथा महाद्वीपों के देशों के बीच सम्बन्धों की मूल भावनाओं को दर्शाती है। आक्रमण-निषेध, हिंसा का त्याग, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व, आपसी अच्छे सम्बंध, शान्ति के लिए सहयोग, पारस्परिक भलाई के लिए देशों में आपसी सम्बन्ध, निशस्त्रीकरण तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देशों का पालन बारसा सन्धि की मूल भावना है। समाजवादी सिद्धान्तों में आस्था रखने वाले प्रत्येक देश के लिए आचार-संहिता के रूप में इन सिद्धान्तों के महत्व को स्वीकारा गया।

रोमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी तथा मंत्रिपरिषद ने यूरोप की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये यह निर्णय लिया है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता और स्वायत्तता के आधार पर योरोप के देशों में नवीन सम्बन्धों की संरचना में निरन्तर सहयोग किया जाना चाहिए। शक्ति-प्रयोग तथा हिंसा की धमकी का परित्याग करके समस्त देशों की आपसी एकता की दिशा में प्रयत्न होना चाहिये। प्रत्येक देश को यह आश्वासन दिया जाना चाहिए कि बाहरी आक्रमण से उसकी सुरक्षा की जायेगी। साथ ही जन साधारण की आकांक्षाओं के अनुसार देश के विकास की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिये। किसी प्रकार के हस्तक्षेप की नीति का बहिष्कार किया जाना चाहिये। पूर्ण समानता के आधार पर समस्याओं के समाधान के लिए वातावरण का निर्माण होना चाहिये।

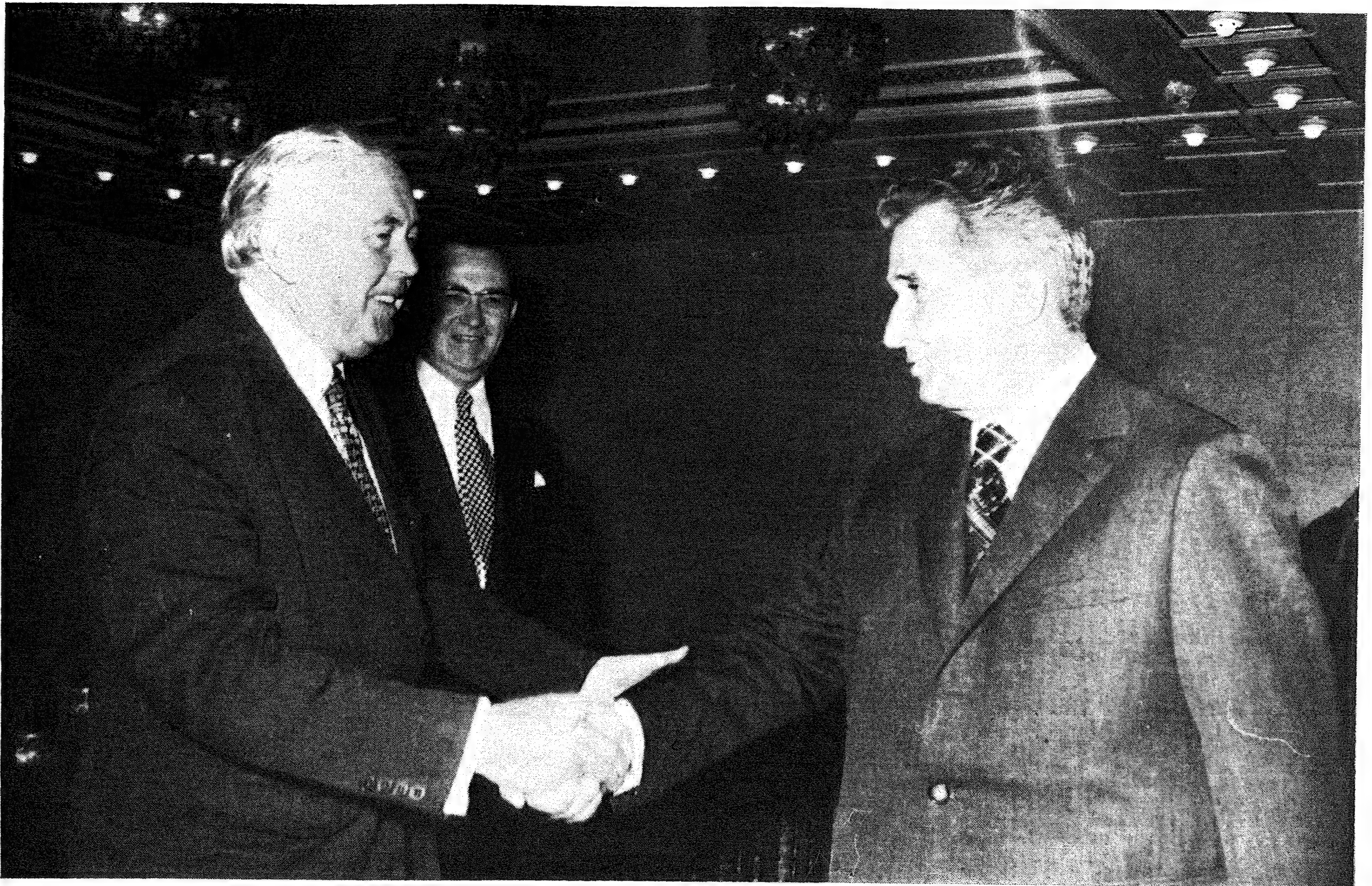
आज विश्व का प्रत्येक सभ्य देश युद्ध की विभिषिका से परिचित हो चुका है। द्वितीय विश्वयुद्ध की याद अभी भी आ जाती है। जन-मानस आज पुनः युद्ध में संलग्न होने के लिये तैयार नहीं है। इन बातों को ध्यान में रख कर ही विभिन्न स्तर पर संधियों तथा वार्तालाप के द्वारा समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रयत्न किया जाता है। रूस-पश्चिमी जर्मनी तथा पौलैंड-पश्चिमी जर्मनी के बीच हुई सन्धियां, पश्चिम बर्लिन में हुआ चार शक्तियों के बीच समझौता, जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक तथा फेडरल जर्मन रिपब्लिक के बीच हुई सन्धि जो दोनों के बीच सम्बन्धों का आधार थी, दोनों जर्मनों के बीच सुलह और समझौते जर्मन डिमोक्रेटिक रिपब्लिक तथा पश्चिमी बर्लिन की संसद के बीच तथा पश्चिमी जर्मनी

और चेकोस्लोवाकिया के बीच हुये समझौते इस बात के यथेष्ठ प्रमाण है। रोमानिया और कौस्टिरीका के बीच १९७३ की मैत्री पूर्ण सन्धि तथा १९७० की अर्जेन्टाइना क साथ सन्धि तथा गिनिया के साथ मैत्री और सहयोग पूर्ण सन्धि इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

योरोप की राजनैतिक विचारधारा में भी विशेष परिवर्त्तन हुआ है। योरोप की सुरक्षा तथा सहयोग के लिए एक स्थायी व्यवस्था के निर्माण की भावना सिर्फ वार्त्तालाप तक ही सीमित नहीं है वरन् एक तथ्य के रूप में परिवर्त्तित हो गयी है। सुरक्षा तथा सहयोग के लिए योरोपीय देशों के बीच अधिवेशन तथा कार्यवाही के बीच हुये समझौते इस बात का संकेत देते हैं कि मूलभूत तथ्यों पर योरोपीय एकता संभव है। पूर्ण समान अधिकार, राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता की रक्षा, आन्तरिक तथा वैदेशिक नीति में अहस्तक्षेप और परस्पर सौहार्द पूर्ण सम्बन्ध का विकास ही एकता की स्थापना में सहायक तथ्य हो सकते हैं। विश्व के सभी देश इन सिद्धान्तों के महत्व को स्वीकारते हैं। इस भावना के प्रचार और प्रसार में रोमानिया का अन्यतम योगदान है। विभिन्न देशों के साथ हुई सन्धियों और संयुक्त विज्ञप्तियों में रोमानिया की इस भावना की स्पष्ट रूपरेखा मिलती है। रोमानिया के लोगों ने सुरक्षा तथा पारस्परिक सहयोग के लिये हुए सम्मेलनों की सफलता का स्वागत किया है तथा उन्हें राजनैतिक और ऐतिहासिक महत्व का बताया है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सद्भावना का विकास तथा मानवीय विकास के लिए इन कदमों की आवश्यकता अपरिहार्य है। रोमानिया गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा सुरक्षा एवं सहयोग अधिवेशन के प्रथम अधिनियम पर हस्ताक्षर किया जाना रोमानिया के लोगों तथा अन्य योरोपीय राष्ट्रों के हित के लिए महत्वपूर्ण है।

नई सामाजिक प्रणाली की रचना एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शांति की भावना से प्रेरित होकर रोमानिया अन्य राष्ट्रों के साथ अधिवेशन के आयोजनों की व्यवस्था तथा अभिलेखों के प्रचार के लिए निरन्तर सक्रिय रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में नये सिद्धान्तों और विकल्पों की अभिपुष्टि प्रजातांत्रिक रीतियों की प्रगति तथा सहयोग की दिशा में रोमानिया का प्रयास सराहनीय है। रोमानिया का विश्वास है कि अधिवेशन के फैसले को उच्च स्तर पर कार्यन्वित किये जाने से किसी भी समस्या को परस्पर वार्तालाप के माध्यम से सुलझाया जा सकेगा; समानता के अधिकारों का पूर्णतया पालन किया जा सकेगा, राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता की अवहेलना नहीं की जायेगी और विश्व शांति के मार्ग में आने वाली बाधाओं का शमन किया जा सकेगा। शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पूर्ण संसार का विकास संभव हो सकेगा। रोमानिया का विश्वास है कि यूरोपीय अधिवेशन द्वारा निर्धारित मार्ग एक नई व्यवस्था का सृजन करने में सक्षम होगा जहां एक राष्ट्र दूसरे से पूर्ण सहयोग करेंगे तथा आपसी विश्वास का वातावरण दृढ़ होगा।

योरोपीय देशों में शांति और सुरक्षा स्थापित करने की दिशा में दूसरा महत्वपूर्ण कदम प्रत्येक राष्ट्र के बीच सहयोग सम्बन्धों की स्थापना है। बहुत लम्बे समय तक



राष्ट्रपति चाउसेस्कू, अपने देश की यात्रा पर आये हुए (१९७५ ई.) में तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री हैरोल्ड विल्सन का स्वागत करते हुए

योरोपीय देशों के बीच संदेह का वातावरण रहा है जिसका दुष्परिणाम समाज को भोगना पड़ा है। रोमानिया का विश्वास है कि अब समय आ गया है जब कि प्रत्येक देश एक दूसरे से खुलकर मिलें तथा भाईचारे और विश्वासपूर्ण वातावरण की सृष्टि करें। इसका तत्काल फायदा यह होगा कि आपसी तनाव की स्थिति का अन्त हो जायेगा तथा प्रगति की गति तेज हो जायेगी। विश्व शांति को देखते हुए यूरोपीय देशों के मध्य तनावपूर्ण वातावरण का अन्त बहुत महत्वपूर्ण है।

योरोपीय देशों में तनावपूर्ण स्थिति का अन्त करने तथा विश्व शांति की स्थापना के लिए, रोमानिया, सैनिक गुटों का अन्त चाहता है क्योंकि इस प्रकार के सैनिक गुटों की स्थापना से राज्यों के भीतर आपसी सहयोग के वातावरण की स्थापना असंभव है। अविश्वास के वातावरण का अन्त नहीं किया जा सकता। प्रत्येक समाजवादी देश इस दिशा में कार्यरत है कि उत्तरी अटलांटिक सन्धि तथा वारसा सन्धि का अन्त हो। साथ ही, रोमानिया, विदेशी सैनिक अड्डों को अन्त करने की बात भी सोचता है। रोमानिया चाहता है कि विदेशी सैनिक वापस बुला लिए जायं। संसार के सभी देश रोमानिया के इस विचारं से सहमत हैं। रोमानिया के इस विचार का महत्त्व इस बात से है कि अगर सैनिक गुटों और सैनिक अड्डों का अन्त हो गया तो तनावपूर्ण स्थिति का स्वतः अन्त हो जायेगा और साथ ही अविश्वास के वातावरण का भी।

रोमानिया का यह विश्वास है कि सैनिक मुठभेड़ की समाप्ति तथा वास्तविक सुरक्षा के वातावरण लिए एक आवश्यक उपाय योरोप तथा विश्व के अन्य महाद्वीपों में अणुशस्त्र रहित क्षेत्रों का निर्माण है। इस भावना से प्रेरित होकर रोमानिया यह चाहता है कि बालकन क्षेत्र विदेशी सेनाओं तथा अन्य सैनिक अड्डों से रहित हो तथा वहां कोई भी अणु हथियार न रहे। बालकन प्रदेशों के बीच शांतिपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना को रोमानिया विश्व शांति के लिए आवश्यक मानता है।

विश्व तथा योरोपीय देशों की शांति और सुरक्षा के लिए रोमानिया निःशस्त्रीकरण, विशेषकर आणविक निःशस्त्रीकरण, की नीति के पालन को आवश्यक मानता है। रोमानिया चाहता है कि ऐसे ठोस कदम उठाये जायं जिससे आणविक हथियारों का निर्माण बन्द हो तथा आणविक अस्त्रों के केन्द्रीयकरण को अवैध घोषित कर दिया जाय। तभी वास्तविक सुरक्षा की गारंटी दी जा सकती है। आणविक शक्ति का विकास आधुनिक विज्ञान की सब से बड़ी उपलब्धि है। आणविक शक्ति का प्रयोग मानव समुदाय के कल्याण के लिए होना चाहिए। रोमानिया का विचार है कि सभी देशों को आणविक प्रयोग की छूट मिलनी चाहिए अगर वह जनकल्याण के लिए प्रयोग किया जा रहा हो। अस्त्रों का निर्माण वास्तव में आधुनिक मानव को ज्वालामुखी के मुंह पर ला खड़ा करता है। किसी भी समय विस्फोट हो सकता है और परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण मानव समाज को दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा।

इसीलिए रोमानिया चाहता है कि बड़े राष्ट्रों के बीच अस्त्र-होड़ की परम्परा का अन्त हो तथा आणविक प्रयोग को विश्व कल्याण की दृष्टि से उन्नत किया जाय। इस संदर्भ में रोमानिया विश्व के आणविक शक्ति में उन्नत राष्ट्रों के बीच एक समझौता चाहता है। रोमानिया चाहता है कि विश्व के उन्नत राष्ट्र इस बात की गारंटी दें कि भविष्य में आणविक अस्त्रों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाया जायगा तथा उसका प्रयोग शांतिपूर्ण उपायों के लिए होगा जिससे मानव समाज विनाश के गर्त्त में जाने से बचे।

रोमानिया साइप्रस की समस्या के लिए भी शान्तिपूर्ण हल चाहता है। इसके अनुसार ऐसा उपाय किया जाना चाहिए जिससे साइप्रस की अखण्डता तथा स्वायत्तता बनी रहे तथा दोनों समुदायों में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और सहयोग बना रहे। साइप्रस समस्या का शांतिपूर्ण समाधान ग्रीक, तुर्की तथा साइप्रस के सम्पूर्ण लोगों के हित में होगा। जिससे केवल बालकन में ही शान्ति और सहयोग नहीं बढ़ेगा वरन् योरोप तथा सारे संसार में शांति की भावना बढ़ेगी।

योरोपीय सुरक्षा के अधिवेशन की सफलता योरोप के लोगों की शान्ति तथा जीवन निर्धारण करने वाले उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अति आवश्यक है। इस सभा के उच्चतम स्तर पर लिये गए निर्णय तथा उन अभिलेखों की मान्यता महत्वपूर्ण है जिनके अनुसार महाद्वीप के लोगों ने यह प्रण किया है कि योरोप तथा सारे विश्व में सहयोग तथा शान्ति का युग आरम्भ किया जाये। रोमानिया का विश्वास है कि शान्ति और सुरक्षा तब तक प्राप्त नहीं होगी जब तक दोषयुक्त परिस्थितियाँ समाप्त नहीं की जातीं तथा शक्ति और धमकी का तिरस्कार करके नये सम्बन्ध स्थापित नहीं होते। साथ ही दूसरे देशों के मामले में हस्तक्षेप खत्म होना चाहिए। ऐसे सम्बन्धों की स्थापना होनी चाहिए जिन से संसार तथा यूरोप के अन्य देशों में समानता और सहयोग का वातावरण पैदा हो।

जहां तक मध्य पूर्व का प्रश्न है, रोमानिया निरन्तर सारे देशों की समानता के आधार पर इस स्थिति का समाधान प्रस्तुत करता है जिससे प्रत्येक वर्ग को यह अधिकार हो कि वह स्वतंत्र एवं स्वच्छंद रूप से अपना विकास कर सके तथा जन कल्याण और सुख का भागी हो। मध्यपूर्व में निरन्तर संघर्ष की स्थिति विश्व शांति एवं सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। विश्व के इस क्षेत्र में शीघ्र स्थायी तथा न्याय पूर्ण शांति स्थापना के लिए निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है। इस दिशा में प्रारम्भिक रूप से १९६७ के युद्ध में इजराइल द्वारा अधिकृत अरब भूमि का खाली करना आवश्यक है तथा पैलेस्टाइन के लोगों की समस्या, एक स्वतंत्र पैलेस्टाइन राष्ट्र, बना कर ही दूर की जा सकती है। मध्यपूर्व की समस्याओं का समाधान, उस क्षेत्र के सारे देश की अखंडता तथा स्वायत्तता के आधार पर होना चाहिये जिससे समझौते, शान्तिपूर्ण सहयोग के नये युग का आरंभ हो। इससे व्यापक लाभ यह होगा कि मध्यपूर्व के सारे देश सामाजिक और आर्थिक उन्नति की ओर सहयोग और शांतिपूर्ण वातावरण में अग्रसर हो सकेंगे। रोमानिया का विश्वास है कि मध्यपूर्व की समस्याओं के



अपनी इंगलैंड-यात्रा के अवसर पर (१९७५ ई.) तत्कालीन ब्रिटिश
प्रधान मंत्री श्री हैरोल्ड विल्सन के साथ श्री चाउसेस्कू

राजनैतिक समाधान के लिए जेनेवा सम्मेलन का पुन: अधिवेशन एक आवश्यक चरण है। साथ ही सम्मेलन में और देशों को सम्मिलित कर इसके स्वरूप तथा कार्यक्रम का विस्तार किया जाना चाहिये। रोमानिया संसार के सभी देशों से अपील करता है कि मध्यपूर्व की गम्भीर स्थिति को देखते हुए इसका राजनैतिक समाधान आवश्यक है। चाहे कोई राष्ट्र जेनेवा सम्मेलन का सदस्य हो या नहीं उसे इस समस्या के समाधान प्रस्तुत करने का पूर्ण अवसर प्रदान किया जाय। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र की विधान-सभा तथा सुरक्षा परिषद द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका आवश्यक है।

गिनि विसाओ, मोजम्बीक, अंगोला तथा पुर्तगाल के अन्य उपनिवेशों की स्वतंत्रता का रोमानिया स्वागत करता है तथा यह विश्वास रखता है कि हर देश में राष्ट्रीय स्वतंत्रता की शक्तियां एकाग्र होंगी तथा स्वतंत्र जीवनयापन में विशेष सफलता मिलेगी। रोमानिया समाजवादी गणराज्य ने इन राष्ट्रों के स्वतंत्रता-संग्राम में सर्वदा भौतिक, राजनैतिक तथा कूटनीतिज्ञ सहायता प्रदान की है। जहां तक राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम का प्रश्न है रोमानिया ने प्रत्येक स्तर पर सहयोग किया है ताकि स्वतंत्र रूप से उस देश का विकास संभव हो सके। इन देशों की स्वतंत्रता-प्राप्ति से जाति तथा वर्ण-भेदभाव का अन्त हो जायगा और अफ्रीका की जनता के स्वतंत्र विकास के लिये परिस्थितियों का सृजन होगा।

रोमानिया की जनता वियतनामी तथा कम्बोडियाई लोगों का अभिवादन करती है। वियतनामी लोगों ने ३० वर्ष के संघर्ष के बाद, विदेशी हस्तक्षेप तथा देश के अन्दर राष्ट्र-विरोधी तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की है और अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हो गये हैं। रोमानिया ने अनेक रूप से वियतनाम तथा कम्बोडिया के संग्राम में सहायता दी है तथा इन्डोचीन के लोगों को विश्वास दिलाया है कि सैनिक एकता की भावना से वह नई परिस्थितियों में बहुपक्षीय सहयोग-प्रदान करता रहेगा। क्योंकि उसका विश्वास है कि लोगों के स्वतंत्र विकास की नई परिस्थितियां, शांति तथा स्वतंत्रता चाहने वाले सम्पूर्ण लोगों के साथ संगठन तथा सहयोग बढ़ायेंगी। वियतनाम तथा कम्बोडिया के लोगों की विजय यह सिद्ध करती है कि शोषण तथा जनता को दबाने की नीति का अंत अवश्यंभावी है। विश्व की कोई शक्ति आर्थिक और सामाजिक उन्नति एवं स्वतंत्र जीवन के लिए संघर्ष करने वाली जनता को नहीं दबा सकती। उसकी विजय होगी ही।

विश्व के तनावपूर्ण वातावारण, संघर्ष एवं युद्ध के सभी कारणों का अन्त करना रोमानिया की विदेश नीति का प्रमुख अंग है। वारसा संधि के समाजवादी देशों की बुखारेस्ट बैठक में विश्व के तनावपूर्ण स्थितियों की समाप्ति के लिए विचार विमर्श किया गया। श्री चाउसेस्कू इस बैठक के कर्णधार थे। इस बैठक ने जो संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित की उसमें विश्व के सभी राष्ट्रों से अपील की गई थी कि युद्ध के कारणों का तथा तनावपूर्ण स्थिति के अन्तके लिये कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। उस विज्ञप्ति में बहुत सारी समस्याओं की ओर संकेत किया गया था। यह पहला अवसर था जबकि पूंजीवादी देशों ने समाजवादी देशों के सुझाव को स्वीकार किया। पूंजीवादी देशों में इसकी गहरी प्रतिक्रिया हुई और इस

विज्ञप्ति के कार्यान्वयन के लिए सही वातावरण की सृष्टि हुई। वास्तव में यह विज्ञप्ति मानव समुदाय की एक ऐसी समस्या से सम्बन्ध रखती थी जिसके समाधान के लिए हजारों प्रयत्न किये जा चुके थे। युद्ध का अन्त आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मांग है।

बुखारेस्ट बैठक के बाद समाजवादी राष्ट्रों की एक बैठक बुडापेस्ट में हुई जिसमें विश्व शांति की स्थायी स्थापना के लिए विचार विमर्श किया गया। साथ ही श्री चाउसेस्कू ने संसार के प्रायः सभी देशों से संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से उनका दौरा भी किया जिसके दौरान श्री चाउसेस्कू ने यह अनुभव किया कि सभी देशों में यह प्रवृत्ति विकसित हो रही है कि किसी भी समस्या का समाधान, बात-चीत के स्तर पर ही हो जाना चाहिए तथा राज्यों के बीच एक स्वस्थ्य सम्बन्ध का विकास होना चाहिए। सभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, जिनमें जेनेवा सम्मेलन तथा योरोप का सुरक्षा सम्मेलन सम्मिलित हैं, रोमानिया सैन्य-समूहों के अन्त तथा दूसरे देशों में सैनिक अड्डों के उन्मूलन के लिए आवाज उठाता रहा है। वह यह भी चाहता रहा है कि सेनायें दूसरे देशों से हटकर अपनी सीमा में वापस हों। रोमानिया किसी भी शक्ति-प्रदर्शन की अवहेलना करता है जो कि तनाव पैदा करे या ऐसे कार्य, जिससे शस्त्र प्रतियोगिता बढ़े।

निःशस्त्रीकरण के सन्बन्ध में श्री चाउसेस्कू का कथन है कि "निःशस्त्रीकरण के लिए जनता की महान् उत्कंठा केवल विश्व-शांति के लिए ही आवश्यक नहीं है वरन् सम्पूर्ण मानव-जाति के सांस्कृतिक विकास एवं प्रगति के अनुकूल वातारण की सृष्टि भी सहायक सिद्ध होगा।" अरबों रुपये, जो शस्त्रों के उत्पादन और संग्रह पर व्यय किये जाते हैं, अगर अविकसित देशों की उन्नति पर व्यय किये जायं तो उन देशों में आर्थिक विकास की दर तेज की जा सकती है तथा उन्हें सामाजिक उत्पादन की तरफ अग्रसर कराया जा सकता है। ऐसी नीतियों के पालन से यह संभव होगा कि आर्थिक सांस्कृतिक-सामाजिक-विकास में देशों के बीच असमानता को समाप्त किया जा सकेगा तथा पिछड़े देशों को आर्थिक सहायता प्रदान कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकेगा।

रोमानिया का यह विश्वास है कि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें, अन्तर्राष्ट्रीय विधि के पालन तथा अन्तर्देशीय सम्बन्धों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। रोमानिया संयुक्त राष्ट्र का एक सक्रिय सदस्य है। साथ ही, रोमानिया संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्गत अन्य संस्थाओं जैसे जी०ए०टी०टी० आदि के सदस्य भी हैं। रोमानिया तथा अन्य राष्ट्रों के नेतृत्व के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ ने अनेक उपयोगी प्रस्ताव पारित किए हैं। क्षेत्रीय कार्यों में विकास, भिन्न-भिन्न सामाजिक पद्धति वाले देशों में आपसी सद्भाव, युवक वर्ग में शान्ति के आदर्श, लोगों के आपसी सहयोग अभिज्ञान में प्रसार, विज्ञान एवं औद्योगिक राष्ट्रों के विकास में सहयोग, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग की आवश्यकता आदि से सम्बन्धित कुछ ऐसे प्रस्ताव हैं, जिन्हें पारित कराने में रोमानिया का सक्रिय हाथ रहा है। मनुष्य मात्र की समस्याओं के समाधान तथा शांति और उन्नति के लिए रोमानिया का यह विश्वास है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के उत्तरदायित्व में वृद्धि की जानी चाहिए, तथा



राष्ट्रपति ए. सादात एवं राष्ट्रपति चाउसेस्कू का
पारस्परिक नव-मैत्री मिलन

संयुक्त राष्ट्रसंघ को अधिक तत्परता के साथ अपने चार्टर का पालन करना चाहिए। रोमानिया यह भी चाहता है कि विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय विधि के सिद्धान्त मान्य हों। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में धमकी तथा शक्ति-प्रयोग का अन्त करना भी संयुक्त राष्ट्र संघ का ही कार्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ को इस पर दृढ़ता से आचरण करना चाहिए। साथ ही राष्ट्र सम्बन्धित सिद्धान्तों के सारे निर्णयों और प्रस्तावों का पालन भी दृढ़तापूर्वक करवाना चाहिए। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय जीवन के सुधार तथा विश्वास के वातावरण की सृष्टि में योग दे सकता है। तभी अन्तर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना हो सकती है। आज जबकि तनाव और युद्ध की स्थितियां बनी हुई हैं, यह परमावश्यक हो गया है कि राजनैतिक समस्याओं का समाधान आपसी वार्तालाप से हो न कि बल प्रयोग तथा आक्रमण से। इस तरह से विश्व शांति की स्थापना में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है।

रोमानिया संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रबल समर्थक है। उसका विश्वास है कि विश्व स्तर पर संगठित संस्था को मजबूत बनाने तथा उसके आदर्शों के पालन से ही विश्व शांति की स्थापना की जा सकती है। रोमानिया जानता है कि इस आदर्श की पूर्त्ति में बाधायें भी कम नहीं हैं, राष्ट्रीय समस्या तथा वातावरण इसके विकास में बाधक तत्व हैं लेकिन फिर भी एक विशेष बिन्दु पर समन्वय की स्थापना संभव है। रोमानिया मानव कल्याण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर त्याग करने के लिए भी तैयार है और संसार के अन्य देशों से भी आशा रखता है कि अनुकूल आचरण द्वारा विश्व शांति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ायें। इतना निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अगर संसार का प्रत्येक राष्ट्र राष्ट्रीय भावना से ऊपर उठकर, आपसी वैमनस्य को भूलकर सिर्फ मानव कल्याण के ठोस धरातल पर समस्याओं के निदान की दिशा में प्रयत्न करता है तो निश्चित रूप से विश्व में शांति होगी।

विश्व शांति आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। देश का विकास तथा संसार का विकास सिर्फ शांति के वातावरण में ही संभव है। निरन्तर तोड़फोड़ और विध्वंस मानवीय चेतना को झकझोर कर रख देते हैं। फलतः अनिश्चितता के वातावरण में विकास की कल्पना निरर्थक है। यह तो साधारण अनुभव की बात है कि शांति तथा सहयोग के वातावरण में ही अधिकतम कार्य के लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है। विश्व-युद्ध आज की सभ्यता के माथे पर एक कलंक है। द्वितीय विश्व-युद्ध की घटनाएं अभी धूंधली नहीं पड़ीं। मौत का नंगा नाच हुआ। करोड़ों लोगों की बलि दी गयी, अरबों, खरबों की सम्पत्ति का विध्वंस हुआ। मानव के द्वारा मानव की हत्या का प्रयास मानवीय सभ्यता की सबसे निन्दनीय घटना है। युद्ध की बर्बरता आज के विकसित मनुष्य को सोचने पर मजबूर कर देती है। इसका अन्त होना ही चाहिए।

प्रत्येक देश, प्रत्येक राष्ट्र अपना विकास चाहता है, चाहे वह विकास आर्थिक हो या राजनैतिक। लेकिन विकास वह किसके लिए चाहता है। वह तो विकास मात्र मनुष्य के लिए ही चाहता है। मानव प्रकृति की सबसे सुन्दर रचना है उसे एक खिलौना नहीं

समझा जा सकता है। प्रकृति की सम्पदाओं का उपभोग भी मनुष्य ही कर सकता है। ऐसी स्थिति में प्राकृतिक साधनों के सन्दर्भ में मानवीय विकास ही मूल तत्व है और युद्ध के नाम पर इसी की हत्या कर दी जाती है। श्री चाउसेस्कू ने इस सत्य का साक्षात्कार किया है। जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में जीने वाला यह सिर्फ एक राजनेता ही नहीं विचारक भी हैं। प्रत्येक स्थितियों में जीने के बाद प्रत्येक सुख दुख के थपेड़ों को झेलने के बाद मानवीय संवेदनाओं के जिस सत्य का उन्होंने साक्षात्कार किया है वह वास्तव में दुनिया के सामने एक मिसाल के रूप में रखा जा सकता है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जो निरन्तर मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष करता रहा। सबसे ऊपर मानव को स्थापित करना ही इस स्वप्न-द्रष्टा का आदर्श है। उसका यह दृढ़ विश्वास है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब प्रत्येक देश मानव की श्रेष्ठता को स्वीकार करेगा और उसी को ध्यान में रखकर नीतियों का निर्माण होगा तथा सम्पूर्ण संसार में एक ऐसे वातावरण की सृष्टि होगी जो मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत होगा।

श्री चाउसेस्कू युद्ध की भावनाओं का अन्त चाहता हैं। युद्ध में जितना विनाश होता है उसे अगर मानव कल्याण के लिए खर्च किया जाय तो सभ्यता का रूप ही बदल जायेगा। वह सोचते हैं युद्ध मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक है? क्या जरूरत है कि विध्वंसक अस्त्रों का निर्माण तथा संचय किया जाय? क्या जरूरत है कि सेनाओं का संगठन किया जाय? यह तो मानवीय आवश्यता नहीं है। इस बिन्दु पर वह मानवीय असफलताओं को स्वीकार करता है। आज का प्रबुद्ध मानव इस समस्या का समाधान नहीं ढूंढ़ सका है। प्रयत्न नि:संदेह हुए हैं लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। आज भी देशों के पास विनाशकारी अस्त्रों का भंडार भरा पड़ा है। इनकी विनाश शक्ति इतनी अधिक है कि आईन्स्टीन ने कहा था कि अगर तृतीय विश्व युद्ध हो गया तो फिर कोई युद्ध नहीं होगा। उनकी इस उक्ति का आशय यह था कि इस युद्ध में विनाश इतना अधिक होगा कि फिर देखने वाला कोई नहीं होगा। श्री चाउसेस्कू इस बात को जानते हैं और आज का मानवीय समाज के जो अस्त्रों की ज्वालामुखी पर बैठा है, के लिए चिंतित हैं। उनके सामने संसार की यह स्थिति स्पष्ट है। वे निरन्तर प्रयत्नशील हैं कि मानवीय सभ्यता के इस कोढ़ का अन्त कर दिया जाय।

अन्य राष्ट्रों के दौरे तथा वहां की राजनैतिक पार्टियों और नेताओं से वार्ताओं के दौरान चाउसेस्कू ने बराबर ही इस समस्या को उठाने का प्रयास किया है। आपसी विचार विमर्श के दौरान इसे महत्व दिया है। अगर उनके द्वारा की गयी संधियों और संयुक्त विज्ञप्तियों पर एक विहंगम दृष्टि डाली जाय तो यह बात अधिक स्पष्ट हो जायगी। लगता है कि रोमानिया की विदेश नीति में मानवीय भावना और विश्व शांति ये ही प्रमुख तत्व हैं। विश्व शांति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाला यह महामानव अपने विचारों को व्यक्त करने में निर्भीक है। इनके विचार इतने सटीक और सुलझे हुए हैं कि संसार के अन्य राष्ट्र भी इन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रोमानिया को जिन गंभीर संकटों का सामना करना पड़ा है, चाउसेस्कू ने उसे भोगा है, रोमानियावासियों की दुर्दशा मे वह साथ था, देश की उन्नति के लिए वह बचपन से ही प्रयत्नशील रहा है, रोमा-

निया की उन्नति की प्रतिज्ञा लेकर हजारों कष्टों के बावजूद अपनी मंजिल तक पहुचने में वह सफल हुआ है। अनुभवों का विस्तृत भंडार लेकर अब वह विश्व कल्याण की ओर मुड़ा है। संसार इनके विचारों के सामने एक दिन घुटने टेक देगा। रोमानिया की महानतम् विभूति एक दिन संसार की विभूति बन जायेगी।

रोमानिया एक समाजवादी देश है। समाजवादी देशों के साथ इसके सम्बन्ध समाजवादी दृष्टिकोण पर आधारित हैं। आज विश्व स्तर पर एक भ्रान्ति-सी फैली हुई है कि कोई भी समाजवादी राष्ट्र हो वह रूस के निर्देशन पर ही चलता है तथा कट्टरता इसका स्वाभाविक गुण है। श्री चाउसेस्कू ने इस धारणा का खण्डन ही नहीं किया वरन् अपने कार्यों से यह प्रमाणित कर दिया है कि रोमानिया एक सर्वप्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र है और देश के वातावरण के अनुरूप नीतियों के निर्धारण में सक्षम है। साधारणत: यह सोचा जाता रहा है कि समाजवादी नीतियों को मानने वाले सारे राष्ट्रों में एक सी व्यवस्था होगी, एक सी नीति होगी और उससे अलग हटकर कुछ भी करना, समाजवाद से अलगाव की प्रवृत्ति है। श्री चाउसेस्कू ने इस धारणा में सुधार की आवश्यकता का अनुभव किया है। उनका कहना है कि देश की व्यवस्था, उसके वातावरण किसी सिद्धान्त की सफलता के लिए निर्णायक तत्व हैं। दूसरे की नकल मात्र से सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। वरन् गंभीर विवेचन के पश्चात् ही कोई समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप की नीति विकास के मार्ग में बहुत बड़ा बाधक है। कम्युनिज्म किसी भी देश में हो सकता है लेकिन देश की स्थितियों के अनुरूप उसकी रूपरेखा तथा कार्यक्रम भिन्न होंगे। इस भिन्नता का अर्थ कम्युनिज्म का अभाव नहीं है वरन् उसका सही विकास है। अपने इस क्रान्तिकारी विचारों के कारण संसार के कई समाजवादी देशों ने उसकी कटु आलोचना की है। लेकिन वे अपने विचारों पर अडिग रहे। विश्व शांति के संदर्भ में उनके इन विचारों की उपयोगिता नि:संदेह बहुत अधिक है। प्रत्येक राष्ट्र की स्वतंत्रता तथा स्थितियों के अनुरूप विकास की गारंटी उनके विचारों की बहुत बड़ी देन है।

इन विचारों की ध्यान में रखकर पूंजीवादी राष्ट्रों के साथ समन्वय की उनकी नीति काम करती रही। मूलरूप से वे समाजवादी हैं, मार्क्स और लेनिन के विचार उनकी आत्मा हैं लेकिन सहअस्तित्व की धारणा में भी उनका दृढ़ विश्वास है। वे इस बात को स्वीकारते हैं कि संसार आज दो खेमों में विभक्त है--पूंजीवादी और साम्यवादी। दोनों के पास शक्तियों की कमी नहीं है और दोनों के पास अच्छाइयां हैं। विश्व शांति में दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस दृष्टिकोण से इन्होंने पूंजीवादी देशों के साथ अपने सम्बन्धों का विस्तार किया है। प्रेसिडेन्ट निक्सन को दिये गये भोज के अवसर पर उन्होंने कहा था कि पूंजीवादी देशों के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक और तकनीकी विकास, क्या समाजवादी और क्या पूंजीवादी, सम्पूर्ण मानव समुदाय के विकास के लिए आवश्यक है। इसमें किसी प्रकार की द्वेषपूर्ण भावना की सृष्टि मानव समाज को

विनाश के गर्त्त में ढकेल देगी । साथ ही उन्होंने विश्व शांति के लिए इन देशों की भूमिका को महत्वपूर्ण बतलाया था । श्री निक्सन ने भी इनके विचारों की सराहना की थी और दोस्ती के लिए अपना हाथ बढ़ाया था ।

श्री चाउसेस्कू निरन्तर उचित बातों का समर्थन करते हैं । वे पक्षपातपूर्ण नीति के कट्टर विरोधी हैं । इस संदर्भ में एक घटना विशेष रूप से उल्लेखनीय है । जब रूस-चीन विवाद हुआ था और दोनों देशों ने एक दूसरे पर कीचड़ उछालने शुरू किये थे रोमानिया ने कड़े शब्दों में इसकी निन्दा की थी और इस स्थिति को खेदपूर्ण बताया था । उन्होंने दोनों देशों की गलतियों को दर्शाया था और समस्या का समाधान बात-चीत के स्तर पर करने का सुझाव दिया था । फिर जब चेकोस्लोवाकिया में सैनिक हस्तक्षेप हुआ था तो उन्होंने इस हस्तक्षेप की भी निन्दा की थी । उनका कहना था कि कोई भी देश अपने आन्तरिक मामलों में स्वतंत्र है, वह क्या निर्णय लेगा यह उसकी परिस्थितियों और वातावरण पर निर्भर है, फिर हस्तक्षेप क्यों ? हस्तक्षेप करने का अर्थ उनकी दृष्टि में पाशविक शक्तियों को प्रोत्साहन देना और विकास को कुंठित करना है । उन्होंने टीटो की तटस्थता की नीति का समर्थन किया था और उनकी प्रशंसा भी की थी । श्री चाउसेस्कू की प्रगतिशील नीतियों के कारण रोमानिया की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण संसार में बढ़ी है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विश्व शांति की दिशा में रोमानिया द्वारा किए गये प्रयत्न सराहनीय हैं । अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति में रोमानिया ने विश्व शांति की वास्तविक स्थापना के लिए व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत किए हैं । निःशस्त्रीकरण, आपसी तनाव को दूर करने के लिए सम्बन्धों में सुधार, किसी राष्ट्र के आन्तरिक मामले में अहस्तक्षेप की नीति का प्रतिपादन, राष्ट्रों की अखण्डता की नीति का समर्थन, आक्रमण, बलप्रयोग और धमकी का विरोध, स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता कुछ ऐसे तत्व हैं जिनका सही रूप से पालन करने से विश्व स्तर पर शांति की स्थापना में कोई संदेह नहीं रह जायगा ।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रजातांत्रीकरण :

रोमानिया की विदेश नीति का अन्तिम मूल तत्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रजातंत्रीकरण है । इस प्रजातंत्रीकरण का अर्थ संसार के प्रत्येक राष्ट्र के समानता के अधिकार की भावना पर आधारित है । चाहे वह छोटा राष्ट्र हो चाहे बड़ा, किसी समस्या के समाधान प्रस्तुत करने का अधिकार सभी राष्ट्र को समान है । वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इस सिद्धान्त को मान्यता दिलाने का श्रेय रोमानिया को ही है । श्री चाउसेस्कू ने दुनिया के राजनैतिक रंगमंच पर जोरदार शब्दों में इस नीति की महत्ता पर प्रकाश डाला है । उनका मत है कि किसी समस्या पर छोटे राष्ट्र द्वारा प्रस्तुत समाधान किसी भी अर्थ में कम महत्व नहीं रखते । यह एकदम आवश्यक नहीं है कि बड़े राष्ट्र जो बोल रहे हैं वही ठीक है । अतः छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों के महत्व को स्वीकारना आवश्यक है । छोटे-बड़े के बीच की खाई का

पाटना आवश्यक है, प्रत्येक राष्ट्र चूंकि चाहे छोटा या बड़ा, एक प्रभुत्व-सत्ता-सम्पन्न राष्ट्र है और सबों में वैचारिक धरातल पर उदारता का होना आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भाई-चारे और सहयोग की भावना को विकसित करने के सहिष्णुता की नीति का आलम्बन सबों के लिए आवश्यक है।

रोमानिया द्वारा प्रस्तुत नीति कोरे आदर्श पर नहीं वरन् ठोस यथार्थ पर निर्भर है। एक लम्बे समय तक परीक्षण और तटस्थ दृष्टिकोण की यह उपज है। रोमानिया इस बात को जानता है कि वैज्ञानिक एवं औद्योगिक उन्नति की वजह से विश्व के सभी राष्ट्र एक दूसरे के करीब आ गये हैं। एक का प्रभाव दूसरे पर आवश्यक रूप से पड़ रहा है। एक के लिए दूसरे के सहयोग की आवश्यकता एक आवश्यक शर्त्त है। कोई भी राष्ट्र इस स्थिति में नहीं है कि बगैर किसी के सहयोग के उन्नति के पथ पर अग्रसर हो। ऐसी स्थिति में किसी राष्ट्र की महत्ता को अस्वीकार करना एक व्यवहारिक गलती होगी। अगर एक राष्ट्र ने दूसरे से सहयोग करना बन्द कर दिया तो संसार की प्रगति पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा। बात यहीं खत्म नहीं हो जाती, सहयोग के स्थान पर आपसी वैमनस्य की सृष्टि होगी और अन्तिम परिणाम युद्ध के रूप में सामने आयेगा और आज युद्ध कोई नहीं चाहता है। अत: संसार को एक रास्ते की तलाश है—एक ऐसे रास्ते की तलाश जिस पर चलकर सभी राष्ट्र प्रगति के चरण चूमें।

इसी संदर्भ में रोमानिया अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के प्रजातंत्रीकरण की बात करता है। साथ ही रोमानिया अपने व्यावहारिक सम्बन्धों में इस सिद्धान्त का निरन्तर पालन कर रहा है तथा तदनुरूप आचरण भी कर रहा है। रोमानिया चाहता है कि वर्तमान काल में सारे राष्ट्र चाहे वह क्षेत्र के अनुसार बड़ा, छोटा या मध्यम हो, उनको अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में कुशलता से सक्रिय भाग लेना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र का शांति के हित में काफी उत्तरदायित्व होता है। प्रत्येक देश विश्व के आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन में विशेष योगदान देता है तथा मानव समाज की समस्याओं के समाधान में किसी न किसी रूप से सक्रिय होता है। अत: प्रत्येक राष्ट्र के महत्व को स्वीकारा जाना चाहिए और इसके द्वारा प्रस्तुत सुझावों का यथोचित आदर होना चाहिए।

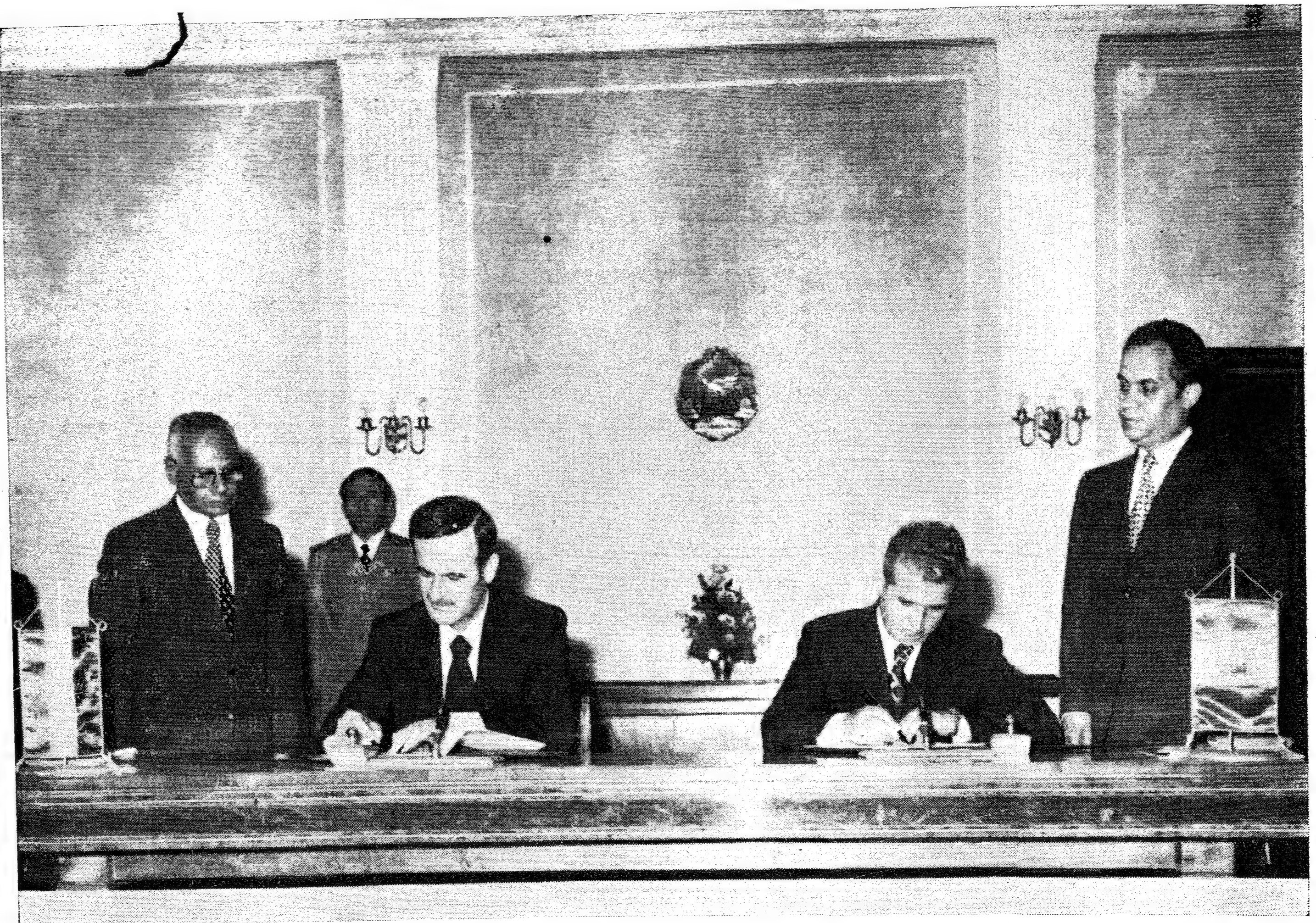
रोमानिया की इस नीति की संसार में बहुत प्रशंसा की गयी। सिर्फ समाजवादी ही नहीं, पूंजीवादी राष्ट्रों ने भी इस नीति के महत्व को स्वीकार किया है और उसके अनुरूप आचरण की घोषणा की है। रोमानिया की इस नीति ने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में रचनात्मक योगदान किया है। इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की दिशा में नये आयामों की तालाश आवश्यक है। ऐसे सम्बन्धों की सृष्टि वास्तव में सम्बन्धों को मधुर बनाती है। सम्बन्ध किसी भी प्रकार के हो सकते हैं—वह राजनैतिक, आर्थिक या सामाजिक है। राजनैतिक सम्बन्धों में सहिष्णुता एवं उदारता की नीति का पालन होना चाहिए। सम्बन्धों का निर्वाह त्याग के आधार पर होता है। रोमा-

निया त्याग और सहिष्णुता के आधार पर आधारित सम्बन्धों को सर्वश्रेष्ठ मानता है। राजनैतिक सहिष्णुता एवं उदारता के वातावरण में ही सहअस्तित्व की भावना का कार्यान्वयन किया जा सकता है। प्रत्येक राष्ट्र को इसकी जिम्मेवारी लेनी होगी तथा बुद्धिपरक होकर विकास की ओर अग्रसर होना होगा। आर्थिक सम्बन्धों के बिना आधुनिक सभ्यता के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। इतना तो निर्विवाद रूप से सत्य है कि संसार के प्रत्येक देश में प्राकृतिक साधनों का वितरण समान नहीं है। कहीं लोहा अधिक है तो कहीं कोयला। कहीं सोना अधिक है तो कहीं टीन। कहीं जंगल अधिक है तो कहीं पहाड़ अधिक हैं, कहीं उपजाऊ भूमि अधिक हैं तो कहीं रेगिस्तान है। फिर जलवायु का भी अन्तर है। एक क्षेत्र में विशेष प्रकार की फसलें पैदा हो सकती हैं तो दूसरे क्षेत्र में दूसरे प्रकार की। अर्थात् प्राकृतिक सम्पदाओं के वितरण में असमानता और जलवायु की भिन्नता की वजह से कोई देश ऐसा नहीं है जो अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति आप कर सके। ऐसी स्थिति में आर्थिक सम्बन्धों की आवश्यकता आ पड़ी है। फिर वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास भी सम्बन्धों के निर्माण में प्रमुख भूमिका अदा करता है। सम्पूर्ण संसार को आर्थिक उन्नति के लिए सम्बन्धों का महत्व अत्यधिक है। इन सम्बन्धों के अभाव में विश्व की उन्नति असंभव है। सामाजिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध का महत्व एक देश की सभ्यता और रीति रिवाज से दूसरे देश को परिचित कराना है। ऐसा होने से आपसी आत्मीयता का उदय होता है तथा परस्पर एकता की संभावना को बल मिलता है। रोमानिया विश्व स्तर पर एक सार्वभौम सम्बन्ध की स्थापना चाहता है। चूंकि आपसी एकता के बिना राष्ट्रों की, छोटे और बड़े दोनों, उन्नति असंभव है।

इन प्रगतिशील नीतियों के कारण रोमानिया के प्रति ससार का आकर्षण बढ़ा है। पिछले कुछ समय से संसार में रोमानिया का सत्कार बढ़ा है। अनेक राजनैतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक विभूतियों ने रोमानिया के लोगों की महान् उपलब्धियों की प्रशंसा की है। रोमानिया के समाजवादी समाज में विकास की दर तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रोमानिया का सक्रिय सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रशंसा का विषय रहा है।

रोमानिया एक महान् सामाजिक योजना में संलग्न है। जिसका प्रयोजन राष्ट्रीय सम्पत्ति तथा उत्पादन की प्रवृत्तियों को विकसित करना तथा विज्ञान, संस्कृति एवं कलाओं को उन्नत करना है। सभी लोगों के भौतिक तथा आध्यात्मिक स्तर को बढ़ाने के लिए रोमानिया निरन्तर एक ओजस्वी अन्तर्रास्ट्रीय क्रियाशीलता में निमग्न है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में नये प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों का विकास हो। सारे देशों में बहुमुखी सहयोग संबंधों की स्थापना हो तथा संसार में एक नया आर्थिक एवं राजनैतिक आधार विकसित हो।

रोमानिया की नीति ने एक नयी अन्तर्राष्ट्रीय पद्धति के निर्माण में योग दिया है। नयी आर्थिक पद्धति के निर्माण ने प्रत्येक राष्ट्र को यह संभावना दी है कि वह बिना विदेशी हस्तक्षेप के अपने समस्त भौतिक एवं मानवीय क्षमताओं का देश की समृद्धि के लिए प्रयोग



१९७६ ई० में राजकीय संलेख पर हस्ताक्षर करते हुए राष्ट्रपति
चाउसेस्कू और राष्ट्रपति हफीज अल-असद

कर सके। वर्त्तमान परिस्थितियों में जब कि सभी राज्य एक दूसरे पर निर्भर हैं, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध इस प्रकार बनना चाहिए जिससे कि राष्ट्रीय आर्थिक शक्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास हो सके। रोमानिया द्वारा प्रस्तुत नया आधार देशों के आपसी सम्बन्धों में पूर्ण स्वतंत्रता की स्थापना करता है। चाहे वे राष्ट्र छोटे हों या बड़े, चाहे किसी सामाजिक पद्धति के हों, किसी प्रकार का विभेद नहीं किया जाता है। फिर रोमानिया इस बात पर भी बल देता है कि प्रत्येक राष्ट्र की स्वतंत्रता तथा स्वायत्तता को स्वीकारा जाय, भलाई की प्रत्यानुभूति हो, अन्तर्राष्ट्रीय उद्योगों तथा सहयोग में कृत्रिम रुकावटें और भेदभाव का अन्त हो तथा स्वतंत्र आर्थिक आदान प्रदान एवं सहयोग के लिए अनुकूल परिस्थितियों का सृजन हो। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि कच्चे माल तथा औद्योगिक सामान के मूल्यों में उचित अनुपात हो। अर्थात् ऐसे सम्बन्धों का निर्माण हो जिससे पूर्ण आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाय।

समाजवादी रोमानिया की यथार्थवादी सक्रिय तथा रचनात्मक विदेश-नीति कार्य और सिद्धान्त के बीच तादात्म्य स्थापित करती है। इसका विकास संसार में होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों के तटस्थ पर्यवेक्षण के फलस्वरूप हुआ है। यह विश्व-सम्बन्धों की आधारभूत शक्तियों का समुचित मूल्यांकन भी है जो देश की उचित विदेश नीति के संपादन के लिए आवश्यक है। यह नीति रोमानिया की जनता को आकांक्षाओं और संकल्पों का बोध कराती है। रोमानिया सतत प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है तथा अपने भविष्य की संरचना स्वतंत्र एवं शांतिपूर्ण ढंग से करने में लीन है।

संधियां और संयुक्त विज्ञप्तियां

रोमानिया समाजवादी गणराज्य के राष्ट्रपति श्री निकोलाई चाउसेस्कू ने विश्व के अन्य राज्यों के साथ, जिनमें वैसे राज्य भी सम्मिलित हैं जिनकी राजनैतिक या सामाजिक प्रणाली रोमानियन समाजवादी प्रजातंत्र से भिन्न है, मैत्री और सहयोग की संधियाँ की हैं। ऐसी संधियों में कोस्टा-रीका (Costa Rica), अर्जेन्टाइना (Argentina), गायना (Guinea) और पुर्तगाल के गणतंत्रों के साथ रोमानिया समाजवादी गणतंत्र की हुई मैत्री और सहयोग की संधियाँ प्रमुख हैं।

इन संधियों के मुख्य उपबंधों, जिनका उल्लेख उदाहरण के तौर पर नीचे किया जा रहा है, को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि रोमानिया समाजवादी गणराज्य जिन आधारभूत समाजवादी, आर्थिक और राजनैतिक सिद्धांतों पर अपने देश की शासन-व्यवस्था को संचारित करता है, उन सभी मुख्य सिद्धांतों का उल्लेख इन संधियों में भी किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि श्री चाउसेस्कू विदेशी संबंधों में राष्ट्रीय हित की अभिवृद्धि को अपना मूल प्रेरक-तत्व नहीं बनाकर, अपनी समाजवादी प्रजातांत्रिक व्यवस्था के मूल सिद्धांतों को ही प्राथमिकता देते हैं। यह श्री चाउसेस्कू के समाजवादी दृष्टिकोण के प्रति अविचल निष्ठा का द्योतक है।

संधियों की ही भांति श्री चाउसेस्कू के द्वारा, या तो किसी अन्य राज्य का उनके द्वारा भ्रमण के बाद या किसी अन्य विदेशी राज्याध्यक्ष द्वारा रोमानियन भ्रमण के बाद, संयुक्त विज्ञप्तियाँ जारी की गयी हैं। इन सभी संयुक्त विज्ञाप्तियों में भी उन सभी सिद्धाँतों और नीतियों का सदैव उल्लेख किया गया है जिन्हें रोमानियन समाजवादी गणराज्य की राज्य-व्यवस्था का आधार माना गया है। इस प्रकार यह स्पष्टतः विदित होता है कि रोमानिया गणराज्य के कर्णधार श्री चाउसेस्कू अपने राजनैतिक एवं सामाजिक सिद्धांतों को विदेशी राज्याध्यक्षों के साथ की गयी संयुक्त विज्ञप्तियों में प्रतिष्ठापित करने का सतत प्रयास करते रहे हैं। यह उनके अडिग साम्यवादी जननेता बने रहने का परिचायक है।

मैत्री और सहयोग की संधियों के उपर्युक्त विवरण के प्रमाण में रोमानिया समाजवादी गणराज्य और कोस्टारीका गणराज्य के बीच १९७४ ई० में हुई मैत्री और सहयोग की संधि और प्रावधानों का उल्लेख निम्नलिखित है—



रोमानिया की यात्रा पर आये हुए युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो के साथ हुई वार्ता के पश्चात् राष्ट्रपति चाउसेस्कू (बुखारेस्ट १९७६)

संधि

रोमानिया समाजवादी गणराज्य और कोस्टारीका गणराज्य के बीच मैत्री और सहयोग की संधि

धारा—१

उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष रोमानिया समाजवादी गणराज्य और कोस्टारीका गणराज्य निम्नलिखित सिद्धान्तों के आधार पर सम्बन्ध स्थापना के लिए सहमत हुए :—

(१) बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के, अपनी इच्छानुसार, किसी भी प्रकार के राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रणाली के चयन तथा विकास का अधिकार देश की प्रत्येक जनता का अहस्तान्तरकरणीय अधिकार है।

(२) प्रत्येक राष्ट्र को राष्ट्रीय अस्तित्व, स्वतंत्रता, स्वायतता एवं प्रभुसत्ता का पवित्र अधिकार है।

(३) प्रत्येक राष्ट्र को राष्ट्र के हित के लिए देश की प्राकृतिक सम्पत्ति तथा अन्य साधनों के उपयोग का पूर्ण एवं असंक्राम्य अधिकार है। साथ ही बिना किसी हस्तक्षेप के अपने आर्थिक विकास के अनुसार प्रत्येक तटीय राष्ट्र को उन साधनों के उपयोग का पूर्ण अधिकार होगा जो समुद्र तथा तटीय क्षेत्र में उपलब्ध हैं।

(४) राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रणाली तथा देश के आकार और विकास के स्तर को नजर अन्दाज कर सभी राष्ट्रों की पूर्ण समानता की नीति का पालन करना।

(५) सर्वमान्य अन्तर्राष्ट्रीय, समस्याओं के निदान हेतु विचार विनिमय एवं समाधान में, प्रत्येक राष्ट्र को समानता के आधार पर भाग लेने के अधिकार की नीति, का पालन करना।

(६) आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों के उपयोग का प्रत्येक राष्ट्र का अधिकार अक्षुण्ण रहे।

(७) प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग वृद्धि से लाभान्वित होने का प्रत्येक राष्ट्र का अधिकार अक्षुण्ण रहे।

(८) अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा और सभी देशों, खासकर विकासशील देशों, के सामाजिक और आर्थिक उन्नति को दृष्टिकोण में रखकर, चाहे वह किसी भी आर्थिक या सामाजिक व्यवस्था में आस्था रखता हो, प्रत्येक राष्ट्र का यह पवित्र अधिकार और कर्त्तव्य है कि वह सभी देशों से सभी क्षेत्रों में सम्बन्ध की स्थापना करे।

(९) चाहे किसी बहाने या किसी भी स्थिति में किसी भी राष्ट्र के आन्तरिक एवं वाह्य मामलों में हस्तक्षेप से अलग रहने के अधिकार की नीति का समर्थन ।

(१०) प्रत्येक राष्ट्र का यह कर्त्तव्य है कि वह दूसरे राष्ट्र की सीमा-अखंडता का समादर करे तथा इस तथ्य को स्वीकार करे कि किसी भी स्थिति में सीमा का अतिक्रमण, तथा राष्ट्रीय एकता पर कुठाराघात अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शांति के नीति के प्रतिकूल है, फलत: प्रत्येक राष्ट्र को शक्ति प्रयोग तथा सीमा के अतिक्रमण की निन्दा करनी चाहिये ।

(११) प्रत्येक राष्ट्र को यह अधिकार है कि वह वैसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से अलग रह, जिससे अपरिष्कृत सैनिक, राजनैतिक तथा आर्थिक गठबंधन को प्रश्रय मिले तथा जिस में किसी भी स्थिति में किसी बहाने दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध बल प्रयोग की संभावना रहे ।

(१२) किसी देश के व्यक्तिगत तथा सामूहिक सुरक्षा के अधिकार का रक्षण ।

(१३) सभी आपसी मतभेदों का शांतिपूण समाधान प्रत्येक राष्ट्र का कर्त्तव्य है ।

(१४) शांति की स्थापना तथा शांति कायम रखना प्रत्येक राष्ट्र का सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए ।

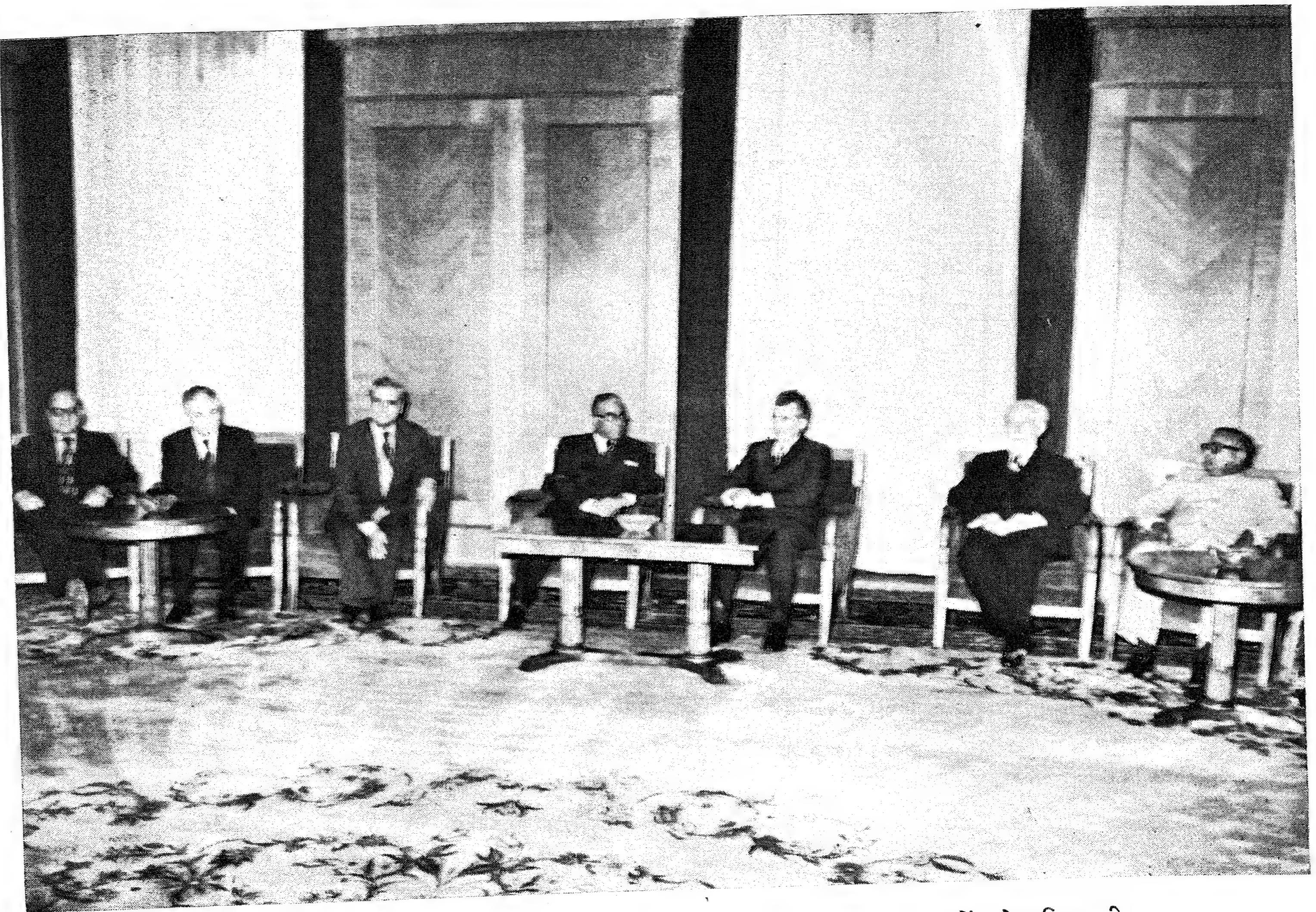
(१५) अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं राष्ट्र के मौलिक अधिकारों को दृष्टिकोण में रख कर प्रत्येक राष्ट्र का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि दूसरे राष्ट्रों के अधिकारों का आदर करे।

(१६) संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के अनुसार, जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून तथा सर्वमान्य सिद्धान्तों पर आधारित है, या जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय संधियों के द्वारा निर्मित है, प्रत्येक देश को अपने पावन कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए ।

उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष इस बात की घोषणा करता है कि इन मौलिक सिद्धान्तों की व्याख्या एवं प्रयोग एक दूसरे से सम्बन्धित है तथा एक दूसरे के संदर्भ में ही इसे समझा जाना चाहिए । इनका पालन सभी देशों द्वारा दृढ़ता पूर्वक किया जाना चाहिए, और किसी भी स्थिति में इन सिद्धान्तों की अवहेलना न्यायोचित नहीं है । उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष इन सिद्धान्तों के आधार पर सभी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग सम्बन्धों की स्थापना के लिए कटिबद्ध है ।

धारा—२

धारा--१ में उल्लिखित सिद्धान्तों के अनुसार उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष दोनों देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं अन्य क्षेत्रों में मैत्रीपूर्ण सहयोग सम्बन्धों का बिकास एवं विस्तार करेगा ।



भारतीय लोक सभा के अध्यक्ष श्री बालिराम भगत के नेतृत्व में (नवम्बर १९७६ में) रोमानिया की यात्रा पर आये हुए संसदीय शिष्टमंडल के साथ रोमानिया के राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू

धारा—३

विभिन्न वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि करके उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष दोनों देशों के बीच लाभदायक आर्थिक सहयोग का विकास और विस्तार करेगा, इस क्षेत्र में आने वाले संकटों का अन्त करेगा तथा दोनों देशों की प्राकृतिक सम्पदा का पूर्ण रूपेण उपभोग के लिए प्रत्येक क्षेत्र में औद्योगिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोगों का विस्तार करेगा।

धारा—४

विज्ञान, शिक्षा, संस्कृति, कला एवं खेल के क्षेत्र में उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष दोनों देशों के बीच विचार-विनिमय का विकास एवं विस्तार करेगा।

धारा—५

एक दूसरे के आर्थिक एवं अधिभौतिक मूल्यों को समझते हुए उच्च स्तरीय अनुबन्ध पक्ष दोनों देशों की जनता के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को विकसित करेगा, विश्वविद्यालय, कलात्मक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के बीच नजदीकी सम्बन्ध स्थापित करेगा, दोनों देशों के नागरिकों के आपसी सम्बन्ध के माध्यम से तथा अन्य समझौतों द्वारा जीवन से सम्बन्धित आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में वैज्ञानिक, शिक्षक, विद्यार्थियों एवं अन्य व्यक्तित्वों का आदान-प्रदान करेगा।

धारा—६

निःशस्त्रीकरण, खासकर आणविक निःशस्त्रीकरण, के लिए उठाये गये प्रभावशाली कदमों में उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष सहयोग प्रदान करेगा, संसार के विभिन्न क्षेत्रों को अणु-शक्तिरहित क्षेत्र घोषित करने की नीति का समर्थन करेगा, तथा अणुशक्ति सम्पन्न राज्य से इस बात के अनुमोदन के लिए प्रयत्न करेगा कि वे अणुशक्ति रहित क्षेत्र में किसी भी स्थिति में अणुशस्त्र का प्रयोग नहीं करें।

धारा—७

यूरोप, लैटिन अमेरिका तथा सम्पूर्ण विश्व में तनावपूर्ण स्थितियों का अन्त करने के लिए, शांति तथा परस्पर समझौते के दृष्टिकोण को विकसित करने में उच्चस्तरीय अनु-बन्ध पक्ष सहयोग करेगा।

धारा—८

विवेकपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन के माध्यम से उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष विश्व स्तर पर एक न्यायोचित और समानतापूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक प्रणाली के निर्माण के लिए साथ-साथ कार्य करेगा, विश्व अर्थव्यवस्था में आवश्यक स्वरूप परिवर्तन की दिशा में

प्रयत्न करेगा, व्यापार के विकास एवं सभी देशों के साथ आर्थिक सम्बन्धों के विकास एवं विस्तार में सहयोग प्रदान करेगा, विकासशील देशों की आर्थिक स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नशील रहेगा तथा सामूहिक आर्थिक सुरक्षा को दृष्टि में रखकर अपने-अपने देशों का आर्थिक विकास करेगा।

धारा—९

अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शांति की स्थापना तथा उसे कायम रखने में उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यक्रमों में सहयोग करेगा, सभी राष्ट्रों के बीच सहयोग करेगा, सभी राष्ट्रों के बीच सहयोग का विकास करेगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून के लिए सभी राष्ट्रों के बीच प्रतिष्ठा की भावना को जाग्रत करेगा।

धारा—१०

उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष वर्तमान संधि के नियमों के पूर्ण रूपेण कार्यान्वियन के लिए आपसी विचार विनिमय में वृद्धि करेगा, कूटनीतिक माध्यम से तथा प्रतिनिधियों के सामयिक बैठकों द्वारा तथा प्रत्येक स्तर पर सम्बन्ध स्थापित कर, विचार विनिमय में वृद्धि करेगा। ऐसे विचार विनिमय अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उभयपक्ष की पूर्व संधियों और समझौतों के प्रतिकूल नहीं होंगे। दोनों देशों के संबंधों के विकास, उभयपक्ष से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ जिसके वे सदस्य हैं तथा अन्य विषय जिसे उभयपक्ष उचित समझता है, के लिए विचार विनिमय किया जायेगा।

धारा ११

उच्चस्तरीय अनुबन्ध पक्ष इस बात की घोषणा करता है कि वर्तमान संधि, इसके पूर्व की संधियों की जिसके वे सदस्य हैं धाराओं का संल्लंघन नहीं करता तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों के भी पतिकूल नहीं है।

संयुक्त विज्ञप्ति

इसी प्रकार औपचारिक संयुक्त विज्ञप्तियों के उपर्युक्त विवेचन के उदाहरणस्वरूप रोमानिया समाजवादी गणराज्य और सूडान (Sūdan) के प्रजातांत्रिक गणराज्य द्वारा ७-४-१९७४ को घोषित संयुक्त विज्ञप्ति की मुख्य बातों का उल्लेख निम्नलिखित है :

रोमानिया समाजवादी गणतंत्र और सूडान के प्रजातंत्रिक गणराज्य के मध्य औपचारिक संयुक्त विज्ञप्ति :—

(१)

राजनैतिक, आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में मित्रता और सहयोग पूर्ण सम्बन्धों का विस्तार करना। व्यापार विनियम की दृष्टि से लाभदायक सम्बन्धों



१९७६ ई. में बुखारेस्ट में रूस के नेता श्री एल. जे. ब्रेझनेव के संग श्री चाउसेस्क

की स्थापना करना। देश की पूर्ण प्राकृतिक सम्पदाओं के लिए औद्योगिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सम्बन्धों का विस्तार करना। दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के विकास के लिये शिक्षा, कला, संस्कृति तथा विज्ञान के क्षेत्र में विचार विनिमय का विकास करना।

(२)

(क) बिना किसी वाह्य हस्तक्षेप के प्रत्येक देश की जनता को अपने इच्छानुसार किसी भी प्रकार के राजनैतिक तथा सामाजिक प्रणाली के चयन का अधिकार होगा।

(ख) प्रत्येक की स्वतंत्रता, स्वायत्तता, प्रभुसत्ता के पवित्र अधिकार की रक्षा की की जायेगी।

(ग) प्राकृतिक सम्पत्ति और अन्य साधनों को जन आकांक्षा के अनुरूप प्रयोग का पूर्ण अधिकार होगा।

(घ) प्रत्येक देश के समानता के अधिकार की रक्षा होगी, चाहे वह किसी भी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में विश्वास रखता हो एवं किसी भी आकार का हो।

(ङ) अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समझौते में प्रत्येक देश को समान स्तर पर भाग लेने के अधिकार की सुरक्षा होगी।

(च) पारस्परिक लाभ के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग की स्थापना।

(छ) चाहे वह किसी भी सामाजिक एवं राजनैतिक प्रणाली में विश्वास करने वाला हो, प्रत्येक देश को यह अधिकार होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना के लिए प्रत्येक स्तर पर सम्बन्ध का निर्माण करे।

(ज) किसी भी स्थिति में तथा किसी भी बहाने से किसी देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना।

(झ) प्रत्येक देश की सीमा सुरक्षा की नीति का पालन, तथा इस तथ्य की स्वीकृति कि अगर कोई देश किसी प्रकार का हस्तक्षेप करता है तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा घोषित करना।

(ट) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रत्येक देश को किसी भी वैसे सैनिक, आर्थिक तथा राजनैतिक समझौते से अलग रहने के अधिकार की सुरक्षा तथा किसी भी बहाने से किसी देश के विरुद्ध शक्ति प्रयोग को वर्जित करना।

(ठ) प्रत्येक देश के नागरिकों की सामूहिक आत्मसुरक्षा के अधिकार की रक्षा।

(ङ) किसी भी मतभेद का समाधान शांतिपूर्ण तरीकों से करना।

(३)

उपर्युक्त सिद्धान्तों को दृष्टि में रखकर अफ्रिका, मध्य एशिया यूरोप तथा विश्व में शांति स्थापना और तनाव कम करने के लिए प्रत्येक राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास करना, निःशस्त्रीकरण और अस्त्र दौड़ को खत्म करने के लिए, आणविक अस्त्रों को खत्म करना, उसके प्रयोग को अवैध घोषित करना, सैनिक समझौतों का अन्त करना, दूसरे देश की सीमाओं से सैनिकों की वापसी, विदेशी सैनिक आधारों का अन्त करना तथा सैनिक खेमों का अन्त करना। प्रत्येक देश की सीमा सुरक्षा के लिए तथा विश्व शांति की स्थापना के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यक्रमों में सहयोग देना, अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों के आधार पर सम्बन्धों की सृष्टि करना, प्रत्येक देश के नागरिकों के आत्मनिर्णय के अधिकारों की रक्षा करना तथा शांति और सुरक्षा की स्थापना के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में पूर्णरूपेण भाग लेना।

श्री चाउसेस्कू के नेतृत्व में की गयी संधियों और उद्घोषित संयुक्त विज्ञप्तियों का संबंध ऐसे गणराज्यों से भी रहा है जहां पूंजीवादी प्रजातांत्रिक व्यवस्था को कौन कहे, वहाँ बादशाहत या विशेष धर्म पर आधारित राज्य-व्यवस्था है। जैसे कि, संयुक्त राज्य अमेरिका ग्रेट ब्रिटेन तथा जापान के अतिरिक्त मोरीटानियाँ इस्लामिक गणराज्य, पाकिस्तानी इस्लामिक गणतंत्र तथा नीदरलैंड और बेलजियम की बादशाहत के साथ भी संयुक्त विज्ञप्तियां निकाली गयीं। विदेशी राज्यों के अतिरिक्त कुछ मुक्ति-मोर्चों (Liberation Fronts) के साथ भी सयुक्त विज्ञप्तियां निकाली गयीं, जैसे कि २०-१२-१९७४ ई० को मोजाम्बिक मुक्ति-मोर्चा के अध्यक्ष के साथ श्री चाउसेस्कू द्वारा उद्घोषित औपचारिक संयुक्त घोषणा-पत्र।



भारत की राजकीय यात्रा पर आये हुए रोमानिया के राष्ट्रपति श्री निकोलाई चाउसेस्कू एवं श्रीमती चाउसेस्कू
पालम हवाई अड्डे पर भारत के राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि एवं श्रीमती गिरि के द्वारा हार्दिक स्वागत

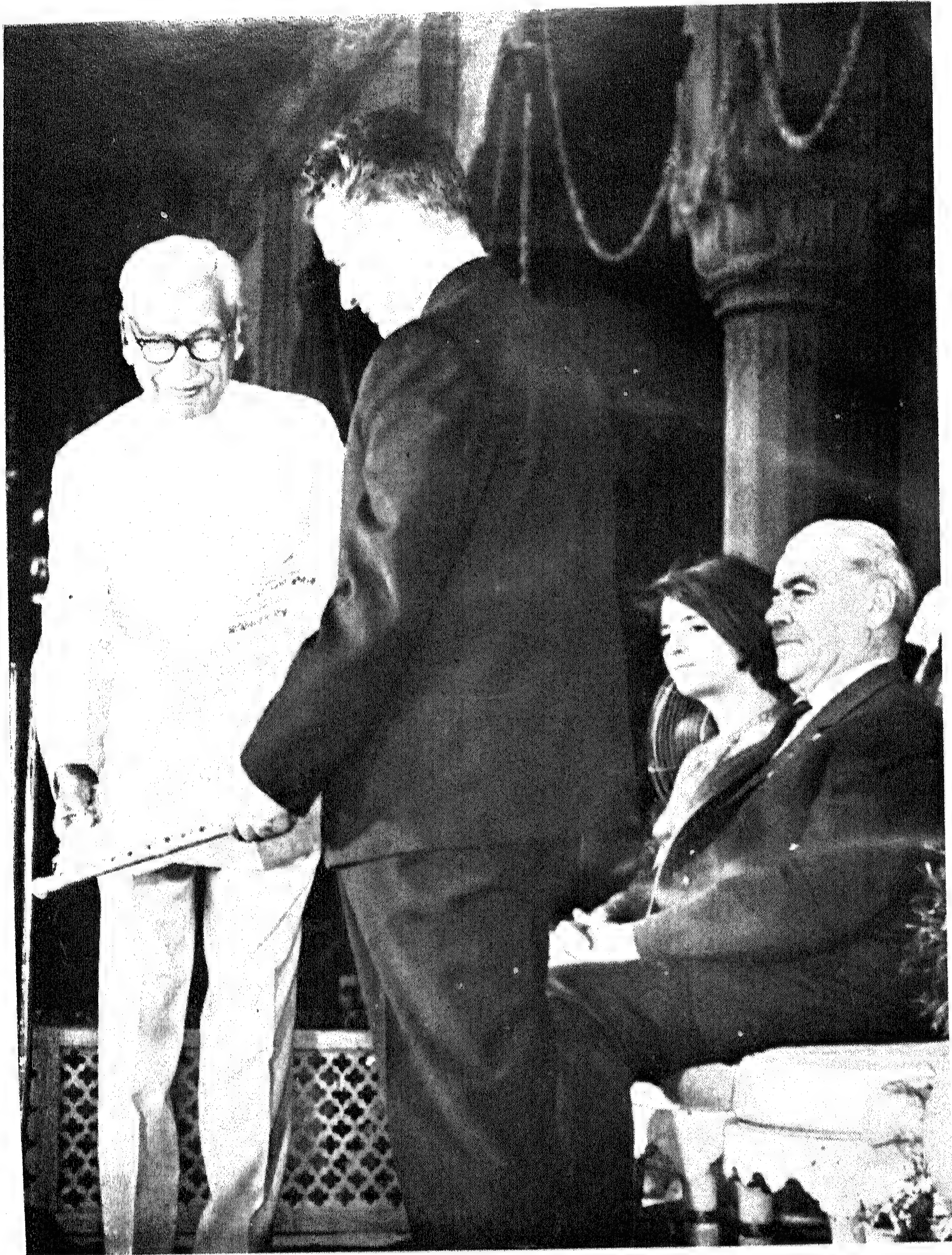
परिशिष्ट (१)

राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू विश्वशान्ति-परिषद की सर्वाधिक विशिष्टता युक्त स्वर्णपदक से आभूषित

रोमानिया समाजवादी गणराज्य के स्टेट-काउन्सिल में १६नवम्बर १६७७ ई० को आयोजित एक उत्सव में विश्वशान्ति आन्दोलन का सर्वश्रेष्ट पारितोषिक-फ्रेडरिक जोलीयो क्यूरे स्वर्ण-पदक से श्री निकोलाई चाउसेस्कू को विभूषित किया गया। विश्वशान्ति परिषद के सभापति, श्री रोमेश चन्द्रा ने राष्ट्रपति चाउसेस्कू को विश्व शान्ति आन्दोलन का सर्वाधिक सम्मानजनक स्वर्ण-पदक प्रदान करते हुए कहा कि श्री चाउसेस्कू के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, सहयोग एवं मैत्री के क्षेत्र में किये गये योगदान के प्रतीकारात्मक प्रशंसा के रूप में वह स्वर्ण-पदक उन्हें प्रदान किया गया। श्री चन्द्रा ने यह भी कहा कि दुनियाँ के पराधीन लोगों के मुक्ति-संग्राम के पक्ष में एवं एक नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना में रोमानिया की जनता एवं कम्यूनिस्ट पार्टी ने श्री चाउसेस्कू के सफल नेतृत्व में जो भूमिका निभायी थी उसकी प्रशंसात्मक स्वीकृति के नाते उन्हें यह स्वर्ण पदक प्रदान किया गया था। श्री चन्द्रा ने विश्व शान्ति परिषद की ओर से श्री चाउसेस्कू के द्वारा निःशस्त्रीकरण को प्रश्रय देने तथा शस्त्रों के होड़ को रोकने में रचनात्मक योगदान किये जाने की भी प्रशंसा की।

स्वर्ण-पदक को स्वीकार करते हुए राष्ट्रपति चाउसेस्कू ने विश्व शान्ति परिषद को उन्हें सम्मानित करने के हेतु धन्यवाद दिया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होने कहा कि स्वर्ण पदक उन्हें प्रदान किया जाना कोई व्यक्तिगत विलक्षणता का द्योतक नहीं था वरन समाजवादी रोमानिया की कम्यूनिष्ट पार्टी एवं सरकार द्वारा विश्व में शान्ति एवं सहयोग की भावना को अनवरत प्रश्रय दिये जाने की नीति का प्रतिफल था। उन्होंने अपनी वैदेशिक नीति के प्रमुख तत्वों-राष्ट्रीय सम्प्रभुता एवं स्वतंत्रता के प्रति आदर, सभी राष्ट्रों के सामान अधिकार, राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप, और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल के प्रयोग और धमकी की निन्दा, पर पुनः बल दिया। उन्होने एक स्वतंत्र, भयहीन और सुखद संसार की स्थापना में विश्व के सभी प्रगतिशील शक्तियों की सराहना की। उन्होंने स्मरण दिलाया कि समाजवादी रोमानिया सभी प्रगतिशील, साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों की एकता के लिए प्रयत्नशील रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि उसी भाँति उनकी सरकार सभी समाजवादी देशों, विकासशील एवं गुट-निरपेक्ष राज्यों और शान्ति की स्पथाना के हेतु सभी संग्रामों में लगे हुए लोगों के बीच एकता उत्पन्न करने में सक्रिय योगदान करेगी।

उन्होंने यूरोपीय सुरक्षा, अफ्रिकन महादेश में संघर्षों के विस्तार, साइप्रस में स्थायी शान्ति की स्थापना, एक स्वतंत्र फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना और उपनिवेशों द्वारा मुक्ति संग्रामों की समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कराया। उन्होंने अपनी पार्टी, अपनी सरकार तथा अपनी ओर से विश्वशान्ति परिषद के प्रतिनिधि मंडल को आश्वस्त किया कि शान्ति की स्थापना, निःशस्त्रीकरण, विशेषकर आणविक शस्त्रों पर प्रतिबन्ध, एवं एक नयी आर्थिक विश्व व्यवस्था की स्थापना में समाजवादी रोमानिया अपनी रचनात्मक भूमिका पूर्व की ही भाँति निभाती रहेगी, ताकि पृथ्वी पर एक न्यायपूर्ण और सुखद संसार की स्थापना हो। इस शुभ कामना के साथ कि सभी राज्यों के साधनों को सभी निवासियों के सुख, कल्याण एवं आर्थिक तथा सामाजिक विकास के हेतु उपयोग किया जायेगा और इस दिशा में विश्व की सभी प्रगतिशील शक्तियां एक जुट होकर कार्य करेंगी, उन्होंने विश्वशान्ति परिषद को उन्हें स्वर्ण-पदक से विभूषित करने के हेतु पुनः धन्यवाद दिया।



१९६९ ई० में भारत की राजकीय यात्रा के अवसर पर दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले में दिल्ली के नागरिकों की ओर से समर्पित अभिनंदन पत्र स्वीकार करते हुए रोमानिया के राष्ट्रपति श्री निकोलाई चाउसेस्कू

परिशिष्ट (२)

एशिया के राज्यों तथा रोमानिया के बीच मैत्री पूर्ण सहयोग का विस्तार

एशिया के बहुत बड़े भू-भाग के उन निवासियों, जो अभी भी दासता के चंगुल से मुक्त नहीं हो पाये हैं, के प्रति रोमानियन जनता सदैव ही सहानुभूति पूर्ण समर्थन देती आयी हैं। रोमानिया के इस रुख के पीछे उसकी अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के हेतु लड़ी गयी लड़ाइयों का स्मरण मुख्य तत्व के रूप में क्रियाशील रहा है। एशिया के उपनिवेशी क्षेत्रों की राजनीतिक आजादी के अतिरिक्त वहाँ के निवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों की आकांक्षा रोमानिया की वैदेशिक नीति का एक प्रमुख आधार रहा है। इसी पृष्ठभूमि में गणवादी चीन, कोरिया और समाजवादी गणतंत्र वियतनाम सदृशय देशों के स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व को रोमानिया ने एशिया में होने वाले प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी परिवर्तनों के रूप में देखा। रोमानिया को यह विश्वास है कि उपनिवेशवाद के अन्त होने के फल:स्वरूप एशिया में और भी अधिक नये स्वतंत्र, असंलग्न और विकासशील देशों का उदय होगा और उनके साथ रोमानिया के निकटतम सम्वन्धों में वृद्धि होगी जिसका परिणाम होगा कि वे सभी विश्वशान्ति और सहयोग की स्थापना में एक संग होकर साम्राज्यवादी और नये उपनिवेशवादी सिद्धांतों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा लेगे।

उपर्युक्त उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए राष्ट्रपति चाउसेस्कू ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम अपनाये है। उन्होंने ईरान, भारत, पाकिस्तान और फिलिपिन्स का दौरा किया तथा वहाँ के राज्याध्यक्षों और मुख्य कार्यपालकों से विचार-विमर्श किया, रोमानिया में आये हुए एशियाई देशों के शीर्षस्थ नेताओं एवं प्रतिनिधियों से भी उन्होंने वहाँ की समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। इन सब के परिणाम स्वरूप रोमानिया तथा सम्बन्धित देशों के बीच संयुक्त विज्ञप्तियाँ, समझौते और संन्धियों पर भी हस्ताक्षर हुए, जिनका मुख्य उद्धेश्य था उन देशों के बीच उच्चस्तर के बहुपक्षीय सम्बन्धों को प्रोत्साहन देना।

राष्ट्रपति चाउसेस्कू के इन प्रशंसनीय प्रयासों का ही फल है कि एशियाई देशों के साथ रोमानिया के आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में एक अत्यन्त ही गतिशील बढ़ती हुई है और १९७० की अपेक्षा १९७५ में इस दिशा में तिगुनी बढ़ती हुई। इस सम्बन्ध में दुसरी उल्लेखनीय बात यह है कि एशियाई देशों के साथ रोमानियन विनिमय के परिमाण में ही सिर्फ बढ़ती नहीं हुई है, वरन सम्वन्धित राष्ट्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। गणतंत्रवादी चीन, कोरिया, मंगोलिया, वियतनाम, काम्पुटके और लाउस के अतिरिक्त फिलिपीन्स, मलेशिया, सिंगापुर, और थाइलैंड के साथ भारत, पाकिस्तान, ईरान और श्रीलंका आदि देशों के साथ भी रोमानिया के सम्बन्धों में विस्तार हुआ है। आर्थिक विनिमय, उत्पादन के क्षेत्र में

सहयोग तथा विज्ञान और तकनीकी अनुसंधानों की दिशा में भी रोमानिया एवं अन्य एशियाई देशों के सम्बन्धों में विस्तार हुआ है।

एशिया के विकासशील देशों के द्वारा औद्योगीकरक, कृषि-पद्धति का आधुनिकरण और तकनीकी विकास के प्रयासों में भी रोमानिया ने काफी रचनात्मक सहयोग किया है। रोमानिया के द्वारा निर्यात किये जाने वाले मशीनों, औद्योगिक यंत्रों, तथा अन्य मशीनरियों का ६८% भाग एशियाई देशों को ही भेजा गया है। इस क्षेत्र में तेल कारखाना, पेट्रो-केमेस्ट्री, मशीन निर्माण, लकड़ी उद्योग आदि में रोमानिया के द्वारा सामान भेजे गये, उनके डिजाइनों का निर्माण हुआ तथा विशेषज्ञों को भेजकर औद्योगिक प्रतिष्ठानों को निर्मित एवं चालू किया गया। उदाहरणस्वरूप ईरान, भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, फिलिपिन्स, बंगलादेश, अफगानिस्तान, मलेशिया, सिंगापुर और थाईलेंड आदि देशों में निम्नलिखित प्रमुख कार्य किये गये ।

पिछले दस वर्षों में रोमानिया के सहयोग से ईरान में तब्रिज में ट्रैक्टर का कारखाना, श्रीआज में सोडियम फैक्ट्री, नेका में लकड़ी उद्योग के अतिरिक्त, सावे में बाँध और राशत में कृषि उद्योग विकास आदि की स्थापना हुई है। भारत में भी रोमानिया के द्वारा गौहाटी के तेल शोधक संस्थान, सींग्रेनी के जल-विद्युत केन्द्र, बरौनी और हल्दिया के तेल शोधक संस्थानों और हैदराबाद स्थित ट्रैक्टर के कारखानों के लिए कल-पुर्जे और भवन निर्माण उद्योग तथा जमीन में पानी का कल गाड़ने के मशीनों की सहायता दी गयी है जिससे कि देश के आर्थिक विकास में प्रयाप्त सहायता मिली है। पाकिस्तान के साथ रोमानिया के आर्थिक सहयोग का सबसे प्रमुख उदाहरण करांची में स्थापित तेलशोधक कारखाना है। उसी प्रकार श्री लंका के लकड़ी उद्योग में तथा ट्रकों के बनाने एवं रेल यातायात को बढ़ाने में भी रोमानिया सतत् सहायता कर रहा है। जहाँ तक फिलिपिन्स का प्रश्न है रोमानिया ने पचास मेगावाट के जल विद्युत केन्द्र की स्थापना में मदद की है। रोमानिया में निर्मित ट्रैक्टर और उपयोगी वाहक बाहन फिलिपिन्स की सड़कों पर दौड़ते दीख पड़ते हैं। बंगलादेश में कपड़ा बनाने के मिलों के विस्तार में भी रोमानिया सहयोग कर रहा है। रोमानिया के विशेषज्ञों ने अफगानिस्तान को अपने प्रथम गैस के खान खोज निकालने में सहायता की है। मलेशिया, सिंगापुर और थाईलेंड से रोमानिया के बाणिज्य सम्बन्ध बढ़ रहे हैं।

इन सब के अतिरिक्त रोमानिया के विशेषज्ञ दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के इन देशों में जाकर वहाँ के नागरिकों को प्रशिक्षित करते रहे हैं तथा इन देशों के बहुत सारे विद्यार्थियों को रोमानिया बुलाकर भी प्रशिक्षण दिये हैं।

एशियाई देशों के साथ रोमानिया के मैत्री पूर्ण सहयोग का सैद्धांतिक आधार समता और पारस्परिक लाभ रहा है और रोमानिया को इस बात में आस्था रही है कि इस सहयोग के द्वारा विकसित एवं विकासशील देशों के बीच की बर्तमान खाई पट सकेगी और एक नयी विश्व-आर्थिक-व्यवस्था का उदभव एवं विकास होगा।



रोमानिया की राजकीय यात्रा (१९७३ ई.) पर आये हुए भारत के राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी का बुखारेस्ट हवाई अड्डे पर स्वागत करते हुए रोमानिया के राष्ट्रपति श्री निकोलाई चाउसेस्कू

परिशिष्ट (३)

दिसम्बर १९७७ में आयोजित रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में राष्ट्रपति निकोलाई चाउसेस्कू के द्वारा रोमानिया की अन्तर्राष्ट्रीय नीति संबंधी प्रतिवेदन।

रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी एवं राज्य-सरकार द्वारा पार्टी के ग्यारहवें काँग्रेस के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का मूल्यांकन एवं उसके प्रति रोमानिया की प्रतिक्रिया पिछले दिनों में सही प्रतीत निकली है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि विश्व की आम जनता ने साम्राज्यवादी, उपनिवेशवादी और नव-उपनिवेशवादी हावी होने वाली तथा आज्ञा देने वाली नीतियों के विरुद्ध शक्तिपूर्ण विरोध दिखाई। उन्होंने इस बात का एलान किया कि वे अपने राष्ट्रीय साधनों एवं अपने भाग्य का स्वयं निर्णायक बनेंगे तथा अपना एक स्वतंत्र, आर्थिक एवं सामाजिक विकास करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति-संतुलन में हुए परिवर्त्तनों के कारण विश्व के शिविरों में भी नया मोड़ आया और विभिन्न राज्यों एवं राज्य समूहों के बीच विरोधाभासों में भी तेजी आयी। तेल, ऊर्जा और मुद्रा के संकटों के कारण विश्व आर्थिक संकट के नये आभास भी उमड़े। इन सबका परिणाम यह हुआ है कि बहुत बड़े पैमाने पर सामाजिक और राजनैतिक अशांति फैली है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में अस्थिरता और असुरक्षा की भावना और भी बढ़ी है। इसके पीछे उपनिवेशवाद की समाप्ति और साम्राज्यवाद द्वारा लोगों के शोषण और उत्पीड़न की शक्ति में हुयी कमी के तत्वों ने काम किया है।

फिर भी दुनियाँ की साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपने सम्बन्धित देशों की आम जनता के शोषण के प्रलोभन को रोक नहीं पा रही हैं और अन्य देशों के लोगों पर अपने संकट का भार टालने के हेतु बहुराष्ट्रीय-एकाधिकारी संस्थाओं की सहायता ले रही हैं। परिणाम हुआ है कि समसामयिक विश्व स्थिति एक विरोधाभास की अवस्था में आ गई है जिसमें सामाजिक एवं वर्ग-संघर्ष तथा समाजवादी और पूंजीवादी दुनियाँ और विकसित एवं विकासशील देशों के बीच के पारस्परिक विरोधाभास और भी तीव्र हो गये हैं।

द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् यह पहला अवसर आया है जबकि हम दुनियाँ के नये वितरण के लिये होने वाले संग्राम में एक तीव्र गति का अनुभव कर रहे हैं। अपने प्रभाव-क्षेत्रों को बढ़ाने तथा विश्व रंगमंच पर अपनी प्रभावकारी स्थिति बनाने के नये कार्यक्रमों में बहुत से राज्य और राज्यों के समूह संलग्न हैं। यद्यपि कि उपर्युक्त प्रतिद्वन्दिता इतिहास के प्रारम्भ से ही चलती रही है, फिर भी साम्राज्यवादी युग में इसमें एक तीव्रता आई है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और भी बिगड़ गयी है और नये संघर्षों एवं युद्धों के छिड़ने का

भय और भी बढ़ गया है। चूंकि दुनिया के उपर्युक्त पुनर्विभाजन के हेतु शांतिपूर्ण और अशान्तिपूर्ण, तथा आर्थिक एवं सैनिक साधनों का उपयोग किया जा रहा है, राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप हो रहा है, और एक राज्य को दूसरे राज्य के विरुद्ध भड़का कर उनके बीच अशान्ति और सैनिक संघर्ष को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रश्रय दिया जा रहा है, अतः यह लगभग निश्चय ही लगता है कि इन गतिविधियों से मानवता की शान्ति और सुरक्षा एवं दुनियाँ के लोगों का स्वतंत्र आर्थिक, एवं सामाजिक विकास गंभीर संकट में पड़ेगा।

प्रगतिवादी तथा साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों में उपर्युक्त घटनाक्रम से एक बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई है और वे इस बात के लिये कटिबद्ध हैं कि वे दुनियाँ के पुनर्विभाजन को अपनी समस्त शक्ति एवं साधनों से रोकने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार साम्राज्यवादी एवं समाजवादी शक्तियाँ एक दूसरे के विरुद्ध मुकाबले में लगी हैं। यह आवश्यक नहीं है कि इनमें से कोई सदैव ही आगे बढ़ती जाय। हो सकता है कि दोनों में से कोई शिविर कभी सफलतापूर्वक आगे बढ़ जाये और कभी असफलता के साथ उसे थोड़ा पीछे भी हटना पड़े।

इस पृष्ठभूमि में रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी के ग्यारहवें कांग्रेस के द्वारा किया गया अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का मूल्यांकन सर्वथा सही साबित हुआ है। शीत-युद्ध में जो शिथिलता आई थी वह अभी भी प्रारम्भिक अवस्था में ही है, लेकिन अभी विपरीत दिशा में नहीं गई है। उस समय लिये गये निर्णय के अनुसार दुनियाँ की सभी प्रगतिशील एवं साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों का संगठित होकर इस शिथिलता को और भी अधिक ठोस और विकसित बनाना है।

उपर्युक्त स्थिति में जो गिरावट आई है उसके कारणों में शस्त्रों की होड़ ने अधिक योगदान किया है। यह एक नकारात्मक तत्व है जिस पर सिर्फ दस वर्ष ४००,००० मिलियन डौलर खर्च होने जा रहा है। इससे सैनिक स्थिति ही नहीं वरन् आर्थिक एवं राजनैतिक अस्थिरता प्रभावित होती है और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन को सामान्य बना पाना और भी दुष्कर हो जाता है। इसलिये समाजवादी रोमानिया के सदृश दुनियाँ की सभी प्रगतिशील एवं साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों का यह ऐतिहासिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि पृथ्वी पर शान्ति और सुरक्षा को खतरा में डालने वाले सभी तत्वों को दूर करने में सभी शक्ति लगा दें। इस कार्यक्रम की प्राथमिकता आज के संदर्भ में और भी बढ़ गई है क्योंकि समाजवादी शक्तियों की स्थिति साम्राज्यवाद-विरोधी ताकतों की अपेक्षा और भी अधिक अच्छी हो गई है। इस दिशा में सफलीभूत होने के लिये सामाजिक न्याय और समता पर आधारित एक नई जनतांत्रिक नीति का निर्माण करना होगा जिससे कि दूसरे युद्ध के कगार की ओर घसीटाने वाली इस दुनियाँ को बचाया जा सके और सभ्यता एवं मानवता के आधारभूत तत्वों को रक्षित किया जा सके। इसके साथ ही आर्थिक संकट को भी दूर करना होगा ताकि अन्तर्राष्ट्रीय जीवन सामान्य हो सके और शीत-युद्ध में आयी शिथिलता को प्रश्रय मिले ताकि विश्व-शान्ति और सहयोग की स्थापना हो। इस सम्बन्ध में यह भी स्मरण रखना होगा कि



ईरान के शाह के साथ बिचारविमर्श करते हुए
राष्ट्रपति चाउसेस्कू (१९७७)

द्वन्दात्मक निर्भरता को नजरअंदाज कर इन समस्याओं को पृथक रूप में सुलझाने का प्रयास एक उचित मार्ग नहीं होगा। इसके लिये तो दुनियाँ के सभी प्रजातान्त्रिक, समाजवादी और प्रगतिशील शक्तियों को आपस में एक गुट होकर सतर्क एवं सशक्त कदम उठाने होंगे ताकि विश्व के सभी राष्ट्रों की सुरक्षा और शान्ति बनी रहे और मानवता प्रगति की राह पर सदैव अग्रसर होती रहे।

उपर्युक्त मानदण्डों को दृष्टि में रखकर रोमानिया ने सोवियत यूनियन, यूगोस्लाविया, बल्गेरिया, पोलैण्ड, हंगरी, समाजवादी गणराज्य जर्मनी एवं चेकोस्लोवाकिया के साथ मित्रता और सहयोग की नीति का कार्यान्वयन किया है। १९७६ ई० में राष्ट्रपति चाउसेस्कू के द्वारा रूस की यात्रा तथा कॉमरेड ब्रेझनेभ के द्वारा रोमानिया की यात्रा के अवसरों पर इन दोनों महान नेताओं के बीच समाजवाद एवं विश्व-शान्ति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बातें हुईं।

गणवादी चीन, कोरिया, वियतनाम, लाओस, कमपुटके, मंगोलिया, क्युवा और अलवेनिया के साथ भी रोमानिया के सम्बन्ध ग्यारहवें कॉंग्रेस में निश्चित किये गये निर्देशनों के आधार पर अच्छे बने रहे हैं।

अन्य विकासशील देशों के साथ भी पूर्ण समान अधिकार, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और संप्रभुता, आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप, पारस्परिक लाभ तथा बल प्रयोग या उसकी धमकी की विरोधी नीतियों के आधार पर रोमानिया के सम्बन्धों का विस्तार हुआ है।

ग्यारहवें काँग्रेस के बाद यूरोप की सुरक्षा को लेकर हेल्सिकी में एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कान्फ्रेन्स हुआ। इस सम्मेलन ने यह सावित कर दिया है कि विभिन्न सामाजिक प्रणाली के यूरोपीय देश सुरक्षा और शान्ति के लिये आपस में सहमत होकर समझौता कर सकते हैं। बेलग्रेड में होने वाले दूसरे सम्मेलन में इस पर विचार किया गया कि हेल्सिकी सम्मेलन में लिये गये निर्णयों को व्यवहार में कैसे लाया जाय। यह स्पष्ट है कि रोमानिया एक क्रान्तिकारी मानववाद की दार्शनिक अवधारणा के संदर्भ में ही विश्व में नये सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना करना चाहता है। इसी दृष्टिकोण से रोमानिया ने बेलग्रेड सम्मेलन के विचारारार्थ बहुत से प्रस्ताव भेजे हैं जिनकी स्वीकृति से हेल्सिकी निर्णयों को क्रियात्मक रूप दिया जा सकेगा। निःशस्त्रीकरण के हेतु होने वाले वियना वार्त्ता की सफलता की कामना भी रोयानिया करता है। उसी प्रकार बालकन के देशों के बीच द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सम्बन्धों की स्थापना के लिये तथा साईप्रस की समस्या के शान्तिपूर्ण निदान के लिये भी रोमानिया प्रयत्नशील रहा है।

भूमध्य सागर के देशों तथा मध्य-पूर्व राष्ट्रों की समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने के समर्थन में रोमानिया सदैव सहयोग करता आया है। उसी प्रकार अफ्रिकी महादेश के लोगों के द्वारा उपनिवेशबाद, नस्लवाद और रंग-भेद की नीतियों के विरूद्ध

चलाये जा रहे मुक्ति संग्रामों का समर्थन रोमानिया करता रहा है। विकसित एवं विकासशील देशों के अंतर की खाई समाप्त कर एक नई विश्व-आर्थिक -व्यवस्था के लिये '७७ राष्ट्रों' के समूह के एक सदस्य के रूप में रोमानिया बराबर ही गतिशील कदम उठाता रहा है।

जहाँ तक आणविक शस्त्रों का सम्बन्ध है, रोमानिया उसके विरूद्ध है क्योंकि रोमानिया की वैदेशिक नीति नि:शस्त्रीकरण, सहयोग और शान्ति पर आधारित है। १६७८ के वसंत में होने वाले संयुक्त राष्ट्र के नि:शस्त्रीकरण सम्बन्धी विशेष अधिवेशन के द्वारा यदि यह भी तय पा जाय कि १६७७-७८ वर्ष में हुए सैनिक खर्चों की राशि में अगले वर्ष में बृद्धि न हो, तो यही रोमानिया की दृष्टि में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। रोमानिया यह चाहता है कि किसी भी देश को सेना दूसरे देश की भूमि पर नहीं रहे, जहाँ हो भी वहाँ से हटा ली जाय, विदेशी सैनिक अड्डों को समाप्त किया जाय और सैनिक गुटों का नाश हो। इनसे भी अधिक प्राथमिकता आणविक शस्त्रों की होड़ को समाप्त करने को दी जानी चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के जनतन्त्रीकरण में विश्वास रखता है। सभी राज्यों के, चाहे उनकी आकृति तथा सामाजिक प्रणाली कुछ भी हो, सक्रिय सहयोग से ही अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की स्थापना हो सकती है। विश्व स्तर पर या क्षेत्रीय स्तर पर, सभी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिये यह आवश्यक है कि छोटे और मध्यम आकार के राज्यों तथा विकासशील और असंलग्न देशों का गतिशील सहयोग प्राप्त किया जाय। गुट निरपेक्ष देशों के कार्यों में एक अतिथि राज्य के रूप में रोमानिया के कार्यकलाओं को इसी दृष्टि-कोण से देखा जाना चाहिये।

इन सबों के अतिरिक्त रोमानियन कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय कांग्रेस रंग मंच मे राष्ट्रपति चाउसेस्कू ने इस बात को फिर दुहराया कि दुनियाँ के सभी क्रान्तिकारी और साम्यवादी वर्ग-संघर्ष और अन्य क्रान्तिकारी श्रमिक तथा जन आन्दोलनों को रोमानिया सदैव ही सहायता प्रदान करेगा। रोमानिया के इस निर्णय के पीछे यह भावना काम कर रही है कि अन्यर्राष्ट्रीय जीवन को एक नई राह पर लाने के लिये विश्व राजनीति में साधारण जनता का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। जब दुनियाँ के सभी लोग प्रगतिवादी और समाजवादी शक्ति के रूप में जागरूक होकर क्रियाशील होंगे तभी पृथ्वी पर शान्ति की स्थापना होगी और एक सुखी तथा सुरक्षित संसार बन सकेगा।



मार्च १९७७ के भूकंप से ध्वस्त खनिज आयात-निर्यात कार्यालय भवन

परिशिष्ट (४)

रोमानिया-भारत सहयोग

एक दूसरे से बहुत दूरी पर अवस्थित रहते हुए भी भारत और रोमानिया के बीच की मित्रता और सहयोग इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि विभिन्न राजनैतिक प्रणालियों के बावजूद दुनियाँ के राष्ट्रों के बीच में रचनात्मक सम्बन्धों की रचना की जा सकती है। भारत और रोमानिया का पारस्परिक मैत्री पूर्ण सम्बन्ध बहुत ही सहज और स्वाभाविक गति से इस लिए स्थापित रह सका है कि मूल्यों में आस्था एवं बहुत-सी विश्व समस्याओं के निदान हेतु दोनों देशवासियों के दृष्टिकोण समान रहे हैं। यह भी एक आकस्मिक बात नहीं है कि दोनों देश प्रतिवर्ष अगस्त के महीने में ही अपना स्वाधीनता दिवस मनाते हैं। १९७७ ई० में, अबकि रोमानिया ने एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उदय होने का 'शताब्दी, वर्ष मनाया और फासिस्टवादी चंगुलो से मुक्त होने का ३३वाँ मुक्ति बर्ष' मनाया, वहीं भारत ने अपनी स्वाधीनता की ३०वीं वर्षगांठ मनायी।

अपने लोगों के सुखद भविष्य एवं समृद्धशाली शान्तिमय जीवन के हेतु दोनों देशों की सरकारें विकास की आन्तरिक नीति एवं एक अच्छे तथा न्यायपूर्ण विश्व की स्थापना सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय नीति का अनुसरण करती रही हैं। दोनों ही देश एक नयी आर्थिक तथा राजनैतिक विश्व-व्यवस्था की स्थापना को अपना उद्देश्य घोषित कर चुकें हैं। चूंकि, इसके प्रयोजनार्थ दोनों देशों को अपने आन्तरिक विकास के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भी अपेक्षा है, अतः वे एक दूसरे से मिलकर तथा आपस में द्विपक्षीय एवं वहुपक्षीय सम्बन्धों की स्थापना करते रहे हैं। इन दोनों देशों के पारस्परिक सहयोग में विस्तार के फल:स्वरूप दोनों देशों में आर्थिक तथा वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग से काफी विकास सम्भव हो पाया है।

राष्ट्रपति चाउसेस्कू के सफल नेतृत्व में रोमानियन-भारत मैत्री तथा सुद्रभावना की जडें और भी मजबूत हुयी हैं और दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के बीच हुयी भेंट वार्ताओं ने इन सम्बन्धों को और भी सुदृढ़ बनाया है।

दोनों देशों के बीच राजनयिक तथा आर्थिक सम्बन्धों की स्थापना के विगत् २५ वर्षों में मित्रता की ही नहीं वरन् राजनैतिक, आर्थिक वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोगों के क्षेत्र में गुणात्मक और परिमाणात्मक प्रगति हुयी हैं। इनके बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों को प्रश्रय देने वाले कानूनी समझौते और प्रोटोकौल भी हस्ताक्षरित किये गये हैं। इस सिलसिले में आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के संयुक्त आयोग की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना है। ६०० मिलियन रुपयों के व्यापार-विनिमय का लक्ष्य १९७४ ई० में पूरा हो गया।

यह राशि १९६० की अपेक्षा लगभग दुगुनी हो गयी है और आशा की जाती है कि १९८० ई० में यह १९७४ ई० की तुलना में फिर दुगुनी हो जायेगी। ये आंकड़े इस बात के द्योतक है कि दोनों देश पारस्परिक व्यापार से लाभान्वित हो रहे है।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय उर्जा-संकट के संदर्भ में भारत के द्वारा तेल की खोज में रोमानियन सहायता बहुत ही अधिक लाभप्रद सिद्ध होगी। इसी प्रकार गोहाटी और हलदिया के तेल-शोधक कारखानों, हैदराबाद का ट्रैक्टर कारखाना और मद्रास का नवनिर्मित चर्म उद्योग, भारत-रोमानियन सहयोग के ही परिणाम हैं। भारत-रोमानिया संयुक्त आयोग ने तेल कारखानों, केमिकल्स, विद्युत-शक्ति तथा कृषि एवं जल के साधनों को विकसित करने का नया क्षेत्र चुना है। इसी प्रकार इस आयोग ने यह भी निश्चय किया है कि तीसरे देशों में भी संयुक्त योजनाओं के कार्यान्वयन में वे सहयोगी बनेगें। वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में रोमानिया भारत में सूती कपड़े और रेशम के कीड़े के पालन में दिलचस्पी ले रहा है और भारतीय पक्ष रोमानिया में हुए सूर्यमुखी के फूल, शराब, औषधि की जड़ी-बूटियां, सब्जी एवं फलों के संरक्षण तथा नमक युक्त स्थलों के सुधार में दिलचस्पी ले रहा है। शान्तिमय उपायों के लिए आणविक शक्ति के विस्तार के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच कुछ कार्य-क्रम बनाये जाने की सम्भावना है।

सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सहयोग के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच द्वि-वर्षीय कार्यक्रम चलते रहें हैं। दोनों देशों के रेडियो, टेलिविजन और जन संचार के साधनों के द्वारा पारस्परिक आदान-प्रदान होते रहे हैं जिससे दोनों देश की जनताओं के बीच आपसी सद्‌भाव बढ़ता रहा है। रोमानिया सरकार के अनुदान पर रोमानिया जाकर शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय विद्यार्थियों की संख्या में प्रति वर्ष वृद्धि होती रही है।

इन सबके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर भी दोनों देशों के बीच प्रर्याप्त पारस्परिक सद्‌भाव और मेल रहा है। बहुत सारी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर दोनों राष्ट्रों के दृष्टि-कोण समान रहें है। और यही कारण रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों एवं सम्मेलनों में दोनों की समान प्रतिक्रिया रही है। आज की दुनिया में जबकि सभी राष्ट्रों के बीच पूर्ण समता और विकसित एवं विकासशील देशों के विभेद की समाप्ति के आधार पर एक नयी आर्थिक एवं राजनैतिक विश्व व्यवस्था की स्थापना का प्रयास हो रहा है, भारत और रोमानिया के पारस्परिक सहयोग तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध की महत्ता और भी अधिक बन गयी है।

श्री एस. सागर द्वारा बंगाल प्रेस, दिल्ली-110006 भारत में मुद्रित।